ओ३म्

१९८०-८१

८१वां वार्षिक - विवरण

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

ओ३म्

१९८०-८१

८१वां वार्षिक - विवरण

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

प्रकाशक :
कुलसचिव
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार

मुद्रक :
गंगा प्रिंटर्स
सर्राफा गली, ज्वालापुर
(हरिद्वार) फोन २०३

विषय सूचि

●●●

विश्वविद्यालय के वर्तमान अधिकारी

विजीटर-	डा०सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, विद्यामार्तण्ड भूतपूर्व कुलपति, गुरुकुल काँगड़ी विश्व-विद्यालय।
कुलाधिपति-	श्री वीरेन्द्र, एम० ए०, प्रधान आर्य प्रति-निधि सभा पंजाब जालन्धर।
कुलपति-	श्री बलभद्र कुमार हूजा, (आई० ए० एस० अवकाश प्राप्त)
आचार्य एवं उप-कुलपति	डा०निरुपण विद्यालंकार, १-८-८१ से ५-५-८१ तक।
	डा० गंगाराम ६-६-८१ से
	डा. राधेलाल वार्ष्णेय ३१-७-८० तक
	श्री अर्जुन देव १-८-८० से २१-१२-८० तक
कुलसचिव-	डा. चन्द्रभानु अकिंचन २२-१२-८० से १७-५-८१ तक
	श्री धर्मपाल टोरा एम. ए. १८-५-८१ से
वित्ताधिकारी-	श्री सरदारी लाल वर्मा १-२-८१ तक
	श्री ब्रजमोहन थापर, २-२-८१ से
पुस्तकालयाध्यक्ष-	श्री सुरेशचन्द्र त्यागी, एम. एस-सी, प्रिंसिपल विज्ञान महाविद्यालय।
प्रिंसिपल विज्ञान म० विद्यालय-	श्री सुरेशचन्द्र त्यागी।
उप कुलसचिव	श्री जबर सिंह सेंगर।

●●●

प्राक्कथन

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की १९८०-८१ वर्ष की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। वस्तुतः यह वर्ष उत्साह एवं प्रगति का ही रहा है। कई वर्षों से चले आ रहे विवाद का न्यायालय से निर्णय २-७-१९८० को हुआ जिसके द्वारा श्री जी. बी. के. हूजा, आई. ए. एस. (अवकाश प्राप्त) को विधिवित कुलपति मान लिया गया। इस विवाद की सत्य निष्ठा से पैरवी का श्रेय श्री सोमनाथ मरवाह एडवोकेट नई दिल्ली को जाता है।

इतने सालों के झगड़ों के कारण जहां विश्वविद्यालय के कर्मचारियों को अनेकों कष्ट सहन करने पड़े वहाँ विश्वविद्यालय के सम्मान और प्रतिष्ठा को भी धक्का लगा। संस्था को प्रगति की राह पर विशेष प्रयत्नों की आवश्यकता पड गई। सम्भवतः इतने प्रयास नई संस्था को चलाने के लिये भी नही चाहिये। जैसा कि रिपोर्ट से प्रतीत होगा अधिकारियों ने रिकार्ड के अस्त व्यस्त होते हुए भी विश्वविद्यालय के पुनरुत्थान के लिये बहुत यत्न किये हैं और उनके प्रयासों को सफल करने मे शिक्षक एवं शिक्षकेतर कर्मचारियो ने भली भाँति योगदान किया।

जहाँ कई वर्षों के वेतन कर्मचारीयों को दिये गये, परिसर से झाड़ झकार हटाये गये, भवनों की मरम्मत पुताई व उन्हे सुसज्जित किया गया वहां प्रयोगशालाओं के उपकरण की पूर्ति भी की गई। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय मे कई पत्रिकायें शोधकार्य एव विज्ञान को जन साधारण तक पहुंचाने के लिये प्रकाशित किया गया। "आर्य भट्ट" विज्ञान मेला जिसको हजारों व्यक्ति देखने आये, ने इस विश्वविद्यालय को फिर से सजीव किया। सुचारु रूप से पठन पाठन के साथ साथ विभिन्न विभागों के छात्र सरस्वती यात्रा पर भेजे गये और अच्छे खिलाड़ियो को अन्तर विश्वविद्यालय खेल प्रतियोगिता में हाकी, क्रिकेट, आदि खेलों में भाग लेने के लिये भेजा गया।

दीक्षान्त समारोह के अवसर पर न्यायमूर्ति श्री हंसराज खन्ना की उपस्थिति ने विश्वविद्यालय की गरिमा को बढाया। इस अवसर पर गत वर्ष में उत्तीर्ण १२५ स्नातकों को उपाधियां दी गई।

यह भी उल्लेखनीय है कि कुलपति महोदय श्री तूजा जी ने जहां सबकी मनोबल बढ़ाते हुए प्रगति की प्रेरणा दी वहां उनके निरन्तर प्रयत्नों के फलस्वरूप इस विश्वविद्यालय को अखिल भारतीय विश्वविद्यालय संघ की सदस्यता प्राप्त हुई। इसके अतिरिक्त उन्होंने विचारशीलता के साथ अनुभवी विषय विशेषज्ञों को बुलाकर रिक्त पदों के लिये चयन कराये। अतः यह कहना उचित है कि वर्ष १९८०–८१ उत्साह एवं प्रगति का वर्ष रहा है।

परन्तु अधिकारी शिक्षक एवं शिक्षकेतर इतनी उपलब्धियों से ही संतुष्ट रहें ऐसा भी न्याय संगत नहीं। किसी समय गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय का नाम विश्व के उच्चतम विश्वविद्यालयों में रहा है। इस प्रतिष्ठा को पठन पाठन, शोध कार्य एवं खेलों चरित्र निर्माण आदि को फिर से पाने के लिये और अधिक निष्ठा एवं प्रयत्नों की आवश्यकता है जिससे संस्था की प्रगति देश की उन्नति में भागीदार बन सके। इसके हम सब प्रयत्नशील रहेंगे, इसकी मुझे पूरी पूरी आशा है।

हम न्यायमूर्ति श्री हंसराज खन्ना, श्री टी०एन० चतुर्वेदी, शिक्षा सचिव भारत सरकार, श्री जगदीश नारायण, कुलपति रुड़की विश्वविद्यालय के आभारी हैं कि उन्होंने इस परिसर में आकर हमारे प्रयासों में सहयोग दिया। हम अन्य महानुभावों का भी धन्यवाद करते हैं जिन्होंने इस विश्वविद्यालय को फिर से प्रगति की राह पर लाने के लिए प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप में समय समय पर सुझाव एवं सहयोग दिया। यह भी आशा करता हूँ कि भविष्य में भी वे मार्ग दर्शन करते रहेंगे।

इस प्रतिवेदन को प्रस्तुत करने में भरसक परिश्रम किया गया। अत्यन्त अस्त-व्यस्त व्यवस्था के कारण हो सकता है कि इसमें कुछ

त्रुटियाँ रह गई हों और प्रगति के लिए किए गए प्रयासों एवं उपलब्धियों को पूर्ण रुप से उजागर न किया जा सका हो। आशा है कि आगामी वार्षिक विवरण और अच्छे बन सकेंगे। इस प्रतिवेदन के लिए सूचना एकत्रित करने और इसको रुप रंग देने के लिए डा० गंगाराम ने विशेष प्रयत्न कर सहयोग दिया। प्रूफ देखने में श्री मनुदेव 'बन्धु' प्राध्यापक वेद विभाग ने अपना सहयोग किया है। ये महानुभाव धन्यवाद के पात्र हैं।

अन्त में भारत सरकार, विश्वविद्याय अनुदान आयोग तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सफल निर्देशन एवं सहृदयता के लिए विश्वविद्यालय की ओर से इनका धन्यवाद।

धर्मपाल हीरा
कुलसचिव
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

●●●

गुरुकुल काँगड़ी-संक्षिप्त परिचय

जैसे ही बीसवी शताब्दी की उषा-लालिमा ने अपने तेजस्वी रुप की छटा बिखेरनी प्रारम्भ की, एक नई आशा, एक नये जीवन, एक नयी स्फूर्ति का जन्म हुआ। ४ मार्च सन् १९०२ ई० को स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपने कर कमलो से एक पौधे का रोपण किया। यही नन्हा सा पौधा आज ८० वर्ष बाद ऐसा वृक्ष सिद्ध हुआ जिसने अपनी शाखाओ को पुन धरती मे संजो लिया और फिर उन्ही शाखाओ से नयी नयी टहनियां फूट आई। यह पौधा था गुरुकुल कांगडी, जिसकी स्थापना गगा के पूर्वी तट पर हरिद्वार के निकट कांगडी ग्राम के समीप हुई थी।

१९वी शताब्दी मे लार्ड मैकाले ने भारत में वह शिक्षा पद्धति चलाई, जो उनके देश मे प्रचलित थी। पर मुख्य अन्तर यह था कि जहां इंग्लैण्ड में शिक्षित युवक अपनी ही भाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करके सम्मान जनक नागरिक बनने का स्वप्न देखते थे, वहां भारत मे विदेशी भाषा के माध्यम से पढे हुए युवक ब्रिटिश शासन के सचिवालयो मे नौकरी की खोज करते थे। एक ओर तो शासन द्वारा प्रतिपादित शिक्षा पद्धति का यह स्वरुप था, दूसरी ओर वाराण आदि प्राचीन शिक्षा स्थलों पर पाठशालाये चल रही थी र विद्यार्थी पुरानी पद्धति से संस्कृत साहित्य तथा व्याकरण । अध्ययन कर रहे थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने एक ऐसी शिक्षा-पद्धति का आविष्कार किया, जिसमे दोनों शिक्षा पद्धतियों का समन्वय हो सके, दोनों के गुण ग्रहण करते हुए दोषों को तिलाञ्जलि दी जा सके। अतः गुरुकुल की प्रारम्भिक योजना में संस्कृत साहित्य और वेदांग की शिक्षा के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा को भी यथोचित स्थान दिया गया था और शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हिन्दी रखा गया था। निस्संदेह स्वामी जी के मन में शिक्षा के क्षेत्र में आई इस मानसिक क्रान्ति का स्रोत महर्षि दयानन्दजी सरस्वती

के शिक्षा सम्बन्धी विचार थे जिन्हे वे मूर्त रूप प्रदान करना चाहते थे। इनमे ब्रह्मचर्य और गुरु-शिष्य के सम्बन्धो पर बल था।

कुछ वर्षो बाद महाविद्यालय विभाग का प्रारम्भ हुआ। महाविद्यालय स्तर तक गुरुकुल में सब विषयो की शिक्षा मातृ-भाषा हिन्दी के माध्यम से दी जाती थी। उस समय आधुनिक विज्ञान की पुस्तकें हिन्दी में बिल्कुल नही थी। गुरुकुल के उपाध्यायों ने पहिले पहल इस क्षेत्र मे काम किया। प्रो० महेश चरण सिंह की हिन्दी कैमिस्ट्री, प्रो०रामचरण दास सक्सेना का गुणात्मक विश्लेषण, प्रो० साठे का विकासवाद, श्रीयुत गोवर्धन की भौतिकी और रसायन, प्रो० सिन्हा का वनस्पति शास्त्र, प्रो॰ प्राणनाथ का अर्थशास्त्र और प्रो० सुधाकर का मनोविज्ञान हिन्दी मे अपने-अपने विषय के ग्रन्थ है। प्रो० रामदेव ने मौलिक अनुसंधान कर अपना प्रसिद्ध "भारत वर्ष का इतिहास" प्रकाशित किया।

१९१२ मे प्रथम दीक्षान्त हुआ जब गुरुकुल से दो ब्रह्मचारी हरिश्चन्द्र और इन्द्र (दोनों स्वामी श्रद्धानन्द जी के सुपुत्र) अपनी शिक्षा पूर्ण कर स्नातक हुए।

गुरुकुल निरन्तर लोकप्रिय होता जा रहा था। केवल भारतीय जनता ही नही, अनेक विदेशियो को भी गुरुकुल ने अपनी ओर आकृष्ट किया। प्रमुख विदेशी आगतुको मे सी०एफ०एण्ड्रूज, ब्रिटिश ट्रैड यूनियन नेता श्रीयुत सिडनी वेब और ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधान-मन्त्री श्री रेम्जे मैक्डानल्ड उल्लेखनीय है।

ब्रिटिश सरकार ने पहले गुरुकुल को राजद्रोही संस्था समझा। सरकार का यह भ्रम तब तक दूर नही हुआ, जब तक संयुक्त प्रान्त के गवर्नर सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल को अपनी आखो से नहीं देख गये। सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल मे चार बार पधारे। भारत के वायसराय लार्ड चेम्सफोर्ड भी गुरुकुल पधारे। गुरुकुल राजद्रोही न था, पर जब कभी धर्म, जाति व देश के लिये कि सेवा या त्याग की आवश्यकता हुई, गुरुकुल सबसे आगे रहा।१९०७के व्यापक दुर्भिक्ष,१९०८

के दक्षिण हैदराबाद के जन विप्लव, १९११ के गुजरात के दुर्भिक्ष और दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गान्धी द्वारा प्रारम्भ सत्याग्रह संग्राम में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने मजदूरी करके और अपने भोजन में कमी करके दान दिया। इसी भावना को देखकर महात्मा गांधी तीन बार गुरुकुल पधारे। वह कुटिया अब भी विद्यमान है, जिसमें महात्मा गांधी ठहरे थे। बहुत पीछे गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने हैदराबाद सत्याग्रह और हिन्दी आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया और जेल भी गये।

गुरुकुल ने एक आन्दोलन का रूप धारण कर लिया। परिणाम स्वरूप मुलतान कुरुक्षेत्र, भटिंडु, मूपा आदि स्थानों पर गुरुकुल खोले गये। बाद में झज्जर, देहरादून, भटिंडा चित्तौड़गढ़ आदि स्थानों पर भी गुरुकुल खोले गये। अन्य धर्मावलम्बियों ने भी महर्षि दयानन्द के शिक्षा सम्बन्धी आदर्शों को स्वीकार करके गुरुकुल के ढंग के शिक्षणालय खोलने शुरू किये।

१५ वर्ष तक अर्थात् १९१७ तक महात्मा मुंशीराम जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता रहे। उसी वर्ष उन्होंने सन्यास धारण किया और वे 'मुंशीराम से श्रद्धानन्द'हो गये। उस वर्ष विद्यालय विभाग में २७६ और महाविद्यालय विभाग में ६४ विद्यार्थी अध्ययन कर रहे थे।

१९२१ में गुरुकुल विश्वविद्यालय के रूप में परिणत हो गया। इसी वर्ष इस विवाद का अन्त हो गया कि गुरुकुल केवल एक धार्मिक विद्यालय (Divinity College) है और सामान्य शिक्षा देना गुरुकुल का काम नहीं है। यह भी निश्चय हुआ कि विश्वविद्यालय के साथ निम्न महाविद्यालय होंगे—

(१) वेद महाविद्यालय

(२) साधारण (कला) महाविद्यालय

(३) आयुर्वेद महाविद्यालय

(४) कृषि महाविद्यालय

बाद में एक व्यवसाय महाविद्यालय (Industrial College) भी इसमें जोड़ दिया गया।

बाढ़– १९२४ में गङ्गा में भयंकर बाढ आई और गुरुकुल की बहुत सी इमारतें नष्ट हो गई। अतः निश्चय किया गया कि गुरुकुल उसी स्थान पर खोला जाये, जहा पर इस प्रकार के खतरे की आशंका न हो। यह स्थान हरिद्वार से ५ किलोमीटर की दूरी पर ज्वालापुर के समीप गङ्गा नहर के किनारे पर स्थित है।

१९२७ का वार्षिकोत्सव रजत जयन्ती (सिल्वर जुबली) के रूप में मनाया गया। इसमें ५० हजार से अधिक यात्री विविध प्रान्तों से सम्मिलित हुए। इनमे महात्मा गांधी, पं० मदनमोहन मालवीय, बाबू राजेन्द्र प्रसाद, सेठ जमुनालाल बजाज, डा० मुंजे साधुवर वासवानी आदि उल्लेखनीय हैं। जयन्ती महोत्सव तो बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ, पर ३ मास पूर्व २३ दिसम्बर १९२६ को स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान हो गया था और उनका अभाव सबको खटकता था। १९२१ से प० विश्वंभर नाथ जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए, पर १९२७ मे रजत जयन्ती महोत्सव सम्पन्न करवाने के बाद गुरुकुल से चले गये।

(१) पं० विश्वम्भर नाथ जी के बाद १९२७ मे आचार्य राम देव जी, जो १९०५ मे गुरुकुल आये थे, मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए। इनके प्रयत्न से लाखो रुपया गुरुकुल को दान मे मिला। गुरुकुल की नई भूमि पर इमारतें बननी शुरू हुई। आचार्य रामदेव जी के पश्चात् प्रसिद्ध विद्वान् और प्रचारक प० चमूपति जी तीन वर्ष तक मुख्याधिष्ठाता रहे। १९३५ मे प० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरु-कुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए और पं० देव शर्मा जी विद्यालंकार आचार्य पद पर आसीन हुए। सन् १९४२ मे स्वास्थ्य खराब होने के कारण पं० सत्यव्रत जी ने मुख्याधिष्ठाता पद से त्यागपत्र दे दिया और उनके स्थान पर पं०इन्द्र विद्यावाचस्पति नियुक्त हुए। कुछ समय बाद आचार्य अभयदेव जी ने भी त्याग पत्र दे दिया। पं० बुद्धदेव जो

गुरुकुल के नये आचार्य बने पर वे भी १९४३ में चले गये । उनके स्थान पर पं० प्रियव्रत जी आचार्य नियुक्त हुए ।

मार्च १९५० मे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मनाया गया। दीक्षान्त भाषण स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा०राजेन्द्र प्रसाद ने दिया। इस अवसर पर पधारने वालो मे श्री चन्द्रभानु गुप्त, श्री घनश्यामसिह गुप्त, राजाधिराज श्री उम्मेद सिह जी शाहपुराधीश, दीवान बद्रीदास जी, पं० ठाकुरदास जी, म० कृष्ण जी, स्वामी सत्यानन्द जी, स्वामी आत्मानन्द जी, श्री वासुदेव शरण जी अग्रवाल, पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार, प० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार, कुंवर चांदकरण जी शारदा उल्लेखनीय है। भारत सरकार की ओर से राष्ट्रपति ने एक लाख रुपये का दान दिया। यह प्रथम अवसर था कि गुरुकुल ने सरकार से अनुदान लिया था। १९५३मे पं० धर्मपाल जी विद्यालंकार सहा० मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए जो लगभग २० वर्ष रहकर सेवा मुक्त हुए।

१ अगस्त १९५७ को पं०जवाहरलाल नेहरु गुरुकुल पधारे और उन्होंने विज्ञान महाविद्यालय का उद्घाटन किया। १९६० मे विश्व-विद्यालय की हीरक जयन्ती मनाई गई। इस वर्ष पर एक पुस्तिका भी प्रकाशित की गई, जिसका नाम है 'गुरुकुल कागडी के ६० वर्ष।' २० वर्ष से भी अधिक कुलपति एव मुख्याधिष्ठाता रहने के पश्चात् पं० इन्द्र जी को गुरुकुल से विदाई दी गई। उनके पश्चात् पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल के कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता बने। इन्हीं के समय१९६२मे गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय को भारत सरकार की विश्वविद्यालय के समकक्ष मान्यता मे मिली। विधिवत ८ विषयों में एम०ए० कक्षायें भी चालू हुई। चार विषयों में पी-एच डी. (शोध व्यवस्था) भी है। इन्ही के समय १९६६ मे डॉ० गंगाराम जी प्रथम पूर्णकालिक कुलसचिव, जो अंग्रेजी विभाग में १९५२ से कार्य कर रहे थे, नियुक्त हुए। आचार्य प्रियव्रत जी जो १९४३ से आचार्य पद पर चले आ रहे थे, १९६९ में गुरुकुल के कुलपति बने। इनके प्रयत्नों से विश्वविद्यालय को पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत धन प्राप्त हुआ और स्टाफ के वेतनमानों में संशोधन हुआ।

गुरुकुल को स्थापित हुए ८० वष के लगभग हो गये हैं। गुरुकुल के स्नातको ने प्राचीन इतिहास, वेद संस्कृत, हिन्दी, आयुर्वेद, पत्रकारिता आदि के क्षेत्रों मे जो उल्लेखनीय योगदान किया वह सदा स्मरणीय रहेगा।

(२) इस समय निम्न सरचना विश्वविद्यालय के अन्तगत कार्य कर रहे है।

(I) **विद्यालय**-प्रथम कक्षा से १०वी कक्षा तक। अन्तिम परीक्षा उत्तीर्ण करने पर विद्याधिकारी का प्रमाण पत्र दिया जाता है।

(II) **वेद महाविद्यालय**-प्रथम वर्ष से चतुर्थ वर्ष तक। उत्तीर्ण करने पर वेदालकार की उपाधि प्रदान की जाती है। इसी महाविद्यालय के अन्तर्गत वेद और सस्कृत मे एम०ए० और पी-एच० डी० उपाधिया प्राप्त करने को व्यवस्था है।

(III) **साधारण (कला) महाविद्यालय**-इसम प्रथम वर्ष से चतुर्थ वर्ष तक उत्तीर्ण करने पर विद्यालकार की उपाधि दी जाती है। इसी महाविद्यालय के अन्तर्गत दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास एव सस्कृति, मनोविज्ञान, हिन्दी, गणित और अग्रजी मे एम०ए० तक के अध्ययन की व्यवस्था है। पी-एच० डी० उपाधि प्राचीन भारतीय इतिहास और हिन्दी विषयो मे प्राप्त की जा सकती है।

(IV) **विज्ञान महा विद्यालय**-इसमे प्रथम वर्ष तथा द्वितीय वर्ष उत्तीर्ण करने पर बी० एस-सी० की उपाधि प्रदान की जाती है। सम्प्रति भौतिकी, रसायन, वनस्पति शास्त्र, जन्तु विज्ञान और गणित मे अध्ययन की व्यवस्था है।

(V) **गुरुकुल काँगड़ी फार्मेसी**-आयुर्वेद औषधियो के निर्माणार्थ एक बहुत बडी फार्मेसी है। बिक्री ८० लाख से ऊपर

है। इससे प्राप्त लाभ ब्रह्मचारियो पर खर्च किया जाता है ।

(३)इस समय जो गुरुकुल के भवन है, उनका अनुमानतः मूल्य१करोड़ से कही ऊपर है । इन भवनो मे वेद तथा साधारण महाविद्यालय, विज्ञान महाविद्यालय, पुस्तकालय, सग्रहालय, टेकचन्द नागिया छात्रावास, विद्यालय, विद्यालय आश्रम, गौशाला, गजेन्द्र छात्रावास, सीनेट हाल, उपाध्यायो तथा कर्मचारियों के आवासगृह सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त जो भूमि है, इसका भी अनुमानतः मूल्य १ करोड से कम नही है ।

(४) १९७५ से श्री बलभद्र कुमार हूजा, आई० ए० एस० (अवकाश प्राप्त) कुलपति एव मुख्याधिष्ठाता का कार्य कर रहे है। सम्प्रति डा० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के विजिटर है और श्री वीरेन्द्र जी, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब, कुलाधिपति ।

डा० गंगाराम
आचार्य एव उपकुलपति

—●—

भारतीय प्रशासनिक सेवा

० ए० एस०) में चुने गये गुरुकुल के छात्र–

श्री सपेन्द्र कुमार एम० ए० (संस्कृत

श्री आनन्द कुमार एम० ए० (संस्कृत)

–●●–
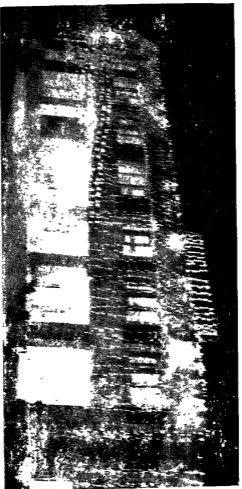
दीक्षान्त समारोह के अवसर पर विश्वविद्यालय भवन ।

कुलपति का प्रतिवेदन

यह तो आप जानते ही है कि आज से ८० वर्ष पूर्व स्वामी श्रद्धानन्द ने ब्रिटिश शिक्षा पद्धति के विरोध मे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को पुन स्थापित करने के लिये गुरुकुल की स्थापना की थी। स्वामी दयानन्द की मृत्यु के पश्चात् उनके अनुयायियो ने उनकी यादगार कायम रखने के लिये लाहौर मे दयानन्द एग्लो वैदिक स्कूल स्थापित किया जो बाद मे कालेज के रूप मे परिणित हो गया, परन्तु श्री गुरुदत्त विद्यार्थी एव स्वामी श्रद्धानन्द ने अनुभव किया कि यह कालेज भी स्वामी दयानन्द द्वारा निर्देशित कार्यक्रम को पूरी तरह नहीं निभा पा रहा है। अतः उन्होने स्वामी दयानन्द के सपनो को साकार रूप देने के लिये गुरुकुल स्थापित करने की योजना बनाई।

गुरुदत्त विद्यार्थी की इहलीला १८८९ मे समाप्त हो गई और वे भगवान को प्यारे हो गये। परन्तु स्वामी श्रद्धानन्द ने अभूतपूर्व आत्मविश्वास के साथ अपने अडिग सकल्प को पूरा किया। उन्होने अपनी सारी सम्पति और शक्ति इसी स्वप्न को पूरा करने मे लगा दी और अनेक दानवीरों और सहयोगियों की सहायता के फलस्वरूप गुरुकुल की आधारशिला रखने मे सफल हुये।

स्वामी श्रद्धानन्द ने जिस प्रकार के गुरुकुल की स्थापना की इसके बारे में सर रेम्जे मैकडानलड जो १९१४ में गुरुकुल पधारे थे और बाद में इग्लेड के प्रधानमन्त्री बने, ने अपने संस्मरण में निम्नवत् लिखा है।

"जिस किसी व्यक्ति ने भारत के विद्रोह के बारे मे पढा लिखा है वह निश्चय ही गुरुकुल के नाम से सुपरिचित होगा। यहां आर्यों के बच्चों को शिक्षा दी जाती है।"

"मेरी ट्रेन प्रातः ही हरिद्वार पहुंची। यहां गंगा पर्वतों से उतर कर मैदानी इलाके में प्रवेश करती है। जब हम नदी किनारे पहुंचे

तो हम मिट्टी के तेल के कनस्तरों से बंधी हुई बांसों की एक किश्ती पर बिठा दिया गया और हमारी यह किश्ती शीघ्र ही मझधार मे बहने लगी, अन्त में हम एक रेतीले किनारे पर जा उतरे। वहा से हम पैदल रवाना हुये। दूर हमे ध्वजा स्तम्भ दिखाई दिया जिस पर गुरुकुल की ध्वजा फहरा रही थी। गुरुकुल जाने का पथ पुष्प वाटि-काओं से घिरा हुआ था। गुलाब व चमेली की सुगन्ध सर्वत्र व्याप्त थी। इधर उधर खेल के मैदान थे। प्रवेश द्वार पर ओ३म् का झण्डा फहरा रहा था। लगभग ३०० विद्यार्थी इस समय यहा पढते है। महात्मा मुंशीराम उनके पिता हैं और वे उनके पुत्र है। वह ४ बजे प्रात: उठते हैं। शारीरिक व्यायाम करते हैं। ठंडे पानी से स्नान करते हैं, फिर सन्ध्या उपासना करते हैं। पीत वस्त्र धारण करते है, माता-पिता से मिलने का अवसर उन्हें केवल वार्षिकोत्सव पर प्राप्त होता है। छुट्टियों में बच्चों को यत्र तत्र ले जाया जाता है। महात्मा मुंशीराम कहते हैं कि बच्चों को तप और अनुशासन का अभ्यास कराने के लिये मै यहां प्रयत्नशील हूं।"

मेरे कमरे मे उन्होंने लाल फूलों के दो पुष्प गुच्छ सजा दिये है। खाना खाने के बाद हम स्कूल देखने गये। स्कूल मे चारों ओर अनुशासन और प्रसन्नता है। बच्चे बड़ी श्रद्धा से अपना पाठ पढ रहे है, कुछ बच्चे मिट्टी के माडल बना रहे है। जैसे ही कक्षाये समाप्त हुई बच्चे भाग कर खेल के मैदान की ओर लपके।"

"शाम को हम जंगल में भ्रमणार्थ गये और जैसे ही रात हुई हम वापिस लौटे। शाम को मैंने उन्हे सामूहिक सन्ध्या हवन मे और फिर ध्यान में उपस्थित देखा। तत्पश्चात् रात्रि भोज हुआ और दिन का कार्यक्रम समाप्त हुआ।"

इस प्रकार का था महात्मा मुंशी राम का गुरुकुल। मैंने उपर्युक्त उद्धरण को दोहराने की इसलिये धृष्टता की है कि जब हम पुन स्वामी श्रद्धानन्द के सपनों का गुरुकुल स्थापित करने के लिये कृत संकल्प है यह चित्र हमारे आदर्श को सुस्पष्ट करता है।

विगत कई वर्षो से गुरुकुल पर अनुशासनहीनता, अराजकता, भय और त्रास के बादल छाये रहे है। वास्तव मे यहां एक प्रकार का देवासुर संग्राम ही होता रहा है। इस स्थिति मे गुरुकुलवासियों पर विभिन्न दिशाओ से तरह-तरह के भीषण प्रहार हुए उन्होने जिस धैर्य और आत्मविश्वास के साथ अनेक कष्ट सहते हुए असुरों का मुकाबला किया वह प्रशसनीय है। अन्त मे सत्य की विजय हुई और असुर पराजित हुए। आज गुरुकुल वासी स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा दर्शाये गये पथ पर अग्रसर है, भले ही उनके चरणों मे वैसी गति और स्फूर्ति न आ सकी हो जिसकी अपेक्षा आप महानुभाव करते रहे है।

जिन सज्जनों ने जुलाई १९८० में गुरुकुल की दशा देखी है वे जानते है कि उस समय परिसर मे कितनी झाड झकाड़ थी। सफाई का नामो निशान नही था। इसके अतिरिक्त साल भर से स्टाफ को वेतन नही मिल पा रहा था। १९७९-८० की परीक्षायें सम्भावित थी। अध्यापक वर्ग एव शिक्षकेत्तर वर्ग के कई स्थान रिक्त पड़े थे जिसके कारण कार्य संचालन मे बाधाये आ रही थी।

गुरुकुल परिसर को साफ करने के लिये यह निर्णय लिया गया कि महीने के अन्तिम शनिवार को श्रमदान के तौर पर सामूहिक स्वच्छता दिवस मनाया गया। इस का सर्वत्र बडे उत्साह से स्वागत हुआ। नवम्बर के प्रथम सप्ताह मे आयुर्वेद कालिज गुरुकुल कागड़ी के प्रधानाचार्य डा० सुरेशचन्द शास्त्री और राजस्थान के भूतपूर्व स्वास्थ्य और चिकित्सा निदेशक डा० सत्यदेव आर्य के नेतृत्व में धन्वन्तरि सप्ताह मनाया गया। आज आप सब देख रहे है कि गुरुकुल परिसर चमकता और खिलता हुआ नजर आ रहा है। यह इसी श्रम तप का फल है।

इसी प्रकार स्टाफ को यथासमय वेतन प्रदान करने की स्थिति मे यथेष्ट सुधार आया है। इसके लिए मैं पूर्व वित्त अधिकारी श्री सरदारी लाल वर्मा और वर्तमान वित्ताधिकारी श्री वी० एम० थापर का आभारी हूं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से अब नियमित रूप से अनुदान प्राप्त होने लगा है। परीक्षायें भी सम्पन्न हो चुकी हैं जिनका अन्तिम चरण आज उपाधि प्रदान द्वारा सम्पादित हो रहा

है। कतिपय रिक्त स्थानों पर अध्यापकगण की नियुक्ति हो चुकी है। अन्य स्थानो के पूति के लिए हम विधिवत प्रयत्नशील हैं । विश्व-विद्यालय और विद्यालय के पठन-पाठन और क्रीडा कौशल में स्थैर्य अनुभव किया जा रहा है ।

अभी हाल ही मे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को एसोशियेशन आफ इण्डियन यूनिवर्सिटीज की सदस्यता प्राप्त हुई है जिसके लिये मैं डा० अमरीक सिंह, सचिव, एसोशियेशन आफ इण्डियन यूनिवर्सिटीज का आभारी हूं। आज हमारी खेल कूद की टीमे अन्तर विश्वविद्यालय प्रतियोगिताओ मे भाग लेने लग गई हैं ।

गत मास विश्वविद्यालय के विद्यार्थियो ने कुमायूँ की पहाड़ियां, कार्बेट नेशनल पार्क एवं दिल्ली उत्तर प्रदेश और राजस्थान के ऐतिहासिक नगरों की सरस्वती यात्रायें कीं। उन्हें आदेश थे कि जहा जहां जायें नियमपूर्वक हवन यज्ञ करे एव आर्य साहित्य का वितरण करें। इस प्रकार उन्होंने न केवल स्वयं यात्रा कालाभ उठाया अपितु आर्य समाज के सन्देश का भी प्रचार-प्रसार किया। प्रचार और प्रसार के लक्ष्य को ही दृष्टि में रखकर डा० सत्यकेतु विद्यालंकार और डा० हरगोपालसिंह के सम्पादकत्व मे अंग्रेजी मे त्रैमासिक पत्रिका "वैदिक पथ" के नियमित प्रकाशन का कार्य पुनरारम्भ किया गया है। इसके अतिरिक्त डा० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी के निर्देशन मे विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा त्रैमासिक 'प्रह्लाद' एव डा० विष्णुदत्त राकेश के निर्देशन मे विद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा त्रैमासिक 'ध्रुव' पत्रिका का प्रकाशन कार्य प्रारम्भ किया गया है, जिससे कि प्रचार के कार्य साथ साथ गुरुकुल के विद्यार्थी पत्रकारिता के क्षेत्र में समुचित अनुभव प्राप्त कर सकें ।

यहां यह भी उल्लेखनीय है कि गुरुकुल के वेद विभाग के अध्यक्ष डा० रामप्रसाद विगत कई वर्षों मे सर्व साधारण मे आर्य साहित्य के प्रचार हेतु लघु पुस्तिकाओ की रचना कर रहे हैं । अब तक इन्होंने १६ ऐसी पुस्तकों का निर्माण किया है जिनकी ७५,००० प्रतियां जिज्ञासुओ मे वितरित की जा चुकी है। इन पुस्तिकाओं में चुने हुए वेद मन्त्रों की व्याख्या दी जाती है जिससे कि उनके अर्थ

कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी, दीक्षान्त समारोह के अवसर पर जनसमूह के समक्ष ध्वजारोहण करते हुए। उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द जी के सपनों का गुरुकुल बनाने पर बल दिया।

सुबोध होकर सर्व साधारण के हृदयंगम हो सके। इनका मूल्य केवल पढना पढाना, सुनना सुनाना है।

मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता हो रही है कि उनकी इस साधना और उपलब्धि को देखते हुए सघड विद्या सभा ट्रस्ट, जयपुर ने उनको एक हजार रुपये का प्रथम आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार ११ अप्रैल को हुए वेद सम्मेलन मे प्रदान किया।

यहां मैं प्रो० चन्द्रशेखर त्रिवेदी की स्वत: स्वीकृत कर्तव्य परायणता का भी उल्लेख करना चाहूंगा। सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास को शतपथ ब्राह्मण के 'मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद' से आरम्भ करते हुए ऋषि दयानन्द लिखते हैं कि वास्तव मे जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है।

आगे चल कर वह लिखते हैं कि मिथ्या बातों का उपदेश बाल्यावस्था में ही सन्तानों के हृदय में डाल दे जिससे स्वसन्तान किसी के भ्रमजाल मे पड़के दुःख न पावे और वीर्य की रक्षा मे आनंद और नाश करने मे दुःख प्राप्ति भी जना देनी चाहिये क्योंकि शरीर मे सुरक्षित वीर्य रहता है तब उसको आरोग्य, बुद्धि, बल पराक्रम बढ के बहुत सुख की प्राप्ति होती है।

इसी समुल्लास मे आगे चल कर स्वामी जी ने लिखा है कि जैसे अन्य शिक्षा की, वैसे ही चोरी, जारी, आलस्य, प्रमाद मादक द्रव्य मिथ्याभाषण, हिंसा क्रूरता, ईर्ष्या, द्वेष, मोह आदि दोषों को छोड़ने और सत्याचार के ग्रहण करने की शिक्षा भी बालकों को देनी चाहिये। माता पिता तथा आचार्य अपनी सन्तानों एवं शिष्यो को सदा सत्य बोलने के उपदेश करें और यह भी कहें कि जो जो हमारे धर्मयुक्त कर्म है उनका ग्रहण करो और जो जो दुष्ट कर्म हो उनका त्याग कर दिया करो। जो जो सत्य जाने उनका प्रचार और प्रकाश करे। किसी पाखण्डी दुष्टाचारी पर विश्वास न करें। और जिस जिस उत्तम कर्म के लिये माता पिता और आचार्य आज्ञा देवे उसका यथेष्ट पालन करो।

इसी लक्ष्य को सम्मुख रख कर गुरुकुल मे ७ वी, ८ वीं, ९ वीं एव १० वी, के ३१ ब्रह्मचारियो को प्रतिदिन एक-एक मन्त्र अथवा सस्कृत सुभाषित कठस्थ करवाने का सकल्प प्रो० चन्द्र शेखर त्रिवेदी प्रवक्ता, मनोविज्ञान विभाग ने लिया और जब १०२ मन्त्र श्लोक कंठस्थ हो गये तो इन्हे सवड विद्या ट्रस्ट, जयपुर द्वारा प्रदत्त आर्थिक सहायता से 'जीवन ज्योति' नामक लघु पुस्तिका के आकार में प्रकाशित करवाया गया इसका विमोचन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर कांगड़ी ग्राम में आयोजित बृहत् सभा मे किया गया।

यहा यह उल्लेखनीय है कि यह कार्यक्रम बीच मे ही टूट जाता यदि इसमे वयोवृद्ध अधिष्ठाता प० चन्द्रकेतु एव स्वय ब्रह्मचारीगण अटूट आकांक्षा न दिखाते। मुझे पूर्ण आशा है कि गुरुकुल कागडी विद्यालय का यह अग्रिम दस्ता जहाँ कही जायेगा ऋषि दयानन्द की सत्य और न्याय की पाखण्ड खण्डनी पताका को प्रतिष्ठित करेगा एव सर्वत्र निर्भय होकर इदन्नमम की भावना से धर्माचरण करते हुए जीवन यात्रा मे अग्रसर होगा।

यहां मै आर्य स्वाध्याय केन्द्र का भी जिक्र करना चाहूगा। आप जानते ही है कि श्री रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्य समाज के गत सौ वर्ष का बृहत् इतिहास तैयार करने की योजना बनाई है। इस कार्य की पूर्ति हेतु हमारे विद्वान इतिहासवेत्ता डा० सत्यकेतु की अध्यक्षता मे एक कार्य सचालन समिति का गठन किया गया है। डा० सत्यकेतु ने नेहरू नेशनल म्यूजियम की तरह का गुरुकुल मे एक आर्य संग्रहालय बनाने का प्रस्ताव गुरुकुल के कुलाधिपति के समक्ष रखा, जिसे सहर्ष स्वीकार करते हुए गुरुकुल मे विद्यमान संग्रहालय का एक भाग उनके सुपुर्द करने का निश्चय किया गया है। यही पर वह आर्य स्वाध्याय केन्द्र का मुख्य कार्यालय एवं बृहत् पुस्तकालय भी स्थापित करेगे, जहा आर्य विद्वानो द्वारा रचित ग्रन्थो के अतिरिक्त अत्यन्त मूल्यवान पाण्डुलिपियों का एव ऐतिहासिक सामग्री का सग्रह एवं प्रदर्शन किया जायेगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि डा० सत्यकेतु का यह सकल्प शीघ्र

ही सिद्ध होगा। इस कार्य मे गुरुकुल के इतिहास विभाग के अध्यक्ष डा० विनोद चन्द्र सिन्हा उनके साथ सहयोग कर रहे है।

इस अवसर पर आर्य भट्ट विज्ञान मेले का उल्लेख न करूं तो प्रतिवेदन में एक बड़ी भारी कमी रह जायेगी। आप जानते है कि १६ अप्रैल १६७५ को भारतीय वैज्ञानिको ने सोवियत रूस की सहायता से आर्य भट्ट उपग्रह को कक्षा में स्थापित करके बड़ी भारी वैज्ञानिक उपलब्धि प्राप्त की। तदुपरान्त भास्कर और रोहिणी की उपलब्धियों ने हमारे वैज्ञानिकों की कीर्ति मे चार-चांद लगाये। भारत का नाम ऊंचा हुआ। आप सब यह भी जानते है कि पुरातन काल में वैज्ञानिक जगत् में भारत का कितना ऊचा स्थान था, किन्तु कालगति से भारत अज्ञान और अन्ध विश्वास के कूप मे जा गिरा। ऋषि दयानन्द की कृपा हुई कि हम अपनी सनातन सस्कृति से सुपरिचित हुए और अब पुनः आध्यात्मिक एव वैज्ञानिक उन्नति की ओर अग्रसर हैं। हालांकि वेद श्रेयस् और प्रेयस् दोनों की उपलब्धि की प्रेरणा देते है, परन्तु कई क्षेत्रों मे यह धारणा अब भी बनी हुई है कि आर्य समाज का का काम केवल धार्मिक क्षेत्र तक सीमित है। सच तो यह है कि भारत के अथवा प्राणी मात्र के उद्धार के लिए आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक उपलब्धियो के सुमधुर समन्वय की आवश्यकता है। इसी दृष्टि से स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गुरुकुल के पाठ्यक्रम मे जहाँ आध्यात्मिक शिक्षा पर बल दिया वहा वैज्ञानिक शिक्षा की उपेक्षा नही की। मेरे पूज्य पिताजी आचार्य श्री गोवर्द्धन ने जो १६०८-१० तक मे यहां मुख्यध्यापक थे, उन्ही दिनो हिन्दी मे भौतिकी और रसायन दो पुस्तको की रचना की जो कई वर्षों तक यहां की पाठ विधि मे प्रचलित रही। हिन्दी जगत मे भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियों का प्रचार हो और हमारे ब्रह्मचारी उनसे सत्प्रेरणा प्राप्त करे इस आशय से गुरुकुल कागड़ी विज्ञान महाविद्यालय के डा० विजयशकर के सम्पादकत्व मे जब वहाँ से एक त्रैमासिक पत्रिका "आर्यभट्ट" नाम से निकाली जाने लगी है। इसी शृंखला मे इसी वर्ष यहां आर्यभट्ट मेले का भी आयोजन किया गया है। इसका विधिवत् उद्घाटन रुड़की विश्वविद्यालय के कुलपति जगदीश

नारायण द्वारा ११ अप्रैल को सम्पन्न हुआ। इसमें हमें भारत हैवी इलैक्ट्रिकलस् रानीपुर रुड़की, विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय छात्र सेना इत्यादि से अमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ। हम उनके आभारी है।

अब मुझे आपको एक दो और शुभ संवाद देने हैं। आप जानते ही हैं कि वर्षों पहले दानवीर श्री अमृतराय की श्रद्धा गुरुकुल परिसर में अमृत वाटिका के रूप में प्रकट हुई थी और मध्य मे एक भव्य यज्ञशाला उजडी पड़ी रही। गत वर्ष इसमे पुन: प्राण प्रतिष्ठा हुई जब गुरुकुल आर्य समाज के नव निर्वाचित तरुण अधिकारियों ने यहां साप्ताहिक सत्सग करने का निर्णय लिया। जिस कर्तव्य परायणता से डा० जयदेव यहां साप्ताहिक हवन यज्ञ कराते है वह श्लाघनीय है। इस की शोभा बढाते हैं गुरुकुल विद्यालय के ब्रह्मचारीगण और उनके धर्मपरायण अधिष्ठाता सर्व श्री ईश्वर सिह, चन्द्रकेतु, हुकम सिह और हरिबन्धु।

इसी समाज मन्दिर मे गत सितम्बर मे २१ ता० को एक अभूतपूर्व कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जब इस इलाके के नामी डाकू भीष्म पाण्डेय ने यज्ञाग्नि के समक्ष उपस्थित होकर यज्ञोपवीत ग्रहण किया और वेदानुकूल जीवन व्यतीत करने का व्रत लिया। डा० जयदेव ने उसको नारायण नाम से सुशोभित किया और श्री जितेन्द्र ने उनको श्री नारायण स्वामी की कर्तव्य दर्पण पुस्तक मार्ग दर्शन के रूप मे भेट की। इसके बाद भीष्म नारायण कैसा जीवन व्यतीत कर रहे है इसकी मुझे जानकारी नही लेकिन सुनता हूं उन पर विभिन्न दबाव हैं जैसे कि हरेक व्यक्ति पर होते है।

हम जानते हैं कि हमारा मन एक प्रकार का कुरुक्षेत्र है जहां सात्विक और तामसिक शक्तियों का निरन्तर युद्ध चलता रहा। तभी तो श्री आनन्द स्वामी कहा करते थे कि गायत्री हम आर्यजनों की मा है। हमें चाहिए कि हम सदा उसका जाप करे एव उसकी गोद ही में विचरें, विश्राम करें। मेरी परम पिता से यही प्रार्थना है कि वह भीष्म नारायण और उसके साथियों को सुपथ पर चलने की शक्ति प्रदान करे। वह किसी धूर्त के चंगुल में फंस कर पथ भ्रष्ट न हो।

श्री बलभद्र कुमार हूजा (कुलपति) स्नातकों को उपाधि प्रदान करते हुए।

मैंने ऊपर जिक्र किया था कि हम स्वामी श्रद्धानन्द जी के चरण चिन्हों पर चलने का प्रयास कर रहे है लेकिन लड़खडाते कदमो से, मैने यह शब्द पूरी जिम्मेवारी से इस्तेमाल किये है। उस लडख- डाहट का नमूना है कि अभी गुरुकुल परिवार के बहुत से सदस्य दैनिक अग्नि होत्र मे तो छोडो आर्य समाज के साप्ताहिक सत्सग मे भी उपस्थित होना अपना कर्तव्य नही समझते। वह परम सौभाग्य का दिन होगा जब आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग मे गुरुकुल वासियो की यथेष्ठ उपस्थिति होगी।

आर्य समाज के उप नियमों में प्रावधान है कि सदस्य अपनी आय का शतांश चन्दे के रूप मे दें। गुरुकुल कागडी आर्य समाज के समक्ष इस उप नियम को पूर्णयता पालन करने का प्रस्ताव है। यदि ऐसा हो जाता है तो इस समाज की आर्थिक स्थिति बहुत सुदृढ हो जायेगी। यह ट्रेक्ट, पुस्तक समाचार बुलिटिन इत्यादि के प्रसार के कार्यक्रम हाथ में लेकर सक्रिय हो सकती है। स्थायी रूप से पुरोहित इत्यादि की नियुक्ति की जा सकती है। वास्तव मे गुरुकुल आर्यसमाज का यह परम कर्तव्य है कि यह न केवल हरिद्वार और भारत के किन्तु समस्त ससार के अन्धकार आच्छादित स्थलो को ज्योतिमय करने हेतु प्रकाश स्तम्भ की भूमिका निभाये।

ऊपर मैने रैम्जे मैकडानल्ड की गुरुकुल यात्रा का जिक्र किया था। आप ने सुना स्वामी श्रद्धानन्द ने उन्हे कहा था कि वह बच्चों को तप और अनुशासन का अभ्यास कराने में प्रयत्नशील है। आइये हम अपने आपसे पूछे कि हम स्वयं कहां तक ऐसी जीवन साधना कर रहे हैं। जैसे मैने कई बार कहा है बच्चे तो वानर समान नकलची होते हैं। जैसा बडो को करता देखते है वैसा करते है। आइये, हम अर्न्तमुख होकर सोचे कि हम उनके सामने क्या आदर्श और उदाहरण उपस्थित कर रहे है। हम स्वयं कहां तक इस नियम का पालन कर रहे है। आज देश में विलासिता की बीमारी घर कर रही है। उससे जुडी हुई हैं आलस्य प्रमाद और अनुशासनहीनता की घातक बीमा- रिया। ऋषि दयानन्द ने नव मानव के निर्माण का जो नुस्खा हम को आज से सौ वर्ष पूर्व दिया था यदि हमने उस पर पूर्णतया अमल

किया होता तो आज हमारी स्थिति कही अत्यधिक उत्तम होती। उनके नुस्खे के मूल मन्त्र है, ब्रह्मचर्य, तप और सयम।

निसन्देह कठोर तप से ही नव मानव का निर्माण होगा और इस कार्यक्रम में अगवाई करना आर्य संस्थाओ का काम है। लेकिन क्या मै यह पूछने की धृष्टता कर सकता हू कि हमारी आर्य सस्थाओ में कार्यरत कितने गुरुजन ब्रह्मचर्य के तप की आवश्यकता अथवा साधना से भिज्ञ है ? कभी उनसे पूछिये तो सही कि ब्रह्मचर्य सूक्त कौन से वेद का सूक्त है। उसका आशय क्या है। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने उसकी क्या व्याख्या की है।

यह है काम और चुनौती जो आज हमारे वेदज्ञ और संस्कृत विद्वानों के सामने है। उनका धर्म है कि वह इन आदर्शों का न केवल स्वयं पालन करें वरन् इनको जन साधारण तक पहुचाये। सर्वप्रथम कम से कम अपनी ही शिक्षा संस्थाओं मे कार्यरत सहयोगियो को तो इनसे परिचित कराये। इस हेतु यदा कदा सगोष्ठिया करे। शिविर लगाये। स्पष्ट है कि इन आदर्शो का सर्वत्र प्रचार करने हेतु हम सस्कृत और हिन्दी के दायरे से भी बाहर निकलना होगा। और न केवल अन्य देशी और विदेशी भाषाओ के माध्यम को अपनाना होगा किन्तु दूरदर्शन और दूर सचार से आधुनिक साधनो को भी प्रयोग में लाना होगा। तभी तो हम विश्व को आर्य बना सकते है। लेकिन विश्व को आर्य बनाने का बीड़ा वही तो उठा सकता है जो स्वयं असली मायनों में आर्य हो न कि नाम निहाद आर्य समाजी।

इस प्रसंग में हमारे कुलसचिव डा० चन्द्रभानु अकिचन ने एक कार्यक्रम शुरु किया था, जो चल नही पाया। उसकी ओर भी आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहूंगा। दोष उनका नही है, दोष है मेरे जैसे अनुशासनहीन विद्यार्थियों का। डा० अकिचन ने घोषणा की कि वे सप्ताह में तीन दिन अमृत वाटिका मे सरल संस्कृत सुबोध हेतु वयस्कों की कक्षाएं आरम्भ करेगे। जोश मे आकर मैने अपना नाम तो उनकी श्रेणी में लिखवा दिया, परन्तु नियमित रूप से उपस्थित न हो पाया। ऐसा ही अन्य विद्यार्थियो द्वारा हुआ। डा०अकिचन की कक्षायें टूट गई। जैसा मैंने ऊपर कहा है अब वह स्टेज आ गई है जब गुरुकुल

के अध्यापको, विशेषकर अंग्रेजी जानने वाले अध्यापको को संस्कृत और वेद मे प्रवेश प्राप्त करने हेतु उद्यमशील होना चाहिये। आप जानते ही है कि विश्व भर मे आज वैदिक साहित्य के प्रति जिज्ञासा उभर रही है, संसार के प्रबुद्ध व्यक्ति योग की ओर आकृष्ट हो रहे है। लेकिन उनतक वैदिक साहित्य पहुंचाने वाले है कौन यही स्वयं घोषित भगवान? यह तो अपनी खुदाई के नशे मे मखमूर हैं। यह असली वैदिक सस्कृति का क्या सन्देश देगे? अतः आज आर्य अध्यापको के सामने यह चुनौती है। वह द्विभाषी, त्रिभाषी बने। यह गुरुकुल से *हो सकती है। यहां सस्कृत और अंग्रेजी भाषा के विद्वान एक ही परि-*सर मे रहते है वह आचार्य रामदेव, पं० लेखराम से प्रेरणा ग्रहण करें। और उनके सदृश एक दूसरे से अन्य भाषाये सीखकर देश विदेश में वेद प्रचार के कार्य मे समर्पण भाव से जावे।

इसी प्रकार इनका यह भी धर्म है कि वह गुरुकुल मे प्रविष्ट ब्रह्मचारियो की सस्कृत और अग्रेजी भाषाओ मे सम्भाषण शक्ति को उजागर करे। पुराने समय मे गुरुकुल की यह एक विशिष्टता थी। उसे पुन प्राप्त करना हमारा परम धर्म है।

मित्रों,

मै कहा तक गुरुकुल की उपलब्धियो, विफलताओ अथवा सपनों का बखान करू? पंजाबी थियेटर के संस्थापक श्री गुरदयाल सिह खोसला ने शेरे पंजाब लाला लाजपतराय पर पंजाबी मे एक पचांकी नाटक लिखा। उसका हिन्दी अनुवाद गुरुकुल विद्यालय के अध्यापको ने किया है, जो शृङ्खलाबद्ध रूप से आर्य मर्यादा मे प्रकाशित हो रहा है। सर्व श्री जितेन्द्र और दीनानाथ के नेतृत्व मे वार्षिक परीक्षाओ के पश्चात् गुरुकुल विद्यालय के ब्रह्मचारी इस नाटक को खेलने जा रहे है। इसी प्रकार हम सचेष्ट हैं कि वेद महाविद्यालय का संस्कृत विभाग अपने विद्यार्थियों द्वारा कोई न कोई संस्कृत नाटक तैयार करावे। हम यह भी चाहते हैं कि विद्यालय मे संगीत की भी कक्षाये जारी हो। जिससे कि ब्रह्मचारी वेद मन्त्रों, श्लोकों इत्यादि के सस्वर पाठ करने मे कौशल्य प्राप्त कर सके और हम उन्हे टी० वी० रेडियो इत्यादि के माध्यम से दूरदराज तक प्रसारित करे।

हम यह भी चाहेगे कि गुरुकुल विद्यालय के ब्रह्मचारियों को किसी न किसी हस्त कला कौशल मे पर्याप्त दक्षता प्राप्त करने का अवसर मिले ताकि यहाँ से उत्तीर्ण होने के पश्चात् वह सरकारी नौकरियों की तलाश में इधर-उधर न भटकें । ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश मे वेद वेदाग, गणित भूगोल, विज्ञान, ज्योतिष इत्यादि की शिक्षा के अतिरिक्त गुरुकुल की पाठविधि मे आयुर्वेद, गान्धर्ववेद धनुर्वेद, अथर्ववेद के प्रशिक्षण का भी प्रस्ताव किया है। आज जब बंकों इत्यादि से कर्ज आसानी से मिल सकते है कोई वजह नही हमारे ब्रह्मचारी नौकरी की खातिर दर-दर भटकें। इस कार्य-क्रम को ठोस स्वरूप देने हेतु हमने खादी ग्रामोद्योग से सम्पर्क स्थापित किया है । आशा है कि आगामी वर्ष मे इस दिशा मे हमे सफलता प्राप्त होगी और विद्यालय में शिल्पकला के प्रशिक्षण का सुचारू प्रबन्ध हो जायेगा। अब मै युवक साथियो को सम्बोधित करना चाहूंगा ।

आप सब जानते है १९८२ मे नई दिल्ली मे एशियाई खेल होने जा रही हैं। और इन के बाद १९८४ मे लास ए जिल्स् मे ओलम्पिक खेले होंगी । मै जानना चाहूगा आप उनमे विजयश्री प्राप्त करने के लिये क्या तैयारी कर रहे है ? जैसा मैने अनेक बार कहा है, ओलम्पिक की खेलो मे लगभग ५०० पदक वितरित होते है। भारत के हिस्से मे कितने आते है ? जनसख्या के अनुपात से हम भारतवासी विश्व का एक सातवा भाग है। हमे ५०० मे से ७० पदक जीतने चाहिये। यदि हम ऐसा नही कर पाते तो क्यो ? क्या कभी आपने इस पर विचार किया है ?

जैसे डा० सुरेश चन्द्र शास्त्री कहा करते है कि पुस्तक परीक्षा में तो लब्धाक, कृपाक, भिक्षाक अथवा छुरांक प्राप्त करके प्रथम श्रेणी उपलब्ध की जा सकती है, परन्तु क्रीडा के क्षेत्र में ऐसा नही हो पायेगा। यहां तो निरन्तर साधना, अटूट तप और अखण्ड ब्रह्मचर्य की आवश्यकता होगी। क्या आप यह कीमत देने को तैयार है ? आइये, आज ध्यानचन्द का स्मरण करें, जिसने भारत की हाकी की टीम का कुशल नेतृत्व करके ५० वर्ष पहले विश्व खेल कूद जगत मे

दीक्षांत समारोह का एक दृश्य ।

बाये से—लाला रामगोपाल शालवाले, श्री सोमनाथ जी मरवाहा (कुछ पीछे), श्री बलभद्र कुमार (कुलपति), न्यायमूर्ति श्री एच०आर० खन्ना, श्री वीरेन्द्र (कुलाधिपति) एव स्वामी ओमानन्द सरस्वती ।

भारत मां का मुख उज्जवल किया था। आइये, उसके पदचिन्हों पर चलते हुए एशियाई और ओलम्पिक खेलों में भारत के गौरव के लिये एवं अपने और अपने माता-पिता के सम्मान के लिये स्वर्ण पदकों की मालायें अर्जित करने का संकल्प लें। हां, इस यज्ञ में जहां आपकी साधना और तप की आहुतियां पड़ेगी वहां हम बड़ों को धन और सुव्यवस्था की सामग्री जुटानी होगी। गुरुकुल का वर्तमान प्रशासन इस दिशा में अपनी जिम्मेदारी के प्रति पूर्ण सजग है। हम यह स्वप्न लेते हैं कि आगामी एशियाई खेलों में गुरुकुल के स्नातक अथवा ब्रह्मचारी अपना कला-कौशल दिखाकर कुलमाता का नाम उज्जवल करेंगे। इस हेतु हमने गुरुकुल में शारीरिक शिक्षा के निदेशक का पद सृजन करने का निश्चय किया है। यहां के विद्यार्थियों का डील-डौल बहुत सुन्दर है, उनमें अदम्य उत्साह है, पौरुष है। कमी है केवल पथ प्रदर्शन की और वैज्ञानिक तौर पर प्रशिक्षण की। इसे हम दूर करने जा रहे हैं।

इस अवसर पर मैं देहरादून कन्या गुरुकुल विद्यालंकार की छात्रा कु० इन्दिरा नेगी को उसकी उपलब्धि पर साधुवाद कहना चाहूंगा। इसने अखिल भारतीय प्रतियोगिता में नवीन मापदण्ड स्थापित किया और अब अन्तर्राष्ट्रीय कबड्डी प्रतियोगिता के लिये चुनी गई है।

आज देश और समाज में सर्वत्र विघटनकारी शक्तियों का प्रादुर्भाव हो रहा है। एक राष्ट्र, एक विधान,एक निशान की भावना धूमिल हो रही है। भारत में चिराग लेकर भी ढूँढ़िये तो भारतीय या हिन्दुस्तानी जन मुश्किल से मिलेगा। यहां कोई पंजाबी है तो कोई बंगाली, कोई असमिया है तो कोई मारवाड़ी, कोई मराठा है तो कोई गुजराती, कोई ब्राह्मण है तो कोई शैव या वैष्णव, कोई सिख या जाट है तो कोई हरिजन या अहीर, शिया या सुन्नी। लेकिन हिन्दुस्तानी आज कहां है ? आज देश में प्रान्तीयता और उप जातिवाद की बीमारी घुन की तरह लगी हुई है। ऋषि दयानन्द ने हमें राष्ट्र प्रेम का मन्त्र दिया था। दयानन्द के सैनिक आर्य जन ही इस बीमारी का दृढ़ता से मुकाबला कर सकते है।

जिला जज सहारनपुर के निर्णय दिनाक २ जुलाई के बाद जब मैं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री राम गोपाल शाल-वाले से मिला, तो उन्होंने मुझे माल्यार्पण करते हुये "सगच्छध्वम्" का मन्त्र दिया था। मेरा दृढ मत है कि इस संकट की घडी में जब हम अपने आपको आन्तरिक और बाहरी आसुरी शक्तियो से घिरा हुआ पाते हैं हम सबका हित इसी मन्त्र को स्वीकार करने मे है ।

ब्रह्मचारियो मे राष्ट्र प्रेम और एकता की भावना जाग्रत करने हेतु हमने १५ अगस्त को स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर विद्या-लय के ब्रह्मचारियो को निम्नवत ४ सदनो मे विभक्त किया और उन्हे झण्डे प्रदान किये ।

१–वीर हकीकत सदन,	२–शहीद चन्द्रशेखर आजाद सदन,
३–शहीद भगत सिह सदन,	४-शहीद रामप्रसाद बिस्मिल सदन,

इसी प्रसग मे हमने यह भी निश्चय किया है कि हम वीरो, शहीदो की पुण्य तिथियाँ और विभिन्न आर्य पर्व यथेष्ठ श्रद्धा और उल्लास से मनाया करेगे ।

इसी शृंखला में ५ सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाया गया, इसी प्रकार बाल दिवस, महिला दिवस, रामदेव दिवस, शहीद लेख-राम दिवस, गुरुकुल स्थापना दिवस, आर्य समाज स्थापना दिवस, श्रद्धानन्द सप्ताह और ऋषि निर्वाण उत्सव इत्यादि भी सोत्साह मनाये गये ।

परम्परानुसार इस वर्षीय वसन्त पचमी के अवसर पर पुण्य-भूमि मे सोल्लास सहभोज एवं खेलकूद के कार्यक्रम सम्पन्न हुए ।

ऋषिबोधोत्सव भी पुण्यभूमि मे मनाया गया। ४ मार्च को कांगडी ग्राम मे हवन यज्ञ किया गया। इस अवसर पर कांगड़ी ग्राम के श्री अर्जुन सिह नामक १०२ वर्षीय वृद्ध सज्जन ने जो कि स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ काम करते थे अपने संस्मरण सुनाते हुए कहा कि स्वामी जी को पेड़ो से अत्यन्त प्रेम था लेकिन अब ये निर्दयता

पूर्वक काटे जा रहे हैं। इसपर विज्ञान महाविद्यालय के वनस्पति विभाग के अध्यक्ष डा० विजय शंकर ने संकल्प किया कि आगामी वर्षा ऋतु मे वे इस ग्राम वे ७५० पेड़ लगायेंगे। ७५० इसलिये कि कागडी ग्राम की जनसख्या ७५० है। इसी प्रकार गाव की सफाई, चिकित्सा व्यवस्था, कन्या विद्यालय आदि के लिये जिलाधीश बिजनौर से सम्पर्क स्थापित किया गया जिन्होने कि इन कार्यों के लिये अपने सम्बन्धित अधिकारियो को आदेश दे दिये है। मै जिलाधीश बिजनौर के प्रति इस सहयोग के लिए अपना आभार प्रकट करना चाहूंगा।

भाषण शृङ्खला मे स्वामी श्रद्धानन्द की जीवनी एवं उनके आदर्शो पर प्रकाश डाला गया। इस अवसर पर उपस्थित सभी युवकों, विद्यार्थियो ने प्रतिज्ञा की कि वह स्वामी दयानन्द द्वारा दर्शाये निर्देशों के अनुसार २५ वर्ष की आयु से पूर्व विवाह नही करेगे।

तत्पश्चात् यह कार्यक्रम गुरुकुल कागड़ी के पुरातन महाविद्यालय के भवन मे साधना शिविर के रूप मे परिवर्तित होकर दिनांक ६-३-८१ तक चला। वहा जमीन मे गडा हुआ एक हवन कुण्ड प्राप्त हुआ जहाँ अनुमानतः स्वामी श्रद्धानन्द यज्ञ किया करते थे। ५ एव ६ मार्च को सभी शिविरवासियो ने वहाँ यज्ञ किया। रात्रि को कागडी ग्रामवासी डेढ बजे तक भजन, प्रवचन एव स्वामी श्रद्धानन्द के सस्मरण सुनाया करते थे।

इस साधना शिविर मे आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री सरदारीलाल वर्मा ने भी दो दिन बिताये। आयुर्वेद कालेज गुरुकुल कांगडी के प्रिंसिपल डा० सुरेश चन्द्र शास्त्री भी वहा पधारे और उन्होंने सफाई और व्यवस्था की दृष्टि से कांगड़ी ग्राम की ओर विशेष ध्यान देने का आश्वासन दिया।

मुझे इस शिविर मे ऐसा आभास हुआ कि मानो हमारे पूर्वजों की आत्मा हमे ललकार कर यह चुनौती एवं पुण्य सदेश दे रही है कि यज्ञ की ज्वाला की भांति--

१–सर्वत्र प्रकाश फैलाओ-अंधकार मिटाओ।
२–सर्वत्र सुगन्धि फैलाओ-दुर्गन्ध मिटाओ।
३–अपनी दुर्वासनाओ को दग्ध करो।
४–सर्वदा ऊर्ध्वगामी बनो।

मै समझता हू यदि हम ऋषि दयानन्द द्वारा दिये गये इस सत्य मार्ग के पथिक बनने का प्रयास करे तो इसमे न केवल हमारा कल्याण है वरन स्वदेश और संसार का भी कल्याण है।

मै शायद जरूरत से ज्यादा बाते कह गया। मेरे दिल में आग है। मैं उसे प्रकाशित होने से रोक नही पाया, क्षमा प्रार्थी हूं।

इससे पहले कि मै आपसे नव स्नातकों को आशीर्वाद देने के लिये निवेदन करूं मैं गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र के प्रति अपनी और अपने सहयोगियो की कृतज्ञता प्रकट करना चाहता हू जो इतने व्यस्त कार्यक्रम के बावजूद यदा-कदा हमें सभालने के लिये समय निकालते रहते है। साथ ही मै स्थानीय अधिकारियो, जिलाधीश, पुलिस अधीक्षक, स्थानीय न्यायाधीश एवं थानाधिकारियो के प्रति भी अपना आभार प्रकट करना चाहूगा जिनको हम समय असमय परेशान करते रहते हैं।

मै अपने साथियो के प्रति भी कृतज्ञ हूं जो सत्रारम्भ से ही गुरुकुल की छवि सुधारने मे तत्पर है। उन्हे देर-सवेर अपने सत्कर्मो का फल अवश्य मिलेगा। प्रभु आश्रित होने के नाते उन्हे आश्वस्त करने मे मुझे रत्ती भर भी सकोच नही हैं।

बलभद्र
कुलपति
गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

–●–

कुलसचिव की रिपोर्ट

२ जुलाई १९८० को सहारनपुर के सेशन जज ने श्री विजय पाल वर्मा बनाम श्री जी०बी०के०हूजा के मुकदमें में यह निर्णय दिया कि श्री हूजा जी गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के विधिवत् कुलपति थे तथा अब भी कुलपति हैं। इस निर्णय से सम्पूर्ण परिसर में एक खुशी की लहर दौड़ गई। उपाध्यायो एवं कर्मचारियों को बहुत लम्बे समय से वेतन नही मिल पाया था इस वजह से वे परेशान थे। सब ओर अनिश्चितता का वातावरण चल रहा था। और सर्वत्र एक उदासीनता सी व्याप्त थी। इस निर्णय से अनिश्चितता के बादल छट गये।

शिष्ट परिषद् का अधिवेशनः–

२ जुलाई ८० को जब सेशन जज के निर्णय के पश्चात् १३ जुलाई को शिष्ट परिषद् की विश्वविद्यालय के सीनेट हाल मे एक बैठक हुई जिसमे जो महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये वे निम्न प्रकार है–

१– विश्वविद्यालय के विजिटर डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार, भूतपूर्व ससद सदस्य तथा भूतपूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, को ३ वर्ष के लिये विजिटर नियुक्त किया गया।

२– कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा ने कुलपति पद से मुक्त होने की इच्छा प्रकट की किन्तु कुलाधिपति एव सीनेट के सभी सदस्यों ने उनसे सर्वसम्मति से यह प्रार्थना की कि वे अपना कार्य यथावत् करते रहे।

कार्य परिषद् की बैठकः–

सिण्डीकेट की बैठक १५ अक्तूबर ८० को विश्वविद्यालय के

सीनेट हाल मे सम्पन्न हुई थी जिसमे निम्नलिखित महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये।

१– चयन समितियों के लिये विषय विशेषज्ञ नियुक्त करने का अधिकार सर्वसम्मति मे कुलपति को दिया गया ।

२– विश्वविद्यालय के नियमों के अनुसार विश्वविद्यालय मे सह शिक्षा का प्रावधान नही है। किन्तु जिन छात्राओ ने प्रवेश ले लिया है उनका हित ध्यान मे रखते हुए उनकी अलग से शिक्षा का प्रबन्ध किया जाये ।

शिक्षा पटल की बैठकः—

१४ अक्तूबर ८० को विश्वविद्यालय के सीनेट हाल मे शिक्षा पटल की बैठक हुई जिसमे निम्न महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये।

१– विश्वविद्यालय की विद्याधिकारी, विद्याविनोद, अलंकार, बी ए, बी०एस०सी० तथा एम०ए०, एम०एस०सी० कक्षाओ के १९७७-७८, १९७८-७९, तथा १९७९-८०, के परीक्षा परिणाम प्रस्तुत किये गये। विचारानन्तर निश्चय हुआ कि श्री हूजा जी के कुलपतित्व मे ली गई, १९७७-७८, ७९-८०, की परीक्षाओ के परिणाम तथा प्रकाशक द्वारा १९७८ एव १९७९ मे सम्पादित परीक्षाओं के परिणाम को सम्पुष्ट किया जाये ।

वित्त समिति की बैठकः—

१– वित्त समिति की बैठक ६-६-१९८१ को सम्पन्न हुई, जिसमे आग्रह किया गया कि छठी पचवर्षीय योजना के अतर्गत विकास योजना बनाई जावे ।

२– छात्रवृत्ति की दरे निम्न प्रकार से निर्धारित की गई।

वेद महाविद्यालयः—

एम० ए० (वैदिक साहित्य) १००/-मासिक सभी छात्रों को

विद्याविनोद (वेद) वेदालंकार–६०/- मासिक सभी छात्रो को ।

कला महाविद्यालयः--

१– एम०ए० प्रथम वर्ष तथा द्वितीय वर्ष मे प्रवेश लेने वाले प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण उस छात्र को जिसके गत परीक्षा मे सर्वाधिक अंक होगे, ७५/- मासिक। यह छात्रवृत्ति प्रत्येक विषय के एक छात्र को मिलेगी।

२– विद्यालकार (संस्कृत) ६०/- मासिक सभी छात्रों को।

विज्ञान महाविद्यालयः--

वित्त समिति दिनाक १७-६-७६ प्रस्ताव स० ७ मे स्वीकृत दर ६०/- मासिक तथा स० एवं योग्यता पूर्ववत् ही रहेगी ।

नियुक्तियां:--

१– डा० निरुपण विद्यालंकार को ३१ जुलाई ८१ तक रीडर, संस्कृत, एवं उप-कुलपति नियुक्त किया गया। उन्होंने अपना कार्य-भार १-८-८० को सभाल लिया था ।

२– कुलसचिव – सहारनपुर सेशन जज के निर्णय के समय गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के कुल सचिव डा० राधेलाल बार्ष्णेय थे पर उनकी यह नियुक्ति तदर्थ रूप में थी। एक अगस्त ८० को को डा० वार्ष्णेय ने त्याग पत्र दे दिया। श्री हूजा जी ने गुरुकुल के एक स्नातक डा० देवेन्द्र कुमार को गुरुकुल का अस्थाई कुल-सचिव बनाने हेतु नियुक्ति पत्र उन्हे दिल्ली भेज दिया पर डा० देवेन्द्र कुमार प्रथम सितम्बर ८० से पूर्व कुलसचिव के पद पर कार्य करने मे असमर्थ थे। परिणामत श्री अर्जुनदेव जी शर्मा जो ज्वालापुर इण्टर कालेज के प्रधानाचार्य हैं, को तदर्थ रूप से २-८-८० को कुलसचिव नियुक्त कर दिया। श्री अर्जुनदेव जी ने अपने कुलसचिव काल मे कुलसचिव पद पर नियमित रूप से

नियुक्ति हेतु विज्ञापन दिया और साक्षात्कार ११ दिसम्बर को करने का निश्चय किया।

श्री अर्जुनदेव को अपना कालेज संभालना था और इधर कई वर्षों के झगडों के पश्चात् विश्वविद्यालय की भी अपनी विचित्र प्रकार की समस्याये थी। श्री अर्जुनदेव जी उतना समय नही दे पाते थे। जितना कि अपेक्षित था। अत उन्होने २२ दिसम्बर ८० को अपना त्याग पत्र दे दिया इसके पश्चात् डा० चन्द्रभानु अकिंचन जो कि झगडे के दिनो में गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय मे आचार्य एवं उप-कुलपति रह चुके थे उन्हें तदर्थ रूप मे कुलसचिव नियुक्त किया गया। डा० अकिंचन जी के कुलसचिव काल में ६ मई ८१ को कुल-सचिव की नियुक्ति के लिये चयन समिति की बैठक हुई जिसमे शिक्षा मन्त्रालय के भूतपूर्व सह सचिव श्री एस० एन० पण्डिता विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित हुए। उस दिन सर्वसम्मति से प्रथम स्थान श्री धर्मपाल हीरा को दिया गया। श्री हीरा ने अपना कार्य-भार १८ मई ८१ को संभाला।

३– वित्त अधिकारी – श्री सरदारीलाल जी वर्मा की जगह श्री बी० एम० थापर विश्वविद्यालय मे एकाउन्टैन्ट जनरल पजाब के कार्यालय से डैपुटेशन पर नियुक्त किये गये।

४– विशेषाधिकारी– सविधान संशोधन, जनसम्पर्क तथा कानूनी मामलों की देखरेख के लिये डा० गगाराम को विशेषाधिकारी के रूप में ६ जुलाई तक के लिये नियुक्त किया गया। डा० गंगा-राम विश्वविद्यालय के मामलो तथा अन्य घटनाओ से भली-भांति परिचित थे।

५– सम्पर्क अधिकारी.– श्री सरदारी लाल जी वर्मा को विश्वविद्या-लय का दिल्ली में सम्पर्क अधिकारी नियुक्त (अवैतनिक) नियुक्त किया गया। वह केवल यातायात भत्ता ही लिया करेंगे। उन्होने अपना कार्यभार संभाल लिया।

६- प्रवक्ताओं की नियुक्ति--निम्न विषयों में विज्ञापन देने के बाद तथा चयन समिति से चयन किये जाने के उपरान्त प्रवक्ताओं को रिक्त पदो पर नियुक्त किया गया ।

विषय	नाम	
१- संस्कृत	डा० रामप्रकाश	
२- हिन्दी	डा० भगवानदेव पाण्डेय एवं श्री ज्ञानचन्द	
३- इतिहास	डा० काश्मीर सिह	
४- गणित	श्री महिपाल सिह व श्रीहरबंसलाल गुलाटी	
५- दर्शन	श्री विजयपाल शास्त्री	
६- रसायन विज्ञान	श्री कौशल कुमार	
७- वनस्पति विज्ञान	श्री पुरुषोत्तम कौशिक	
८- अंग्रेजी	डा०काशी कुमार करण	अभी तक सेवारत नही हो पाए ।
९- भौतिकी	डा०एच०एम०अग्रवाल	
१०- वेद	श्री मनुवेद	

धर्मपाल हीरा
कुलसचिव

—●—

वित्त अधिकारी की रिपोर्ट

जिला एवं सत्र न्यायाधीश सहारनपुर के दिनांक २-७-८० के निर्णय के उपरान्त विश्वविद्यालय का विविध बैंकों में लगभग २३ लाख रुपया जमा था। यह राशि १९७७-७८, १९७८-७९, तथा १९७९-८० में भारत सरकार विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा विश्वविद्यालय को दिये गये अनुदान मध्ये जमा था।

गत तीन वर्ष के लम्बे संघर्ष के कारण कर्मचारियों का डेढ़ वर्ष का वेतन रुका हुआ था इस संघर्ष मे विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों से फर्नीचर, आलमारियां, पंखे, टाइप राइटर व अन्य उपयोगी सामान उठा लिया गया था। जुलाई १९८० में विभागों से उनकी आवश्यकता के बारे मे पूछताछ की गई। १९७४ के बाद से भवनों की मरम्मत, सफेदी, रंग आदि का कार्य भी नही हुआ था। विश्वविद्यालय परिसर मे सर्वत्र झाड, झंखाड खड़े हुए थे, जिन्हे साफ कराना आवश्यक था।

जुलाई१९८०मे सम्पन्न हुई सीनेट की बैठक मे शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार की स्वीकृति से श्री सरदारी लाल वर्मा विश्वविद्यालय के पार्ट टाइम वित्त अधिकारी नियुक्त हुए। उन्होने कर्मचारियों के रुके हुए वेतन का हिसाब बनवाने और उसका भुगतान कराने मे बड़ी तत्परता दिखाई। कर्मचारियों के अवरुद्ध वेतन मध्ये लगभग ५,००,००० रुपये का भुगतान किया गया। इसके अतिरिक्त पिछले तीन वर्षों का प्रो. फण्ड भी उनके खातों मे जमा किया गया। फार्मेसी विवाद के दिनों में लिये गये धन मध्ये ४,००,००० रुपये का भुगतान किया गया। १९८० मे विश्वविद्यालय का १९८०-८१ का संशोधन बजट तथा १९८१-८२ का आनुमानिक बजट बनाया गया तथा २५-१०-८० की वित्त समिति की बैठक में स्वीकृत होने पर इसे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को प्रस्तुत किया गया। इस बजट के अनुसार अनुदान आयोग से विश्वविद्यालय को १९८०-८१ के लिये १६,००० रुपये का अनुरक्षया अनुदान प्राप्त हुआ।

२ फरवरी १९८१ को भारत सरकार के महालेखा नियन्त्रक की अनुमति से श्री बृजमोहन थापर महालेखाकार, ने पंजाब चण्डीगढ से गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय मे प्रति नियुक्ति पर कार्यभार ग्रहण किया। अप्रैल १९८१ मे विश्वविद्यालय का ८१वां दीक्षान्त समारोह होना था और इससे पूर्व भवनो की मरम्मत, सफेदी रंग आदि का कार्य सम्पन्न कराना था इसके अतिरिक्त सीनेट हाल (अतिथि भवन), कुलपति निवास, कार्यालय, विज्ञान महाविद्यालय, पुस्तकालय कला महाविद्यालय मे फर्नीचर साज सज्जा की भी व्यवस्था की जानी थी।

इस अवधि मे विभिन्न विभागो मे निम्नलिखित सामान खरीदा गया एवं कार्य सम्पन्न हुए—

(१) भवनों की मरम्मत, पुताई, रग एव पेन्ट ।

(२) सीनेट हाल (अतिथि भवन) तथा कुलपति निवास मे फर्नीचर तथा साज सज्जा।

(३) कार्यालय उपकरण-टाइप राइटर, आलमारी, पखे, कैलकुलेटर, डुपलिकेटर, स्टेन्सिल कटिग मशीन, फर्नीचर एवं साज सज्जा।

(४) क्रीडा विभाग में-क्रीडा सामग्री क्रय की गई तथा जिमने जियम भवन की मरम्मत एव सामान का फिटिग ।

(५) विज्ञान महाविद्यालय में फर्नीचर, साज सज्जा तथा प्रयोग-शालाओ में प्रयुक्त होने वाले सामान की पूर्ति ।

(६) पुस्तकालय मे फर्नीचर तथा पुस्तके क्रय की गई—

(७) वेद एवं कला महाविद्यालय मे फर्नीचर क्रय किया गया तथा लान की सफाई का कार्य सम्पन्न हुआ।

(८) विश्वविद्यालय भवन में बिजली फिटिग तथा पेन्ट एव सफेदी।

लेखा विभाग द्वारा विश्वविद्यालय का वर्ष १९७६-७७ का लेखा आडिट कराया गया और उसे भारत सरकार को भेज दिया गया है। १९७७-७८ का लेखा पूर्ण कराने का कार्य प्रगति पर है और इसे शीघ्र ही आडिट किया जायेगा। १९७७-७८ से आगे के वर्षों का लेखा भी शीघ्र ही आडिट के लिए तैयार कराया जा रहा है।

बी०एन० थापर
वित्ताधिकारी

—●●—

परिसर, कृषि, गौशाला आदि की रिपोर्ट

१--मैंने २६ अगस्त १९८० को सहायक मुख्याधिष्ठाता का कार्यभार सम्भाला। उस समय सारे परिसर में जंगली झाड़-झंकाड़ उगे खड़े थे, जो बहुत बढ चुके थे। सारा गुरुकुल एक घना जंगल दिखाई देता था।

सडकों पर खड़े बडे-बडे वृक्ष झुक कर रास्तों को ढ़के हुए थे, जिससे अंधेरा छाया रहता था।

(क) मान्य कुलपति जी के आदेश से सब से पहले बड़े वृक्षों के नीचे झुकी हुई टहनियों को कटवाकर मार्गो को प्रकाशमय किया गया। फिर सब ओर खडे झाडों को कटवाकर परिसर को साफ सुथरा बनाया गया।

(ख) तत्पश्चात् क्रमश भवनो की सफाई का कार्य प्रारम्भ किया गया। वार्षिकोत्सव का निर्णय हो जाने पर सभी भवनों की मरम्मत, रंगाई तथा सफेदी पुताई के कार्य भी प्रारम्भ करा दिये गये।

(ग) विश्वविद्यालय का कार्यालय संग्रहालय के नये भवन मे स्थित था, उत्सव से पूर्व संग्रहालय को वेद मन्दिर से उस भवन में स्थानान्तरित कराया जाना था। इसके लिए हमने गुरुकुल का मुख्य कार्यालय अपने परम्परागत 'मुख्य भवन से हटा कर विद्यालय चिकित्सालय की खाली तथा गन्दी पड़ी बिल्डिग में ले जाकर मुख्य भवन विश्वविद्यालय को सौंप दिया। जहां विश्वविद्यालय का कार्यालय स्थापित्त हो गया तथा सग्रहालय अपने मूल भवन में स्थानान्तरित हो गया।

(घ) **गौशाला**-गौशाला में कुल आठ गाय हैं। मेरे आने के समय तीन गाय दूध देती थी। कुल चार-पाँच लीटर दूध होता था। जनवरी तथा फरवरी मास में पांच गाये बिहायी। कुल दूध ३६ से ३८ लीटर दैनिक होने लगा। हरे चारे का कोई प्रबन्ध नहीं था, भूसा भी गला सड़ा तथा मिट्टी वाला था। गुरुकुल के पास धनाभाव था। साधारण चारे पर ही दूध प्राप्त होता रहा।

(ङ) **कृषि** · फार्मेसी से कृषि के लिये कोई धन प्राप्त नही हो सका। इसलिये केवल दस एकड गेहूं बोया गया। परन्तु गेहूं में खाद नही दिया गया। इसके अतिरिक्त ६ एकड़ बरसीम बोया गया। जिसमे गाये स्वस्थ हो गई। आगामी योजना में २० एकड़ चरी, १० एकड़ धान तथा चार एकड़ हरा बोया गया शेष भूमि मे से लगभग ४० एकड़ ठेके पर दी गई तथा शेष की जुताई करायी जा रही है।

पुण्य भूमिः—

पुण्य भूमि की मुख्य इमारत जिसकी दशा शोचनीय थी, उस का जीर्णोद्धार किया गया। इमारत के भवनों मे भेड बकरियों की मेगने लगभग एक फीट तक भरी थी—दरवाजे खिडकिया टूटी हुई थी। कमरों की सफ़ाई करायी, दरवाजे खिड़कियों की मरम्मत तथा सफ़ेदी करायी।

मान्य कुलपति जी ने ऋषिबोधोत्सव पर मार्च मे तीन दिन का शिविर पुण्य भूमि में लगाया। उसी समय मिट्टी के ढेर मे से एक इंटों का बना हुआ हवन कुण्ड मिला। सम्भवतः इसी मे स्वामी श्रद्धानन्द जी यज्ञ किया करते थे, हम सब ने मिलकर वहीं तीन दिन तक यज्ञ किया। सारा वातावरण शुद्ध पवित्र हो गया।

कृषि भूमि की दशा भी शोचनीय थी, पुराने ठेकेदार ने जिसने गुरुकुल को एक भी पैसा नही दिया था, उससे ठेका छुड़वाकर नये ठेकेदार को नकद किश्त मे दिया गया।

१२-६-८१ को आर्यवीर दल के शिविर प्रशिक्षार्थियों, जिनकी सख्या लगभग १७५ थी । सबको पुण्य भूमि लेजाया गया एवं यज्ञ किया गया।

२– विश्वविद्यालय भवन की बहुत जीर्ण अवस्था थी, इस भवन की पुताई अन्दर बाहर से व किवाड़ों पर रंग रोगन, नये सिरे से बिजली फिटिंग ट्यूब लाइटे लगाई गई । बाहर से समतल किया गया तथा वार्षिकोत्सव इसी भवन में हुआ।

३– प्रोफ़ेसरों तथा कर्मचारियों के आवासों की मरम्मत पिछले कई वर्षों से नही हो पाई थी, जो की जा रही है तथा रंगाई पुताई की जा रही है।

४– परिसर में धन्वंतरि स्वास्थ्य वर्ष अभियान चलाया गया था, जिसके अन्तर्गत सभी भवन तथा पूरा परिसर साफ स्वच्छ चमक रहा है। सभी मुख्य भवनों तथा मार्गों पर नाम पट्ट लोहे के पेन्ट करवाकर लगवा दिये गये हैं। मार्गों में कुछ प्रकाश व्यवस्था भी करा दी गई है ।

५– मुख्य कार्यालय के पास ट्यूबवैल जो बन्द पडा था, उसके लिए एक नई मोटर तथा स्टार्टर लगवाकर उसे भी चालू कर दिया गया।

उत्सव से पूर्व ट्रांसफारमर जल गया था, उसे भी दोबारा मरम्मत करवा कर एक ही दिन में चालू करवाया गया ।

६– सीनेट हाल में नये ढंग से रंग रोगन करवाकर विश्वविद्यालय से उसमें नया फर्नीचर तथा पर्दे आदि की व्यवस्था करवा दी गई है।

तीन वर्ष पुराने बिजली के बिलों का भुगतान किया गया, जो लगभग ८०,०००-०० (अस्सी हजार रुपये) था।

गुरुकुल की सम्पूर्ण सम्पत्ति पर आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब का अधिकार है।

अभी लगभग २ हजार नये फलदार तथा विभूषक व इमारती पेड़ पौधे गुरुकुल परिसर एवं पुण्य भूमि में इस वर्षा ऋतु में लगाये जाने की योजना बनी है। तथा उद्यान नर्सरी को पुनः चालू करने की योजना है।

जितेन्द्र
सहायक मुख्याधिष्ठाता

—●●—

दीक्षांत समारोह पर कुलगीत। दाईं ओर हैं डा० गंगाराम और कुलसचिव डा० अकिंचन।

वेद एवं कला महाविद्यालय

वार्षिक-रिपोर्ट १९८०-८१

२ जुलाई ८० के पश्चात् वेद एवं कला महाविद्यालय का कार्य सुचारू रूप से प्रारम्भ हुआ। इससे पूर्व दो वर्ष तक झगड़े के कारण सभी कार्य अव्यवस्थित हो गया था। झगड़े के दौरान कुछ सामान चोरी आदि चला गया था। गत वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष छात्रों की संख्या में वृद्धि हुई है। इस वर्ष वेद एवं कला महाविद्यालय के लिए कुछ नया फर्नीचर क्रय किया गया है। एम. ए., विद्यालंकार, बी. ए. तथा विद्याविनोद में छात्रों की संख्या निम्न प्रकार से है-

कक्षा	विषय	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष
एम. ए.	वेद	३	२
	संस्कृत	१०	६
	दर्शन शास्त्र	४	४
	इतिहास	१२	८
	हिन्दी	१३	८
	गणित	१०	४
	मनोविज्ञान	१६	३
	अंग्रेजी	४	४
विद्यालंकार		१८	-
बी. ए.		-	११
विद्याविनोद		३	१

इस वर्ष विद्यालंकार प्रथम वर्ष में प्रवेश अन्य वर्षों की अपेक्षा अधिक थे। वेद एवं कला महाविद्यालय में इस वर्ष स्वतन्त्रता दिवस तथा गणतन्त्र दिवस मनाया गया जिसमें कि ध्वजारोहण श्री कुलपति महोदय ने किया। ६ फरवरी ८१ को गंगापार पुण्यभूमि में बसन्त

पंचमी का पर्व मनाया गया जिसमे कबड्डी, बालीवाल, पर्व गोष्ठी एवं संध्या हवन का कार्यक्रम हुआ।

वेद एवं कला महाविद्यालय के परिसर में रहने वाले सभी शिक्षक वर्ग प्रतिदिन विद्यालय विभाग में होने वाले प्रातःकाल के यज्ञ मे सम्मिलित होते रहे। २ जुलाई ८० के पश्चात् सभी कर्मचारियों को वेतन आदि सही समय पर मिलने लगा है। एम. ए. इतिहास, मनोविज्ञान तथा अंग्रेजी विषयों के छात्र सरस्वती यात्रा पर आगरा, वृन्दावन, मथुरा आदि प्रमुख स्थानों मे गये जिसमे प्रो० विनोदचन्द्र सिन्हा, प्रो० मिश्र, प्रो० श्यामनारायण सिह जी भी सम्मिलित हुए।

२१-२-८१ को गुरुकुल स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में प्रभात फेरी, यज्ञ, कुलपताका आरोहण एवं सभा व प्रवचन का कार्यक्रम हुआ। इस वर्ष हर महीने के अन्त मे "कुलपताका" फहराई जाती थी। इस वर्ष कालेज के छात्र हाकी खेल खेलने हेतु पीलीभीत, मेरठ एवं लुधियाना गये। पीलीभीत मे यहां के खिलाड़ियो का बहुत अच्छा स्वागत हुआ। वेद एव कला महाविद्यालय के छात्रों ने इस बर्ष फुटबाल एवं कबड्डी टूर्नामेन्टो का आयोजन भी गुरुकुल मे किया।

काफी लम्बे समय के पश्चात् इस वर्ष वेद एवं कला महाविद्यालय के समस्त कमरों की पुताई व सफाई आदि का भी कार्य हुआ। लॉन की सफाई भी करवायी गयी जिसमे कि डा० हरगोपाल सिंह जी-मनोविज्ञान विभाग ने काफी सहयोग प्रदान किया। इस वर्ष वेद एवं कला महाविद्यालय मे शिक्षकों. कर्मचारियों तथा छात्रों के सहयोग से श्रमदान का कार्य किया गया जिसमें डा० निरुपण विद्यालंकार, आचार्य एवं उप कुलपति तथा मान्य कुलपति महोदय ने भी भाग लिया। हर रविवार को अमृत वाटिका मे यज्ञ आदि का कार्यक्रम भी होता रहा है जिसके संयोजक डा० जयदेव वेदालंकार थे।

एम० ए० वेद में इस वर्ष दो छात्र विदेशी हैं जो कि वेद का अध्ययन करने यहां आये हुए हैं। इस वर्ष वेद (एम०ए०) के छात्रों की

१०० रुपये मासिक छात्रवृत्ति, एम०ए० संस्कृत, दर्शन के छात्रों को ४० रुपये मासिक छात्रवृत्ति तथा विद्यालंकार कोर्स को भी ४० रुपये मासिक छात्रवृत्ति एव विद्याविनोद कोर्स के छात्रों को ६० रु० मासिक छात्रवृत्ति प्रदान की गई। अगस्त ८० मे गत वर्ष (१९७९-८०) के एम०ए० वेद, संस्कृत तथा दर्शन के छात्रों को भी छात्रवृत्ति प्रदान की गई। इसके अतिरिक्त एम०ए० सस्कृत द्वितीय वर्ष के ३ छात्रो को राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान से १०००-१००० रु० वार्षिक छात्रवृत्ति प्रदान की गई। जिला हरिजन एवं समाज कल्याण अधिकारी सहारनपुर से वेद कला महाविद्यालय ने एम०ए०, बी०ए० तथा विद्यालंकार के कोर्स के ८ छात्रों को अनुसूचित जाति छात्रवृत्ति प्रदान की गई

वेद महाविद्यालय में पिछले दो वर्षों से लिपिक का पद रिक्त था, इस वर्ष पूर्ण हो गया है। इसके साथ-साथ वेद एवं कला महाविद्यलय मे ८ प्राध्यापकों तथा एक रीडर (दर्शन) का स्थान भी रिक्त था जिनमें से कि निम्न विषयों के प्राध्यापकों को चयनसमिति द्वारा नव-नियुक्तियां हो चुकी है :—

(१) श्री ज्ञानचन्द रावल-प्रवक्ता हिन्दी विभाग।
(२) डॉ० भगवानदेव पाण्डेय-प्रवक्ता हिन्दी विभाग।
(३) डॉ० विजयपाल शास्त्री-प्रवक्ता दर्शन विभाग।
(४) डॉ० काश्मीरसिंह-प्रवक्ता इतिहास विभाग।
(५) डॉ० रामप्रकाश शर्मा-प्रवक्ता संस्कृत विभाग।
(६) श्री मनुदेव-प्रवक्ता वेद विभाग (ये अभी कार्य पर नहीं आ सके)

अभी एक प्रवक्ता अंग्रेजी विभाग तथा एक प्रवक्ता दर्शन विभाग के पद रिक्त हैं तथा एक रीडर दर्शन विभाग का पद भी रिक्त है।

आगे अलग-अलग विभागों का प्रगति विवरण दिया गया है।

-डॉ० गंगाराम
आचार्य एवं उपकुलपति

वेद विभाग

विभाग का सामान्य परिचय :

वेद विभाग वैसे तो गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय की १६०२ मे स्थापना से ही विद्यमान है पर इस रूप मे स्थापना तभी हुई जब कि १६६२ मे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इस विश्वविद्यालय को विश्वविद्यालय के समकक्ष घोषित किया । १६६२ से पूर्व इस विभाग मे पं० दामोदर सातवलेकर, आचार्य अभयदेव, पं० विश्वनाथ जी विद्यामार्तण्ड, पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार एवं आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति कार्य कर चुके है।

इस विभाग में इस समय एक रीडर है, दो लैक्चरर हैं, एक लैक्चरर का अभाव है। उनका चुनाव २२-१२-८० को हो गया है, परन्तु अभी तक वह कार्य पर नही आ सके।

इस विभाग में एम०ए० कोर्सेज निम्न प्रकार से हैं। एम० ए० में आठ प्रश्न-पत्र होते है। प्रत्येक पत्र १०० अंक के होते हैं। छात्र को चार प्रश्न-पत्र एम०ए० प्रथम वर्ष मे लेने होते हैं और चार प्रश्न-पत्र द्वितीय वर्ष में। परन्तु निबन्ध का पत्र द्वितीय वर्ष में लिया जा सकता है। परीक्षा का माध्यम छात्र की इच्छानुसार हिन्दी अथवा संस्कृत होता है। विशेष परिस्थिति में जब कोई छात्र विदेश का हो तो उसकी इच्छा एवं सुविधा की दृष्टि से उसको अंग्रेजी माध्यम की भी स्वीकृति दे दी जाती है 'क' भाग के प्रश्न-पत्र अनिवार्य होते हैं, जिसमें तीन प्रथम वर्ष में तथा तीन द्वितीय वर्ष मे लेने होते हैं। 'ख' भाग में कोई से दो प्रश्न-पत्र लेने होते हैं, एक वर्ष में और एक द्वितीय वर्ष में।

(क) प्रथम प्रश्न-पत्र —ऋग्वेद
द्वितीय प्रश्न-पत्र —यजुर्वेद तथा सामवेद
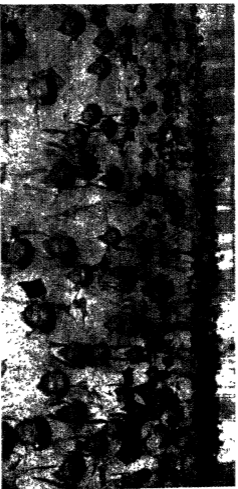
दीक्षान्त समारोह के समय विश्वविद्यालय भवन में दर्शकों एक कक्ष ।

तृतीय प्रश्न-पत्र	–अथर्व वेद
चतुर्थ प्रश्न-पत्र	–निरुक्त, प्रातिशाख्य तथा वैदिक छन्द
पंचम प्रश्न-पत्र	–संहितेतर साहित्य, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद तथा कल्प
षष्ठ प्रश्न-पत्र	वैदिक संस्कृति तथा भाषा विज्ञान

(ख)

सप्तम प्रश्न-पत्र	–निबन्ध
अष्टम प्रश्न-पत्र	–आरण्यक तथा उपनिषद
नवम प्रश्न-पत्र	–ब्राह्मण ग्रन्थ
दशम प्रश्न-पत्र	–सूत्र ग्रन्थ
एकादश प्रश्न-पत्र	–प्रातिशाख्य

ऐसे ही विद्याविनोद एवं वेदालंकार में भी अपने अपने विशेष कोर्सेज हैं। वर्तमान में क्रियात्मक कुछ नहीं हो पाता, क्योंकि उसकी अभी तक विभाग में कोई व्यवस्था नहीं है। न ही उसके लिए उपकरण है और न ही कोई प्रयोगशाला है।

इस न्यूनता को विभाग पर्याप्त समय से अनुभव करता आ रहा है और उसके लिये निवेदन भी करता रहता है परन्तु अभी तक कोई व्यवस्था नहीं हो पाई है।

एक छात्र ने अपना शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किया है। दो लेख प्रकाशित हुए हैं। विभाग के दो उपाध्यायों ने कई सम्मेलनों में भाग लिया है। वेद सम्मेलन भी हुआ। जिसमें पांच विशेष व्याख्यान बाहर से आये हुए विद्वानों के हुए। (१) पं० राजगुरु शर्मा, (२) डा० सत्यदेव भारद्वाज, वेदालंकार, लंदन, (३) इतिहास विशेषज्ञ डा० सत्यकेतु जी विद्यालंकार, (४) पं० धर्मवीर विद्यावाचस्पति, (५) आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति, भूतपूर्व कुलपति गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय। दो प्रतिष्ठित विद्वानों ने आगरा से पधार कर इस विभाग के सभी छात्रों एवं उपाध्यायों से परिचय प्राप्त किया, जिन के नाम हैं : श्री पं० धर्मदेव विद्यावाचस्पति भूतपूर्व उपाध्याय, वेद

विभाग गु० कां० और श्री पं० शंकरदेव जी विद्यालंकार, जिन्होंने विदेशों में भी पर्याप्त कार्य किया है। एक विभागीय छात्र ने सार्वदेशिक आर्य सम्मेलन, लंदन में जाकर भाग लिया। उसके इंगलैण्ड अमेरिका तथा गयाना में भिन्न भिन्न वैदिक विषयों पर अनेक व्याख्यान हुये। विभागों के उपाध्यायों की सात पुस्तकें प्रकाशित हुई। एक पुस्तक जो विभाग की ओर से प्रकाशित हो रही है,वह अभी प्रेस में है। विभागाध्यक्ष को वैदिक साहित्य सेवा के लिए सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया है। विभाग के उपाध्यायों ने कई सम्मेलनों में भाग लिये एवं इनकी अध्यक्षता तथा संयोजन किया ।

२–विभागीय उपाध्याय :–

१–प्रो० रामप्रसाद वेदालंकार (संघढ़ विद्या सभा ट्रस्ट द्वारा सम्मानित एवं पुरस्कृत)
सिद्धान्त भूषण, सिद्धान्त शिरोमणि एम. ए. रीडर अध्यक्ष।

२–डा० भारत भूषण विद्यालंकार, वेदाचार्य एम. ए. पी-एच. डी. प्रवक्ता।

३–डा० सत्यव्रत राजेश विद्यावाचस्पति, शास्त्री, प्रभाकर, सिद्धान्त भूषण, सिद्धान्त शिरोमणि, वेद शिरोमणि एम० ए० पी-एच० डी०, प्रवक्ता।

४–चौथे प्रवक्ता का २२-१२-८१ को चयन हुआ है परन्तु अभी तक कार्य पर नहीं आ पाये हैं।

३–**छात्र** :–एम० ए० प्रथम वर्ष में तीन छात्र हैं जिनमें एक छात्र हॉलैण्ड का है। एम० ए० द्वितीय वर्ष में दो छात्र हैं, जिनमें एक गयाना का है। इसके अतिरिक्त विद्याविनोद एवं विद्यालंकार के छात्र इन से पृथक हैं ।

४–**अनुसन्धान कर्त्ता** :–इस विभाग से अब तक तीन अनुसंधान कर्ताओं ने डाक्टेट की उपाधि प्राप्त की है। इनके नाम हैं—

१–डा० दिलीप वेदालंकार–"वैदिक मानववाद" विषय लेकर डाक्टर हुए।

२–डा० विश्वपाल वेदालंकार ने "वेदों में आई हुई संख्यायें" विषय पर।

३–डा० रामावतार शर्मा ने "वैदिक संहिताओं में कृषि एवं पशुपालन"।

४ अनुसंधानः–

अनुसंधान कर्ता श्री योगेन्द्र पुरुषार्थी ने "वैदिक संहिताओं में योगतत्व" विषय पर अपना शोध प्रबन्ध प्रस्तुत किया। यह शोध प्रबन्ध डा० वाचस्पति उपाध्याय दिल्ली विश्वविद्यालय एवं वेद विभाग के अध्यक्ष प्रो० रामप्रसाद के निर्देशन में सम्पन्न हुआ।

विभाग के अन्य दोनों प्रवक्ताओं के निर्देशन में संस्कृत विभाग से पी-एच० डी० करने वाले छात्रों का निर्देशन कार्य हो रहा है।

१–श्रीमति सुधा त्यागी–"मुनि चरितामृत-एक अध्ययन" पर श्री डा० सत्यव्रत प्रवक्ता के निर्देशन में कार्य कर रही है।

२–श्री रविदत्त जी शास्त्री एम० ए० "गृह्यसूत्रों के परिप्रेक्ष्य में संस्कारविधि का अध्ययन" विषय पर डा० सत्यव्रत जी के निर्देशम में कार्य कर रहे हैं।

३–श्री भगतसिंह जी "नारद बृहस्पति तथा कात्यायन स्मृतियों का तुलनात्मक अध्ययन" विषय लेकर डा० भारत भूषण के निर्देशन मे शोध कर रहे हैं।

५–विभागीय उपाध्यायों का लेखन एवं वक्तृत्व सम्बन्धी कार्य :–

१– प्रो० रामप्रसाद का "वेदप्रकाश" पत्रिका में "वैदिक आदर्श परिवार" लेख प्रकाशित हुआ है।

१९८०-८१ में विभागाध्यक्ष रामप्रसाद की प्रकाशित पुस्तकें:—
क-अनन्त की ओर, ख-प्रभातवन्दन, ग-वैदिक गृहस्थाश्रम (सुखी गृहस्थ), घ-वैदिक पुष्पांजलि, ङ-वेदोपदेश भाग-१, च-वैदिक पुष्पांजलि भाग-२, छ-शयन विनय, जो वेद विभाग की ओर से प्रकाशित हो रही है, अभी प्रेस में है।

इनके अतिरिक्त भी वैदिक साहित्य सम्बन्धी १९७९-८० मे ११ पुस्तके तथा लेख प्रकाशित हुए, जैसे (क) प्रार्थना सुमन, भाग-१, (ख) प्रार्थना सुमन, भाग-२, (ग) विनय सुमन, भाग-१, (घ) विनय सुमन, भाग-२, (ङ) प्रार्थना प्रसून, भाग-१, (च) प्रार्थना प्रदीप, भाग-१, (छ) महान विदुर के महान उपदेश, (ज) विदुर जी की दृष्टि में बुद्धिमान कौन ? भाग-१, (झ) कौन चैन की नींद नही सो सकते और उसके उपाय, (ट) वेद सुधा, भाग-१, (ठ) वेद सुधा, भाग-२, तथा अन्य तीन चार लेख भी प्रकाशित हुये जैसे पंजाब केसरी, लाला लाजपतराय इत्यादि। इस प्रकार १९८१ अप्रैल तक कुल १७ पुस्तके प्रकाशित हुई।

वैदिक साहित्य के माध्यम से इस समाज सेवा के आधार पर लेखक को ११-४-८१ में "श्री गोवर्धन शास्त्री स्मृति पुरस्कार से संवद्ध विद्या सभा ट्रस्ट जयपुर द्वारा विशेष रूप सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया जो इस विभाग के लिये बड़े गौरव की बात है।

२९-३-८० में गुड़गांव में नशाबन्दी सम्मेलन की अध्यक्षता की, लखीम पुर खीरी में आर्य इन्टर कालेज के प्रांगण में आर्यसमाज की ओर से एक सार्वजनिक सभा में "राष्ट्रीय एकता सम्मेलन" की १७-११-८० को अध्यक्षता की। चन्दौसी जि० मुरादाबाद में २३-८-८० को आर्य कन्या विद्यालय में छात्राओं के तथा नारी के अभ्युत्थान में वेद का महत्व विषय पर व्याख्यान दिया। अनेक वेद सम्मेलनों में अपने विचार प्रस्तुत किये तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में वेद सम्मेलन का आयोजन किया।

इसके अतिरिक्त "वैदिक त्रेतवाद" पुस्तक लिखी है। जो अभी अप्रकाशित है। छान्दोग्योपनिषद् का विवेचनात्मक अध्ययन

विषय पर भी पर्याप्त कार्य किया है, जो अभी भी अप्रकाशित ही है। अष्टांग योग, वेदाध्ययन, वैदिक रश्मियां आदि कई पुस्तकें लिखी जा रही है।

इस कार्य के अतिरिक्त भी वैदिक साहित्य के प्रचार एवं प्रसार के लिए वेद एवं वैदिक साहित्य सम्बन्धी कक्षायें भी प्राय: घर पर ली जाती रही है, जिसमें प्रमुख जिज्ञासु महानुभाव उपस्थित होकर लाभ उठाते रहे, जैसे श्रीमती विद्यावती जी, दक्षिणी अफ्रीका, मान्या राज-कुमारी जी फिजी, मान्या पुष्पावती मोंगा उपप्रधाना आ०वा० आश्रम ज्वालापुर, पुस्तकालयाध्यक्ष आ० वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर तथा सुयोग्य ब्रह्मचारी ज्ञानेश्वर आदि आदि।

२- डा० भारतभूषण को इसी वर्ष डाक्टरेक्ट की उपाधि से विभूषित किया गया है जो सामाजिक क्षेत्र मे वैदिक साहित्य के प्रचार और प्रसार मे पर्याप्त योगदान करते रहते है। इन्होंने सायण और महिधर के वेद भाष्यों में उन स्थलों की खोज की है, जो महर्षि दया-नन्द द्वारा प्रतिपादित वेद भाष्य शैली से मेल खाते हैं।

३- डा० सत्यव्रत 'राजेश' को भी इसी डाक्टरेट की उपाधि से विभूषित किया गया है। दिसम्बर १९८० में 'ऋग्वेद में कृषि विद्या' विषय पर एक लेख गुरुकुल पत्रिका में प्रकाशित हुआ।

वैदिक ईश्वरवाद पुस्तक भी आपने लिखी है जो कि अभी तक प्रकाशित नही हुई है।

इसके अतिरिक्त आप भी अपने घर पर वैदिक साहित्य के पढ़ाने की विषय की कक्षायें लेते रहते हैं, जिनमें माता विद्यावती दक्षिण अफ्रीका से और मान्या माता राजकुमारी जी, फिजी आदि आदि महानुभाव लाभ उठा रहे हैं। अवकाश मिलने पर आप बाहर भी वैदिक विषय पर अपने सारगर्भित विचारो को प्रकाशित करके वैदिक साहित्य के प्रचार एवं प्रसार में योग देते रहते हैं।

२-विभागीय छात्रों का कार्य :- छात्र श्री धनीराम एवं सत्य प्रकाश जी ने अपने विभागाध्यक्ष के संरक्षण में माननीय कुलपति श्री

बलभद्र कुमार जी हूजा के नेतृत्व मे पुराने गुरुकुल कांगड़ी का भ्रमण किया। वहां कांगड़ी ग्राम में ब्र० सत्यप्रकाश जी का बड़ा प्रेरणाप्रद भाषण हुआ।

माननीय सत्यदेव भारद्वाज वेदालंकार के विशेष प्रयत्नों से जो लदन में आर्यमहासम्मेलन हुआ, उसमें भी सत्यप्रकाश जी सम्मिलित हुए। इंग्लैन्ड में इन्होंने कही कही वैदिक साहित्य के सम्बन्ध मे व्याख्यान दिये। इसके उपरान्त ये अमेरिका गये, वहां कनाडा के टोरान्टो सिटी मे वैदिक विषयों को लेकर इन्होंने कई व्याख्यान दिये जिनके आधार पर आपको बहुत मान सम्मान मिला। उनमे प्रमुख विषय जिनमें आपने व्याख्यान दिये, ये थे।

१–आत्मा परमात्मा विवेचन, २–पिण्ड और ब्रह्माण्ड, ३–वैदिक गृहस्थ का स्वरुप, ४–मानव जीवन के अभ्युत्थान में वेद का महत्व आदि आदि। ऐसे ही गयाना में वैदिक साहित्य एवं योग सम्बन्धी अनेकों व्याख्यान हुए। विभाग के अन्य छात्र भी अपनी रुचि एवं योग्यता के अनुसार समय मिलने पर समाज की सेवा करते रहे हैं।

६–व्याख्यान एवं विभागों को देखने आए हुए महानुभावों का नाम :–

१–इस वर्ष ११.४.८१ को वेद विभाग की ओर से विभागाध्यक्ष प्रो० रामप्रसाद के संयोजन में वेद सम्मेलन किया गया जिसमें विभाग के तीन छात्रों ने भी अपने वेद सम्बन्धी विचार प्रस्तुत किये जिनके नाम क्रमशः निम्मलिखित है : –

१–ब्र० इन्द्रदेव एम.ए. २–श्री देवनारायण जी एम.ए. प्रथम वर्ष। ३–ब्र० सत्यप्रकाश जी एम.ए. द्वितीय वर्ष।

वेद सम्मेलन में उद्घाटन भाषण श्री पं० राजगुरु शर्मा का हुआ, जिसमें उन्होंने वेदों का मानवकल्याण के लिए उपयोगिता दर्शाई। दूसरा व्याख्यान पं० धर्मवीर विद्यावाचस्पति का हुआ। तृतीय व्याख्यान श्री डा० सत्यदेव भारद्वाज वेदालंकार का "वेदों में

क्या विषय है" नामक विषय पर हुआ। इसके अनन्तर प्रसिद्ध इतिहासकार डा० सत्यकेतु विद्यालंकार ने "वेदों का वास्तविक अर्थ कैसा हो सकता है" इस विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

अन्त में इस सम्मेलन के अध्यक्ष माननीय आचार्य प्रियव्रत वेद-वाचस्पति भू०पू० कुलपति गुरुकुल कागडी का वेदों मे इतिहास है या नहीं" इस विषय पर बहुत ही विद्वातापूर्ण व्याख्यान हुआ।

इस वर्ष वेदज्ञ विद्वान् माननीय पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति भू०पू०प्रवक्ता वेद विभाग तथा श्री पं०शकरदेव जी गुरुकुल पधारे। सभी उपाध्यायों एवं वेद के छात्रों से उनका परिचय कराया गया। दोनों विद्वान् बड़े ही प्रसन्न हुए। विशेषकर गयाना एवं हालैण्ड के छात्रों को देखकर। समय के अत्यन्त संक्षिप्त होने पर भी उनमें से माननीय श्री पं० धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति ने विभाग को देखर बड़ी प्रसन्नता अभिव्यक्त की। उपाध्यायों को साधुवाद देखकर उनका उत्साहवर्द्धन किया तथा आशावादी भावों से ओत-प्रोत होकर छात्रों सहित सबको आर्शीवाद दिया।

विभाग में एम०ए० वेद के छात्रों को १००रु० प्रतिमास के हिसाब से छात्रवृत्ति मिली। वेदालंकार एवं विद्याविनोद (विशेष वेद) के छात्रों को ६० रु० प्रतिमास के हिसाब से छात्रवृत्ति मिली।

८- लेख आदि-वेदप्रकाश" पत्रिका मे प्रो० रामप्रसाद अध्यक्ष वेद विभाग का "वैदिक आदर्श परिवार,, लेख प्रकाशित हुआ इसके अतिरिक्त विभाग की ओर से इन्ही की लिखित "शयन विनय,, पुस्तक के प्रकाशनार्थ सहयोग प्राप्त हुआ। गुरुकुल पत्रिका के दिसम्बर ८० के अक मे डा० सत्यव्रत राजेश का "ऋग्वेद मे कृषि विद्या,, लेख प्रकाशित हुआ।

९-ऋषि निर्वाण भवन-भिनाय की कोठी, अजमेर से प्रकाशित होने वाली पत्रिका में क्रमश: लेख आदि प्रकाशित होते रहते हैं।

१०-नई नियुक्ति २२-१२-८० को इन्टरव्यू हुआ जिसमे आचार्य मनुदेव शास्त्री एम. ए. का चयन हुआ लैक्चरर के रूप मे,

परन्तु अभी उन्हें कार्य पर नियुक्त नहीं किया जा सका ।

११–कुछ विभागीय अन्य आवश्यक बातें :–

कोर्स में कुछ परिवर्तन आवश्यक अनुभव किया जा रहा है । उसमें कुछ कर्मकाण्ड सम्बन्धी कोर्स रखने का विचार है ।

वेद किस प्रकार सरल सुबोध रूप में प्रस्तुत किया जाये जिस से कि सामान्य जिज्ञासु महानुभावों को भी लाभ हो सके, इसके लिए भी प्रयत्न जारी है ।

वेद विभाग में प्रयोगात्मक दृष्टि से एक प्रयोगशाला एवं उस में उपयोगी आवश्यक उपकरणों तथा तत्सम्बन्धी साहित्य की आवश्यकता को भी अनुभव किया जा रहा है ।

यदि इस सम्बन्ध में यथोचित आर्थिक सहयोग विभाग को मिल गया तो शीघ्र ही इस कमी को भी पूर्ण कर लिया जायेगा ।

विभागीय छात्र अपने उपाध्यायों के संरक्षण में सरस्वती यात्राओं मे जा-जा कर अपने विषय से सम्बन्धित ज्ञानवर्द्धन करना चाहते हैं, यदि सहयोग मिला तो इस ओर ध्यान दिया जायेगा ।

राम प्रसाद
वेदालंकार, एम. ए., रीडर, अध्यक्ष

—●●—

संस्कृत विभाग

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने गुरुकुल को जब १९६३ ई० मे डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी का दर्जा प्रदान किया तो स्नातकोत्तर कक्षाओं में संस्कृत विभाग खोला गया। इस विभाग में पं० वागीश्वर जी विद्यालंकार एवं डा० रामनाथ वेदालंकार जैसे विद्वान् व्यक्ति कार्य कर चुके हैं। इनके साथ-साथ डा० बुद्धदेव शर्मा भी एक विद्वान् प्रवक्ता इस विभाग में रह चुके हैं जिनकी कि नवम्बर ७८ मे आकस्मिक दुर्घटना से मृत्यु हो गयी है। वर्तमान समय में इस विभाग में एक रीडर तथा ३ प्राध्यापक कार्यरत है—

(१) डा० निरूपण विद्यालंकार-रीडर (एम०ए०, पी-एच०डी०)।

(२) डा० निगम शर्मा-प्रवक्ता (एम० ए०, पी-एच० डी०)।

(३) प्रो० वेदप्रकाश जी शास्त्री-प्रवक्ता (एम० ए०)।

(४) डा० रामप्रकाश शर्मा-प्रवक्ता (एम० ए०, पी-एच० डी०)।

पाठ्यक्रम एम० ए० प्रथम वर्ष–

(१) वैदिक साहित्य
(२) गद्य, पद्य तथा नाटक
(३) व्याकरण तथा भाषा विज्ञान
(४) काव्य शास्त्र

पाठ्यक्रम एम०ए० द्वितीय वर्ष–

(१) भारतीय दर्शन
(२) निबन्ध एवं अनुवाद
(३) व्याकरण वर्ग
(४) व्याकरण

एम०ए०, अलंकार तथा विद्याविनोद के छात्र संख्या--

एम० ए० प्रथम वर्ष--१०
एम० ए० द्वितीय वर्ष--६
विद्यालंकार प्रथम--१८
विद्याविनोद प्रथम--३
विद्याविनोद द्वितीय--१

एम० ए० द्वितीय वर्ष में निम्न छात्रों को राष्ट्रीय संस्कृत सस्थान से १०००-१०००रु० वार्षिक छात्र-वृत्ति प्राप्त हुई है।

(१) श्री भरत कुमार शास्त्री, (२) श्री शिशुपाल शास्त्री, (३) श्री विजयपाल आर्य।

गत वर्षों की अपेक्षा इस वर्ष छात्रों की संख्या काफी अधिक रही है। संस्कृत विभाग के प्राध्यापक डा० निगम शर्मा गुरुकुल मान्यता समिति के सदस्य होने के नाते गुरुकुल करतारपुर तथा कन्या गुरुकुल पाढ़ा भी गये। उक्त दोनों गुरुकुलों को इस विश्व-विद्यालय से मान्यता प्रदान की गई है। डा० निरूपण विद्यालकार भी कन्या गुरुकुल पाढ़ा निरीक्षणार्थ हेतु गये। इस विभाग के सभी शिक्षक वर्ग देववन्द मे आर्य समाज सम्मेलन में भाग लेने गये। डा० निरूपण विद्यालंकार ज्वालापुर महाविद्यालय के दीक्षान्त समारोह मे शिक्षा तथा आर्य समाज सम्मेलन मे भाग लेने गये।

संस्कृत विभाग के प्रवक्ता डा० रामप्रकाश शर्मा ने विद्या-मन्दिर बी. एच. ई. एल. में आयोजित अन्तर्विद्यालयीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में निर्णायक पद पर कार्य किया। भारतोदय पत्रिका में "महाभाष्य के ज्ञापकों का समीक्षात्मक अध्ययन" शीर्षक से लेखमाला प्रकाशित हुई। इसी वर्ष दीक्षान्त समारोह के अवसर पर इनको गु. कां. वि. वि. ने न्यास और पदमञ्जरी "के विवरणों का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर पी-एच.डी.उपाधि से विभूषित किया एवं दीक्षान्त समारोह में नवस्नातक पी-एच.डी के छात्रों की ओर से विदाई उत्तर में सारगर्भित भाषण में कहा कि १७२ विश्वविद्यालय के कुलपतियों की अपेक्षा गु. कां. वि. वि. के कुलपति की महत्ता पृथक् है।

दर्शन विभाग

गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना से ही दर्शन एवं पाश्चात्यदर्शन का अध्ययन अनिवार्य रहा है । दर्शन के उल्लेखनीय उपाध्यायों मे पं० सुखदेव जी विद्यावाचस्पति का नाम प्रमुख है। १९६२ मे जब गुरुकुल को विश्वविद्यालय के समकक्ष मान्यता प्राप्त हुई तो एक रीडर और दो लैक्चरर के पद स्वीकृत हुए ! इस विभाग के प्रथम अध्यक्ष पं० सुखदेव वाचस्पति नियुक्त हुए । वर्तमान अध्यापकगण निम्न प्रकार है :-

प्राध्यापकगण–डा० जयदेव वेदालंकार–१

२–प्रो० विजयपाल शास्त्री ।

छात्र संख्या–एम०ए० प्रथम खण्ड–४

,, ,, द्वितीय खण्ड–४

अलंकार प्रथम बर्ष –७

,, द्वितीय वर्ष –१

विद्याविनोद प्रथम खण्ड –३

विद्याविनोद द्वितीय खण्ड –१

प्राध्यापकगण की योग्यतायें :-

१–डा० जयदेव वेदालंकार-वेदालंकार, दर्शनाचार्य, एम० ए० (मनोविज्ञान) एम० ए० (दर्शन) पी-एच० डी०, विषय-(उपनिषदो में यथार्थवादी दर्शन, महर्षि दयानन्द की दृष्टि से)

रचनायें:- १-महर्षि दयानन्द की विश्व दर्शन को देन । (१५० पृष्ठ ३०×८०)

२-उपनिषदों का तत्व ज्ञान (२६५ पृष्ठ १८×८०)

अन्य लेख— प्रकाशित

१-गीता और काण्ट	गुरुकुल पत्रिका-दयानन्द संदेश
२-वैदिक वाङ्मय मे शिक्षा का स्वरूप	,, ,, ,,
३-वैदिक साहित्य मे गोरक्षा या गोहत्या	,, ,, ,,
४-वेदों में वैज्ञानिक तत्व	आर्य भट्ट विज्ञान पत्रिका
५-वैदिक योग मार्ग	,, ,,

आल इण्डिया फिलोसोफिकल काग्रेस मे चार बार सक्रिय भाग लिया है।

अखिल भारतीय दर्शन परिषद् मे दो बार सक्रिय भाग लिया है।

२-प्रो०विजयपाल शास्त्री-

योग्यतायें-(क)शास्त्री-संस्कृत बनारस विश्वविद्यालय ।

(ख)एम०ए०(दर्शन शास्त्र) गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

,, ,, (संस्कृत साहित्य) मेरठ विश्वविद्यालय।

,, ,, (हिन्दी साहित्य) ,, ,, ,,

डा० अभेदानन्द, डा० ओंकारानन्द एवं श्री ओमप्रकाश अब गुरुकुल सेवा मे नही हैं। इस समय डा० जयदेव वेदालंकार अध्यक्ष का कार्य कर रहे है।

विभागीय गतिविधि-

विश्वविद्यालय मे होने वाले आचार्य रामदेव जन्मशताब्दी समारोह, जो कि वर्ष भर चले, वार्षिक उत्सव तथा अन्य समारोहों का सफल संचालन डा० जयदेव वेदालकार ने किया। आल इण्डिया फिलोसोफिकल काग्रेस, भागलपुर (बिहार) समारोह मे डा० जयदेव ने सक्रिय भाग लिया है। कम से कम २५ सभाओ को उक्त डा० जयदेव ने सम्बोधित किया। इसी वर्ष "उपनिषदो का तत्वज्ञान" नामक डा० जयदेव वेदालंकार का शोध ग्रन्थ प्रकाशित हुआ। यह अत्यन्त गम्भीर शोध ग्रन्थ है।

डा० जयदेव
लेक्चरर-अध्यक्ष

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्त्व विभाग

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने गुरुकुल को जब १९६३ ई० में "डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी" का दर्जा प्रदान किया तो स्नातकोत्तर कक्षाओं मे प्राचीन भारतीय इतिहास तथा संस्कृति विभाग भी खोला गया। वर्तमान समय मे इसमें एक रीडर एवं अध्यक्ष तथा तीन लैक्चरर कार्य कर रहे है।

पाठ्यक्रम एम०ए० प्रथम वर्ष–

प्रथम प्रश्न-पत्र	:–प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सास्कृतिक इतिहास। (आरम्भ से मौर्य काल तक)
द्वितीय ,, ,,	:–प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास। (शुंग काल से हर्षवर्द्धन तक)
तृतीय प्रश्न-पत्र	:–प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास। (सातवी शताब्दी से १२ वी शताब्दी तक)
चतुर्थ प्रश्न-पत्र	:–प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिन्तन और प्रशासन। (प्रारम्भ से बारहवीं शताब्दी तक)

एम०ए० अन्तिम वर्ष–

पंचम प्रश्न-पत्र	:–प्राचीन भारतीय लिपियां तथा मुद्राशास्त्र अथवा प्राचीन भारतीय सामाजिक तथा वैधानिक संस्थाये।
षष्ठ प्रश्न-पत्र	:–प्राचीन मूर्ति तथा वास्तुकला का इतिहास। (आरम्भ से १२०० ई० तक)

अथवा-भारतीय दर्शन एवं धर्म (आरम्भ से १२०० ई० तक)

सप्तम प्रश्न-पत्र :-भारतीय पुरातत्व अथवा प्राचीन भारतीय ऐतिहासिक भूगोल।

अष्टम प्रश्न-पत्र :-मध्यएशिया, चीन और तिब्बत से भारत के सांस्कृतिक संपर्क (प्रारम्भ से १२ वी शताब्दी तक) अथवा निबन्ध।

विभाग में कार्यरत अध्यापक–

१- डा. विनोदचन्द्र सिन्हा एम. ए., पी-एच. डी., रीडर-अध्यक्ष।
२- श्री जबर सिंह सेंगर एम. ए. लैक्चरर।
३- डा.श्यामनारायण सिंह एम. ए., पी-एच. डी. लैक्चरर।
४- डा.काश्मीर सिंह भिण्डर एम. ए., पी-एच. डी., लैक्चरर।
५- श्री सुखबीर सिंह एम. ए., सहायक क्यूरेटर।

स्नातक और स्नातकोत्तर कक्षाओं में विद्यार्थियों की संख्या–

	प्रथम वर्ष	अन्तिम वर्ष
विद्यालंकार	१३	६
एम० ए०	१२	८

शोध कार्य और प्रकाशन, विभाग के अध्यापकों द्वारा–

डा० श्यामनारायण सिंह ने "अहिच्छत्र का इतिहास" नामक विषय पर अपना शोध कार्य पूर्ण किया और पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की। डा० काश्मीर सिंह भिण्डर "प्राचीन भारत में धर्म-निरपेक्षता" नामक विषय पर पी-एच० डी० की उपाधि पहले ही अर्जित कर चुके हैं। डा. विनोदचन्द्र सिन्हा ने शोधकार्य "शुंग-कालीन भारत" पर किया है। डा. सिन्हा की दो पुस्तकें "हिन्दुइज्म एण्ड सिम्बल वर्शिप" तथा "ग्लोरियस आर्ट आफ द शुंग एज" इस समय प्रेस में हैं। इससे पूर्व उनकी आठ पुस्तकें और भी प्रकाशित हो चुकी हैं। डा० सिन्हा के लगभग तीस शोध लेख तथा अन्य लेख प्रकाशित

हो चुके हैं । डा० सिन्हा ने मेरठ विश्वविद्यालय में आयोजित सेमीनार में २६ से २८ सितम्बर ८० तक भाग लिया।

विभाग में पूर्ण शोध कार्य

अब तक विभाग में निम्न विषयो पर शोध कार्य पूर्ण किया जा चुका है ।

१–शूरसेन जनपद का इतिहास–	किशन सिह सैनी
२– ,, ,,	डा० प्यारे लाल
३– ,, ,,	डा० ज्ञानेन्द्र पाण्डेय
४–प्राचीन भारत मे धर्मनिरपेक्षता	काश्मीर सिह भिण्डर
५–प्राचीन भारत में जनमत	डा० विजयेन्द्र
६–अहिच्छत्र का इतिहास	डा० श्यामनारायण सिह
७–प्राचीन भारत में सामन्तवाद	डा० विशालमणि बहुगुणा
८–प्राचीन भारत में फौजदारी का विकास	डा०राजपाल सिह
९–हरियाणा के प्राचीन गणराज्य	डा० मांगेराम

विभाग द्वारा आयोजित व्याख्यान--

इस वर्ष प्राचीन भारतीय इतिहास, सस्कृति तथा पुरातत्त्व विभाग मे कई व्याख्यान आयोजित किये गये। दिनाक १५-८-८० को "असम समस्या" पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया । वार्ताकार थे अपने विश्वविद्यालय के कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा। दिनांक २०-९-८० को "तन्त्र" पर इजराइल के प्राच्य विद्वान् माइकेल केडम का रोचक भाषण हुआ। दिनांक १९-१०-८० को संग्रहालय में एक मनोरंजक "सांस्कृतिक कार्यक्रम" का आयोजन किया गया। गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर दिनांक ११-४-८१ को संग्रहालय मे एक भव्य प्रदर्शनी का आयोजन किया गया । प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रसिद्ध आर्य सन्यासी श्री ओमानन्द सरस्वती जी ने किया ।

सरस्वती यात्रा--

इस वर्ष १२ मार्च ८१ से १९ मार्च ८१ तक विभाग के विद्यार्थी, विभाग अध्यक्ष डा० विनोदचन्द्र सिन्हा तथा प्रवक्ता श्री

श्यामनारायण सिंह के संरक्षण में सरस्वती यात्रा पर निकले । इस यात्रा में मथुरा, वृन्दावन, आगरा, फतेहपुर सीकरी, भरतपुर, जयपुर अजमेर, पुष्कर तथा दिल्ली के महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक स्थान देखे गये। इससे विद्यार्थियों को अत्यधिक ज्ञान हुआ। इस सरस्वती यात्रा की प्रमुख विशेषता यह रही कि स्थान-स्थान पर वैदिक यज्ञ की ज्योति प्रज्वलित की गई और वैदिक साहित्य नि शुल्क वितरित किया गया।

डा० विनोदचन्द्र सिन्हा
रीडर-अध्यक्ष

—●●—

हिन्दी साहित्य विभाग

गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना से ही आर्यभाषा के विषय के नाम से हिन्दी विषय पढ़ाया जाता रहा है। इस विभाग मे पूर्व में कार्यरत महानुभावों में पं०पद्मसिंह शर्मा और पं० वागीश्वर विद्यालंकार के नाम उल्लेखनीय है। १६६२ में विश्वविद्यालय के समकक्ष मान्यता मिलने पर १६६३ से एम. ए. कक्षायें भी प्रारम्भ की गई। अब इस विभाग में एक रीडर तथा तीन प्रवक्ता हैं।

१–डा. अम्बिका प्रसाद वाजपेयी–एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट्. अध्यक्ष–रीडर।

२–डा. विष्णुदत्त राकेश–एम.ए., पी-एच.डी., डी. लिट्., प्रवक्ता।

३–श्री ज्ञानचन्द्र रावल–एम.ए., प्रवक्ता।

४–डा. भगवान देव पाण्डेय–एम.ए., पी-एच.डी. प्रवक्ता।

इस विभाग में एम. ए., बी. ए., अलंकार, तथा विद्या-विनोद में हिन्दी अध्यापन की व्यवस्था है। इस वर्ष बाहर के दो विद्वानों के व्याख्यान हुये जो क्रमशः लखनऊ तथा दिल्ली विश्वविद्यालयो में हिन्दी विभागों में प्रो० एवं अध्यक्ष पदों पर कार्य कर रहे हैं। उनके नाम हैं–डा० केसरी नारायण जी शुक्ल, डी०लिट्०तथा डा. उदयभानु सिंह एम. ए. डी० लिट्०।

छात्र संख्या–

"एम. ए. प्रथम वर्ष – ६
,, ,, द्वितीय वर्ष–६
— — — — — — — —
१५
— — — — — — — —

निर्देशन कार्य

निर्देशक	विषय जिन पर पी-एच.डी. उपाधि दी गई
डा अम्बिका प्रसाद बाजपेयी	१-तुलसी की रामचरितमानसेतर रचनाओं का आलोचनात्मक अध्ययन । २-सेनापति और उनका काव्य । ३-महाकाव्य की दृष्टि से कालिदास और जय-शंकर प्रसाद का तुलनात्मक अध्ययन ।
डा.विष्णुदत्त राकेश ।	१-आचार्य पद्मसिंह शर्मा-व्यक्तित्व और कृतियां २-मौर्य एवं शुंगकाल सबंधी हिन्दी उपन्यासों का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन । ३-स्वामी सत्यदेव परिव्राजकः व्यक्तित्व एवं साहित्यिक कृतित्व ।

श्री ज्ञानचन्द्र रावल एवं डा० भगवानदेव पाण्डेय नये प्रवक्ता हैं ।

हिन्दी विभाग के प्रवक्ता डा० विष्णुदत्त राकेश ने महाकवि श्री सुमित्रानन्दन पन्त के महाकाव्य सत्यकाम पर समीक्षा-ग्रन्थ प्रकाशित कराया । इस ग्रन्थ की प्रस्तावना स्वयं महाकवि पन्त तथा डा० बच्चन ने लिखी है । हिन्दी के सुप्रसिद्ध भाषाशास्त्री आचार्य पण्डित किशोरीदास वाजपेयी पर 'आचार्य वाजपेयी और हिन्दी शब्द शास्त्र नामक ग्रन्थ का सम्पादन तथा यतीन्द्र तिलक ग्रन्थ का सम्पादन किया । हरियाणा के प्रसिद्ध सन्त गरीब दास की वाणी पर भी उन्होंने समीक्षा ग्रन्थ लिखा । आकाशवाणी नजीबाबाद से हिन्दी साहित्य के विविध पक्षों पर उनकी मौलिक वार्तायें प्रसारित हुईं । जैन स्नातक महाविद्यालय खतौली में आयोजित प्रेमचन्द शताब्दी समारोह में अध्यक्षीय भाषण दिया तथा सनातन धर्म स्नातकोत्तर महाविद्यालय मुजफ्फर नगर में प्रसिद्ध भाषाविज्ञानी डा० अम्बा-प्रसाद सुमन के अभिनन्दन समारोह में कर्तृत्व तथा हिन्दी सेवा पर

व्याख्यान दिया। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय मे आयोजित सूर पचशती समारोह में सूर के उपासना भाव पर व्याख्यान दिया तथा उत्तर प्रदेश सचिवालय हिन्दी परिषद् तथा उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी के सयुक्त तत्त्वावधान मे आयोजित बाल्मिकी जयन्ती पर मुख्य अतिथि के पद से व्याख्यान दिया।

इस विभाग की ओर से 'प्रह्लाद' नामक त्रैमासिक छात्र-शोध-पत्रिका भी निकाली गई। इसकी नवीनता यह थी कि इसमें वैदिक विचारधारा को प्रमुखता दी गई।

डा० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी
रीडर-अध्यक्ष

--●●--

मनोविज्ञान विभाग

मनोविज्ञान विभाग की स्थापना १९५८में हुई। उस समय यहां पर स्नातक स्तर की कक्षाये चलती थी। १९६३ में अन्य विषयो के साथ इसमें भी स्नातकोत्तर कक्षायें प्रारम्भ की गई, तब से आज तक विभाग में ये कक्षायें सफलता पूर्वक चल रही हैं।

इस विभाग में एक रीडर, तीन लैक्चरर, एक प्रयोगशाला सहायक तथा एक भृत्य है। विभाग मे विद्याविनोद से लेकर एम०ए० तक की कक्षायें चलती हैं जिनमें अच्छी संख्या में छात्र पढ़ते हैं। सभी कक्षाओं में क्रियात्मक कार्य आवश्यक रूप से कराया जाता है। जो विद्यार्थी व्यक्तिगत छात्र के रूप मे बैठना चाहता है उसको छुट्टियों में प्रयोगशाला खोलकर क्रियात्मक कार्य करने की सुविधा दी जाती है। इस वर्ष एम०ए० (प्रथम वर्ष) में सर्वाधिक छात्र पंजीकृत हुये और रेगुलर एवं प्राइवेट रूप से छात्रों की संख्या २० थी। विभाग में आर्टस् कालेज एवं साइंस कालेज दोनों स्थानों से विद्यार्थी आते हैं और उन्हे एम० ए० तथा एम० एस-सी० की डिग्री प्रदान की जाती है।

इस वर्ष विभाग की ओर से एक सरस्वती यात्रा का आयोजन किया गया जिसके अन्तर्गत छात्रों ने मथुरा, वृन्दाबन, आगरा, भरतपुर अजमेर एवं दिल्ली के विशिष्ट स्थान देखे। मनोविज्ञान के छात्रों को मानसिक रोगों से ग्रस्त मरीजों को किस चिकित्सा पद्धति से ठीक किया जाता है, इसे विशेष रूप से आगरा एवं जयपुर में दिखाया गया, और वहां इस विषय पर लैक्चरर आदि की भी व्यवस्था की गई। इसमें विद्यार्थी विशेष रूप से लाभान्वित हुये।

इस वर्ष विभाग को यू० जी० सी० के उपसचिव श्री बालाकृष्णन् जी ने देखा एवं उसकी प्रशंसा की। विभाग के अन्दर डा० हर गोपाल सिंह ने आकाशवाणी नजीबाबाद से दो बार मनोविज्ञान पर भाषण दिये तथा आगरा में संयोजित एक सेमीनार में स्वर

विज्ञान पर विद्वता पूर्ण लेख पढ़ा। उनका एक लेख आयुर्वेद महा-सम्मेलन में छपा तथा तीन लेख वैदिक पथ में छपे । इसी प्रकार कल्याण में एक लेख तथा सचित्र आयुर्वेद मे दो लेख, अंग्रेजी साप्ता-हिक में एक लेख तथा एक लेख जर्नल आफ मेडीसनल प्लांट एवं मेडीसन में छपा। वे वैदिक पथ का संपादन भी करते हैं ।

विभाग में इस वर्ष बोर्ड आफ स्टडीज की मीटिंग निकट भविष्य में करने की योजना है जिससे कि पाठ्यक्रम को आधुनिकतम रूप दिया जा सके।

ओमप्रकाश मिश्र
रीडर-अध्यक्ष

—●●—

गणित विभाग

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने गुरुकुल को जब १६६३ ई० में डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी का दर्जा दिया तो स्नातकोत्तर कक्षाओं में गणित विभाग भी खोला गया। वर्तमान समय में इस विभाग में एक रीडर, दो प्रवक्ता कार्यरत है :-

(१) प्रो० विजयपाल सिंह रीडर-अध्यक्ष (गणित) एम० एस-सी०
(२) प्रो० वीरेन्द्र अरोडा-प्रवक्ता (एम० एस-सी०)
(३) प्रो० महीपाल सिंह-प्रवक्ता (एम० एस-सी)

पाठ्यक्रम एम० ए० प्रथम वर्ष-

[1] Vector Calculus
[2] Calculus and Diff. Equ.
[3] Co-ordinate Geometry of three dimensions.
[4] Statics and Dynamics.

एम०ए० द्वितीय वर्ष-

[1] Complex Variables
[2] Topology
[3] Operational Research and Theory of Que.
[4] Statistics.

विभाग में छात्र संख्या-

एम० ए० प्रथम वर्ष–१०
एम० ए० द्वितीय वर्ष–४
विद्यालंकार– १

गत वर्षों की अपेक्षा इस वर्ष विभाग में छात्रों की संख्या अच्छी रही। इस वर्ष विभाग के प्रोफेसर श्री वीरेन्द्र अरोड़ा दो गुरुकुलों को मान्यता दिलाने हेतु गुरुकुल करतारपुर तथा कन्या गुरुकुल पाढ़ा गये।

अंग्रेजी विभाग

गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना से ही अंग्रेजी विषय अनिवार्य रहा है। उस समय के उपाध्यायों में प्रो० लालचन्द जी एवं डा० गंगाराम के नाम उल्लेखनीय है। १९६२ में यू०जी०सी० के द्वारा गुरुकुल को विश्वविद्यालय स्तर की मान्यता मिलने पर अन्य विषयों के साथ-साथ अंग्रेजी विभाग की भी स्थापना हुई। प्रारम्भिक वर्ष में पूरे विभाग में केवल दो शिक्षक रहे। एक विभागाध्यक्ष और एक प्रवक्ता। इन्हीं दो शिक्षकों से विद्याविनोद, अलंकार और एम० ए० प्रथम कक्षाओं में अंग्रेजी की पढ़ाई होती रही। कालान्तर में विभाग में विभागाध्यक्ष सहित चार शिक्षक हुए जिनके द्वारा कुल मिलाकर ६ कक्षाओं में अंग्रेजी अध्यापन का कार्य चलता रहा।

शिक्षकों की स्थिति इस प्रकार रही–
एक–रीडर-अध्यक्ष और तीन लैक्चरर।

गत वर्ष से अब तक विभाग में केवल कुल मिलाकर ३ शिक्षक ही रह गये हैं। डा० अमरनाथ द्विवेदी (प्रवक्ता) जी के स्थान पर अब तक कोई नियुक्ति नहीं हो पाई। पिछले मार्च माह में जिस महानुभाव का अंग्रेजी प्रवक्ता पद पर चुनाव हुआ, वह अब तक कार्य पर नहीं आ पाये।

गत तीन वर्षों से गुरुकुल विश्वविद्यालय में चल रहे संघर्ष के कारण विभागों में विद्यार्थियों के प्रवेश पर बुरा प्रभाव पड़ा। वर्तमान सत्र में एम० ए० प्रथम एवं एम०ए० द्वितीय वर्ष में केवल चार-चार विद्यार्थियों ने प्रवेश लिया। अध्यापन का कार्य सुचारू रूप से चलता रहा।

अध्यापन के अलावा इस वर्ष विभाग में एक महत्वपूर्ण भाषण हुआ। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के अध्यक्ष डा०

आर० एस० सिंह ने ३० मार्च १९८१ को Recent Trend in English and Hindi Fiction पर बड़ा ही रुचिकर भाषण दिया। वर्तमान सत्र में (मार्च माह) विभाग के विद्यार्थियों ने सम्मिलित सरस्वती यात्रा पर आगरा, भरतपुर, जयपुर, अजमेर आदि स्थानों पर भ्रमण किया और देश दर्शन से अनेक प्रकार के लाभ उठाये।

इस सत्र में गत सितम्बर माह (२७-२९) मे विभाग के रीडर अध्यक्ष श्री सदाशिव भगत ने बी०एच०यू० में All India English Teacher's Conference में भाग लिया और पुन: जनवरी के प्रथम सप्ताह में उन्होंने उत्कल विश्वविद्यालय में यू०जी०सी० तथा ब्रिटिश-कौंसिल द्वारा आयोजित अंग्रेजी के एक सेमीनार मे भाग लिया।

गुरुकुल विश्वविद्यालय से निकल रहे "वैदिक पथ" नामक पत्रिका के सम्पादन में अंग्रेजी के सम्पूर्ण विभाग का योग रहा। विभाग के वरिष्ठतम प्रवक्ता डा० नारायण शर्मा का लेख Vedic tradition in the agamas (Vedic Path December 1980) उल्लेखनीय है। डा० नारायण शर्मा वर्तमान में श्री अरविन्द की पुस्तक सावित्री पर लेख लिख रहे हैं।

यह गौरव की बात है कि गुरुकुल मे संस्कृत के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा की महत्ता बहुत बढ़ी है। विद्याविनोद तथा अलंकार कक्षाओं में यह अब भी अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जा रहा है।

वर्तमान शिक्षकों के नाम व पद :-

१-श्री सदाशिव भगत —एम०ए०(प्रयाग वि०वि०) रीडर-अध्यक्ष।
२-डा०नारायण शर्मा —एम०ए०, पी-एच०डी०—प्रवक्ता।
३-डा०राधेलाल वार्ष्णेय —एम०ए०, पी-एच०डी०—प्रवक्ता।

सदाशिव भगत
रीडर—अध्यक्ष

—●●—

विज्ञान महाविद्यालय

सितम्बर १६७७ मे कालेज पर हमला करके कुछ असामाजिक अवैध तत्वो ने कब्जा कर लिया था। उन्होने कालेज का फर्नीचर, बिजली, पखे साईस कालेज का सामान आदि लूट लिया था। २ जुलाई १६८० को नये युग का प्रारम्भ हुआ, कालेज कैम्पस की सफाई कराई गई। भवनो, फर्नीचर आदि को सुव्यवस्थित किया गया। छात्रो के लिये विज्ञान सामग्री मगाई और तहस नहस किये हुये उपकरणो की मरम्मत कराई गई।

बी०एस-सी० के सत्रारम्भ के समय छात्रो का प्रवेश इन्टरव्यू द्वारा किया गया। इन्टरव्यू मे प्रथम एवम् द्वितीय श्रेणी के छात्रो को प्रवेश दिया गया। छात्रो ने जीव विज्ञान मे एक सेमीनार आयोजित किया जिसमे गणमान्य लोग उपस्थित हुये। इसी प्रकार बसन्त पचमी पर छात्र पुण्यभूमि कागडी ग्राम मे गये। शिक्षको तथा छात्रो ने श्रद्धानन्द सप्ताह आचार्य रामदेव दिवस, शहीद लाला लाजपतराय लेख राम दिवस आदि पर्व उत्साह से मनाये।

छात्रो ने कार्बेट पार्क नैनीताल आदि प्रसिद्ध स्थानो की सरस्वती यात्राये की और अपने विभागो के लिये सामग्री एकत्रित की।

८ अप्रैल से १४ अप्रैल तक आर्य भट्ट मेला, विज्ञान प्रदर्शनी आयोजित की गई। गुरुकुल कागडी के इतिहास मे प्रथम बार इतनी विशाल तथा उत्तम प्रदर्शनी लगी। इसे आस पास के शहरो, गावो तथा बी० एच० ई० एल० हरिद्वार आदि के कई हजार लोगो ने रुचि पूर्वक देखा और मेले की बहुत प्रशसा की। इस अवसर पर हिन्दी मे विज्ञान की आर्यभट्ट पत्रिका, प्रकाशित हुई जिसका विमोचन श्री वीरेन्द्र जी, प्रधान आ० प्र० सभा पजाब एव कुलाधिपति महोदय ने किया- विज्ञान मेले का उद्घाटन श्री जगदीश नारायण कुल्पति रुडकी विश्वविद्यालय के कर कमलो द्वारा सम्पन्न हुआ। प्रो० डा०

ताराचन्द्र शर्मा और सब शिक्षकों के सहयोग से तथा विज्ञान कालेज के पुराने छात्रों, बी० एस-सी० तथा इण्टर में पढने वाले छात्रों के अथक परिश्रम तथा लगन से आर्य भट्ट विज्ञान मेला पूण रूप से सफल रहा।

बी० एस-सी० प्रथम वर्ष में १३५ छात्रों ने प्रवेश के लिये प्रार्थना पत्र दिये जिसमे से इण्टरव्यू द्वारा चुनाव करके १०१ छात्रों को प्रवेश दिया गया। बी० एस-सी० द्वितीय वर्ष मे ६१ छात्र रहे। इस प्रकार बी० एस-सी० मे कुल १६२ छात्र रहे।

गणित विभाग (विज्ञान महाविद्यालय)-

१- इस विभाग की स्थापना सन् १९५८ मे हुई थी, विभाग में एक रीडर तथा दो प्राध्यापक कार्यरत हैं। विभाग में गणित का स्नातक स्तर का पाठ्यक्रम पढाया जाता है। विभाग मे विशेष प्रश्न-पत्र के रूप में सांख्यिकी भी पढाई जाती है।

२- विभाग मे कार्यरत उपाध्यायो के नाम-योग्यता तथा पद निम्न प्रकार है।

क- सुरेशचन्द्र त्यागी-एम० एस-सी०, एल० टी०, प्रिन्सीपल तथा रीडर।

ख- विजयेन्द्र कुमार, एम०एस-सी० प्राध्यापक।

ग- हरबंस लाल गुलाटी-एम० एस-सी० प्राध्यापक।

३- उपाध्यायों ने निम्न कार्यक्रमों में भाग लेकर अपने ज्ञान में वृद्धि की।

१- विजयेन्द्र कुमार-सेन्टर आफ एडवान्स स्टडी इन मैथोमैथ्टक्स, बम्बई-१९७३ रामानुजम इन्स्टीट्यूट आफ एडवान्स स्टडी इन मैथोमैथ्टक्स, मद्रास, १९७१।

२- हरबंस लाल गुलाटी-समर इन्स्टीट्यूट एन० सी० ई० आर०टी० देहली-१९७५।

४– निम्न महानुभावों ने इस विभाग में भूकम्प विषय पर व्याख्यान दिया–

१–श्री चोपड़ा जी-अध्यक्ष गणित विभाग इन्जीनियरिंग कालेज कुरुक्षेत्र।

२–निम्न महानुभावो ने बोर्ड आफ स्टडीज की मीटिंग में भाग लेकर कोर्सिस को आधुनिक बनाने में सहायता की–

श्री के० एस० सिन्हा, अध्यक्ष गणित विभाग, तथा प्रधानाचार्य, डी० ए० वी० कालेज, देहरादून (गढ़वाल वि० वि०)।

३–श्री ब्रह्मानन्द जी-अध्यक्ष गणित विभाग, डी०ए० वी० कालेज मुजफ्फरनगर (मेरठ वि० वि०)।

५– श्री सुरेशचन्द्र त्यागी प्रिन्सीपल महोदय ने वेद और विज्ञान नाम से लेख लिखा जो आर्यभट्ट पत्रिका मे छपा है। प्रौ० विजयेन्द्र कुमार ने "आर्यभट्ट-भास्कर-रोहिणी" नाम एक लेख आर्य भट्ट पत्रिका के लिए लिखा।

६– विभाग के द्वारा आर्यभट्ट प्रदर्शनी मे प्रस्तुत कई माडलों की दर्शकों ने बड़ी सराहना की। इस प्रदर्शनी ने छात्रों को बहुत प्रोत्साहन किया।

७– निम्न महानुभाव विभाग को सन् १९७८ मे छोड़ कर गये है– श्री पद्मसिंह देशवाल, महर्षि दयानन्द विश्व विद्यालय, रोहतक।

निम्न महानुभावों की प्राध्यापक के पद पर नई नियुक्ति–एक जनवरी १९८१ से हुई–श्री हरबंस लाल गुलाटी, एम० एस-सी०।

सुरेश चन्द्र त्यागी
प्रिन्सीपल-अध्यक्ष
गणित विभाग
विज्ञान महाविद्यालय, गु०कां०वि०वि०
हरिद्वार

भौतिकी विभाग

भौतिकी विभाग की स्थापना १ अगस्त १६५८ मे हुई । इस विभाग के लिये दो प्रवक्ता स्वीकृत है। इस विभाग मे बी० एस-सी० तक की कक्षाओं को पढ़ाया जाता है । बी० एस-सी० की क्रियात्मक के लिये कोर्स सम्बन्धी सभी उपकरण विद्यमान है। इस विभाग में दो प्रयोगशालाये है,बी.एस-सी. प्रथम तथा द्वितीय वर्ष के लिये अलग अलग। जिनमें प्रत्येक में एक-एक श्याम प्रकोष्ठ भी हैं। इस के साथ-साथ दो प्रयोगशालायें एम० एस-सी० प्रथम तथा द्वितीय वर्ष की भी लगभग तैयार है। उनमे सिर्फ बिजली का फिटिंग होना है जो कि इस वर्ष शीघ्र ही पी० डब्लू० डी० के द्वारा सम्पन्न होगा क्योंकि इसका धन जमा हो चुका है । एम० एस-सी० के लिये काफी उपकरण तथा पुस्तकें यू० जी० सी० डैवलपमैन्ट ग्रांट से खरीदी गई थी और जो कि विद्यमान हैं।

इस विभाग को भारत के कई विश्वविद्यालयों के अध्यक्षो ने देखा जिनमे डा० एफ० सी० ओलक, अध्यक्ष दिल्ली विश्वविद्यालय, डा० हेस, अध्यक्ष, पंजाब विश्वविद्यालय, डा० जोशी, रुड़की विश्वविद्यालय, डा० नाथ, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, डा०वाचस्पति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, डा० वी० दयाल, बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय, डा० शर्मा, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, डा० खरे, मेरठ विश्वविद्यालय, श्री शीतल प्रसाद जी, भू० पू० वाइस–चान्सलर, आगरा विश्वविद्यालय, डा० एल० एस० कोठारी, दिल्ली विश्वविद्यालय, डा० इन्द्र प्रकाश, कानपुर विश्वविद्यालय, डा० शिवदत्त शर्मा, मेरठ विश्वविद्यालय, डा० कामरा, पूना इन्स्टीट्यूट, पूना, डा० गोखले, लखनऊ विश्वविद्यालय, डा० गोस्वामी, मेरठ विश्वविद्यालय, प्रो० माथुर, डी० ए० वी० कालेज कानपुर, डा० तन्झानी, बनारस हिन्दु विश्व–विद्यालय, प्रमुख हैं।

भौतिकी विभाग में निम्नलिखित उपाध्याय कार्य कर रहे हैं।

१- श्री हरिश्चन्द्र ग्रोवर, एम० एस-सी० ।

श्री हरिश्चन्द्र ग्रोवर प्राध्यापक भौतिकी विभाग में १९७१ मे सौलिड स्टेट-फिजिक्स का सेमीनार पर ४० दिन तक बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय मे कार्य किया। तथा एक लेख आर्यभट्ट पत्रिका मे अप्रैल १९८१ में प्रकाशित किया।

भौतिकी विभाग में एम० एस-सी० खोलने हेतु भवन, उपकरण, पुस्तके जर्नल काफी मात्रा में उपलब्ध होने के कारण परियोजना बनाई हुई है। आगरा बिश्वविद्यालय की एम०एस-सी०खुल चुकी है परन्तु कुछ कारणो से बन्द करनी पड़ी।

इस वर्ष बी०एस-सी० द्वितीय वर्ष में ४० विद्यार्थियों की संख्या थी तथा प्रथम वर्ष में ६० विद्यार्थी अध्ययन करते रहे।

—●●

रसायन विभाग

रसायन विभाग की स्थापना १९५८ में भारत के प्रथम प्रधान मन्त्री प० जवाहरलाल नेहरू द्वारा हुई थी । इस विभाग में तीन प्रवक्ता पद हैं। उनमें से वरिष्ठ प्रवक्ता अध्यक्ष का भी कार्य कर रहे हैं। समय-समय पर शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार, विश्व-विद्यालय अनुदान आयोग दिल्ली, शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश सरकार तथा गुरुकुल कांगड़ी द्वारा विभाग में अनेक मुख्य और बहुमूल्य उपकरण आयात किये गये हैं, जिनमें से पोलेरोग्राफ, कन्डेक्टो-मीटर-पाई, स्पेक्ट्रोफोटोमीटर स्पेक्ट्रोनिक-२०, पोटेंशोमीटर, पोलेरो-मीटर कलरीमीटर, डाइपोल मूवमेन्ट हेतु मेटलर के बैलेन्स, पी.एच. मीटर, थर्मास्टेटस आदि मुख्य हैं। विभाग में बी० एस-सी० कक्षायें है । उनके लिये एक प्रयोगशाला, दो तुला कक्षा, दो स्टोर, दो प्रयोगात्मक कार्य को तैयार करने के कक्ष तथा एम०एस-सी० कक्षाओं के लिये एक प्रयोगशाला भी है जिसमें १९६६-६७ में आगरा विश्वविद्यालय की एम० एस-सी० कक्षाओं का क्रियात्मक कार्य कराया जाता था। इसके अतिरिक्त बाहर के बहुत से शोधकर्त्ताओं को विभाग से कार्य करने की सुविधा दी जाती रही है। इस विभाग के उपाध्यायों के अब तक लगभग २० अनुसन्धान लेख भारत तथा विदेश के रिसर्च जनरलों में प्रकाशित हो चुके है।

१९८०-८१ में रसायन विभाग का कई विद्वान व्यक्तियों ने निरीक्षण किया जिनमें डा. देवी राम गुप्ता अध्यक्ष रसायन विभाग पन्तनगर विश्वविद्यालय, पन्तनगर, डा. इन्द्र प्रकाश सक्सेना, अध्यक्ष रसायन विभाग पी. पी. एम. कालेज कानपुर, डा. व्हीद उद्दीन मलिक कुलपति, श्रीनगर विश्वविद्यालय श्रीनगर, कशमीर, डा. हरदयाल, डी. ए. वी. कालेज देहरादून, डा. कुलदीप सिंह भण्डारी, सहशिक्षा निर्देशक, दिल्ली राज्य तथा प्रो. गोपाल लाल महेश्वरी मुख्य हैं।

इस समय रसायन विभाग में निम्न व्यक्ति कार्य कर रहे हैं—

१— डा. तारा चन्द्र शर्मा, एम. एस-सी., पी. एच-डी., प्रवक्ता—अध्यक्ष रसायन विभाग।

२— डा रामकुमार पालीवाल, एम. एस-सी , पी. एच-डी प्रवक्ता।

३— श्री कौशल कुमार, एम. एस-सी प्रवक्ता।

रसायन विभाग में लगभग १६० विद्यार्थी हैं । अब तक विभाग के निम्न दो उपाध्याय पी. एच-डी. कर चुके हैं।

१— डा. ताराचन्द्र शर्मा—स्पेक्ट्रोफोटोमीटर एण्ड इलेक्ट्रोमीटरिक स्टडीज आन डाईरेयरमेटनकम्लेकिसस-डा.वहीद उद्दीन मलिक।

१— डा. रामकुमार पालीवाल—डा वहीद उद्दीन मलिक ।

इसके अतिरिक्त श्री कौशल कुमार शोध कार्य कर रहे है । श्री ताराचन्द्र शर्मा ने अनेक अनुसंधान लेख प्रकाशित किये है (सूची संलग्न) डा० रामकुमार पालीवाल ने भी एक अनुसधान लेख प्रकाशित किया है। श्री कौशल कुमार द्वारा एक अनुसधान लेख प्रकाशित हो चुका है।

अगस्त १६८० मे होने वाली फस्ट इण्टर नेशनल कोन्फ्रेन्स आफ कैमिस्ट्री इन अफ्रिका एट नैरोबी यूनिवर्सिटी के इण्डस्ट्रीयल सेक्सन के लिये डा० ताराचन्द्र शर्मा को सभापति पद के लिये चुना गया किन्तु कुछ कारण वश उनका जाना सम्भव न हो सका । इसी कोन्फ्रेन्स मे उनका एक शोध लेख पढा गया ।

इस विभाग से अब तक लगभग २००० स्नातक उपाधि प्राप्त कर चुके हैं, और भारत के भिन्न भिन्न भागों मे निर्माण कार्यों मे कार्यरत हैं। गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय की सीमाओं से लगी हुई भारी निर्माण की फैक्ट्री और इन भारी फैक्ट्रियों के कारण निरन्तर बढ़ती हुई लघु फैक्ट्रियां इस पंचपुरी और उससे लगे हुये ग्रामीण

क्षेत्रों में रहने वाले निवासियों को प्रेरित करती हैं कि वे अपने रोजगार इस क्षेत्र में स्थापित करे। इन सभी फैक्ट्रियो को किसी न किसी रूप में कैमिस्ट की आवश्यकता को नकारा नहीं जा सकता। पचपुरी और उसके आस पास पिछड़े हुए और गरीब लोगों का धनत्व इन फैक्ट्रियों के कारण बहुत अधिक हो गया है। ये लोग अपने बच्चों की शिक्षा के लिये व उनके रोजगार के लिये अत्यधिक चिन्तित है। रसायन विभाग सदा उनकी सेवा के लिये तत्पर रहता है।

तारा चन्द्र शर्मा
रसायन-विभाग

--●●--

वनस्पति विज्ञान विभाग

वनस्पति विज्ञान विभाग के भवन का निर्माण यू० जी० सी० से प्राप्त अनुदान से १६६० में हुआ। १६६४ में विभाग से विद्यार्थियो का पहला बैच बी० एस-सी० पास करके निकला।

विभाग मे इस समय एक रीडर एवं एक लैक्चरर है। वनस्पति विज्ञान के ट्रेडीशनल कोर्सेज पढाये जाते हैं। पौधो के विभिन्न पहलुओ के अध्ययन के लिये विभाग मे निम्नलिखित उपकरण है–

कलरी मीटर, सेन्ट्रीफ्यूज, पेपर क्रोमेटोग्राफी एपेरेटस, पी०च मीटर, माइक्रोटाम, माइक्रोस्कोप, आटोक्लेव आदि।

विभाग मे १ लेबोरेटरी, १ लेक्चर रूम, १ म्यूजियम, १ डिपार्टमेन्टल लाइब्रेरी रूम, १ रीडर रूम, १ लैक्चरर रूम, १ डार्क रूम एव विभागीय वाटिका है।

विभाग की भावी योजना इस प्रकार है–

१–वनस्पति विभाग मे पोस्ट ग्रेजुएट क्लासेज चालू करना।

२–मेडीकल बाटनी का डिप्लोमा कोर्स चलाना।

३–वेदों में वर्णित पौधों को पहचानना एवं उनका हरनेरियम बनाना और उन्हें वाटिका में लगाना।

४–महत्वपूर्ण औषधीय पौधों का अध्ययन एवं उनके कल्टीवेशन ट्राइल्स के लिये प्रबन्ध करना।

५–वैदिक वनस्पतियों का वैज्ञानिक अध्ययन।

विभाग के उपाध्याय–

१–डा० विजयशंकर एम० एस-सी०, पी० एच-डी०, रीडर एवं अध्यक्ष।

२–डा० पुरुषोत्तम कौशिक एम०एस-सी०, पी०एच०डी०, लेक्चरर ।

विद्यार्थियों की संख्या–

बी० एम-सी० प्रथम वर्ष–३१
,, ,, द्वितीय वर्ष–१७

निम्नलिखित रिसर्च आर्टिकल विभाग के उपाध्यायों द्वारा लिखे गये एवं प्रकाशित हुये–

डा० विजयशंकर–

1- Current Research in Ayurvedic Medicine-1980.

2- Aloe vera-Miracle Medicine Plant-1980.

3- Role of folk-lore medicine in Primary health care-1980.

4- Growth & Development of C. esculenta

5- Suppression of Leaf blade formation in C. esculenta under GA effect.

6- Some new lost records for uride triales 1981 (Abstracts-68th Session Indian Science Congress. 1981)

1&2- Published in Journal of Research in Plants & medicine 1980.

3- Abstract Pnblished in Proc. of conference on Ayurvedic & Traditional Medicine in Primary health care March 1980, Varanasi.

4&5- Accepted for publication in Journal of Research G. K. University.

II-Dr Purushottam Kaushık–

1- A role on occurrence of beromıa falconerı Hook f &o-pachyphylla kıng & Plantıng current scıence (ın press 1981)

अन्य लेख जो विभाग के उपाध्यायो द्वारा लिखे गये एव जो प्रकाशित हुये–

Dr Vıjaya Shankar

1- मघु गुरुकुल पत्रिका १९८० ।
2 Sıkkım s Dreaded Plant-markıng Nut Tree-Sıkkım Herald (Information Servıce of Sıkkım Govt.) Dec 1980
3- Swamı Shraddhananda-A lıfe sketch Punchpurı Samachar Aprıl 1981
4- वृक्षारोपण (एक लघु कविता) १९८१
5- सम्पादकीय आर्यभट्ट विज्ञान पत्रिका अप्रैल १९८१
6- जुल्म ,, , , ,,
7- अरे यह क्या ?, ,,

डा० पुरुषोत्तम कौशिक–

१- पेलीनोलोजी और उसके उपयोग–आर्यभट्ट विज्ञान पत्रिका अप्रैल १९८१ ।

पाठ्यक्रम–

पाठ्यक्रम मे परिवतन करने हेतु बोर्ड स्टडीज की मीटिग बुलाई गई। अगले सत्र से नया पाठ्यक्रम लागू किया जा सकेगा । विद्यार्थियों को विभिन्न एपरेटसेस पर काम करने का अभ्यास कराया जाये इसके लिये कलरीमीटर, क्रोमैटोग्राफी एपरेटस, आटो-

क्लेब आदि खरीद लिये गये हैं। औषधीय पौधों के अध्ययन पर ब ा दिया जायेगा।

विभाग में इस वर्ष एक माली का स्थान रिक्त रहा ।

प्रदर्शनी (वनस्पति विज्ञान)—एक्सटेन्शन प्रोग्राम ।

इस वर्ष दीक्षान्त समारोह के अवसर पर आर्यभट्ट विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। वनस्पति विज्ञान विभाग ने इस अवसर पर २३ आइटम प्रदर्शित किये। इनके द्वारा वर्तमान समय की कतिपय ज्वलन्त समस्याओं की ओर जनता का ध्यान आकृष्ट किया गया और उनके हक मे पौधो का योगदान दर्शाया गया। जैसे ऊर्जा का संकट, प्रदूषण एवं अपरदम की समस्या, प्रोटीन की समस्या । सौन्दर्य प्रसाधनों मे वनस्पतियों के उपयोग के बारे मे जानकारी दी गई। बेकार समझे जाने वाले टेढ़े-मेढ़े काष्ठ के टुकड़ो का गृहसज्जा के लिये प्रयोग करने नो प्रोत्साहन देने के लिये अनेक मुन तने, जड एवं पत्तों को कलात्म . रूप देकर प्रदर्शित किया गया। बौने पौधे एवं कट फ्लावर्स का भी गृहसज्जा में उपयोग दर्शाया गया। वेदों मे वर्णित वनस्पतियों को संग्रह करके उनका हरबेरियम दिखाया गया। वनस्पति विज्ञान की इस प्रदर्शनी को हजारो व्यक्तियो ने देखा। कतिपय महत्वपूर्ण व्यक्ति जो प्रदर्शनी देखने आये उनके नाम एवं प्रदर्शनो के बारे मे उनके विचार निम्न प्रकार हैं—

नाम	विचार
१—डा. ज. नारायण, कुलपति रुड़की विश्वविद्यालय।	बहुत सुन्दर प्रदर्शनी।
२—श्री एच.आर.खन्ना, जस्टिस(रिटायर्ड) सुप्रीम कोर्ट ।	बहुत प्रभावित ।
३—श्री टी.एन चतुर्वेदी, सचिव शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार।	प्रशंसनीय प्रयास।

४–श्री सत्यदेव जी, प्रेजीडेन्ट,
इण्डियन इन्स्टीट्यूट आफ
केमीकल इन्जीनियर्स

Excellent Presentation
Really thrilled to see
the exhibition.

अनेक व्यक्तियों ने बौने पौधे बनाने, कुकुरमुत्ता उगाने प्रदूषण को कम करने वाले पौधों एवं हर्बल कास्मेटिक्स के बारे में जानकारी प्राप्त करने हेतु लिखा है। उन्हे यह जानकारी दी जा रही है।

नई परियोजनायें-

मेडिकल बाटनी डिप्लोमा कोर्स–

हरिद्वार और आसपास के हिमालय के क्षेत्र मे औषधीय पौधो की प्रचुरता एवं फार्मेसियों की बहुलता को देखते हुए औषधीय पौधो के विभिन्न पहलुओं के अध्ययन के लिये एक डिप्लोमा कोर्स चालू करने की योजना ऐकेडेमिक कौंसिल से पास हो गई है। इसमे वे विद्यार्थी प्रवेश ले सकेगें जिन्होने बी. एस-सी. (जीवविज्ञान) पास कर लिया है। कोर्स मे औषधीय पौधों के कल्टीवेशन एव इकानामिक्स के बारे में भी जानकारी दी जायेगी। ये सैल्फ एम्प्लोयमेंट मे सहायक होंगे।

वैदिक वनस्पतियों का वैज्ञानिक अध्ययन–

वेदों मेवर्णित पौधों की पहचान उनकी यज्ञ, औषधि एवं प्रदूषण दूर करने में उपयोगिता पर अध्ययन के लिये विश्व--विद्यालय के वेद एवं संस्कृत के विद्वानों के सहयोग से एक योजना प्रारम्भ करने का प्रस्ताव भी विचारणीय है।

—●●—

जन्तु विज्ञान विभाग

जन्तु विज्ञान विभाग की स्थापना सन् १९६० मे स्वर्गीय डा० कालका प्रसाद जी भटनागर तत्कालीन कुलपति, आगरा विश्वविद्यालय द्वारा हुई। इस विभाग में एक रीडर तथा एक लेक्चरर का पद है और विभाग में बी० एस-सी० कक्षाये चलती हैं। समय समय पर शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार, विश्व विद्यालय अनुदान आयोग, देहली तथा शिक्षा विभाग उत्तर प्रदेश और गुरुकुल कांगड़ी द्वारा अनेक प्रकार के बहुमूल्य उपकरण विभाग मे खरीदे गये जिनमें माईक्रोटोम, विभिन्न प्रकार के माईक्रोस्कोप (लगभग ७५) रिसर्च माईक्रोस्कोप, एपीडायोस्कोप आदि है। विभाग में बी० एस-सी० कक्षाओं के लिये एक प्रयोगशाला, एक म्यूजियम, प्रयोगात्मक कार्य को तैयार करने का कमरा, एक व्याख्यान कक्ष तथा एक डार्करूम है। इसके अतिरिक्त एक सुसज्जित प्रयोगशाला भी है। अब तक विभाग में रहते हुए तथा विभागीय उपकरण और प्रयोगशालाओं का उपयोग करते हुए इस विभाग के दो उपाध्याय पी-एच० डी० कर चुके हैं। इस विभाग के लगभग ३० अनुसंधान लेख भारत और भारत से बाहर विभिन्न रिसर्च जरनलों में प्रकाशित हो चुके हैं।

१९८०-८१ में इस विभाग को कई विद्वान व्यक्तियों ने देखा जिनमें डा० एम० बी० लाल, अध्यक्ष जन्तु विज्ञान विभाग डी०ए०वी० कालेज, देहरादून, डा० डी० पी० गोयल, अध्यक्ष जन्तु विज्ञान विभाग एम०एस० कालेज, सहारनपुर तथा डा० चन्द्रा, प्रिन्सीपल, के० एल० डी० ए० वी० कालेज रुडकी मुख्य हैं।

जन्तु विभाग में इस समय निम्न महानुभाव कार्य कर रहे हैं—

१–डा० तिलक राज सेठ–एम० एस-सी०, पी-एच० डी०, अध्यक्ष, प्रवक्ता।

२–श्री वेद प्रकाश नासवा–एम०एस-सी०, प्रवक्ता (अस्थाई)।

विभाग में छात्र लगभग ६० हैं।

इस विभाग के डा० टी० आर० सेठ ने मारफोलोजी आफ कोबरा पर पी-एच० डी० उपाधि प्राप्त की है । श्री वेद प्रकाश नासवा मछलियों पर कार्य कर रहे हैं ।

जन्तु विज्ञान विभाग द्वारा १९८०-८१ में ढिकाला तथा कुमायू पर्वत माला की सरस्वती यात्रा का आयोजन किया गया जिसमें बी. एस-सी.प्रथम तथा द्वितीय खण्ड के विद्यार्थियों ने भाग लिया। ढिकाला (नेशनल कार्बेट पार्क) में विद्यार्थियों ने जंगली जानवरों जैसे शेर, बाघ, चीता, हिरण, चीतल, बारह सिंहा, शुतुर मुर्ग सांभर आदि अनेक जानवरों के रहन सहन तथा गतिविधियों का बहुत पास से अध्ययन किया। उन्होंने अनेक विषय सम्बन्धी जानकारी प्राप्त की तथा उनमें जानवरों के प्रति स्नेह भावना जागृत हुई ।

डा० चम्पत स्वरूप गुप्ता विभाग में १९७९ तक अध्यक्ष/रीडर थे। उन्होंने अपने कार्यकाल में अनेक अनुसंधान पत्र प्रकाशित किये, दो पुस्तकें लिखी तथा हिन्दी अनुवाद विभाग, भारत सरकार के तत्वावधान में अनेक पुस्तकों का अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद किया ।

डा०टी०आर० सेठ ने दो अनुसंधान पत्र प्रकाशित किये–

१–मारफोलोजी आफ एलीमेन्ट्री कैनाल आफ नाजा नाना, ज. सा. रिस. गु. कां. १९८१ ।

२–मारफोलोजी आफ पेलेट आफ नाजा. नाना. ज. सा. रिस. गु. का. (प्रकाशन हेतु स्वीकृत) ।

डा०टी०आर० सेठ ने बी० एस-सी कक्षाओं के लिये प्रयोगात्मक कार्य पर एक पुस्तक भी प्रकाशित की तथा हिन्दी अनुवाद विभाग भारत सरकार के तत्वावधान में एक पुस्तक "डेस्ट्रामिव एण्ड यूजफुल इनसेक्ट" के अंश का अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद किया ।

जन्तु विज्ञान विभाग गत ९२ वर्षों से जनता की सेवा कर रहा है। इस विभाग से अब तक लगभग ५०० स्नातक उपाधि प्राप्त

कर चुके हैं और भारत में विभिन्न भागों में कार्यरत हैं । गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से ७० कि० मी० अर्धव्यास की सीमाओं में कोई ऐसा महाविद्यालय या विश्वविद्यालय नहीं है जो जन्तु विज्ञान पढने वाले विद्यार्थियों को स्नातकोत्तर स्तर की शिक्षा प्रदान कर सके। इसके परिसर में हैवी इलेक्ट्रीकल्स, एण्टीबायो०, स्टरडिया कैमिकल्स तथा चीला परियोजना मे खेतीहर, मध्यम वर्ग, मजदूर तथा पिछड़े वर्ग का घनत्व दिन प्रतिदिन बढता ही जा रहा है। ये वर्ग अपने बच्चों की बहुमुखी प्रगति हेतु शिक्षा के लिये चिन्तित है । विभाग में एक वर्ष १९६६-६७ मे आगरा विश्वविद्यालय की देख रेख में स्नातकोत्तर कक्षाये सफलता पूर्वक चल चुकी है। इस कारण आवश्यक उपकरण तथा सामग्री उपलब्ध है और विभाग स्नातकोत्तर शिक्षा देने में पूर्णतया समर्थ। है अतः विभाग पंचपुरी के हित मे चाहता है कि स्नातकोत्तर कक्षाये तुरन्त खोली जाये ताकि भारत सरकार जन-साधारण को शिक्षा सम्बन्धी जो सुविधाये देना चाहती है, उपलब्ध हो सके।

—●●—

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून

स्थापना एवं विकास

प्राचीन ऋषि-मुनियो द्वारा प्रतिपादित आदर्शो के अनुरूप अलग-अलग जाति, वर्ग, सम्प्रदाय व धर्म की छात्राओ को बिना किसी भेदभाव के गुरुकुल आश्रम-व्यवस्था मे रहकर दीक्षित करने, आर्यसमाज के मंतव्यो के अनुसार वेद-वेदाग, संस्कृत-साहित्य, प्राचीन भारतीय सस्कृति के साथ-साथ अर्वाचीन ज्ञान-विज्ञान मे शिक्षित करने और इस प्रकार देश व मानव जाति की सेवा के लिये बहुमुखी, प्रतिभा सम्पन्न आदर्श नारिया तैयार करने के उद्देश्य से कन्याओ के लिये एक पृथक् गुरुकुल खोलने की आवश्यकता गुरुकुल कांगडी की स्थापना के समय से अनुभव की जा रही थी। स्वामी श्रद्धानन्द जी और अन्य मूर्धन्य आर्यनेताओ के प्रयत्नो तथा दानवीर सेठ राघुमल द्वारा प्रदत्त आर्थिक सहायता से इस विचार को क्रियारूप मे परिणत किया जा सका। फलत: ८ नवम्बर १९२३ (२३ कार्तिक १९८० विक्रमी) को दीपमालिका के दिन आर्यसमाज के गणमान्य सुप्रसिद्ध नेता आचार्य प्रवर रामदेव जी के नेतृत्व मे दिल्ली मे कन्या गुरुकुल की स्थापना हुई। यह लगभग तीन वर्ष तक दिल्ली मे ही चलता रहा, और उसके बाद इसे १ मई १९२७ को देहरादून स्थानान्तरित कर दिया गया। यहां यह छोटा सा पौधा सस्था के आदि संस्थापक आचार्य रामदेव जी, उनके परिवार के सदस्यों—सुपुत्र पं० यश पाल सिद्धान्तालंकार, सुपुत्री श्रीमती सीतादेवी विद्यालकृता, श्रीमती चन्द्र प्रभा विद्यालंकृता एवं श्रीमती दमयन्ती कपूर—, प्रथम आचार्या कु० विद्यावती सेठ और उनके परिवार के सदस्यों तथा अन्य कर्मठ कार्यकर्ताओं के त्याग, अटूट लगन, अदम्य उत्साह एवं अनथक प्रयास से उत्तरोत्तर बढ़ता हुआ आज एक विशाल बटवृक्ष की भांति पुष्पित

एवं पल्लवित हो रहा है और गुरुकुल विश्वविद्यालय के अंगभूत कन्या महाविद्यालय के रूप में राष्ट्रिय ख्याति अर्जित कर रहा है । इस संस्था की गरिमा का सबसे बडा प्रभाव इसी से मिलता है कि यहा न केवल भारत के कोने-कोने से, बल्कि विदेशो से भी छात्राये आकर शिक्षा ग्रहण करती रही हैं।

इस महाविद्यालय में वैदिक और अर्वाचीन साहित्य के साथ-साथ गृहविज्ञान, अंग्रेजी, शिल्पकला, सगीत, इतिहास, भूगोल, गणित अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान, ड्राइंग-पेंटिग आदि अर्वाचीन विषयों की शिक्षा भी राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम से दी जाती है :

प्रारम्भ में यहां १२वी तक की शिक्षा की व्यवस्था थी और उस समय स्नातिकाओ को कन्या गुरुकुल महाविद्यालय की अपनी उपाधि 'विद्यालंकृता' दी जाती थी जिसे देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों और शिक्षा संस्थानों द्वारा मान्यता प्राप्त थी । परन्तु सन् १९५७ से यहां की छात्राये भी १४ वर्ष तक अध्ययन करने के बाद गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार की 'विद्यालंकार' उपाधि से विभूषित होती है।

परीक्षा परिणाम-

पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी परीक्षा परिणाम उत्तम ही रहा। गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय में आपातकालीन अव्यवस्था होने के कारण वार्षिक परीक्षाये जुलाई मास में हुई । जिससे नवीन सत्र विलम्ब से प्रारम्भ हुआ। परीक्षाओं की अनिश्चित तिथि के कारण कन्या गुरुकुल का परीक्षा परिणाम पिछले वर्षो की अपेक्षा कुछ न्यून ही रहा ।

२– इस वर्ष ५५ नवीन छात्राये प्रविष्ट हुई हैं।

आचार्य रामदेव पुस्तकालय तथा वाचनालय–

३– पुस्तकालय में इस वर्ष पुस्तकों की सख्या लगभग ११ हजार पांच सौ रही है । छात्राओं ने तथा अध्यापिकाओं ने लगभग

३ हजार पुस्तकों द्वारा अध्ययन का लाभ उठाया।

क- छात्रा संख्या २३०। जिसमें महाविद्यालय की छात्रा सख्या ४५ है। शेष विद्यालय विभाग मे है।

ख- महाविद्यालय मे उपाध्याया सख्या (आचार्या सहित) ६ है, विद्यालय मे १३। समस्त शिक्षण कार्य सुचारु रूप से चल रहा है।

ज्योति समिति-

इस वर्ष ज्योति समिति का कार्य क्रम अत्यन्त उत्साह पूर्वक मनाया गया। कन्याओं ने विभिन्न प्रकार के ज्ञानवर्द्धक एव मनोरजक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। संस्कृत, अंग्रेजी, एव हिन्दी मे वाद-विवाद प्रतियोगितायें नाटक टैब्लो, एवं सगीत के कार्यक्रम अत्यन्त प्रशंसनीय रहे। प्रतियोगिताओं का परिणाम निम्न लिखित रहा-

> शुभ्रा एवं शैफालिका हाउस ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।
> अलका एवं राका ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

विभिन्न सांस्कृतिक प्रतियोगितायें-

१- अक्टूबर के अन्त मे होने वाले आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह देहरादून द्वारा आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता मे यहां की निम्नांकित छात्राओ ने तृतीय स्थान प्राप्त करके पारितोषिक एवं प्रमाण पत्र प्राप्त किये - कु० रंजना, कु० पूनम तृतीय वर्ष।

२- इसी शुभ अवसर पर होने वाले आर्य समाज सबंधी सगीत प्रतियोगिता मे निम्न लिखित छात्राओं ने तृतीय स्थान प्राप्त किया-कु०पुष्पा तृतीय वर्ष, कु०प्रतिमा, कु०राधा, कु०रीना, कु० विमला तृतीय वर्ष।

३- देहरादून मे जिला स्तर पर आयोजित सामूहिक राष्ट्र गान प्रतियोगिता में यहां की छात्राओं ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

४- भारतीय विकास परिषद् द्वारा आयोजित समूह गान प्रतियोगिता

(वरिष्ठ वर्ग) मे निम्नांकित छात्रायें सफल रही-कु. पुष्पा, कु प्रतिमा तृतीय वर्ष, कु० रीना, कु० विमला, कु० प्रवीण द्वितीय वर्ष ।

५– भारतीय गाइडिंग प्रतियोगिता मे कु० जसबीर, कु० रीना, कु० पूनम, कु० विमला, द्वितीय वर्ष ने सफलता पूर्वक पारितोषिक एवं प्रमाण पत्र प्राप्त किये।

६– जिला स्तर पर आयोजित अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता मे कु० रंजना तृतीय वर्ष कु० पूनम तृतीय वर्ष कु० विनय कु० मजुला द्वितीय वर्ष ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

७– तरुण संगीत एवं विचार मंच देहरादून द्वारा आयोजित विभिन्न प्रकार की वैदिक प्रतियोगिताओं मे (चित्रकला, गणित संगीतादि) यहां की छात्राओं ने सफलतापूर्वक भाग लिया ।

पर्व एवं त्यौहार

१– समय समय पर आने वाले धार्मिक, सामाजिक एवं राष्ट्रिय पर्व एवं त्यौहार भी अत्यन्त उल्लास पूर्वक मनाये गये। १५ अगस्त को स्वतन्त्रता दिवस पर विशेष गोष्ठी का आयोजन किया गया।

२– दीपावली के शुभावसर पर कन्या गुरुकुल का स्थापना दिवस अत्यन्त समारोह पूर्वक मनाया गया । विभिन्न प्रकार के कार्य-क्रम भी प्रस्तुत किये गये । एक विशाल प्रीतिभोज का भी आयोजन किया गया।

३– ६ दिसम्बर को आचार्य रामदेव स्मृति दिवस मनाया गया जिसमें छात्राओं एवं शिक्षकों ने अपने कुल पिता की स्मृति मे श्रद्धांजलि के पुष्प अर्पित किये।

४– २३ दिसम्बर को श्री श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया गया तथा सभा का आयोजन किया गया जिसमें भाषण, कविता,

गीतादि प्रस्तुत किये गये। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के संबंध मे कई कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

५– २६ जनवरी को प्रातःकाल आचार्या दमयन्ती जी कपूर द्वारा पताकारोहण किया गया। तत्पश्चात् इनकी अध्यक्षता मे एक सभा आयोजित की गई, जिसमे छात्राओ एव शिक्षको ने गण-तन्त्र दिवस एवं भारतीय स्वाधीनता के सम्बन्ध मे भाषण, कविता गीत, नाटक आदि प्रस्तुत किये।

खेल कूद प्रतियोगितायें

१– प्रति वर्ष की भाति इस वर्ष भी जिला, मण्डलीय एव राष्ट्रिय स्तर पर आयोजित होने वाली विभिन्न खेलकूद प्रतियोगिताओ मे यहां की छात्राओ ने सफलतापूर्वक भाग लेकर पारितोषिक प्राप्त किये।

२– गढवाल मण्डल द्वारा मण्डलीय स्तर पर आयोजित कबड्डी, खो-खो एव बालीबाल प्रतियोगिता में यहां की छात्राओं ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। तथा लखनऊ में होने वाली स्टेट प्रतियो-गिता के लिये कु० राजेश्वरी प्रथम वर्ष कु० नायबकौर द्वितीय वर्ष, कु० रामप्यारी, कु० इन्दिरा, कु० कचन चतुर्थ वर्ष चुनी गई।

३– कु० इन्दिरा नेगी चतुर्थ वर्ष सागली (महाराष्ट्र) में होने वाली राष्ट्रिय कवड्डी प्रतियोगिता के लिये चुनी गई।

विशेष उपलब्धिः-

कन्या गुरुकुल एव गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालव के लिये विशेष गौरव का विषय है कि कु० इन्दिरा नेगी इस वर्ष जापान

या सिंगापुर में होने वाली अन्तर्राष्ट्रीय महिला कबड्डी प्रति-योगिता के लिये भी चुनी गई।

४– कु० राजेश्वरी प्रथम वर्ष ने हैदराबाद में होने वाले राष्ट्रिय कबड्डी प्रतियोगिताओं में सफलता पूर्वक भाग लिया ।

५– जिला रैली में यहाँ की छात्राओं का फील्ड सोंग सर्व प्रथम रहा।

श्री आचार्य रामदेव चिकित्सालय

श्री आचार्य रामदेव चिकित्सालय आश्रम के समीप ४५,०००/– की लागत से कन्याओ की चिकित्सा के लिये एक चिकित्सालय बना हुआ है। जिसमें २० शैयाओ के योग्य एक बड़ा तथा दो छोटे रोगी गृह बने हुए है। साथ में लेडी डाक्टर का कमरा, औषधालय ड्रेसिंग रूम, औषध भण्डार, कम्पाउन्डर तथा नर्स के रहने के कमरे, रसोई स्नान गृह, फ्लश शौचालय आदि बने हुए हैं। चिकित्सालय के दोनों ओर सुन्दर हरी घास युक्त मैदान है। यह चिकित्सालय एक मेडिकल एडवाइजर तथा एक लेडी डाक्टर की अध्यक्षता में चल रहा है। इन के साथ ही दो योजिका कम्पाउन्डर परिचारिका (नर्स) तथा सेविका कार्य करती है। इस वर्ष चिकित्सालय मे २५ हजार रोगियो की चिकित्सा की गई । इस वर्ष चिकित्सालय पर १४,१५१/-व्यय हुआ। एवं उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से १५००/-आवर्तक अनुदान प्राप्त हुआ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि श्री कुलपति जी की आशीर्वाद एवं सहायता से जुलाई मास में प्रारम्भ होने वाले नवीन सत्र में बी० एड० की कक्षायें अवश्य ही प्रारम्भ हो जावेगी। मैंने श्री कुलपति जी की

सेवा मे बी०एड० की कक्षाये प्रारम्भ होने तथा कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का अंगभूत महाविद्यालय स्वीकार किये जाने के सम्बन्ध में कई बार निवेदन किया है और उन्होने मुझे तथा स्टाफ को पूरा आश्वासन दिया है कि वे इस दिशा में पूर्ण रूप से सक्रिय सहयोग करेंगे। जिससे कि दोनो ही योजनाये पूर्णता को प्राप्त हो सके।

दमयन्ती कपूर
आचार्या
कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून

-●●-

पुस्तकालय

संक्षिप्त परिचय :-

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने एक पुस्तकालय की स्थापना की थी। कागड़ी की पुण्य भूमि में पुस्तकालय था परन्तु सन् १९२४ की गंगा की बाढ में पुस्तकालय को अत्यधिक हानि उठानी पड़ी तथा काफी पुस्तके बाढ में बह गई। जब विश्वविद्यालय इस स्थान पर पुनः स्थापित किया गया तो एक विशालकाय पुस्तकालय भवन का निर्माण हुआ।

इस भवन के निर्माणार्थ कई दानियों ने दान दिया जिनमे से प्रमुख श्री स० नानजी भाई कालीदास मेहता, निवासी लुगाजी (उगाडा) ने संवत १९९१ विक्रमी मे ५,०००/- रु० दान दिया। पुस्तकालय के नीचे का हाल श्री सेठ छज्जूराम सज्जन कुमार निवासी कलकत्ता ने सन् १९४१ में बनवाया। इस समय भवन मे तीन बडे हाल है। एक भूमि तल पर तथा दो दूसरी मजिल मे हैं। नीचे वाले हाल मे हिन्दी, संस्कृत, वेद, इतिहास, जीवन चरित्र आदि सम्बन्धित पुस्तके रखी हैं तथा यही पर पाठकों को पत्रिकाये पढने की व्यवस्था है। नीचे वाले हाल के साथ दो गैलरी है, एक मे वैदिक साहित्य तथा दूसरे मे आयुर्वेद चिकित्सा की पुस्तके है। हाल के पास ही पुस्तकों का आगत-निर्गत काउंटर है जहां से पाठकगण पुस्तकों का लेन देन करते हैं। इसके सामने पत्रिका काउंटर है। इसी के समीप एक छोटा कक्ष है जिसमे बैठकर पाठकगण दैनिक पत्र-पत्रिकाओं को पढ सकते है। भूमितल हाल के ऊपर की ओर मध्य में एक गैलरी है जहां दीवार से युक्त आलमारियां हैं जिन मे सामाजिक विषय की पुस्तके हैं। इसके ऊपर दूसरी मंजिल पर भी एक गैलरी है जिसमें इतिहास विषय की पुस्तकें हैं। इसी में जुड़ी हुई बाहर को ओर एक गैलरी है जिसमें अंग्रेजी साहित्य तथा विभिन्न धर्मों की पुस्तकें विद्यमान हैं।

हाल के ऊपरी हिस्से में महापुरुषों के बड़े बड़े तैल चित्र लगे हुए है जो कि पुस्तकालय की शोभा को बढ़ाते है। इन चित्रों में श्रद्धेय गुरु विरजानन्द जी, स्वामी दयानन्द जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, आचार्य रामदेव जी, श्रद्धेय इन्द्र जी, श्री मोतीलाल नेहरू, श्री जवाहरलाल नेहरू, महात्मा गांधी तथा दानदाताओं मे श्री अमन सिंह जी, श्री लब्भूराम जो, लस्यर शहीद प्रो० ओमप्रकाश सिन्हा अध्यक्ष रसायन विभाग तथा श्री टेकचंद जी नांगिया के चित्र महत्वपूर्ण हैं। दूसरी मंजिल के एक हाल में विज्ञान विषय की पुस्तकें हैं तथा वहीं पर संबंधित विषय की पुस्तके पढने हेतु ३५ पाठको के बैठने की व्यवस्था है। इसके साथ पुस्तकालयाध्यक्ष का कार्यालय है तथा वहां सूची पत्रों के केबीनेट भी रखे हुए हैं। विज्ञान कक्ष के साथ ही तकनीकी विभाग भी है जहा पुस्तको की वर्गीकरण, सूचीकरण आदि तकनोकी प्रक्रियायें पूर्ण की जाती हैं। दूसरे हाल में संदर्भ ग्रन्थ रखे हुए है जिनको वहीं बैठकर पढ़ने की व्यवस्था है। इसमें ४० पाठक एक साथ बैठकर अध्ययन कर सकते हैं। सन्दर्भ कक्ष में केवल शोधार्थी, अध्यापक वर्ग एव उच्च कक्षाओं के विद्यार्थी ही प्रवेश पा सकते है। अन्य पाठक गण विशेष अनुमति पाकर लाभ उठा सकते हैं। इस कक्ष के साथ ही एक गैलरी है, जिसमें गत अनेक वर्षों की पत्र पत्रिकायें रखी हुई है।

पुस्तकालय स्टाफ–

१–श्री सुरेशचन्द्र त्यागी, पुस्तकालयाध्यक्ष।

२– ,, गुलजार सिंह सहा० ,, ,,

१–पुस्तकालय सहायक पदों की संख्या–तीन (दो पद रिक्त हैं)

२–लिपिक-पदों की संख्या तीन (दो पद रिक्त हैं)

३–काउंटर सहायक एक, ४-जिल्द साज एक, ५-चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों की संख्या सात है।

पुस्तक क्रयः–

सन् १९८०-८१ में विभिन्न मानवीय एवं विज्ञान विषयों की

क्रय की गई पुस्तकों की सं०७२३है व धनराशि रु०१३८८१ २२पैसे है।

शिक्षा मन्त्रालय के निर्देश पर भेंट स्वरूप प्राप्त पुस्तकों को संख्या २०० है।

पत्र-पत्रिकायें:-

चन्दे से आने वाले दैनिक समाचार पत्र, हिन्दी तीन, अंग्रेजी चार तथा उर्दू एक। चन्दे से आने वाली पत्रिकाओं की संख्या ३ है एवं दान से आने वाली पत्रिकाओं की संख्या ८१ है। ८०-८१ में नवीन सात जर्नलों को मंगाने हेतु चंदा भेजा गया।

पुस्तक विवरण:-

१९८०-८१ में पुस्तक वितरण की संख्या ५८२४ रही। पुस्त-कालय में आने वाले पाठकों की संख्या ३३८० व पुस्तकालय में सदस्यों की संख्या ४१५ रही।

इस समय पुस्तकालय में आगत पंजिकाओं में अंकित कुल पुस्तक सं० ८०९८१ जिनमें सदर्भ ग्रन्थ, बाउन्ड जरनल आदि सम्मिलित हैं। विवरण निम्न प्रकार है-

३१ मार्च १९८० को कुल पुस्तकों की संख्या– ८००५७

सन् १९८०-८१ मे आई हुई पुस्तकों की संख्या– ९२४

सन्दर्भ ग्रन्थों की संख्या-४६७०, बाउन्ड जर्नलों की संख्या २०३०, कुल ६७००। दीमक द्वारा नष्ट पुस्तकों की संख्या ३३७, निष्कासित विथड्रान पुस्तकों की संख्या ९५८। भाषावार पुस्तकों का विभाजन (अनुमानित) निम्न प्रकार है-

हिन्दी, संस्कृत भाषा की पुस्तकों की संख्या लगभग–३६०००

अंग्रेजी भाषा की पुस्तकों की संख्या लगभग –४००००

अन्य भाषाओं की पुस्तकों की संख्या –५०००

जन्तु विज्ञान के विभागीय खाते में इस वर्ष ३४६ पुस्तकें विभागीय पुस्तकालय हेतु दी गई ।

तृतीय पंच वर्षीय योजना के अन्तर्गत विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्रदत्त धनराशि २ लाख १२ हजार रुपये में से १ लाख ३२ हजार रु० की विज्ञान विषयो की तथा ८० हजार की मानविकी विषयों की पुस्तक क्रय की गई ।

चतुर्थ पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने १ लाख पुस्तकों हेतु ७५ हजार बैंक वोल्यूम खरीदने के लिये एवं ३० हजार रु० इक्यूपमेंट हेतु दिया था जिसका उपयोग यथा समय किया गया। उक्त धनराशि द्वारा पुस्तकालय विभाग में अच्छी पुस्तकों का संग्रह करना संभव हो सका।

पुस्तकालय के लिये कुछ महानुभावों ने अपने व्यक्तिगत पुस्तक संग्रह भी दान मे दिये जिनमे से श्रद्धेय श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा दिया गया पुस्तक संग्रह उल्लेखनीय है । इसमें विभिन्न विषयो की १८६७ पुस्तके हैं जिन्हे पुस्तकालय के ऊपरी मंजिल के दौनो हाल के बीच वाली गैलरी में उनके नामांकित आलमारियों मे रखा गया है।

इस पुस्तकालय में १३ भाषाओं की पुस्तके उपलब्ध हैं । यहां पर वेद, संस्कृत, इतिहास, धर्मग्रन्थों आदि की प्राचीन एवं दुर्लभ कृतियों का संग्रह है।

पुस्तकालय के विशिष्ट अभ्यागत—

वर्ष १९८०-८१ में देश विदेश के महत्वपूर्ण व्यक्तियों ने पुस्तकालय का भ्रमण किया तथा अपनी रिपोर्ट में पुस्तकालय की प्रशंसा की। जिन व्यक्तियों ने पुस्तकालय का भ्रमण किया उनमें से प्रमुख निम्न हैं :—

१— श्री केडम माइकेल, येरूशलम, इजराइल।

२– श्री एम० एन० सिन्हा, उप-सचिव शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार।

३– श्री सेन्ट रुग्वी, इंग्लैण्ड।

४– ,, डेविड फ्लूड, डल्लस टेक्सास, अमेरीका।

५– ,, लाल सिंह भदू, कैम्ब्रीज, अमेरीका ।

६– ,, कृष्णनाथ जोशी, नेपाल।

७– ,, पैंथीदास, डब्लिन, आयरलैण्ड ।

८– ,, टी० एन० चतुर्वेदी।

९– ,, एच० आर० खन्ना ।

१०–डा० जगदीश नारायण।

–●●–

पुरातत्त्व संग्रहालय

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की आर्थिक सहायता से पुरातत्त्व संग्रहालय के लिये एक भव्य भवन बनकर तैयार हो गया है। इस भवन में तीन बड़े हाल, दो बड़ी गैलरी तथा १६ कमरे हैं।

पुरातत्व संग्रहालय पहले गुरुकुल के वेद मंदिर के हाल के ऊपर की गैलरियों में था। गुरुकुल के इस वर्ष के वार्षिकोत्सव पर पुरातत्त्व संग्रहालय अपने नये भवन में पूर्णतः स्थानान्तरित कर दिया गया है। इस अवसर पर दिनांक ११ से १३ अप्रैल ८१ तक संग्रहालय के नये भवन में एक भव्य प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी को देखने के लिये हजारों दर्शक आये।

संग्रहालय के कर्मचारीगण पूर्ण निष्ठा के साथ पुरातत्त्व संग्रहालय की बीथिकाओं को सजाने और संवारने में लगे हुए है। इस भव्य भवन में संग्रहालय को सुचारू रूप से चलाने के लिये पर्याप्त धन और उचित स्टाफ की आवश्यकता है। अतः विश्वविद्यालय-अनुदान आयोग इस संग्रहालय को पूर्ण रूप से विश्वविद्यालय का अंग मानते हुए इसके आर्थिक दायित्व को वहन करे।

पुरातत्त्व संग्रहालय जो प्राचीन भारतीय इतिहास का अंग बन चुका है, में एक सहायक क्यूरेटर कार्य कर रहे हैं। प्राचीन भारतीय इतिहास के अध्यक्ष इसके निदेशक हैं। संग्रहालय का कार्य केवल निदेशक और सहायक क्यूरेटर ही नहीं चला सकते हैं। अतः छठी योजना में संग्रहालय के लिये निम्न पदों के लिये प्रावधान किया जा रहा है–

१–गाइड लैक्चरर–१
२–एकाउन्टैन्ट–१
३–स्टौर कीपर–१

४–फोटोग्राफर–१
५–माली–१
६–गैलरी अटैन्डैन्ट–४
७–आर्मड गार्ड–१

दर्शकों की संख्या:–

इस वर्ष ४८४१ दर्शकों ने संग्रहालय को देखा । इस वर्ष जो प्रसिद्ध विद्वान् पधारे वे इस प्रकार है–इजराइल के प्रसिद्ध विद्वान् डा० माईकेलकेउम, आर्य विद्वान् स्वामी ओमानन्द जी, श्री जगदीश नारायण कुलपति, रुड़की विश्वविद्यालय, रुड़की, श्री टी० एन० चतुर्वेदी, सचिव, शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार, श्री लाला राम गोपाल शालवाले, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली, श्री एच०आर० खन्ना अवकाश प्राप्त न्यायाधीश, सर्वोच्च न्यायालय और श्री एम०पी० बालकृष्णन् जी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग आदि।

–●–

आर्य संग्रहालय का दृश्य। फोटो मे स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का चित्र दिखाई दे रहा है। स्वामी जी के साथ हैं डा० विनोदचन्द जी, सग्रहालयाध्यक्ष।

वार्षिकोत्सव पर आयोजित आर्य संग्रहालय का उद्घाटन

दिनांक ११ अप्रैल १९८१ को वेद मन्दिर में आर्य संग्रहालय एवं पुस्तकालय का उद्घाटन आर्य संन्यासी श्री ओमानन्द जी ने किया। इस अवसर पर नये संग्रहालय भवन में एक भव्य प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी ने आर्य संग्रहालय तथा पुस्तकालय के प्रारूप पर प्रकाश डाला और गुरुकुल में विद्यमान पुरातत्व संग्रहालय के उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना की। आर्य संग्रहालय तथा पुस्तकालय के निदेशक डा० सत्यकेतु विद्यालंकार ने इस योजना के सम्बन्ध में विस्तार से चर्चा की और सभी आर्यजनों से सहयोग की अपील की। इस योजना के अन्तर्गत आर्य समाज का एक बृहत् इतिहास अनेक खण्डों में लिखा जायेगा। आर्य समाज पर कार्य करने वालों के लिये यह एक शोध संस्थान के रूप में कार्य करेगा। आर्य संग्रहालय तथा पुस्तकालय का उद्घाटन करते हुए स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने आशीर्वाद देते हुए अपने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया और उन्होंने इस पुस्तकालय हेतु कुछ पुस्तकें भी भेंट की। स्वामी जी के उद्घाटन भाषण के पश्चात् पुरातत्व संग्रहालय के निदेशक डा० विनोदचन्द सिन्हा ने इस संग्रहालय का संक्षिप्त परिचय लोगों के समक्ष रखा। उन्होंने अपना दृढ़ विश्वास व्यक्त किया कि यदि सरकार और गुरुकुल के अधिकारियों द्वारा पूर्ण सहयोग मिला तो गुरुकुल के इस संग्रहालय को देश के एक प्रसिद्ध संग्रहालय के

रूप में परिणित कर दिया जायेगा । संग्रहालय में प्रदर्शनी का आयोजन करने के लिये उन्होने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के वित्तीय अधिकारी के सहयोग के लिये उनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया ।

अन्त मे विश्वविद्यालय के कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा ने इस समारोह मे सम्मिलित होने वाले लोगों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया । उन्होने आर्य संग्रहालय एवं पुरातत्व संग्रहालय की सफलता के लिये आशीर्वाद दिया ।

-●-

आर्य संग्रहालय मे उद्घाटन के अवसर पर वेद मन्दिर में दर्शको का एक भाग।

एन० सी० सी० १९८०-८१

विश्वविद्यालय के लिए इस समय५५छात्रों के प्रशिक्षणकी स्वीकृति है। अत इस वर्ष भी एन० सी० सी० मे ५५ छात्रों ने प्रवेश लिया। १५ अगस्त १९८० के समारोह में एन० सी० सी० के छात्रो ने भाग लिया । परेड की सलामी माननीय कुलपति, कर्नल बलभद्र कुमार हूजा जी ने ली ।

अक्टूबर १९८० मे छात्रों ने रायपुर (देहरादून) मे वार्षिक प्रशिक्षण शिविर में उत्साह पूर्वक भाग लिया तथा शिविर के प्रत्येक कार्य मे सराहनीय योगदान दिया।

२३ नवम्बर १९८० को एन० सी० सी० दिवस मनाया गया। इस अवसर पर बी० एच० ई० एल० के मुख्य अस्पताल मे रक्त दान का आयोजन किया गया। इसमे कैप्टन वीरेन्द्र अरोड़ा ने सर्वप्रथम रक्त दान करके छात्रों को उत्साहित किया। जिन छात्रों ने १९८०-८१ मे रक्त दान किया उनमे अनिल कुमार चावला, मुकेश कुमार एवं चन्द्र प्रकाश के नाम उल्लेखनीय हैं। माननीय कुलपति कर्नल बलभद्र कुमार हूजा, बी० एच० ई० एल० के अधिशासी निदेशक श्री पी० एस० गुप्ता एवं अन्य अधिकारी इस अवसर पर उपस्थित थे ।

कैप्टन वीरेन्द्र अरोड़ा ने पिछले वर्ष भी रक्तदान करने में पहल की थी। एन० सी० सी० छात्रों को योग का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। छात्रों को भविष्य में रोजगार संबंधी निर्णय लेने के लिये "कैरियर कोर्सेस एवं गाइडेन्स ब्यूरो" की सुविधा उपलब्ध कराने के लिये विश्वविद्यालय ने योजना स्वीकार कर ली है ।

२६ जनवरी ८१ को कर्नल बलभद्र कुमार हूजा जी ने ध्वजा रोहण किया। इस अवसर पर एन० सी० सी० छात्रों द्वारा सलामी दी गई।

छात्र ललित जोशी डायरेक्टर कम्बाइन्ड पी०आर०डी० सलैक्शन कैम्प के लिये चुने गये है।

११ अप्रैल-१४ अप्रैल ८१ मे आर्यभट्ट विज्ञान मेला में एन०सी० सी० के स्थल एवं वायु सेना विभाग ने भाग लिया। इन के कार्य को बहुत पसंद किया गया। यह कार्यक्रम मेजर जनरल नरेन्द्र सिंह, डा० जी० एन० सी० सी० तथा ब्रिगेडियर महेन्द्र सिंह (निदेशक एन० सी० सी०) के सहयोग से सम्भव हो सका था। विश्वविद्यालय उन के प्रति आभार प्रकट करता है।

वीरेन्द्र कैप्टन
अध्यक्ष राष्ट्रीय छात्र सेना

--●●--

छात्र अनिल चावला एन०सी०सी० दिवस पर रक्तदान करते हुए ।

क्रीड़ा रिपोर्ट

विगत तीन वर्षों की उथल पुथल के पश्चात् १९८०-८१ के सत्र का आरम्भ माननीय बलभद्र कुमार हूजा को न्यायालय द्वारा विधिवत् कुलपति घोषित कर देने के पश्चात् हुआ। इन वर्षों मे शैक्षणिक गतिविधियो की भाँति खेलकूद की गतिविधिया भी प्राय समाप्त ही रही । जो कुछ भी खेल का सामान बकाया था वह मनोविज्ञान की प्रयोगशाला का ताला तोडकर निकाला जा चुका था। विश्वविद्यालय की यूनिवर्सिटी बोर्ड की सदस्यता समाप्त हो चुकी थी । खेल के मैदान घास आदि से भरे हुए थे। हाकी कोच यहा से जा चुका था। टेबिल टेनिस की मेज भी चोरी हो चुकी थी। सभी कुछ नये सिरे से करना था । वित्त अधिकारी महोदय ने इस परिप्रेक्ष्य मे खेल आदि के लिए ५,०००/- की राशि तथा इन्टर यूनिवर्सिटी बोर्ड की सदस्यता हेतु ७,५००/- की राशि की स्वीकृति दी। माननीय कुलपति जी के प्रयासो से इन्टर यूनिवर्सिटी बौर्ड इस बात पर राजी हो गया कि वे ७,५००/- की बजाय २,५००/- लेकर हमारी सदस्यता स्वीकार कर ले। इससे खेल के मद्ध ५,०००/- के अलावा ५,०००/ की अतिरिक्त राशि सामान आदि के खरीदने मे व्यय करने हेतु प्राप्त हो गई। अक्तूबर मास मे गेम्स के सामान का टेन्डर आदि मगाकर विधिवत क्रय समिति द्वारा स्वीकृति लेने की प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी गई। इसी के पश्चात् हाकी कोच की नियुक्ति भी कर दी गई जिससे खेल आदि के प्रारम्भ करने मे काफी सहायता मिली। नवम्बर मास मे कुछ खेलों की व्यवस्था कर दी गई ।

१–विश्वविद्यालय की फुटबाल की टीम ने नवम्बर मास मे इलेवन स्टार द्वारा सचालित टूर्नामेंट मे भाग लिया । यहा हमारी टीम क्वाटर फाइनल मे आई०डी०पी०एल०, ऋषिकेश से हार गई ।

२–विश्वविद्यालय की बालीबाल टीम ने इटैक्ट क्लब ज्वालापुर द्वारा सचालित टूर्नामेंट मे ३० नवम्बर को भाग लिया । विश्वविद्यालय की टीम फाइनल मे पहुचकर द्वितीय स्थान पर रही ।

३–इसके पश्चात् ४ दिसम्बर को विश्वविद्यालय की टीम का प्रदर्शन अच्छा रहा। हमारी टीम सेमीफाइनल मे लखनऊ से २-१ से हारी।

४–२० दिसम्बर को विश्वविद्यालय की क्रिकेट टीम इन्टर यूनिवर्सिटी टूर्नामेंट में भाग लेने प्रिन्सिपल श्री सुरेशचन्द्र त्यागी के संरक्षण में मेरठ गई। वहां पर वह कानपुर से हार गई। परन्तु वहां जाने का लाभ विद्यार्थियों को अनुभव की दृष्टि से अच्छा मिला।

५–२४ दिसम्बर को विश्वविद्यालय हाकी टीम, हाकी कोच के निर्देशन में इन्टर यूनिवर्सिटी टूर्नामेंट मे भाग लेने लुधियाना गई। वहां पर तीसरे राउण्ड में विश्वविद्यालय की टीम अलीगढ़ विश्वविद्यालय की टीम से ४-० से पराजित हुई। वहा पर अनुभव की दृष्टि से विश्वविद्यालय की टीम को पर्याप्त लाभ मिला।

विश्वविद्यालय की क्रिकेट टीम ने परिसर मे ही अभ्यास की दृष्टि से कुछ फ्रेंडली मैच खेले और उससे भी लाभ ही मिला। खेलों के संवर्धन में आर्य समाज के सहयोग से भी कुछ फुटबाल के मैच आयोजित किये गये। जिसमे विश्वविद्यालय के लड़को ने भाग लिया। उसमें जूनियर एवं सीनियर एथेलेटिक मीट भी शामिल हैं।

दिसम्बर के महीने में विश्वविद्यालय ने ज्वालापुर महाविद्यालय के दयानन्द टूर्नामेंट, कबड्डी, वालीबाल, एवं फुटबाल के खेलों में भाग लिया। फुटबाल में विश्वविद्यालय की टीम द्वितीय एवं वालीवाल में तृतीय रही।

जनवरी मास में विश्वविद्यालय की क्रिकेट टीम ने बी० एच० ई० एल० क्लब से मैच खेला और उसमें विजयी रही। जनवरी मास मे ही विश्वविद्यालय की टीम ने आयुर्वेद कालेज के वालीवाल टीम से मैच खेला एवं विजयी रही।

फरवरी मास में विश्वविद्यालय की क्रिकेट टीम ने एस० एम० जे० एन० डिग्री कालेज की टीम से मैच खेला तथा उसमें विजयी रही।

श्री टी० एन० चतुर्वेदी शिक्षा सचिव, भारत सरकार व्यायामशाला का उद्घाटन करते हुए। पीछे की ओर है कुलपति बलभद्र हूजा एवं क्रीड़ाध्यक्ष, प्रो० ओमप्रकाश मिश्र। मुख्य अतिथि भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

मार्च के महीने में टेबिल टेनिस टूर्नामेंट का विश्वविद्यालय में आयोजन किया गया जिसमें विश्वविद्यालय की तीनों फैकल्टिज ने बड़े उत्साह से भाग लिया। मार्च के महीने में ही कुलपति जी की प्रेरणा से विश्वविद्यालय के जिमनेजियम हाल का पुनरुद्धार प्रारम्भ हुआ जिसका विधिवत उद्घाटन शिक्षा सचिव केन्द्र सरकार, श्री टी० एन० चतुर्वेदी जी के हाथों सम्पन्न हुआ। जिमनेजियम को विकसित करने के लिये नवीन उपकरणों से जिमनेजियम को सुसज्जित किया गया। यू०जी०सी० के डिप्टी सेक्रेटरी श्री बालकृष्णन् ने भी जिमनेजियम हाल को देखा और उसकी प्रशंसा की।

इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय के क्रीड़ा विभाग ने आर्य युवक समाज को सहयोग देकर कबड्डी टूर्नामेंट का आयोजन किया जिसमे विश्वविद्यालय की टीम द्वितीय स्थान पर रही।

इस वर्ष खेलों को सुचारू रूप से चलाने में श्री सुरेश चन्द्र पाठक जनरल सेक्रेटरी कैप्टन का योगदान सराहनीय रहा।

ओमप्रकाश मिश्रा

--●●--

आर्य भट्ट मेला १९८१

विज्ञान महाविद्यालय, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

१९८१ विज्ञान महाविद्यालय के इतिहास का एक बहुत महत्वपूर्ण वर्ष है । इस वर्ष विज्ञान महाविद्यालय ने प्रथम बार एक विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया। आर्यभट्ट भारत सरकार का गौरव है। आर्यभट्ट १९ अप्रैल १९७५ को प्रो० सतीश धवन के निर्देशन मे छोडा गया था। इस स्मृति में इस मेले का आयोजन श्री बलभद्र कुमार हूजा कुलपति, गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के आदेशानुसार किया गया। मेले का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों एवं जनमानस मे विज्ञान के प्रति रुचि एव जागृति पैदा करना था। विज्ञान महाविद्यालय इस उद्देश्य मे पूर्णतया सफल रहा ।

श्री सुरेश चन्द्र त्यागी प्राचार्य विज्ञान महाविद्यालय तथा डा. ताराचन्द शर्मा मेले के संयोजक रहे। मेले का उद्घाटन ११ अप्रैल १९८१ को रुडकी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री जगदीश नारायण द्वारा हुआ। माननीय श्री जगदीश नारायण जी ने विभिन्न विभागों द्वारा आयोजित प्रदर्शनियों का निरीक्षण किया और विद्यार्थियो के प्रयास की भूरि-भूरि प्रशंसा की। उद्घाटन के तुरन्त पश्चात् मेले में आमन्त्रित एन०सी०सी० यूनिट ने ग्लाइडर उड़ाकर उनका स्वागत किया।

१२ अप्रैल १९८१ को मेले के मुख्य अतिथि माननीय एच०आर० खन्ना भूतपूर्व न्यायाधीश उच्चतम न्यायालय तथा टी० एन० चतुर्वेदी सचिव शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार रहे। माननीय अतिथियों ने विद्यार्थियों द्वारा आयोजित प्रदर्शनी देखी और उनके कार्य की बहुत सराहना की।

न्यायमूर्ति श्री एच० आर० खन्ना, विज्ञान मेला देखते हुए। उनके साथ है श्री टी०एन० चतुर्वेदी, प्रिंसिपल सुरेश चन्द और प्रो० बिजयशंकर।

मेले में दर्शकों की भीड देखते ही बनती थी । विद्यार्थियों द्वारा बनाया, भौतिक विज्ञान विभाग की छत पर आर्यभट्ट का विशाल माडल दर्शकों की दृष्टि का केन्द्र था ।

वनस्पति विज्ञान विभाग की प्रदर्शनी में २३ आइटम प्रदर्शित किये गये । इसमें विभाग के विद्यार्थियों ने माडल, चार्ट एवं हरबेरियम आदि के द्वारा वर्तमान समय की अनेक ज्वलन्त समस्याओं को दर्शाया एवं बताया। भूतपूर्व विद्यार्थियो ने भी प्रदर्शनी में अत्यन्त रुचि दिखाई। सौन्दर्य प्रसाधन के लिये पौधों की उपयोगिता, गृह सज्जा में काष्ठ एवं ताजे फूलो का उपयोग एवं वैदिक पौधों के विषय को भी बहुत सुन्दर रूप से दर्शाया गया। पैट्रोल की कमी को पौधों द्वारा दूर करने के लिये गन्ना एवं लेटेक्स वाले पौधों का महत्व बताया गया।

जन्तु विज्ञान विभाग सारे मेले मे बच्चे, बूढे तथा युवा वर्ग के आकर्षण का केन्द्र रहा। विभाग में विद्यार्थियों ने अनेक प्रकार के उपकरणों तथा माडलो द्वारा जन्तु जगत की अनेक जटिल समस्याओं को आम साधारण जनता तक पहुंचाने का सफल प्रयास किया। आंख की कार्यविधि, मनुष्य में रक्त परिभ्रमण विधि, सुषुम्णा नाड़ी की कार्यविधि, गुर्दे की कार्य प्रणाली, लिग निर्धारण विधि, रक्त वर्ग, परीक्षण लघु चिड़ियाघर, वातावरण और जन्तुओं में संबंध आदि को सफलतापूर्वक जनमानस को समझाने का प्रयास किया गया। इस विभाग का एक बहुत ही सुखद और शैक्षिक प्रयास यह भी रहा कि वाइल्ड लाइफ पर प्रतिदिन चलचित्र दिखाये गये जो दर्शकों के मनोरंजन तथा ज्ञान वर्धन का साधन थे। विद्यार्थियों द्वारा आयोजित "लोक परलोक" नामक माडल जनता द्वारा अत्यधिक सराहनीय रहा।

रसायन विभाग के प्रदर्शनों में कई अजीबो गरीब माडल दिखाई दिए। विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत एक तरफ क्रिस्टलोग्राफी-अनेक प्रकार के रवों का बनना, उनके आकार, प्रकार, तथा उनका कारण और दूसरी ओर कार्बन व हाइड्रोजन के चमत्कार

जिसमें कार्बन के अनेक अपरूप, कार्बन हाइड्रोजन की श्रेणियां, प्रकृति और मनुष्य द्वारा बनाये हुये इनके अनेक पोलीमर जो आज मानव समाज को तथा इस वर्तमान सभ्यता को मोड़ देने के उत्तर-दायित्व से युक्त हैं, को मनोरंजक रूप में दिखाया गया।

फोटोग्राफी, कारण और सिद्धान्त, वातावरण तथा प्रदूषण और उसका मानव समाज पर प्रभाव, ज्वालामुखी की उत्पत्ति तथा बिस्फोट, फूलो से इतरो का बनाना और सुरासव का बनाना आदि अनेक जटिल विषयो को सरल रूप मे प्रस्तुत किया गया ।

विभिन्न रासायनिक प्रक्रियाओ का सहारा लेते हुये दर्शकों के मनोरंजन हेतु "भाग्य आजमाइये", "अपने बारे में जानों", "सिलिका गार्डन", "स्नो फाल" आदि अनेक माडल विद्यार्थियों ने बनाये जो आम जनता की जिज्ञासा का कारण बने रहे।

भौतिकी विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित प्रद-र्शनी मे आर्यभट्ट का एक छोटा किन्तु मनमोहक माडल जनता के आकर्षण का केन्द्र था क्योंकि दर्शकों को इसे बहुत ही पास देखने का अवसर प्राप्त हुआ। विभाग के विद्यार्थियों ने तकनीकी दृष्टि से कई उत्तम माडल प्रस्तुत किये जिनमें "सोलर हीटर", "चोरों से सुरक्षा", "हम शेर से नही घबराते", "तुम्हारा हमारा सम्बन्ध पुरातन है", "सुरक्षित घर", "बलाष्ठ फरनेस" आदि मुख्य थे ।

गणित विभाग ने गणित जैसे शुष्क विषय को बहुत ही मनोरंजक रूप में प्रस्तुत किया। एक तरफ जहां उन्होंने दर्शकों को ब्रह्माण्ड के दर्शन कराये वहीं दूसरी ओर गणित के अनेक प्रश्नों को मनोरंजक खेलों द्वारा जनता के समक्ष प्रस्तुत किया । पांच हजार वर्ष के लिये बनाया गया कैलेन्डर, पिरामिडों की रचना, गणित के अनेक अनुसंधानकर्ताओं के बारे में जानकारी, धरती के विकास, उसके गुण और धर्म, आज का नया गणित, कम्प्यूटर और उसका उपयोग, आयु अनुमान तालिका का माडल, आदि को दर्शकों ने बहुत सराहा।

विज्ञान मेले का एक चित्र, जिसमें दिखाई दे रहे हैं— डा० ताराचन्द, डा० रामकुमार पालीवाल, श्री बी० एम० थापर, डा० हरिश्चन्द ग्रोवर। मुख्य अतिथि और श्री टी० एन० चतुर्वेदी इस अवसर पर विराजमान हैं।

इसी विभाग में गुरुकुल इंटर कालेज के छात्रों द्वारा बनाये गये "सुरक्षित घर" "यन्त्र का सिद्धान्त" आदि अनेक माडल बहुत प्रशंसनीय थे।

केन्द्रीय विद्यालय नं० १-बी० एच० ई० एल०, हरिद्वार ने भी अपने माडलों की प्रदर्शनी इस मेले मे लगाई। इन विद्यार्थियों द्वारा बनाये गये माडलों का स्तर समकक्ष विद्यार्थियों द्वारा गये माडलों से बहुत ऊंचा था। अपने विषय एवं प्रयोगों को इन विद्यार्थियों ने बहुत सुन्दर तथा आकर्षक ढंग से प्रदर्शित किया। धूम्रपान का मनुष्य पर दुष्प्रभाव सुन्दर ढंग से दर्शाया गया था।

विद्यालय विभाग गुरुकुल कांगडी ने भी इस मेले मे माडल भेजकर अपना योगदान दिया।

विज्ञान के विद्यार्थियों के बारे में यह एक आम धारणा है कि वे केवल किताबी कीड़े होते हैं किन्तु इस महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने प्रो० ओमप्रकाश सिन्हा की स्मृति मे आर्ट गैलरी का आयोजन करके यह प्रमाणित करने की कोशिश की कि ऐसी धारणा बनाना गलत है। विज्ञान का विद्यार्थी परमात्मा के सत्य, शिवं, सुन्दरं का नजदीक से अवलोकन करता है और उसे अपने जीवन मे उतारता है। यहा एक बात लिखना आवश्यक है कि स्व० ओमप्रकाश सिन्हा जहां एक बहुत ही योग्य शिक्षक थे, अच्छे वैज्ञानिक थे वहां उन्हें फाइनल आर्ट बहुत प्रिय था। विभाग मे रखे हुए उनके कागजात, सलीके से बनाया हुआ विभाग इस बात के स्पष्ट प्रमाण हैं। विद्यार्थियों का यह गैलरी बनाना विद्यार्थियों की उनके प्रति हार्दिक श्रद्धान्जलि थी।

इसमें मानव का क्रमिक विकास प्रगति की ओर चित्र द्वारा दिखाया गया था जो बहुत पसन्द किया गया।

आर्य भट्ट मेले में आस पास की संस्थाओं ने बहुत ही सक्रिय रूप से भाग लिया जिसमे विशेष रूप से भारत हैवी इलैक्ट्रिकल्स, रानीपुर, रुड़की विश्वविद्यालय, रुड़की, आई० पी० आई० देहरादून, टी० आई० पी० सेन्टर गुरुकुल कांगड़ी, इन्टरनेशनल पब्लिशर, देहरादून, राजकीय आयुर्वेदिक कालेज, गुरुकुल कांगड़ी, एन०सी०सी० आर्मी यूनिट, रुड़की, एन०सी०सी० एयरफोर्स, आगरा विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं ।

--●●--
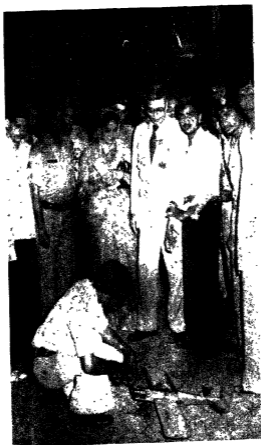
हवाई जहाज को उड़ाते देख रहे हैं – श्रीमती एवं श्री जगदीश नारायण, कुलपति, रुड़की विश्वविद्यालय। साथ खड़े हैं एन०सी० सी० के अध्यक्ष कप्तान वीरेन्द्र अरोड़ा।

"पत्रिकाएँ"

आर्य भट्ट विज्ञान पत्रिका

इस वर्ष दीक्षान्त समारोह के अवसर पर विज्ञान महाविद्यालय द्वारा आर्यभट्ट पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया गया। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से हिन्दी में प्रकाशित होने वाली यह प्रथम वैज्ञानिक पत्रिका है। इसका उद्देश्य जनसाधारण एवं विद्यार्थियो को विज्ञान एवं टेक्नोलोजी की जानकारी और उनकी उपयोगिता से अवगत कराना है। इसके प्रकाशन का निर्णय कुलपति जी ने लिया जिससे इसके द्वारा सरल हिन्दी भाषा में जनसाधारण तक विज्ञान एवं टेक्नोलोजी की जानकारी पहुंचाई जा सके। इस अंक मे वेदों में उपलब्ध विज्ञान से लेकर आधुनिक वैज्ञानिक विषयों पर लेख प्रकाशित हैं। पत्रिका के सम्पादक डा० विजयशंकर अध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान विभाग ने कतिपय वैज्ञानिक अन्वेषणों एवं समस्याओं को पद्यबद्ध रचनाओं में प्रस्तुत करके विज्ञान को लोकप्रिय बनाने मे एक नई दिशा प्रदान की है।

पत्रिका का विमोचन ११ अप्रैल १९८१ को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति एवं भारत के प्रसिद्ध सम्पादक एवं पत्रकार श्री वीरेन्द्र जी ने किया। इसअवसर पर बोलते हुये डा.विजय शंकर सम्पादक आर्य भट्ट विज्ञान पत्रिका, ने पत्रिका परिचय दिया एवं बताया कि स्वामी श्रद्धानन्द जी का यह विचार था कि गुरुकुल में वेद संस्कृत आदि के साथ-साथ विज्ञान की भी शिक्षा दी जानी चाहिये। स्वामी जी की प्रेरणा के फलस्वरूप ही विज्ञान की पुस्तकों का हिन्दी भाषा में लिखने की पहल भारत में वर्षों पूर्व गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने की। इस प्रसंग में तत्कालीन मुख्याध्यापक श्रीयुत् गोवर्धन का नाम उल्लेखनीय है जिन्होंने हिन्दी में भौतिकी और रसायन पर पुस्तकें रचकर विज्ञान शिक्षा जगत में नव युग का शुभारम्भ किया।

पत्रिका के प्रकाशन के अवसर पर वैज्ञानिकों के सन्देश प्राप्त हुए। कौसिल आफ साइंटिफिक एण्ड इण्डस्ट्रियल रिसर्च के महा-निदेशक प्रो० एम० जी० के० मेनन ने प्रकाशन की सफलता की कामना करते हुए लिखा.—

"हमारे समाज में वैज्ञानिक चेतना का जिस सीमा तक समा-वेश हो सकेगा अन्ततः उसी से हमारी न केवल भौतिकी बल्कि मानवीय खुशहाली और जीवन स्तर की सच्ची प्रगति परिभाषित हो सकेगी।"

यह आशा की जाती है कि पत्रिका समाज मे वैज्ञानिक मनः स्थिति एवं तर्कशील दृष्टिकोण पनपाने मे महत्वपूर्ण पार्ट अदा करेगी।

वैदिक पथ

यह विश्वविद्यालय की त्रैमासिक अंग्रेजी की पत्रिका है। इस वर्ष अभी तक इसके तीन अंक निकल चुके हैं। पहला अक्टूबर ८० में, दूसरा दिसम्बर ८० में, तीसरा मार्च ८१ मे।

इसके सम्पादक प्रो० हरगोपाल सिह मनोविज्ञान विभाग हैं।

प्रह्लाद

यह हिन्दी विभाग की त्रैमासिक पत्रिका है। इसका अभी तक एक अंक मार्च ८१ में निकला है।

इसके सम्पादक डा० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी, अध्यक्ष हिन्दी विभाग हैं।

गुरुकुल पत्रिका

यह विश्वविद्यालय की हिन्दी की मासिक पत्रिका है। किन्तु कुछ अपरिहार्य कारणों से इस वर्ष भी अभी तक इसका एक ही अंक निकल सका है।

इसके सम्पादक डा० निगम शर्मा,, संस्कृत विभाग, हैं।

यज्ञ के अवसर पर श्रीमती एव श्री सरदारी लाल वर्मा और श्रीमति एवं श्री जितेन्द्र जी।
मुख्य अतिथि भी इस अवसर पर विद्यमान है।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय (हरिद्वार)

वार्षिक परीक्षा परिणाम १९८०

उत्तीर्ण परीक्षा	कुल संख्या	परीक्षा में बैठे छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण छात्रों की संख्या			
			प्रथम	द्वितीय	तृतीय	अनुत्तीर्ण
विद्याधिकारी	१००	१००	२०	६५	१३	२
अलंकार	१४	१४	१०	४	—	—
बी०ए०	२०	२०	—	१४	५	१
बी०एस-सी०	३७	३७	६	२७	४	—
एम० ए०	—	—	—	—	—	—
वैदिक साहित्य	२	२	—	२	—	—
संस्कृत साहित्य	११	९	४	५	—	—
दर्शन शास्त्र	४	४	१	३	—	—
प्रा०भा० इतिहास	७	६	३	३	—	—
हिन्दी साहित्य	११	८	२	६	—	—
मनोविज्ञान	५	३	१	२	—	—
गणित	३	३	३	—	—	—
अंग्रेजी साहित्य	७	६	१	४	१	—

इन छात्रों ने वार्षिक परीक्षा १९८० में सर्वाधिक अंक प्राप्त किये ।

क०सं०	कक्षा	अनुक्रमांक	वर्ष	नाम परीक्षार्थी	पूर्णांक	प्राप्तांक	प्रतिशत
१—	वेदालंकार	५३७	१९८०	श्री शशी भूषण	१३५०	९४५	७०%
२—	विद्यालंकार	२५०	,,	कु० उमा कुमारी	१३५०	९०१	६६.७४%
३—	बी०ए०	२७९	,,	श्री राम कुमार पंवार	१४००	८३१	५९.४%
४—	बी.एस-सी.ग.	३७२	,,	कु. चन्द्रकान्ता	९००	६१६	६८.५%
५—	बी.एस-सी बा.	३९९	,,	श्री प्रवीण रतरा	९००	५९१	६६ ७%
६—	एम.ए.वै.सा.	५०६	,,	श्रीनन्द किशोर विनीत	८००	४७२	५९%
७—	एम.ए. सस्कृत	४९३	,,	श्री भगत सिह	८००	५१२	६४%
८—	एम.ए. दर्शन शा.	५२१	,,	कु. मधु बाला शर्मा	८००	४८०	६०%
९—	एम.ए. इति.	५१५	,,	श्री योगेन्द्र कुमार	८००	५१४	६४.२५%
१०—	एम.ए.,हि सा.	४८३	,,	श्री नवीन चन्द तिवारी	८००	५४७	६८.३८%
११—	एम.ए. मनो.	५०८	,,	श्री अम्बरीश चन्द पाण्डेय	१०००	६६७	६६.७%
१२—	एम.एस-सी.ग.	५०४	,,	श्री नेत्रपाल सिंह	८००	५४१	६७ ६२%
१३—	एम.ए.अंग्रेजी	५२४	,,	श्री प्रमयेश भट्टाचार्य	९००	५४१	६०.११%

वर्ष १९८१ के दीक्षान्त समारोह में विभिन्न विषयों में पी०एच०डी० की उपाधि प्राप्त करने वाले शोधकर्ताओं की सूची

क्र सं०	नाम शोधकर्ता	विषय	नाम निर्देशक
१–	श्री भारत भूषण	संस्कृत साहित्य	डा० निगम शर्मा
	शोध विषय का शीर्षक:– अथर्वणिक राजनीति ।		
२–	श्री राम प्रकाश शर्मा	सस्कृत साहित्य	प्रो० बुद्ध देव शर्मा
	शोध विषय का शीर्षक:– न्यास और पद्मन्जरी के विवरणो का तुलनात्मक अध्ययन ।		
३–	श्री सत्यव्रत राजेश	सस्कृत साहित्य	डा० वाचस्पति उपाध्याय
	शोध विषय का शीर्षक:– महर्षि दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य मे समाज का स्वरूप ।		
४–	कु० अंजली रोझा	संस्कृत साहित्य	डा० निगम शर्मा
	शोध विषय का शीर्षक:– भवभूति का पात्रों में स्वात्म प्रक्षेपण ।		
५–	श्री श्याम नारायण सिह	प्रा० भा० इति०	डा० विनोद चन्द्र सिन्हा
	शोध विषय का शीर्षक:– अहिच्छत्र का इतिहास ।		
६–	श्री मांगे राम	प्रा० भा० इति०	डा० विनोद चन्द्र सिन्हा
	शोध विषय का शीर्षक:– हरियाण के प्राचीन गणराज्य ।		
७–	श्री विशाल मणी बहुगुणा	प्रा० भा० इति०	डा० विनोद चन्द्र सिन्हा
	शोध विषय का शीर्षक:– प्राचीन भारत में सामन्तवाद ।		

क्र सं०	नाम शोधकर्ता	विषय	नाम निर्देशक
८–	श्री राजपाल सिह	प्रा० भा० इति०	डा० विनोद चन्द्र सिन्हा
	शोध विषय का शीर्षक:– प्राचीन भारत में फौजदारी कानून का विकास ।		
९–	कु० ऊषारानी शर्मा	हिन्दी सा०	डा० विष्णुदत्त राकेश
	शोध विषय का शीर्षक:–मौर्य एवं शुंग काल सम्बन्धी हिन्दी उपन्यासो का साहित्यिक एव सॉस्कृतिक अध्ययन ।		
१०–	श्रीमति कुसुम लता अग्रवाल	हिन्दी सा०	डा० अम्बिका प्रसाद
	शोध विषय का शीर्षक.–सेनापति और उनका काव्य ।		
११–	श्रीमति शोभा तिवारी	हिन्दी सा०	डा० अम्बिका प्रसाद
	शोध विषय का शीर्षक:–तुलसी की रामचरित मानसेतर रचनाओ का आलोचनात्मक अध्ययन ।		
१२–	श्री दीनानाथ शर्मा	हिन्दी सा०	डा० विष्णुदत्त राकेश
	शोध विषय का शीर्षक:–स्वामी सत्यदेव परिव्राजक- व्यक्तित्व एवं साहित्यिक कृतित्व ।		
१३–	श्री महेशचन्द्र विद्यालंकार	हिन्दी सा०	डा० अम्बिका प्रसाद
	शोध विषय का शीर्षक:–महाकाव्य की दृष्टि से कालीदास और जयशंकर प्रसाद का तुलनात्मक अध्ययन ।		
१४–	श्री इन्द्र जीत	हिन्दी सा०	डा० विष्णुदत्त राकेश
	शोध विषय का शीर्षक:–आचार्य पद्म सिंह शर्मा जीवनी और कृतियां ।		

सीनेट सदस्यों की सूची

१– आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब,	कुलाधिपति	श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक, दैनिक वीर प्रताप, नेहरू गार्डन रोड, जालन्धर शहर
२– ,, ,,	उप प्रधान	श्री पृथ्वीसिंह आजाद, विजय निकेतन, खरड, निकट चण्डीगढ ।
३– ,, ,,	,,	श्री देवेन्द्र कुमार, प्रधान आर्य समाज, नवा शहर, दोआबा, जि० जालन्धर ।
४– ,, ,,	,,	वैद्य तीर्थराज, मेन बाजार, मोगा मण्डी (पजाब)
५– ,, ,,	मन्त्री	श्री रामचन्द्र जावेद, प्रिंसिपल, एन.डी.विक्टर हायर सेकेण्ड्री स्कूल जालन्धर छावनी ,
६– ,, ,,	उप-मन्त्री	श्री रघुवीरसिंह भाटिया, प्रकाश ट्रेडर्स, लक्कड बाजार, लुधियाना ।
७– ,, ,,	,,	श्री सरदारीलाल आर्य रत्न, आजाद सर्जिकल वर्क्स जालन्धर ।
८– ,, ,,	कोषाध्यक्ष	डा० के० के० पसरीचा, आदर्श नगर, जालन्धर शहर ।

९– ,, ,, पुस्तकालयाध्यक्ष	श्री आशानन्द, पुस्तकालयाध्यक्ष, आर्य प्र०स० पंजाब, गुरुदत्त भवन, कृष्णपुरा चौक, जालन्धर शहर।
१०– कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय	श्री बलभद्र कुमार हूजा।
११– आचार्य एवं उप कुलपति ,,	डा. गंगाराम (६-६-८१ से)
१२– आचार्या कन्या गुरुकुल देहरादून	श्रीमती दमयन्ती कपूर।
१३– मैनेजर कन्या गुरुकुल ,,	श्री मनोहर विद्यालंकार।
१४– पंजीकृत स्नातकों के प्रतिनिधि	प्रो० प्रशान्त वेदालंकार।
१५– ,, ,,	प्रो० वेदव्रत।
१६– ,, स्नातिकाओ ,,	श्रीमती सरोज विद्यालंकार।
१७– शिक्षकों के प्रतिनिधि	श्री ओमप्रकाश मिश्र, गु० कां० विश्वविद्यालय।
१८– सभा के प्रतिनिधि	आचार्य प्रियव्रत जी. यश निवास, ज्वालापुर रोड़, आर्य नगर।
१९– ,, ,,	श्री ओमानन्द सरस्वती गुरुकुल झज्जर, जिला रोहतक।
२०– ,, ,,	श्री माडूसिह मलिक, एडवोकेट, आर्य नगर, रोहतक।

२१– ,, ,,	श्री रामगोपाल शालवाले, प्रधान, सार्व दे० आर्य प्रतिनिधि सभा, रामलीला मैदान, नई दिल्ली ।
२२– सभा के प्रतिनिधि	श्री सरदारीलाल वर्मा, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली ।
२३– कोषाध्यक्ष (विश्वविद्यालय)	श्री सोमनाथ मरवाह, एडवोकेट, सी-३, सी-४, ग्रीन पार्क एक्सटेंशन, नई दिल्ली ।
२४– भारत सरकार के प्रतिनिधि	श्री एम.एन. सिन्हा, उप-सचिव, शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली ।
२५– उ० प्र० सरकार के प्रतिनिधि	श्री जी० सी० पाण्डेय, प्रोफेसर (इतिहास विभाग) इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद ।
२६– विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के प्रतिनिधि	जस्टिस आई० डी० दुआ, फ्लैट नं० ५ सी, सागर एपार्टमेन्ट, तिलक मार्ग, नई दिल्ली ।
२७– ,, ,, ,,	प्रो० आर० सी० पाल, कुलपति पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ ।
२८– ,, ,, ,,	डा० विश्वनाथ मिश्र, प्रिंसिपल, एस० डी० कालेज, मुजफ्फरनगर ।
सचिव	पदेन कुलसचिव ।

सिण्डीकेट के सदस्यों की सूची

१– कुलपति-अध्यक्ष	श्री बलभद्र कुमार हूजा ।
२– आचार्य एवं कुलपति	डा० गंगाराम ।
३– कोषाध्यक्ष	श्री सोमनाथ मरवाह, एडवोकेट, सी-३, सी-४, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली ।
४– सीनेट के प्रतिनिधि	श्री मनोहर जी विद्यालंकार, मैनेजर, कन्या गुरुकुल, ७० राजपुर रोड, देहरादून ।
५– ,, ,,	श्री सरदारीलाल जी वर्मा, १५ हनुमान रोड, नई दिल्ली ।
६– सीनेट द्वारा मनोनीत	श्री एस०एल०ढल, प्रिंसिपल आर्य कालेज,लुधियाना

शिक्षाविद्

७– सीनेट द्वारा मनोनीत शिक्षाविद्	श्री प्रकाशवीर शास्त्री, दयानन्द मठ, रोहतक ।
८– शिक्षको के प्रतिनिधि	डा० जयदेव वेदालकार, गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार ।
९– ,, ,,	डा० नारायण शर्मा, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार ।

१०– आचार्या	श्रीमती दमयन्ती कपूर, कन्या गुरुकुल, देहरादून ।
११– प्रिंसिपल विज्ञान महाविद्यालय	श्री सुरेशचन्द्र त्यागी, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार ।
१२– यू० जी० सी० द्वारा मनोनीत शिक्षाविद्	प्रो० बी०बी० लाल निदेशक, इन्डियन इन्स्टीटयूट आफ एडवान्स स्टडीज,शिमला
१३– ,, ,,	श्री आर० एस० चिटकारा, भूतपूर्व, B-2/59, Safaderjung Colony New Delhi
१४– भारत सरकार के प्रतिनिधि	श्री एम०एन० सिन्हा, उप-सचिव, भारत सरकार । शिक्षा मन्त्रालय, नई दिल्ली ।
१५– उत्तर प्रदेश सरकार के प्रतिनिधि	डा०सतीशचन्द्र गुप्त,ज्वाएन्ट सेक्रेटरी शिक्षा मंत्रालय उ० प्र० सरकार, लखनऊ ।
सचिव	पदेन कुलसचिव ।

— ● ● —

शिक्षा पटल के सदस्यों की सूची

१— कुलपति एव अध्यक्ष	श्री बलभद्र कुमार हूजा।
२— आचार्य	डा० गंगाराम।
३— आचार्या कन्या गुरुकुल	श्रीमती दमयन्ती कपूर, कन्या गुरुकुल देहरादून।
४— महाविद्यालय के संकाय के डीस	....
५— ,, ,,	....
६— ,, ,,	....
७— महाविद्यालय के प्रधानाचार्य	श्री सुरेशचन्द्र त्यागी, गु०का०विश्वविद्यालय, हरिद्वार
८— ,, ,,	....
९— ,, ,,	....
१०— विभागाध्यक्ष	डा० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी
११— ,,	प्रो० सदाशिव भगत
१२— ,,	प्रो० विजयपाल सिंह
१३— सीनेट के शिक्षाबिद्	डा० हरिदत्त वेदालंकार
१४— ,, ,,	आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री
१५— ,, ,,	श्री जी० एल० दत्ता
१६— ,, ,,	डा० रणबीर सिंह भाटिया

१७– ,, ,,	डा० प्रशान्त कुमार वेदालंकार
१८– अध्यापकों के प्रतिनिधि	श्री जबरसिह सेंगर
१९– स्नातकों के प्रतिनिधि	डा० जयदेव वेदालंकार
२०– ,, ,,	डा० सत्यपाल आयुर्वेदालंकार
२१– ,, ,,	डा० प्रशान्त कुमार
२२– भारत सरकार के प्रतिनिधि	श्री एम.एन. सिन्हा, उपसचिव शिक्षा मन्त्रालय, नई दिल्ली।
२३– उ०प्र० सरकार के प्रतिनिधि	डायरेक्टर हायर एजूकेशन यू.पी. या उनके नोमिनी
२४– शिक्षा पटल द्वारा मनोनीत	डा० सुरेशचन्द्र शास्त्री
२५– ,, ,,	श्री एस० एस० मिश्र
१६– ,, ,,	....
सचिव	पदेन कुलसचिव

—●●—

वित्त समिति के सदस्यों की सूची

१– कुलपति एव अध्यक्ष	श्री बलभद्र कुमार हूजा।
२– कोषाध्यक्ष	श्री सौम्नाथ मरवाह, सी-३,४ ग्रीन पार्क,एक्सटेशन, नई दिल्ली।
३– सीनेट के प्रतिनिधि	श्री सरदारीलाल वर्मा,१५ हनुमान रोड, नई दिल्ली
४– भारत सरकार के प्रतिनिधि	श्री सी०आर०पिल्ले, अवर सचिव, शिक्षा मन्त्रालय
५– विश्वविद्यालय अनुदान आयोग प्रतिनिधि	श्री पी०बी० त्रिपाठी, अबर सचिव, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली।
६– उत्तर प्रदेश सरकार प्रतिनिधि	श्री सतीशचन्द्र गुप्त, संयुक्त सचिव, उ० प्र० सरकार (शिक्षा मन्त्रालय)
७– विशेष आमन्त्रित(गुरुकुल का० विश्वविद्यालय)	श्री बी० एम० थापर
सचिव	पदेन कुलसचिव

—●●—

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार, उत्तर प्रदेश

शिक्षापटल का कार्यवृत्त

दिनांक १४ अक्तुबर, ८०
समय -१०-००बजे प्रातः

स्थान– सीनेटहाल गुरुकुल
कांगडी विश्वविद्यालय
हरिद्वार।

दिनांक १४ अक्तूबर ८० को गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय की शिक्षापटल की एक बैठक प्रात १०-०० बजे सीनेट हाल गुरुकुल कांगडी हरिद्वार में हुई। जिनमे निम्मलिखित सदस्यगण उपस्थित थे। इस बैठक की अध्यक्षता श्री बलभद्र कुमार हूजा, कुलपति गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार ने की :–

कुलपति	बलभद्र कुमार हूजा (सभापति)
आचार्य	डा० निरूपण विद्यालंकार
आचार्या कन्या गुरुकुल देहरादून	श्रीमती दमयन्ती कपूर
महाविद्यालयों के प्रधानाचार्य	श्री सुरेशचन्द त्यागी
विभागाध्यक्ष	डा० अम्बिका प्रसाद बाजपेयी
	प्रो० सदाशिव भगत
	प्रो० विजयपाल सिंह
अध्यापक प्रतिनिधि	प्रो० जबर सिंह सेंगर
स्नातकों के प्रतिनिधि	डा० जयदेव वेदालंकार
	डा० सत्यपाल आयुर्वेदालंकार
	डा० प्रशान्त कुमार
विशेष आमन्त्रित	डा० हरगोपाल सिंह
	डा० निगम शर्मा

इस प्रार्थना से बैठक प्रारम्भ हुई ।

प्रस्ताव संख्या-१

गत बैठक की कार्यवाही दिनांक २८-३-७६ पढकर सुनाई गई तथा सम्पुष्ट की गई । कार्यवाही के अन्त मे श्री विजयानन्द तथा श्री बुद्ध प्रकाश शुक्ल के हस्ताक्षर अनधिकृत रूप से किये हुये पाये गये जिनको काटकर निरस्त किया गया तथा कार्यवाही सम्पुष्ठ की गई।

प्रस्ताव संख्या-२

विश्वविद्यालय की विद्याधिकारी, विद्याविनोद, अलंकार, बी०ए० बी०-एस०सी० तथा एम०ए०/ए०-एस०सी० की कक्षाओं के १९७७-७८, १९७९ तथा १९८० के परीक्षा परिणाम प्रस्तुत किये गये। विचारान्तर निश्चित हुआ कि श्री हूजा जी के कुलपतित्व मे ली गई १९७८ तथा १९७९ की परीक्षाओ के परिणाम तथा प्रशासक द्वारा १९७८ एवम् १९७९ में सम्पादित परोक्षाओं के परिणाम को सम्पुष्ट किया जाये।

प्रस्ताव संख्या-३

पी०-एच० डी० प्रदान करने के सम्बन्ध मे निश्चय हुआ कि इसके परिणाम श्री आचार्य की संस्तुति के साथ आगामी बैठक में रखने का निश्चय किया ।

प्रस्ताव संख्या-४

अलंकार परीक्षा में अंग्रेजी की वैकल्पिकता का विषय प्रस्तुत हुआ। सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि अंग्रेजी पूर्व की भांति अनिवार्य रहेगी।

प्रस्ताव संख्या-५

मनोविज्ञान विषय में एम० ए०/एम०-एस० सी० को दी जाने वाली उपाधि को एम०ए० की उपाधि तक सीमित रखने का विषय

प्रस्तुत हुआ। निश्चय हुआ विषय प्रस्ताव संख्या ८ सहित बोर्ड आफ स्टडीज में रखा जाये तथा आचार्य एवं उपकुलपति भी उस सभा मे भाग लेंगे।

प्रस्ताव संख्या–६

पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ से शास्त्री परीक्षोत्तीर्ण छात्र के लिये एम० ए० मे प्रवेश हेतु अंग्रेजी की अनिवार्यता को समाप्त करने का विषय प्रस्तुत हुआ। निश्चय हुआ कि अंग्रेजी की अनिवार्यता को समाप्त न करके पूर्व की भांति रखा जाये। यह भी निश्चय हुआ कि पहले जो छात्र पंजाब की शास्त्री के आधार पर एम० ए० परीक्षा उत्तीर्ण .र चुके हैं उन्हें मान लिया जाये तथा भविष्य में अंग्रेजी रहित शास्त्री परीक्षोत्तीर्ण छात्रों को प्रवेश न दिया जाये।

प्रस्ताव संख्या–७

बी०-एस० सी० द्वितीय खण्ड प्रवेशार्थ कन्याओं को समिति पर भी विचार हुआ। निश्चय हुआ कि गुरुकुल के सिद्धान्त मे सह शिक्षा न होने के कारण बी०-एस० सी० प्रथम खण्ड उत्तीर्ण छात्राओ के बी०-एस० सी० द्वितीय खण्ड परीक्षा १९८१ के लिये प्राईवेट तौर पर परीक्षा दिये जाये। श्री आचार्य जी उनके भविष्य को देखते हुए उचित व्यवस्था करवा देगें।

प्रस्ताव संख्या–८

अलंकार कक्षाओं में प्रवेश के लिये अंग्रेजी की अनिवार्यता को समाप्त करने का विषय प्रस्तुत हुआ। निश्चय हुआ कि प्रवेश के लिये अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करदी जाये किन्तु अलंकार में अंग्रेजी का प्रश्न-पत्र अनिवार्य रहेगा।

प्रस्ताव संख्या–९

श्री विरजा नन्द वैदिक संस्कृति महाविद्यालय करतारपुर

(जालन्धर) की मान्यता के विषय में निश्चय हुआ कि निगम समिति की संस्तुति के अनुसार विद्याधिकारी परीक्षा के लिये दो सालों के लिये अस्थाई रूप से मान्यता दी जाये। दो वर्ष बाद वहां की प्रगति के आधार पर विचार किया जायेगा। यह भी निश्चय हुआ कि यहां की बोर्ड आफ स्टडीज में हमारे प्रतिनिधि के रूप में डा० निगम शर्मा रहेंगे।

प्रस्ताव संख्या–१०

परीक्षा नियमों के संशोधन उत्तर पुस्तिकाओ के पूर्ण मूल्याकन तथा एम० ए० परीक्षा मे व्यक्तिगत छात्र के रूप मे बैठने के अधिकारी छात्रों के विषय में (एजन्डा सं० १०, ११, १२,) एवं समिति का गठन किया गया, जिसके अध्यक्ष श्री आचार्य जी तथा संयोजक श्री उप कुलसचिव होंगे। एवं डा० प्रशान्त डा० जयदेव जी तथा श्री एस० एन० ढल सदस्य होंगे।

प्रस्ताव संख्या–११

योग संस्थान की स्थापना के विषय में निश्चय हुआ कि यह योजना पहिलें ही सिद्धान्त रूप में स्वीकार की जा चुकी है। इसके लिये एक उप समिति गठित की गई जिसके सदस्य डा० जयदेव जी (दर्शन विभाग) डा० हरगोपाल सिह तथा जितेन्द्र कुमार जी होगे तथा बाहर से एक विद्वान सदस्य सहवरण द्वारा बना लिया जाये इस उपसमिति के संयोजक डा० हरगोपल सिंह होंगे।

प्रस्ताव संख्या–१२

अध्यापन, अनुसंधान एवं प्रसारण सम्बन्धी विषय प्रस्तुत हुआ। विचारोपरान्त निश्चय हुआ कि छात्रों को अध्यापकों में इस प्रकार बांट दिया जाये ट्यूटोरियल प्रणाली एवं गुरु शिष्य के गुरु-कुलीय परम्पराओं को पुनः स्थापन हो और गुरु शिष्य सम्बन्ध निकटस्थ होकर शिष्य की अनेक समस्याओं की समुचित तथा तत्कालीन समाधान मिल सके।

प्रस्ताव संख्या–१३

शिक्षा पटल के दो सदस्यों के सहवरण के सम्बन्ध में निश्चय हुआ श्री सुरेश चन्द्र शास्त्री, प्रिन्सीपल, आयुर्वेद महाविद्यालय गुरुकुल कागडी श्री एम०एस० मिश्र प्रोफेसर, सस्कृत लखनऊ विश्वविद्यालय को सदस्य के रूप मे आमन्त्रित किया जाये ।

प्रस्ताव संख्या–१४

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर की विद्यारत्न परोक्षोत्तीर्ण छात्रों को विद्याविनोद प्रथम खण्ड मे प्रवेश देने के सम्बन्ध मे प्रवेश देना स्वीकार किया गया ।

प्रस्ताव संख्या--१५

एन० सी० सी० के प्रोत्साहन हेतु पाठ्यक्रम में व्यवस्था का विषय प्रस्तुत हुआ । निश्चय हुआ कि यही विषय प्रस्ताव सख्या मे गठित समिति में रख दिया जाये ।

प्रस्ताव संख्या–१६

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की परीक्षा डिप्लोमा इन हिन्दी एण्ड लिंविस्टिक उत्तीर्ण छात्रों को एम० ए० में प्रवेश के सम्बन्ध में निश्चय हुआ कि उक्त परीक्षा डिप्लोमा को एम० ए० मे प्रवेश के लिये अस्वीकृत कर दिया गया ।

शान्ति पाठ के उपरान्त बैठक समाप्त हुई ।

कुलपति (सभापति)
गुरुकुल कांगडी बिश्वबिद्याल
हरिद्वार (सहारनपुर)

गुरुकुल कांगड़ी, विश्वविद्यालय
हरिद्वार

कार्यपरिषद् का कार्यवृत्त

दिनांक १५ अक्तूबर, ८०	स्थान-सीनेट हाल गुरुकुल
समय-११-०० बजे प्रातः	कांगड़ी विश्वविद्यालय,
	हरिद्वार।

आज दिनांक १५ अक्तूबर ८० को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की कार्य परिषद् की बैठक प्रातः ११ बजे सीनेट हाल गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में हुई। जिसमें निम्नलिखित सदस्यगण सम्मिलित हुए। इस बैठक की अध्यक्षता श्री बलभद्र कुमार हूजा, कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने की-

कुलपति (सभापति)	श्री बलभद्र कुमार हूजा
२-आचार्य	डा० निरूपण विद्यालंकार
३-सीनेट के प्रतिनिधि	श्री मनोहर जी विद्यालंकार
४- ,, ,,	श्री सरदारी लाल वर्मा
५- ,, शिक्षाविद्	श्री एस० एल० ढल
६ ,, ,,	श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री
७-शिक्षकों के प्रतिनिधि	श्री जयदेव वेदालंकार
८- ,, ,,	डा० नारायण शर्मा
९-आचार्य कन्या गुरुकुल	श्रीमती दमयन्ती कपूर
१०-प्रधानाचार्य महाविद्यालय	श्री सुरेश चन्द्र त्यागी
११-शिक्षा मन्त्रालय के प्रतिनिधि	श्री एम० एन० सिन्हा

-ईश प्रार्थना से बैठक आरम्भ हुई-

सर्व प्रथम कुलपति महोदय ने नये सदस्यों डा० निरुपण विद्यालंकार आचार्य एवं उप-कुलपति, श्री अर्जुन देव कुलसचिव, श्री सरदारी लाल वर्मा, वित्त नियता एवं श्री एम०एस० सिन्हा का स्वागत किया। निम्न प्रस्ताव पारित किये गये ।

प्रस्ताव संख्या-:१

गत बैठक की कार्यवाही दिनांक १०-१२-७७ पढ़कर सुनाई एवं सर्व सम्मति से सम्पुष्ट की गयी ।

प्रस्ताव संख्या--२

जिला जज सहारनपुर के निर्णय दिनांक २७-८० की सूचना सदस्यों को दी गई तथा इस सम्बन्ध मे श्री सोमनाथ मरवाह की सेवाओं की भूरि-भूरि प्रसशा की गई ।

प्रस्ताव संख्या--३

डा० निरुपण विद्यालंकार, आचार्य एवं उप-कुलपति, श्री अर्जुन देव कुलसचिव, श्री सरदारी लाल वर्मा, वित्त नियंता एवं श्री जबर सिह सेंगर, उप-कुलसचिव की नियुक्तियो का सर्वसम्मति से अनुमोदन किया गया।

प्रस्ताव संख्या--४

१३ जुलाई ८० की सीनेट की बैठक द्वारा कुछ कर्मचारियों को सेवा मुक्त किये जाने की सूचना का अनुमोदन किया गया तथा इसके साथ सदस्यों को सेवामुक्त कर्मचारियों की सूची भेजने का प्रस्ताव पारित किया गया।

प्रस्ताव संख्या--५

रिक्त स्थानों की पूर्ति विषयक कार्यवाही का सर्वसम्मति से अनुमोदन किया गया । डा० मनोहर विद्यालंकार ने कहा कि नियुक्त से पूर्व यह देख लिया जाये कि जिस विषय मे छात्र नही हैं उसमे नियुक्ति न की जाये ।

प्रस्ताव संख्या--६

चयन समितियो के लिये वि षज्ञ नियुक्त करने का अधिकार सर्वसम्मति से कुलपति महोदय को दिया गया ।

प्रस्ताव संख्या--७

पुस्तकालयाध्यक्ष एवं शारीरिक शिक्षक के पद के सृजन का सर्वसम्मति से अनुमोदन किया गया । इसको आगामी वित्तसमिति की बैठक में रखने का निश्चय किया गया । वित्तसमिति में पारित होने तथा शिक्षा मन्त्रालय की स्वीकृति मिलने पर नियुक्त करने का निश्चय किया गया ।

प्रस्ताव संख्या--८

श्री सरदारी लाल बर्मा वित्त अधिकारी ने गत तीन मासों के आय-व्यय का विवरण प्रस्तुत किया जो सर्व सम्मति से पारित किया गया ।

प्रस्ताव संख्या--९

कुलसचिव द्वारा १९८०-८१ का बजट एवं १९८०-८१ का आनुमानिक बजट प्रस्तुत किया गया एवं सर्व सम्मति से पारित किया गया तथा वित्त समिति की बैठक में विस्तृत रूप से प्रस्तुत करने का निश्चय किया गया ।

प्रस्ताव संख्या–१०

बी०ए० कक्षाओं के प्रवेश के सम्बन्ध में निश्चय किया गया कि इस वर्ष बी० ए० कक्षाओं मे नया प्रवेश बिल्कुल न किया जाये किन्तु जिन छात्रों ने इस वर्ष बी० ए० प्रथम खण्ड परीक्षा उत्तीर्ण की है उनके भविष्य को ध्यान में रखते हुए विशेष अवस्था मे निश्चय किया कि उक्त छात्रो को बी० ए० द्वितीय खण्ड मे नियमित रूपसे प्रवेश तथा प्रशिक्षण दिया जाये जिसकी व्यवस्था आचार्य एव कुलपति महोदय करेंगे।

प्रस्ताव संख्या–११

आर्य समाज एवं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के नियमो के अनुसार विश्वविद्यालय में सह शिक्षा का प्रावधान नहीं है किन्तु गतवर्ष विरोधी पक्ष ने सह शिक्षा प्रारम्भ कर दी थी जिसकी परिषद् द्वारा तीव्र भर्त्सना की गई किन्तु जिन छात्राओं ने इस वर्ष बी० एस० सी० प्रथम खण्ड परीक्षा उत्तीर्ण की है उनके हित को ध्यान मे रखते हुये निश्चय किया गया कि उनकी व्यक्तिगत छात्रो के रूप मे पढाई एवं प्रयोगात्मक प्रशिक्षण की पृथक रूप से व्यवस्था की जाये। यह कार्य श्री सुरेश चन्द्र त्यागी, प्रधानाचार्य विज्ञान महाविद्यालय को सौंपा गया।

प्रस्ताव संख्या–१२

श्री जबरसिंह सेंगर की पुत्री के बिना बी० ए० परीक्षा उत्तीर्ण किये एम०ए० प्रथम खण्ड की परीक्षा व्यक्तिगत छात्रा के रूप देने– विषयक श्री रामकुमार शर्मा का पत्र पढकर सुनाया गया।

यह निश्चय किया गया कि जिस व्यक्ति ने यह पत्र लिखा है उसे लिख कर पूछा जाय तथा कुलसचिव इस विषय में पूरी जांच करके अपनी रिपोर्ट कुलपति जी को दे ।

अन्त में शान्तिपाठ के पश्चात कार्यवाही समाप्त हुई ।

अर्जुन देव

कुलपति
कुलसचिव

--●●--

गुरुकुल कांगड़ी, विश्वविद्यालय हरिद्वार (उ०प्र०)

शिष्ट परिषद् (सीनेट) का कार्यवृत्त

दिनांक—१३ जुलाई, ८०

स्थान : सीनेट हाल,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

दिनांक १३-७-८० को गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय की शिष्ट परिषद् की एक बैठक प्रातः ११ बजे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के सीनेट हाल में हुई। जिसमें निम्नलिखित सदस्यगण उपस्थित थे। इस बैठक की अध्यक्षता कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र, प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने की।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारी	श्री वीरेन्द्र जी सभा प्रधान, कुलाधिपति (सभापति)
	आचार्य पृथ्वी सिंह आजाद
	श्री रणधीर सिंह भाटिया
	श्री ऋषिपाल सिंह जी, एडवोकेट
गु०कां०विश्वविद्यालय के कुलपति	श्री बलभद्र कुमार हूजा
प्रधानाचार्या कन्या गु० देहरादून	श्रीमती दमयन्ती कपूर
मैनेजर, कन्या गुरुकुल देहरादून	श्री विद्यानिधि जी विद्यालंकार
पंजीकृत स्नातकों के प्रतिनिधि	श्री निरुपण जी विद्यालंकार
पंजीकृत स्नातिकाओं की प्रतिनिधि	श्रीमती सरोज विद्यालंकृता
संबद्ध म०वि०शिक्षकों के प्रतिनिधि	श्री ओमप्रकाश जी मिश्र
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मनोनीत सदस्य	श्री विष्णुमित्र जी
	स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती
	श्री रणजीत सिंह जी

श्री रामगोपाल जी शालवाले
श्री सरदारीलाल जी वर्मा
विशेष आमन्त्रित — डा० हरिप्रकाश जी
श्री विजयपाल सिंह जी

बैठक ईश प्रार्थना से प्रारम्भ हुई ।

पिछली सीनेट की बैठक की कार्यवाही पढ़ी गई और सम्पुष्ट की गई।

प्रस्ताव संख्या-:१

पिछले तीन वर्षों के झगड़ों के दौरान विश्वविद्यालय के नाम पर तथाकथित कुलपति विजयपाल सिंह व उसके समर्थक स्वामी अग्निवेश, स्वामी इन्द्रवेश आदि द्वारा किये गये सभी कार्यों की यह सीनेट निन्दा और भर्त्सना करती है और सर्व सम्मति से निश्चय करती है कि उन लोगों के द्वारा किये गये सभी कार्य निरस्त माने जायें।

प्रस्ताव संख्या--२

निश्चय किया कि पंजाब नेशनल बैंक कनखल, सैन्ट्रल बैंक गुरुकुल कांगड़ी तथा न्यू बैंक आफ इण्डिया गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय के खातों के आपरेटरों की लिस्ट में से डा० चन्द्रभानु अंकिचन का नाम निकाल दिया जाये। अब से विश्वविद्यालय के सभी खातों, पी० एफ० खातों सहित के आपरेटर डा० आर० एल० वार्ष्णेय कुलसचिव तथा श्री सरदारी लाल जी वर्मा वित्त अधिकारी होंगे। डा० राधेलाल वार्ष्णेय कुलसचिव के हस्ताक्षर आवश्यक होंगे।

प्रस्ताव संख्या--३

(क) सर्वसम्मति से निश्चय किया गया कि विश्वविद्यालय के जिन अध्यापकों एवं कर्मचारियों को विश्वविद्यालय सीनेट द्वारा बनाई गई कमेटी की सिफारिश पर सेवामुक्त कर दिया गया था उन्हें सेवामुक्त माना जाये।

(ख) जो कर्मचारी अपनी सेवा मुक्ति के मामले पर पुनः निरीक्षण कराना चाहें कुलसचिव उनके आवेदन पत्र पुनरीक्षण (रिव्यू) में रखेगें। इस कमेटी में निम्नलिखित सदस्य होंगे--

१- श्री जी०बी०के० हूजा, कुलपति।
२- डा० डी०पी० सिंह, भू०पू० कुलपति पन्तनगर विश्वविद्यालय।
३- प्रो० शेरसिंह जी, भू०पू० रक्षाराज्य मंत्री भारत सरकार नई दिल्ली।
४- श्री पृथ्वी सिंह आजाद, उप प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब।
५- डा० आर० एल० वार्ष्णेय, कुलसचिव, गु०का० विश्वविद्यालय, कनवीनर (संयोजक)।

प्रस्ताव संख्या--४

शिक्षकों की चयन समिति में शिष्ट परिषद् के एक प्रतिनिधि के मनोनयन का विषय प्रस्तुत हुआ। निश्चय हुआ कि डा० हरि प्रकाश आयुर्वेदालंकार पूर्ववत् चयन समिति के शिष्ट परिषद् के मनोनीत सदस्य होंगे।

प्रस्ताव संख्या--५

(क) आचार्य (उपकुलपति) की नियुक्ति का विषय प्रस्तुत हुआ। विचारान्तर निश्चय हुआ कि डा० निरुपण जी रीडर संस्कृत विभाग, मेरठ कालेज मेरठ को संस्कृत विभाग में रीडर तथा आचार्य

एवं उप-कुलपति (प्रो० वाइस चान्सलर) एक साल के लिये एडहाक (अस्थाई) रूप में नियुक्त किया जाये।

(ख) संविधान के अनुसार आचार्य की विधिवत् नियुक्ति के लिये निम्नांकित तीन सदस्यगण की समिति बनाई गई :—

१– श्री सत्यव्रत जी विद्यालंकार।
२– डा० डी० पी० सिंह।
३– श्री विद्यासागर।

(ग) यह भी तय हुआ कि जितने पद रिक्त है विधिवत् विज्ञापन देकर उनकी पूर्ति का शीघ्रातिशीघ्र प्रबन्ध किया जाये। यह समिति ही इस पद के लिये अर्हतायें निश्चित करेगी।

प्रस्ताव संख्या–६

कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा ने कुलपति पद से मुक्त होने की इच्छा व्यक्त की परन्तु कुलाधिपति एवं सीनेट के अन्य सभी सदस्यों ने सर्वसम्मति से प्रार्थना की कि वे अपना कार्य यथावत् करते रहें।

प्रस्ताव संख्या–७

विश्वविद्यालय के विजिटर की नियुक्ति का विषय प्रस्तुत हुआ। सर्व सम्मति से डा० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार भूतपूर्व संसद सदस्य तथा कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को तीन साल के लिये नया विजिटर नियुक्त किया गया।

प्रस्ताव संख्या–८

विश्वविद्यालय को सुचारू रूप से चलाने के विषय पर विचार हुआ। अधिकांश सदस्यों की यह राय थी कि विश्वविद्यालय को

स्वामी श्रद्धानन्द जी की विचारधारा के अनुसार चलाया जाये । विचारान्तर निर्णय हुआ कि एक रिपोर्ट कमेटी बना दी जाये जो ३ माह के अन्तर्गत अपनी रिपोर्ट (नये संविधान की रूपरेखा समेत) सीनेट को देगी।

इस कमेटी के सदस्यगण निम्नलिखित महानुभाव मनोनीत किये गये :—

१– पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार।
२– श्री जी० बी० के० हूजा, कुलपति ।
३– डा० डी० पी० सिंह जी।
४– प्रो० शेरसिंह जी।
५– श्री पृथ्वी सिंह आजाद ।
६– स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती।
७– श्री मार्डूसिंह जी।
८– श्री प्रियव्रत जी ।
९– श्री विद्यासागर जी।

कुलसचिव इस कमेटी के संयोजक होंगे ।

अध्यक्ष के प्रति धन्यवाद प्रस्ताव के अनन्तर बैठक समाप्त हुई।

कुलाधिपति　　　　　　　　　　कुलसचिव

—●●—

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

वित्त समिति की बैठक का कार्यवृत्त

दिनांक २५-१०-१९८० — स्थान- १५, हनुमान रोड, नई दिल्ली।
समय-११ बजे मध्याह्न

उपस्थिति-

१- श्री जी०बी०के० हूजा	कुलपति।
२- श्री सी०आर०पिल्ले	प्रतिनिधि, शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली।
३- श्री बी०एम०सेठ	प्रतिनिधि, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग।
४- श्री सरदारीलाल वर्मा	वित्त नियन्ता।
५- श्री अर्जुन देव	कुलसचिव।
६- आचार्य पृथ्वी सिंह आजाद	विशेष आमन्त्रित।
७- श्री सुदर्शन लाल मल्होत्रा	एकाउन्टेंट।

प्रस्ताव संख्या-१

वित्त समिति की गत गत बैठक दिनांक १४-७-७७ की कार्यवाही पढ़कर सुनाई गई और सम्पुष्ट की गई।

प्रस्ताव संख्या-२

विश्वविद्यालय के १९७९-८० के प्रोविजनल एकान्ट तथा ८०-८१ के संशोधित बजट व १९८१-८२ के अनुमानित बजट का अवलोकन करने के पश्चात् श्री सी०आर०पिल्ले ने ८०-८१ के लिये १७,८०,०००/-की राशि स्वीकृत करने की संस्तुति की।

प्रस्ताव संख्या-३

निश्चय हुआ कि विश्वविद्यालय में हाकी कोच के स्थान पर निर्देशक शारीरिक शिक्षा, पुस्तकालयाध्यक्ष एवं सहायक अभियन्ता (निर्माण एवं भवन)के पदों के सृजन किये जाने को यह समिति स्वीकार करती है। इन पदों के वेतनमान, जो उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा स्वीकृत हों, के प्रारम्भिक वेतन दर के अनुसार इन पदों का १९८१-८२ के बजट में प्रावधान किया जाये और इन पदों के सृजनार्थ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को लिखकर स्वीकृति प्राप्त की जाये।

प्रस्ताव संख्या-४

विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियों को नियमानुसार नवीन दरों से महगाई भत्ते देना स्वीकार किया गया। एवं ८०-८१ के संशोधित बजट में नवीन महगाई भत्ते की दरो से किया गया प्रावधान स्वीकृत हुआ।

प्रस्ताव संख्या-५

टेलीफोन मार्ग-व्यय, डाक व्यय की मदों मे दर बढ जाने से १९८०-८१ के संशोधित बजट में तदनुसार किया गया प्रावधान स्वीकार किया गया।

विश्वविद्यालय की चार दिवारी आदि के लिये अनावर्त्तक विशेष अनुदान दिलाये जाने के लिये प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ। इस पर श्री विश्वमित्र सेठ, प्रतिनिधि, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने सुझाव दिया कि इसके लिये विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से पृथक प्राधिकरण अनुदान (डैवलपमैंट ग्रान्ट) मांगी जाये।

शांति पाठ के पश्चात् कार्यवाही समाप्त की गई ।

ह०/-	ह०/-	ह०/-
कुलपति	वित्त नियन्ता	कुलसचिव

१४.३.१९८१ को लाल बहादुर शास्त्री आर्य गर्ल्ज कालेज बरनाला के दीक्षान्त समारोह में दिया गया श्री बलभद्र कुमार हूजा का

अभिभाषण

मैं आपका बहुत आभारी हूं कि आपने आज मुझे इस विद्वन्मण्डल में सम्मिलित होने का अवसर प्रदान किया है। यह मेरा सौभाग्य है। इस अवसर का लाभ उठाते हुए मैं आपके समक्ष कुछ ऐसे प्रश्न रखना चाहूंगा, जिनके समाधान की तलाश में गत पचास वर्ष से करता चला आ रहा हूं। इस सन्दर्भ में मैने जो प्रयोग किये हैं, सफल अथवा विफल, वह भी आपके समक्ष उपस्थित करने की धृष्टता करूंगा एवं तदर्थ क्षमा याचना भी।

ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन के अन्तिम २० वर्षों में भारत के उत्थान के लिये भगीरथ प्रयत्न किया। उन्होने देश में प्रचलित पाखण्डों का खण्डन करते हुए कहा कि किसी भी देश का उत्थान उस देश के मानव के उत्थान पर निर्भर है। वे सदैव भारतीय मानव को ललकारते पुकारते रहे। उन्होने देखा कि भारतीय जन विलासिता, प्रमाद, अंध विश्वास के कूप में पड़े है। अतः उन्होने भारतीय जन को ब्रह्मचर्य का सन्देश दिया और सच्चरित्रता एव सात्विकता का पाठ पढ़ाया, इस आशय से कि वे न केवल अपना अपितु स्वदेश एवं समस्त संसार का उपकार करने हेतु उद्यत हों।

सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास को शतपथ ब्राह्मण के वचन मातृमान, पितृमान आचार्यवान् पुरुषों वेद से आरम्भ करते हुए स्वामी जी लिखते हैं कि वस्तुतः जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात एक माता, दूसरा पिता, और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान होता है। आगे चलकर वह लिखते हैं कि मिथ्या बातों का उपदेश

बाल्यावस्था ही में सन्तानों के हृदय में डाल दें कि जिससे स्वसन्तान किसी के भ्रमजाल में पड़के दुख न पावे और वीर्य की रक्षा मे आनन्द और नाश करने में दुख प्राप्ति भी जना देनी चाहिये क्योंकि जिस के शरीर में सुरक्षित वीर्य रहता है तब उसको आरोग्य, बुद्धि, बल, पराक्रम बढ के बहुत सुख की प्राप्ति होती है।

इसी समुल्लास मे आगे चल कर स्वामी जी ने लिखा है कि जैसे अन्य शिक्षा वैसे ही चोरी, जारी, आलस्य, प्रमाद, मादक द्रव्य, मिथ्याभाषण, हिंसा, क्रूरता, ईर्ष्या, द्वेष मोह आदि दोषों को छोड़ने और सत्याचार के ग्रहण करने की शिक्षा भी बालकों को देनी चाहिये। माता-पिता और आचार्य अपनी सन्तान एवं शिष्यों को सदा सत्य उपदेश करे और यह भी कहें कि जो जो धर्मयुक्त कर्म है उनका ग्रहण करो और जो जो दुष्ट कर्म हों उनका त्याग कर दिया करो। जो जो सत्य जाने उनका प्रकाश और प्रचार करे। किसी पाखण्डी दुष्टाचारी पर विश्वास न करें और जिस जिस उत्तम कर्म के लिये माता पिता और आचार्य आज्ञा देवें उसका यथेष्ट पालन करो।

सम्भवतः इन्ही विचारों से प्रेरित होकर मेरे शैशवकाल में मेरे पूज्य पिताजी ने मुझे कुछ श्लोक एवं मन्त्र याद करवाये थे। अपने लम्बे जीवन में जब जब किसी संघर्ष की स्थिति से गुजरना पडा तो ये श्लोक एवं मन्त्र सदैव मेरे समक्ष मार्ग दर्शक के रूप में उपस्थित हुए और मुझे उस स्थिति का सामना करने में सहायक सिद्ध हुए।

१६३८ में जब २३ वर्ष की अवस्था में जब मैं न्यायाधीश पद पर नियुक्त हुआ उस समय मेरे पिताजी तो नही थे लेकिन मैं अपने नाना जी पं० जीवनलाल जी के पास आशीर्वाद प्राप्त करने के लिये गया। उन्होंने ऋषि दयानन्द का प्रिय श्लोक "निंदन्तु नीति निपुणाः" आशीर्वाद के रूप में प्रदान किया। लम्बे समय तक मुझे न्यायाधीश के पद पर कार्य करते हुए हजारों जन विवादों को निपटाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और यह श्लोक सदा मेरा मार्ग दर्शन करता रहा।

गुरुकुल में आने पर मेरे मन में यह विचार आया कि यदि हम गुरुकुल में प्रविष्ठ ब्रह्मचारियों को स्वामी जी के आदेशानुसार वेद मन्त्र, सुभाषित इत्यादि स्मरण करायें तो आगे चलकर अवश्य ही यह उनका पथ प्रशस्त करने में सहायक सिद्ध होंगे।

इसी आशय से अक्तूबर १९८१ में गुरुकुल के सातवी, आठवीं, नौवीं, दसवीं कक्षाओं के ब्रह्मचारियों को प्रतिदिन एक एक मन्त्र अथवा श्लोक अर्थ सहित कण्ठस्थ कराने की श्रृंखला डा० सुरेश चन्द्र शास्त्री, प्रिंसिपल राजकीय आयुर्वेद कालेज, गुरुकुल कांगड़ी ने आरम्भ की। तत्पश्चात् जिस परिश्रम एवं लगन तथा सर्मपण भाव से प्रो० चन्द्रशेखर त्रिवेदी ने इसे जारी रखा वह अद्वितीय है। इसके लिये पं० चन्द्रकेतु, अधिष्ठाता, गुरुकुल आश्रम एवं ब्रह्मचारी स्वयं प्रशंसा के पात्र हैं। पं० चन्द्रकेतु ने इस कार्यक्रम में प्रशंसनीय सहयोग दिया और ब्रह्मचारियों ने भी अपनी अटूट दिलचस्पी दिखलाई अन्यथा यह कार्यक्रम बीच में ही रह जाता।

इस सत्कर्म में जब सौ मन्त्र. श्लोक पूरे हो चुके तो हमने इन्हें जीवन ज्योति नाम से पुस्तकाकार में छपवा कर ब्रह्मचारियों में वितरित किया। मुझे पूर्ण आशा है कि जिस लक्ष्य से इस कार्य क्रम को आरम्भ किया गया था उसको पूरा करने में यह पुस्तिका सफल सिद्ध होगी और गुरुकुल कांगड़ी का यह अग्रिम दस्ता जहां जहां जायेगा ऋषि दयानन्द की सत्य और न्याय की पाखण्ड खडनी पताका प्रतिष्ठित करेगा एवं सर्वतः निर्भय होकर इदन्नमम् की भावना से धर्माचरण करते हुए जीवन यात्रा में अग्रसर होगा।

इस तरह एक प्रयोग जो मैं पिछले कई वर्षों से करता चला आ रहा हूं उसे भी आप के सम्मुख उपस्थित करने की आज्ञा चाहूंगा, इस आशय से कि यदि आप भी यह प्रयोग करते हों तो अपने सहयोगियों के साथ अपने अनुभव बांटे और यदि नहीं करते हों तो आजमा कर देखें। यह प्रयोग है-यदा कदा मौन में जाने का।

इसकी प्रेरणा मुझे कुमार अवस्था में गांधी जी के उदाहरण से

प्राप्त हुई, लेकिन राज्य सेवा मे दीर्घ काल तक नियुक्त होने के कारण मै इसका नियमित रूप से पालन नहीं कर सका। पुन: इसकी प्रेरणा मुझे १६७६ में अरविन्द आश्रम की यात्रा के दौरान हुई जहां मैंने देखा कि सप्ताह में दो बार मौन का कार्यक्रम चलता है । जब मैं गुरुकुल में आया तो मैंने प्रयत्न किया कि यहां भी सप्ताह में दो दिन आध-आध घण्टे के लिये सामूहिक मौन का कार्य क्रम चलाया जाये।

एक दिन स्वामी श्रद्धानन्द की स्मृति में एव एक दिन शहीद प्रो० ओमप्रकाश सिन्हा की स्मृति मे, किन्तु सहधर्मियों की उदासीनता मैं न तोड सका और यह प्रयोग गतिशील न हो सका । अपने दिल्ली प्रवास के दौरान मैने निजी तौर पर मंगलवार १२ बजे से बुधवार दोपहर १२ बजे तक मौन व्रत धारण करने का कार्यक्रम बनाया।

मौन के समय किसी के मन में क्या कोई विचार आये, लेकिन इतना तो निश्चय कह सकता हूं कि मौन अवस्था में मनुष्य विघ्नकारी विचारों को दबाने का प्रयत्न तो करता ही है और अन्तर्मुख होकर कल्याणकारी पथ की ओर अग्रसर होता है । अपनी दुर्बलाओं की समीक्षा करता है, दैवीगुणों का आह्वान करता है, संयम पथ पर आरूढ होकर पशुत्व से उठकर मनुष्यत्व की ओर जाता है क्योंकि पशुत्व और मनुष्यत्व मे अन्तर ही क्या है ? पशु जैसा देखता है वैसा ही करता है लेकिन मनुष्य जैसा देखता है उसके संबंध मे विवेक के अनुसार निर्णय करता है। तभी तो आर्य लोग भगवान से गायत्री मन्त्र के द्वारा बुद्धि को सुपथ पर प्रचारित करने के लिये प्रार्थना करते हैं। मनुष्यत्व और पशुत्व में अन्तर बताते हुए बहन विमला एक अत्यन्त सुन्दर उदाहरण देती हैं । पशु घास देखता है उसे चरने लगता है। मनुष्य यदि हरा नोट देखकर उसे चरने लग जाये तो तो उसमें और पशु में क्या अन्तर रह जायेगा ? मनुष्य वह है जो हरे नोट को देखकर चिन्तन करें कि यह ग्राह्य है कि नहीं, यह विषाक्त तो नहीं है और अपने विवेक से निर्णय करे कि उसे यह नोट स्वीकार करना है कि नहीं।

वेद में "इदन्नमम्" और "तेन त्यक्तेन" का आदेश दिया है। हमें अपने कार्य-कलापों को इसी तराजू में तोलना है। इस प्रकार आचरण न करने से हम रिश्वत खोरी, दहेज, झूठे बिल बनाना, लूट खसोट, चोरी, तस्करी, आयकर की चोरी, बिक्री कर की चोरी इत्यादि के जाल में फंस जाते हैं और फिर जिन कारणों से समाज इन मुसीबतों में फंसता है और समाज के अंग होने के नाते हम भी फंसते हैं, उनके लिये हम दोष देते हैं अपने सिवाय प्रत्येक व्यक्ति को, और विडम्बना यह है कि अपनी आंख की शहतीर तो हमें दिखाई नहीं देता, दूसरे की आंख का तिनका भी हमें शहतीर नजर आता है।

विचारणीय है कि ऐसी प्रतिक्रिया कहां तक सत्य और न्याय पर आधारित हैं। आर्य पुरुषों को, वि .षकर शिक्षित वर्ग को स्व को जानने के लिये सर्वदा प्रयत्नशील रहना चाहिये। सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने के लिये उद्यत रहना चाहिये। ऐसा ऋषि दयानन्द का आदेश है और यह तभी हो सकता है जब हम मनन के लिये समय निकालें और इस कार्यक्रम को न केवल निजी तौर पर अपितु सम्मिलित रूप से क्रियान्वित करने का अभ्यास करें। इससे जहां सत्य और असत्य मे भेद करने का अवसर प्राप्त होगा वहां स्व को जानने मे भी सहायता मिलेगी, एवं उपरोक्त दोषों के अलावा आपसी फूट, विग्रह, ईर्ष्या-द्वेष इत्यादि दोषों से मुक्ति पा सकेगें जिनके कारण समाज में दौर्बल्य उत्पन्न होता है।

जिला जज सहारनपुर के निर्णय दिनांक २ जुलाई के बाद जब मैं "सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले से मिला, तो उन्होंने मुझे माल्यार्पण करते हुए "संगच्छध्वम्" का मन्त्र दिया था। मेरा दृढ़ मत है कि आज जब देश और समाज में विघटनकारी शक्तियों का प्रादुर्भाव हो रहा है हम सबका हित इसी मन्त्र को स्वीकार करने में है। आज एक राष्ट्र, एक विधान, एक निशान की भावना धूमिल हो रही है। भारत में चिराग लेकर भी ढूंढिये तो भारतीय या हिन्दुस्तानी जन मुश्किल से ही मिलेगा। मिलेगा तो कोई पंजाबी, कोई मद्रासी,

कोई महाराष्ट्री, कोई गुजराती, कोई ब्राह्मण, कोई शैव, कोई वैश्य, कोई जाट, कोई हरिजन, कोई अहीर और कोई मुसलमान, लेकिन हिन्दुस्तानी आज कहां है ?

आज देश मे प्रान्तीयता और उप-जातिवाद की बीमारी घुन की तरह लगी हुई है। आर्यजन और भारतीय जन को इस बीमारी का सुदृढ़ होकर मुकाबला करना है ।

ऊपर मैंने विलासिता की बीमारी का जिक्र किया था। इससे भी हमे बचना है। ऋषि दयानन्द ने हमे नव मानव के निर्माण का जो नुस्खा दिया वह है ब्रह्मचर्य और संयम । पर विचारास्पद है कि कहा तक हम उसका पालन कर रहे हैं ? इसके लिये बहुत खोज की आवश्यकता नही है। निस्सन्देह कठोर तप से ही नव मानव का निर्माण होगा। औरों को छोड़िये। कितनी आर्य संस्थाओं में यह तप किया जा रहा है ? आर्य संस्थाओं में कितने गुरुजन ब्रह्मचर्य तप की आवश्यकता अथवा उसकी साधना से भिज्ञ हैं। कभी उनसे पूछिये तो सही कि ब्रह्मचर्य सूक्त कौन से वेद का सूक्त है ? उसका क्या आशय है ?

इसी के साथ सम्बन्धित विषय है– खेल जगत मे भारत की स्थिति। वर्षों तक हम हाकी के विश्व विजेता रहे। किन्तु अब यह सेहरा भी अधर में लटकता नजर आ रहा है। मास्को की जीत क्या जीत कही जा सकती है ? कभी हमने सोचा है कि ओलम्पिक मे ५०० पुरस्कार वितरित किये जाते हैं। विश्व की १/७ जन संख्या वाले शक्तिशाली देश के हाथ कितने पुरस्कार आते हैं क्यो ? क्या हमारी जाति का शारीरिक स्तर इतना गिरा हुआ है?यदि इसके कारणो का विश्लेषण किया जाये तो तीन बाते सामने आती हैं– कमी है संकल्प, सगठन, और तप की ।

मुझे अपनी ऊपर वर्णित पांडेचेरी की यात्रा में वहां के विद्यार्थियों के साथ दो शाम खेल कूद के मैदान में गुजारने का अवसर प्राप्त हुआ। मैंने वहां देखा कि प्रत्येक विद्यार्थी खेलकूद में व्यस्त

रहते हुए निरन्तर अपने क्रीड़ाकौशल को बढ़ाने में तत्पर हैं। लम्बी छलांग लगाने वाला इस बात के लिये अभ्यास कर रहा है कि उसे कल की लगाई हुई छलांग से आज एक सेन्टीमीटर अधिक लम्बी छलांग लगानी है। इसी प्रकार ऊंची कूद मारने वाला अपनी कल की ऊंची कूद से एक सेंटीमीटर और बढ़ाने के प्रयास में है। दौड़ लगाने वाला अपनी कल की दौड़ से लगाये समय को कम करने के लिये उद्यम शील है और इसी प्रकार तैरने वाला विद्यार्थी तरण-ताल में इस बात के लिये प्रयत्न कर रहा है कि वह कल की तैराकी में लिये गये समय से कम समय में अपनी निश्चित तैराकी समाप्त करें। उनके साथ ही उनके गुरुजन भी उत्साहवर्धन करते रहते हैं एवं निरन्तर प्रेरणा देते रहते हैं। आज कहां हैं ऐसे आर्य विद्यालय ? और ऐसे आर्यजन ? ऐसे कितने ही खेल हैं जिनके लिये बहुत अधिक द्रव्य की आवश्यकता नहीं होती। केवल सकल्प, संगठन और तप की आवश्यकता होती है। कम से कम उनमें तो हम आगे बढ़ें।

अब जबकि १९८२ में भारत में एशियाई खेल एवं १९८४ में लान्स एन्जिल्स में ओलम्पिक प्रतिस्पर्धा होने जा रही है हम उनमें ऊंचे स्थान पाने के लिये क्या तैयारी कर रहे हैं ? फिर ऋषि दयानंद की बात करूं। वे वज्र के समान कठोर नवयुवक पैदा करना चाहते थे। क्या हम छाती पर हाथ रखकर कह सकते हैं कि हम उनके इस सपने को साकार करने में यथाशक्ति योगदान दे रहे हैं ?

गाय की हम प्रतिष्ठा करते हैं, इस लिये कि भूसा और घास खाकर वह हमें दूध देती है। भालू दूध नहीं देता। अतः हमें अपने आप से पूछना चाहिये कि अब हमें जबकि ऊंचे-ऊंचे वेतनमान प्राप्त हो रहे हैं हम अपने संरक्षण में आये हुए ब्रह्मचारियों के हित में कितना दुग्ध दान कर रहे हैं। कितने ब्रह्मचारियों को बलिष्ठ शरीर और धर्मनिष्ठ मन बनाने की प्रेरणा दे रहे हैं ? मेरी सदैव ही धारणा रही है कि यदि कोई संस्था इस प्रकार का मानव पैदा कर सकती है तो वह गुरुकुल ही है। लेकिन तभी जब वास्तव में गुरुकुल हो। इसी प्रकार के गुरुकुल के निर्माण हेतु आज हम प्रयत्न शील हैं।

इसी साधना की शृंखला में दिनांक ४-३-८१ को गंगापार पुण्य भूमि कांगड़ी में जहां पर स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल विश्व-विद्यालय की स्थापना की थी। गुरुकुल के शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियों तथा ब्रह्मचारियों ने पहुंचकर ग्राम कांगड़ी के निवासियों के साथ यज्ञ किया और ऋषिबोधोत्सव धूमधाम से मनाया। भाषण शृंखला में स्वामी दयानन्द की जीवनी एवं उनके आदर्शों पर प्रकाश डाला गया। इस अवसर पर उपस्थित सभी युवकों ने प्रतिज्ञा की कि स्वामी जी के बताये निर्देशों के अनुसार वह २५ वर्ष से पूर्व विवाह नहीं करेंगे। इस अवसर पर संघड़ विद्या सभा द्वारा प्रकाशित जीवन ज्योति पुस्तक भी ब्रह्मचारियों एवं ग्रामीण लोगों में बांटी गई। वनस्पति विभागाध्यक्ष श्री विजय शंकर जी ने पुण्यभूमि मे ग्रामवासियो से मिलकर ७०० वृक्ष आरोपण करने की योजना बनाई। तत्पश्चात यह कार्यक्रम गुरुकुल कांगड़ी के पुराने महाविद्यालय के भवन मे साधना शिविर के रूप मे परिवर्तित होकर दिनांक ६-३-८१ तक चला। वहा जमीन मे बना एक हवन कुण्ड प्राप्त हुआ जहां अनुमानत: स्वामी श्रद्धानन्द के समय में यज्ञ होता था। ५ एवं ६ मार्च को सभी शिविर वासियों ने वहीं यज्ञ किया। रात्रि को कांगड़ी ग्रामवासी डेढ़ बजे तक भजन प्रवचन एवं अपने स्वामी जी के संस्मरण सुनाया करते थे। एक व्यक्ति श्री अर्जुन सिंह कांगडी निवासी ने जिसकी आयु १०१ वर्ष की है, स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ दो दिन व्यतीत किये—वह संस्मरण सुनाया तथा इतिहास विभाग द्वारा एक व्यक्ति की ड्यूटी लगाई जो इन संस्मरणों को लिपिबद्ध करेगा। इस साधना शिविर में कुछ उपाध्याय एवं कुछ छात्र एवं कर्मचारी भी तीन दिन तक वहीं गंगापार पुण्य भूमि में रहे।

आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री सरदारी लाल जी वर्मा ने भी वहां दो दिन बिताये। आयुर्वेद कालेज के प्रिंसिपल श्री सुरेशचन्द्र जी शास्त्री जी ने भी एक दिन शिविर में पधार कर सफाई एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से कांगड़ी ग्राम की ओर विशेष ध्यान देने का आश्वासन दिया।

मुझे इस शिविर में ऐसा आभास हुआ कि हमारे पूर्वजों की

आत्मा हमें ललकार कर यह चुनौती एवं पुण्य संदेश दे रही है कि यज्ञ की ज्वाला की भांति–

१–सर्वत्र प्रकाश फैलाओ–अंधकार मिटाओ।

२–सर्वत्र सुगन्धि फैलाओ–दुर्गन्धि मिटाओ।

३–अपनी दुर्वासनाओं को दग्ध करो।

४–सर्वदा उर्ध्वगामी बनो।

मैं समझता हूं कि यदि हम ऋषि दयानन्द द्वारा दिये गये इस सत्य मार्ग के पथिक बनने का प्रयास करे, तो इसमे न केवल हमारा अपना कल्याण है, अपितु देश और संसार का कल्याण है।

आइये ! आज हम इस पवित्र अवसर पर इस व्रत को धारण करें।

"अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम ॥"

॥ ओ३म् शम् ॥

●●●

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय (हरिद्वार)

आय- का विवरण १९८०-८१

(क) दान और अनुदान–

१- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग भारत सरकार से अनुदान–	१६, ००, ०००-००
२- अक्षय निधि का ब्याज–	१०, २०८-००
	१६, १०, २०८-००

(ख) शुल्क तथा अन्य स्रोतों से आय–

क्र स.	आय की मद	राशि
१-	पंजीकरण शुल्क	१०११-००
२-	पी. एच-डी. रजिस्ट्रेशन शुल्क	१६०-००
३-	पी. एच-डी. मासिक ,,	३८०-००
४-	परीक्षा शुल्क	३३०८७-००
५-	अंक पत्र ,,	१४६५-००
६-	पड़ताल ,,	३६४-००
७-	विलम्ब दण्ड	१७७२-५०
८-	माइग्रेशन शुल्क	१३५२-००
९-	प्रमाणपत्र ,,	१३३२-००
१०-	नियमावली, पाठविधि तथा फार्मों आदि का मूल्य	३०६-००
११-	सेवा आवेदन पत्र	२६७१-००
१२-	रद्दी व पुराने पर्चे	४७-००
१३-	शिक्षा शुल्क	२८४८१-००
१४-	प्रवेश व पुनः प्रवेश शुल्क	८८६५-५०
१५-	भवन शुल्क	१३६३-००

१६- क्रीड़ा शुल्क	४५०१-००
१७- पुस्तकालय शुल्क	३३४७-००
१८- परिचय पत्र शुल्क	१२६-००
१९- एसोसियेशन शुल्क	४१७-००
२०- मनोविज्ञान ,,	४५२-००
२१- मंहगाई	६२००-५०
२२- विज्ञान शुल्क	५९०१-००
२३- साइकिल स्टैण्ड	१३९४ ४५
२४- मिश्रित	५००-००
२५- पुस्तकालय से आय	१९६७-१५
२६- पत्रिका शुल्क	४०-००
योग क तथा ख	१७१७५८२-१०

—●●—

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

व्यय का विवरण

१९८०-८१

(क)– वेतन

क्र.सं.	व्यय की मद	राशि
१-	शिक्षक व शिक्षकेतर कर्मचारियो का वेतन	११५७७५०-०६
२-	भविष्य निधि पर संस्था का अंशदान	३६०११-००
३-	अनुग्रह राशि	२६२३८-००
		१२१९९९९-०६

(ख) अन्य व्यय–

क्र.सं.	व्यय की मद	राशि
१-	बिजली व जल आपूर्ति	२१४२६-२३
२-	टेलीफोन	२०१५८-३५
३-	मार्ग व्यय	१९३५२-६१
४-	लेखन सामग्री व छपाई	८४३४-९३
५-	वर्दी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	३१०६-५७
६-	डाक व्यय व टेलीग्राम	१६१४-४६
७-	वाहन अनुरक्षण तथा पेट्रोल	१०३८३-८१
८-	विज्ञापन	१३००-७०
९-	कानूनी व्यय	७७६८-५६
१०-	आतिथ्य व्यय	९५२-८७
११-	लेखा निरीक्षण व्यय	४४३५-७२
१२-	दीक्षान्तोत्सव	१०३७८-१०
१३-	आकस्मिक तथा अनपेक्षित व्यय	१२९९-००
१४-	मिश्रित	५००-८८
१५-	लान संवरण	२५०५ ७०

१६-	भवन मरम्मत	२४५१२-११
१७-	उपकरण	८२२४०-७१
१८-	फर्नीचर एवं सज्जा	७६०२३-००
१९-	आई. यू. बोर्ड वार्षिक सदस्यता शुल्क	१५०००-००
२०-	इण्डियन एसोसियेशन आफ सोशल साईन्स	२००-००
२१-	आई.डब्लू बार्ड स्पोर्ट्स सदस्यता शुल्क	२२५०-००

(ग) परीक्षा--

१-	परीक्षकों का पारिश्रमिक	२६१६८-००
२-	मार्ग व्यय परीक्षक	२२५५-५८
३-	निरीक्षण व्यय	११७०-००
४-	प्रश्न पत्रों की छपाई	११७५१-२८
५-	उत्तर पुस्तिकाओ का मूल्य	३२६७-३०
६-	डाक व्यय व तार	१५५८-६०
७-	लेख सामग्री व छपाई	२२३९-३०
८-	अन्य व्यय परीक्षा	७१४-३५
९-	एन. सी. सी.	१८६ ८३
१०-	छात्रकल्याण	३००-००
११-	निर्धनता फण्ड से व्यय	१००-००
१२-	वागवर्धिनी सभा	
१३-	एसोसियेशन	
१४-	छात्रवृत्ति	१८०५३-८९
१५-	क्रीड़ा	७४५०-१९
१६-	गोष्ठी एवं भाषण	१७२३-८६
१७-	सांस्कृतिक कार्यक्रम व सरस्वती यात्रा	११२६९-८६
१८-	मनोविज्ञान प्रयोगशाला	४९२४-७५
१९-	रसायन ,,	१६०५७-४६
२०-	भौतिकी ,,	८३३१-३६
२१-	वनस्पति विज्ञान प्रयोगशाला	७४१२-७०
२२-	जन्तु विज्ञान ,,	३१६४-९५
२३-	गैस प्लाट ,,	—

२४-	जर्नलस् आफ साइन्स	—
२५-	आर्य भट्ट विज्ञान मेला	२३३६७-९७
२६-	प्रदत्त सुलभ पुस्तकें	१२४०३-३७
२७-	समाचार पत्र व पत्रिकायें	१८७९-८०
२८-	जिल्द बन्दी	८२४-७५
२९-	पुस्तक सुरक्षा	३४६-६५
३०-	कैटेलाग कार्ड व इण्डेक्स	—
३१-	पत्रिकाओं की छपाई व अन्य व्यय	११०२१-०९
	योग ख तथा ग	१७१७८२०-१६

नोट:–उपर्युक्त आंकड़े लेखा निरीक्षण किये जाने पर बदल सकते हैं।

●●●

विश्वविद्यालय के कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ जी मरवाहा, एडवोकेट, मुख्य अतिथि को माल्यार्पण करते हुए। मरवाहा साहब ने निस्वार्थ भाव से विश्वविद्यालय को 2-7-80 को विजयश्री दिलवाई।

दीक्षान्त-भाषण

(१३ अप्रैल १९८१)

न्यायमूर्ति श्री एच०आर० खन्ना
अवकाश प्राप्त न्यायाधीश (उच्चतम न्यायालय)

माननीय कुलाधिपति महोदय, आदरणीय कुलपति जी, प्राध्यापक वर्ग, भद्र आर्य पुरुषों, महिलाओं और प्यारे नवस्नातकों !

गुरुकुल कांगड़ी के दीक्षान्त समारोह में मुझे भाग लेने का अवसर दिया गया है उसके लिये मैं बहुत आभारी हूं। गुरुकुल कांगड़ी देश को स्वामी श्रद्धानन्द जी की देन है । स्वामी श्रद्धानन्द जी जिनका पहला नाम मुंशीराम जी था, उन्होंने महर्षि दयानन्द जी की मृत्यु के बाद आर्य समाज का बीड़ा अपने हाथों मे लिया । यह बीड़ा बहुत भारी बीड़ा था। महर्षि दयानन्द भारत वर्ष के उच्च कोटि के समाज सुधारक और धार्मिक नेता थे। महर्षि जी ने हमको एक नई रोशनी दी और हमारे अन्दर सत्य और ज्ञान की जो अनादि और अनन्त हैं, और जिससे वेदों के पृष्ठ भरे हुए हैं उनकी जागृति पैदा की। महर्षि जी ने भारतीय समाज के अन्दर जो त्रुटियां आ गई थी, और जो घुन की तरह हमे अन्दर से खा रही थी उनको खत्म करने के लिये भीष्म युद्ध चलाया। छूआछूत, बाल विवाह, विधवाओं के विवाह पर रोक और स्त्रियों की दशा सुधारना कुछ ऐसे विषय थे जिनकी ओर उन्होंने ध्यान दिया । आज के युग में तो हम लोगों को इन बातो के सुधार का कोई अचम्भा नहीं लगता। बहुतों को हममें से पता नहीं कि उस समय में महर्षि ने कैसे बिल्कुल अकेले, जहालत, कट्टरपन और पाखण्डबाजी का मुकाबला किया । इसके साथ-साथ

उन्होने एक चट्टान को भाति खडे होकर हिन्दू समाज को सास्कृतिक आक्रमण से बचाया और उससे टक्कर लेने की शक्ति प्रदान की । हर देश और धर्म के इतिहास मे कभी-कभी ऐसा समय भी आता है जबकि लोग सास्कृतिक आक्रमण के बहाव मे बह जाते है और अपनी पुरानी और महान् परम्पराओ को भूल जाते हैं तथा उनसे जो गर्व और स्वाभिमान लेना चाहिये वह खो बैठते है । ऐसे समय मे राष्ट्रीय विकास की ज्योति धीमी पड जाती हे। ऐसे समय मे आवश्यकता होती है कि कोई महान् विभूति पक्के और दृढ निश्चय वाला व्यक्ति जो अपने आदर्शों से प्रेरित हो और कुर्बानी और साहस से भरपूर हो, वह सामने आये और देश और जाति के अन्दर नई भावना और जागरण पैदा करे ताकि वे अपनी परम्पराओ को जो भूल बठे है फिर से याद करे और उनकी महानता को जान सके और उनसे प्रेरणा ले सके। महर्षि दयानन्द उन महान् विभूतियो मे से थे । उन्होने उन आन्तरिक कुरीतियो और बुराईयो को जो हमारे समाज की शक्ति को खत्म कर रही थी, ललकारा। हमे अपने आपको पहचानने की योग्यता दी और हमारे अन्दर की टिमटिमाती हुई और मद्धम ज्योति को फिर से प्रज्ज्वलित किया । उन्होने हमारी जडो को मजबूत किया और हममे अपने अन्दर और अपने भविष्य के सुहानेपन मे एक नया विश्वास पदा किया जिसके फलस्वरूप हिन्दू जाति की रगो मे एक नया खून दौडने लगा। महर्षि के उपदेशो से, जैसा कि स्वाभाविक ही था, एक नयी जागृति देश को स्वतन्त्र कराने के लिये पैदा हुई ।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का महर्षि दयानन्द जी के उपदेशो से प्रभावित होकर गुरुकुल कागडी की स्थापना करना भी एक स्वाभाविक कदम था। महर्षि दयानन्द जी की तरह स्वामी श्रद्धानन्द जी बड़े निश्चयवान थे, धुन के पक्के थे । उन्होने आर्य धर्म की विरोधी शक्तियो का मुकाबला करने के लिये आर्य जनता को एक नया बल दिया। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने भारत को स्वतन्त्र कराने मे पूरा भाग

लिया। १९१९ मे जब अमृतसर में कांग्रेस अधिवेशन, जलियांवाला बाग के काण्ड के बाद हुआ. उसमें स्वामी जी स्वागत समिति के अध्यक्ष थे। स्वामी जी का और महात्मा गांधी का एक दूसरे के निकट आना इन हालात मे कुदरती था।

गुरुकुल कांगडी की स्थापना सन् १९०० में हुई। इसको स्थापित करने मे स्वामी जी का उद्देश्य था कि वह एक ऐसी संस्था पैदा करे जहां विद्यार्थी शान्ति और पवित्र वातावरण में रहे और जहां पर वैदिक ज्ञान और सांस्कृतिक शिक्षा पर जोर हो और उसके साथ-साथ आधुनिक विज्ञान और दूसरे विषयो पर भी पूरा ध्यान दिया जाये। ताकि उनके समन्वय से छात्रों का विविध कला पूर्ण व्यक्तित्व बने तथा वह भारत के चरित्रवान् और उत्तम नागरिक बन सके।

जिन छात्रों ने इस दीक्षान्त समारोह में उपाधि ली है मै उनको बधाई देता हूं और साथ ही उनसे यह भी कहना चाहता हूं कि यह न समझे कि इन उपाधियो के प्राप्त करने से उनकी शिक्षा का कोर्स खत्म हो गया है। यह तो एक आरम्भ है उस शिक्षा का जो हमें सारा जीवन सीखनी है और कभी-कभी बड़ी कीमत देकर भी सीखनी है। परन्तु उससे घबराना नहीं चाहिये। जीवन के हर मोड पर हमें रोज परिक्षाओं में से निकलना पड़ेगा मगर उससे हिम्मत नहीं हारनी चाहिये। जीवन तो एक संघर्ष है और उसमें वह लोग सफल होते हैं जो ठण्डे साहस के साथ मुश्किलों का सामना करते हैं और मुश्किलों को आसान बना लेते है। भाग्य का पासा सीधा पड़ने का तो सभी लाभ उठा सकते हैं, बुद्धिमत्ता और पुरुषार्थ तो उसमें है जो भाग्य का पासा उल्टा पडने से भी लाभ उठा सकें। गुरुकुल और कालिज शिक्षा उस बड़ी शिक्षा को प्राप्त करने का

साधन बन सकती है, उसकी जगह नही ले सकती। गुरुकुल की एक शिक्षा जो हमको अपने साथ सदैव रखनी चाहिये और जो हमेशा हमारे काम आयेगी वह है कि हम अपने अन्दर मानसिक शक्ति और बल पैदा करें, हम साहसी हों, भीरू या डरपोक न बनें। इसी उद्देश्य के लिये आर्य अभिविनय मे प्रार्थना मन्त्र है —

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि । वीर्यमसि वीर्य मयि धेहि ॥
बलमसि बलं मयि धेहि । ओजोऽस्योजो मयि धेहि ॥
मन्युरसि मन्युं मयि धेहि । सहोऽसि सहो मयि धेहि ॥

मेरे नवयुवक मित्रों ! हम एक बहुत महान् देश के, जिसका पुरातन बहुत उज्ज्वल रहा है, वासी हैं। हम सब को भारत का नागरिक होने में गर्व हासिल करना चाहिये। यह ठीक है कि हमारे अन्दर बहुत से ऐसे नेता लोग हैं जो उन आदर्शों से गिर गये हैं। मगर उनके कारण हमें अपने अन्दर से अपने देश पर से, अपनी संस्कृति पर से अपनी परम्पराओं पर से और अपने उज्ज्वल भविष्य पर से विश्वास नहीं खो देना चाहिये। पिछले वर्षों में बहुत सी ऐसी घटनायें हुई हैं जिनसे हम सबको बहुत दुःख होता है और हमारे मन को आघात पहुंचता है । यह भी सच है कि जो देश के अन्दर जो जटिल समस्यायें हमारे सामने आ गई हैं उनकी जिम्मेदारी के लिये हम पिछली पीढ़ी के लोगों को दोषी करार दे सकते हैं। मगर इन बातों में पड़ने से और कीचड़ उछालने से हमें कोई ठोस लाभ नही मिलेगा क्योंकि हमारे सामने तो इस समय आवश्यक कार्य यह है कि किस तरह भविष्य के लिये हम अपने देश को सुदृढ़ बनायें । आज आवश्यकता है कि आने वाले समय में देश खूब प्रगति करे ताकि

आज के नवयुवक जो भविष्य के असल मालिक एवं स्वामी है उनको सुखमय और उज्ज्वल पावें।

आज जिन चीजों की देशको सबसे अधिक आवश्यकता है, वे है अनुशासन, परिश्रम और नैतिक मूल्य। इन तीनों के बिना कोई देश प्रगति नही कर सकता है और न ही इनके बिना चरित्र निर्माण हो सकता है। सच पूछो तो यह देश की त्रिमूर्ति है।

पहले अनुशासन को लीजिये। आज तो ऐसा अनुभव होता है जैसा कि हमारे शब्दकोष से अनुशासन का शब्द किसी ने निकाल लिया हो। विश्वविद्यालयों की दशा देखो। पुराने समय में गुरु का स्थान बहुत ऊंचा होता था और छात्रों के मन मे उनको सच्चा सम्मान होता था। आज उसके बदले यह आम विचार है कि विश्व-विद्यालयों में अध्यापक बनना अपने मान और जीवन दोनों को जोखिम में डालना है। इसमे भी कोई सन्देह नही है कि कोई भी अध्यापक अपने छात्रों को अच्छी तरह से शिक्षा नही दे सकता और उनको उनकी त्रुटियां नही बता सकता यदि उसके मन में छात्रों का डर और भय है। जहां भय है वहां सच्ची शिक्षा नहीं हो सकती।

विश्वविद्यालयों के अलावा जीवन के बाकी क्षेत्रों मे से अनु-शासन जा रहा है। सरकारी दफ्तरों में देख लीजिये। कितने सर-कारी कर्मचारी अपने दफ्तरों मे ठीक समय पर आते है और कितने दफ्तरों के समय के अनुसार डट कर काम करते हैं? कारखाने और बिजली वालों को देखो। उत्पादन क्षमता आधी से भी कम हो रही है हर वर्ष कितने दिन हड़तालों और ताला बन्दियों मे चले जाते है और कार्य दिवस व्यर्थ जाते हैं? सड़कों पर देखो। कितने आदमी यातायात नियमों का पालन करते हैं? विधान सभा और संसद में

देखो--एक बार संसद् के अध्यक्ष ने कहा था कि संसद् में एक-एक मिनट के लिए देश को कितने हजार रुपये खर्च करने पड़ते हैं। इसके बावजूद विधान सभाओं और संसद् में कितनी दफा कार्यवाही रोकनी पड़ती है इस वजह से कुछ सदस्य संसद् प्रणाली के नियमों का उल्लंघन करते हैं और उनका पालन नहीं करते।

अब परिश्रम की ओर देखो। जहां आगे एक मनुष्य काम करता था वहां उसकी जगह तीन या चार काम करते हैं और फिर भी काम पूरा नहीं होता और अधूरा रहता है। आज हमारे देश के सब कारखाने और बिजलीघर पूरी उत्पादन क्षमता के अनुसार काम करें तो देश इतना समृद्ध और प्रगतिशील हो जायेगा कि सब आश्चर्य चकित रह जायेंगे। जर्मनी और जापान ने द्वितीय महायुद्ध बाद इतनी प्रगति की है, उसका सबसे बड़ा कारण है जर्मन और जापानी लोगों का परिश्रम। हर कर्मचारी दिन में १० या १२ घन्टे काम करता है। वहां कर्मचारियों के ऊपर किसी की निगाहबानी करने की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि कर्मचारी अपने आप ही स्वधर्म के अनुसार काम करते हैं। हमारे देश के अन्दर सब साधन हैं, धातु हैं, पानी है, नदियां हैं, पहाड़ हैं, लकड़ी है और अपार जनशक्ति है। सिर्फ कमी है तो इस चीज की कि हम इन सब प्राकृतिक एवं मानवीय साधनों का ठीक तरह से उपयोग नहीं कर सके और उनसे लाभ नहीं उठा सके। अगर हम किसी तरह से यह कर ले तो हमारी बेकारी की समस्या का अन्त, नहीं तो काफी हद तक उसका हल हो जायेगा और भारत संसार के समृद्ध देशों में गिना जाने लगेगा।

व्यक्तिगत रूप से तो हम भारतीयों की बुद्धि और ज्ञान प्राप्त करने की शक्ति जिसको अंग्रेजी में आई० क्यू० कहते हैं, वह किसी

देश के नागरिकों से कम नही। यह इस बात से सिद्ध होता है कि हम भारतीय जब दूसरे देशो के विश्वविद्यालयो मे जाते हैं तो हम परीक्षाओं में बहुत ऊंचा स्थान लेते है। मगर पता नही क्या बात है कि जहां हमें एक दूसरे के साथ मिलकर सामूहिक रूप से काम करना होता है तो वहां पर हम किसी न किसी तरह फिसल जाते है और दूसरी बातों में फंस जाते है।

हम अपनी अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिये दर्जनों योजनायें बनाये किन्तु उनसे यथोचित फल तो तब ही प्राप्त होगा जब हर व्यक्ति अपना योगदान देगा। हमे इस बात को सदैव रखना चाहिये कि हर राष्ट्र की खुशहाल अर्थव्यवस्था के पीछे खून पसीना बहाने की एक रहस्यमय कहानी निहित है, जिसमे निरन्तर कठिन परिश्रम और सुनिश्चित धन का बहुत महत्व रहा है। इनके सिवाय जीवन स्तर को ऊंचा करने का कोई और उपाय नही हो सकता।

तीसरी आवश्यकता है नैतिक मूल्यो की। कोई भी देश नहीं उठ सकता और महान् नही बन सकता जो अपने सामने कुछ सात्विक मर्यादाये न रखे और उनका पालन न करे। आज आम जनता का राजनैतिक नेताओं में थोड़ों को छोडकर, बाकी पर से विश्वास क्यो उठ गया है ? उसका सबसे बड़ा कारण यह है कि बहुत से नेता लोग कहते हैं कुछ और, करते हैं कुछ और। "आज भ्रष्टाचार बहुत ही बढ़ गया है। भ्रष्टाचार के साथ काले धन का बहुत सम्बन्ध है। दोनों साथ-साथ चलते हैं। पिछले समय मे महात्मा गाधी, जवाहर लाल नेहरू और सरदार पटेल के लिये लोगों के हृदय में इतना अधिक मान था और उनके कथन के अनुसार लोग क्यों चलते थे ? उसका सबसे बड़ा कारण था उनकी नैतिक और राजसी आस्था पर

सबका अटल विश्वास । आजकल तो कभी-कभी कुछ लोगों के व्यव-हार मे ऐसा लगता है जैसा कि हम नैतिक मूल्यो को चिता जला रहे हैं।

एक और बात, जिसकी तरफ मै आपका ध्यान दिलाना चाहता हू, वह है आदर्शवाद की महानता की आवश्यकता। आदर्श-वाद राष्ट्रीय जीवन को ढालने मे उतना ही योगदान देता है जितना कि दूसरे तत्व। इसके साथ-साथ आदर्शवाद आन्तरिक शक्ति का सबसे बडा सरोवर है। देश के नवयुवक आदर्शवाद के असल रख-वाले होते हैं। हमे देखना यह है कि वह सरोवर सूखने न पाये और वह रखवाले कमजोर न पड जाये।

मैं एक बार फिर उन स्नातको को जिन्होने आज उपाधिया प्राप्त की है बधाई देता हू और प्रार्थना करता हू कि वह देश के सच्चे नागरिक बनें और अपने जीवन की हर दशा मे सफलता पाय।

धन्यवाद।

—●●—

न्यायमूर्ति श्री एच० आर० खन्ना दीक्षात भाषण देते हुये ।

सत्यमेव जयते नानृतम्

●●●

THE VOICE OF THE TRUTH

●●●

VIJAYA PAL SINGH VERMA

VERSUS

G. B. K. HOOJA

●●●

A Comprehensive, Convincing

And Conclusive

JUDGEMENT

BY

THE LEARNED

DISTRICT JUDGE OF SAHARANPUR

IN THE COURT OF THE DISTRICT JUDGE

SAHARANPUR

Present : Shri B.D. Agrawal, District Judge, Saharanpur

O. S. No. 29 of 1978.

Gurukula Kangri Vishwavidyalaya and others .Plaintiffs

VERSUS.

B. K. Hooja and others........................ .... .Defendants.

Judgement

This is a suit for declaration and injunction.

Facts relevant may be thus stated :--

The Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha (in short the S.A.P. Sabha) is a registered society, registered under the Societies Registration Act, 1960. It is admittedly the apex body pertaining to all the Arya Samaj units situated in and out side the country. It was founded on August 31, 1908. The Bye Laws thereof were adopted by the Society on Jan. 26, 1935. These were amended from time to time including on July 18, 1971. with effect from November 1, 1971. According to paragraph 3 of its Constitution, the S.A.P. Sabha is composed interalia of representatives elected by the Arya Pratinidhi Sabhas. The other components thereof are elected representatives of the various Arya Samajs. It exercises supervisory control over the units affiliated to it. As per paragraph 2 (6) of the constitution

among the objects is included deciding the disputes and differences and disputes arising interse between the provincial Arya Pratinidhi Sabhas and Arya Samajs. Paragraph 10 (c) of the constitution envisages interalia that in the event of any illegality or irregularity in the elections or the working of the affiliated units the S A.P. Sabha shall be competent to have the same inquired into and if necessary to take over the unit concerned and appoint adhoc committee for the work thereof being carried out.

The Arya Pratinidhi Sabha Punjab (hereinafter described as the Arya Sabha Punjab) is a provincial unit also registered under the societies Registration Act. It is an ancient society having been registered on Dec. 24, 1895. As per its constitution as amended upto Nov. 24, 1963, admitted on both sides this Sabha was composed of representatives of Arya Samajs of the States of Punjab, Himachal, Jammu & Kashmir and Delhi. With the partition of Punjab, west Punjab went out. Delhi, the rest of Punjab and Himachal Pradesh Arya Samajs units continued to remain affiliated to the Arya Sabha Punjab.For the management and control of the Gurukula Kangri Vishwavidyalaya there is Vidya Sabha constituted in accordance with paragraph 25 of the constitution of the Arya Sabha Punjab. The Arya Vidya Sabha comprises of 25 members including the nine office bearers of the Arya Sabha Punjab, namely the President, Vice Presidents (3), Secretary, Assistant Secretaries (2), Treasurer and Librarian. These are among the members constituting the Arya Vidya Sabha.

The Gurukula Kangri Vishwavidyalaya Hardwar (hereinafter described as the University) is also a society separately registered as such under the Societies Registeration Act with effect from March 17, 1961. As per its constitution (paper no. 900 A 1) the Senate is the supreme authority of the University (para 2). The total strength of

the Senate is 27 (paragraph 1). Of these there are the nine office bearers of the Arya Sabha Punjab referred to above and five nominees of the Arya Sabha Punjab According to paragraph 7, the President of the Arya Sabha Punjab is ex-officio the Chancellor of the University, Paragraph 3 (b) provides that the Chancellor will preside over the meetings of the Senate and in his absence the Vice Chancellor will preside. V. C. is the chief executive and Academic Officer ranking next to the Chancellor (paragraph 8). According to paragraph 8 (c) :--

> "The V C shall be appointed by the Visitor from a panel of not less than three names selected by the committee which shall consist of three persons, two of whom shall be nominated by the Senate and one who shall be the Chairman of the committee appointed by the Visitor The V C. shall hold office for a term of three years at a time. He shall, however, be eligible for further extention."

Paragraph 4 makes provision in relation to Visitor and says that he shall be appointed by the Senate and for a term of three years but shall continue to hold office until the appointment of his successor at the next meeting of the Senate The University aforesaid is to be deemed University within the meaning of sec. 3 of the University Grants Commission 1956 in pursuance of notification of the Central Govt dated June 19, 1962.

The dispute between the parties is traced to about the year 1970 Civil suit described as Civil Original 3/70 was filed at Jullundur by certain persons claiming to represent the Arya Sabha Punjab. This was transferred to the original jurisdiction of the Punjab and Haryana High Court The Hon'ble Mr. Justice B. C. Dhillon directed election of the president of the Arya Sabha Punjab to be held on Dec. 23, 1973 under the supervision of R. S Phoolka as the Returning

Officer. The Arya Sabha Punjab had resolved also at the general meeting and agreed in Court as well that the president elected shall have the right to nominate the office bearers and the representatives to various bodies. Accordingly P W. Swami Indervesh was elected President and he made nomination of the office bearers including D.W. Virendra as the Secretary. The other office bearers envisaged under paragraph 20 were also nominated by him. The Executive Committee was constituted as per paragraph 21. The President as well nominated the representatives for the S. A P Sabha as contemplated under paragraph 15 (b). These were 15 in number. The High Court approved of these nominations and declared the same to be in order under its judgment dated 9-1-74 delivered by Hon'ble Dhillon J, vide paper no. 486 C. Among the nominees to the S A P. Sabha were P. W Indervesh himself, D. W. Ram Gopal Shalwale, P W Swami Agnivesh, Pirthi Singh Azad. On August 17, 1974 Ram Gopal Shalwale was elected President, Sa A P. Sabha on proposal made by P. W. Swami Agnivesh.

The S A P Sabha in its annual general meeting held on August 17 and 18, 1974 resolved that the jurisdiction of the provincial bodies should coincide with their respective territorial boundaries This was resolution no. 6 passed on August 18, 1974. This had been agreed to in principle on January 22, 1951. This was entrusted to the Executive Committee of the S A. P. Sabha for implementation. Letter was addressed on August 23, 1974 to the Arya Sabha Punjab eliciting its opinion on the subject. This was put up before the Executive Committee of the Arya Sabha Punjab on Nov. 16, 1974 which agreed with the suggestion in principle and appointed a sub committee comprising of nine persons to implement the same. This sub committee gave its report dated April 25, 1975 which was placed before the Executive Committee of the Arya Sabha Punjab on the following day.

The Executive Committee accepted the proposal of the sub committee for trifurcation of the Arya Sabha Punjab and resolved also that it be left to the S A. P. Sabha to be carried out.

On July 10, 1975 and July 14, 1975 circular letters were issued by Ram Gopal Shalwale D. W. in his capacity as the President, S.A.P. Sabha for implementation of the trifurcation of the Arya Sabha Punjab for interim arrangement being made until this came about. Detailed reference to the directives contained in these circular letters will be made when I pass on to the comments. Suffice it to say at this stage that according to the directives, adhoc committee was appointed replacing the Arya Sabha Punjab and election of the office bearers was held on Sept. 14, 1975 at the general meeting of the Arya Sabha Punjab held at Ambala.

At the meeting of the Senate of the Univertsty held on April 12, 1974 at which Swami Indervesh presided in capacity as Chancellor having been then the President of the Arya Sabha Punjab in which P. W. Swami Agnivesh and D. W. Ram Gopal Shalwale were also present, Dr. Dukkhan Ram was appointed Visitor. The term was to be three years as per paragraph 4 (a) of the Constitution of the University referred to above. Dr. Satyaketu was admittedly appointed Vice Chancellor by the Visitor. He tendered his resignation on March 24, 1975 which was, however, withdrawn. Swami Indervesh was detained under MISA on June 26, 1975. The Senate met on July 24, 1975 with Pirthvi Singh Azad as Chancellor. The resignation tendered again by Dr. Satyaketu was accepted from the office of V. C. and he was asked to continue until arrangement of his post were made. D. W. Virendra and Vedvrat were nominated members of the selection committee by the Senate. Dr. D. Ram Visitor nominated Dr. Suraj Bhan to the Selection committee. On Oct. 8, 1975 the Visitor appointed the defendant no. 1 (B.K. Hooja)

as Vice Chancellor. The plaintiffs maintain in the course of evidence that on July 18, 1976 at a meeting of the Senate over which Swami Indervesh presided Dr D. Ram was removed from the office of the Visitor and the services of B. K. Hooja as V. C. were also determined. Brahm Muni is claimed to have been appointed Visitor on that date and it is further averred that on August 28, 1977 the Selection Committee nominated Dr. Pasricha and Dr. Ram Prakash to the Selection committee. On 7th Sept. 1977 the Chancellor Swami Indervesh, it is conteuded, appointed the plaintiff no.2 V.S. Verma as V.C. on adhoc basis. Brahm Muni aforesaid died on Dec.16,1977.on Jan.26,1978 Dr.R.C.Paul was appointed Visitor by the Senate. He nominated Swami Indervesh on his behalf to the Selection Committee Dr. R. C. Paul appointed the plaintiff no. 2 as V, C. on Feb, 9, 1978 for a term of 3 years.

The suit before us was instituted on May 20, 1978 by the Gurukul Kangri Vishwavidyalay, V. S. Verma Gurukul Kangri. It is contended for the plaintiffs that the plaintiff no. 3 is not a Juristic Person. Allegations are that the plaintiff no. 2 is the Vice Chancellor. In paragraph 9 of the plaint it is said that the Vice Chancellor is appointed by the Visitor and the Visitor is appointed by the Senate. The University was established by the Aray Sabha Punjab (defendant no 15). On June 25, 1975 Swami Indervesh directed the Treasurer Murari Lal to hold elections for the Aray Sabha Punjab for 1975. Meeting of the Arya Sabha Punjab was convened accordingly by the Treasurer on Nov 13, 1975 at Narvana wherein Swami Indervesh was elected for the term 1975-76. He nominated the office bearers and dropped Virendra, Ram Gopal Shalwale, Pirthi singh Azad and Sardari Lal. Swami Indervesh was re-elected on May 16, 1976 at Sonipat and nominated the office bearers. On Oct. 9, 1977 at the general meeting of the Arya Sabha Punjab

P. W Swami Agnivesh is claimed to have been elected President and the nominated the office bearers who continued in the office when the suit was instituted. Defendants first set claimed to be the office bearers of the Arya Sabha Punjab and to have nominated the five persons to be the members of the Senate. They also assert that Dr. D Ram is the Visitor and that he appointed the defendant no I as the V. C. The defendants first set interfere it is contended with the management of the University. The plaintiffs contend that the defendants' second set are the duly elected office bearers of the Arya Sabha, Punjab and as such the members of the Senate and these defendants appointed the plaintiff no. 2 as V. C. The plaintiff no. 2 has been actually functioning as V. C. since Sept. 7, 1977 The Central Government withheld grant to the University with effect from July 1977. W. P. 3642 of 1978 was filed by the plaintiffs 1 and 2 which was, however, dismissed by the High Court at Allahabad on 3-5-78 since the dispute relates to the management of the University and the Central Government, it was stated, did not recognise the plantiff no. 2 as the V. C. The reliefs sought in the suit is declaration to the effect that the plantiff no. 2 is the V. C. of the University and the Governor of the Gurukula Kangri and further that the five persons elected to represent the Senate as mentioned in paragraph18of the plaint and the office bearers of the Arya Sabha Punjab and that the the defendant first set are not the office bearers of the said Sabha. Permanent injuction is also claimed to restrain the defendant first set and the defendant no. 12 from interferring in the functioning of the Arya Sabha Punjab and the plantiffs 1 and 3 in any manner. The suit was instituted in the Court of the Civil Judge Roorkee. It was transferred to the Court of Civil Judge Saharanpur by order of my learned predecessor dated 29th Nov. 1978. By order dated 23-2-80 this suit has been transferred by me to this Court. On Sept. 12, 1978 Mr. Justice

Balram Upadhyaya was appointed Administrator by order of the Civil Judge Roorkee suspending the powers of both the parties with regard to the management. The Administrator took charge on 16-9-78. He resigned however on May 29, 1979 and relinquished charge with effect from July 1, 1979.

The defendant no. 1 put in contest to the suit. It is pleaded by him that the institution was founded by Swami Shardhanand, president of the Arya Sabha Punjab. The defendant no. 1 was appointed on Oct. 8, 1975 as V. C by the Visitor Dr. D, Ram and the took charge on November 8, 1975. The selection committee was presided over by. Dr, Suraj Bhan. The defendant no. 1 has been recognised as V. C. by the Central Government and also by the U. G. C. Honorary rank of the Colonel was also conferred on him on Dec. 3, 1977 The defendant no. 1 went abroad on June 26, 1976 with the connivance of Dr. Ganga Ram the then Registrar, Swami Indervesh took control on July 15, 1975 and appointed Dr. Ganga Ram to be the V. C He came back on Jan 12, 1977, Ganga Ram was dismissed from the office of the Registrar. Baljeet Singh Arya was appointed on Jan. 12, 1977 as Registrar on adhoc basis. The Senate approved this on 16-1-77. He felt disgruntled because of not being made permanent, Swami Indervesh stepped in on August 11. 1977 through violence. The defendant no. 1 appointed R. L. Varshney D. W. as the Registrar. Swami Indervesh etc, were expelled by the S. A P. Sabha. The plaintiff no.2 is not the V. C. nor he could be appointed as such. The suit is also alleged to be liable to be stayed under sec. 10|151 C. P. C. because of pending dispute in the Civil Courts in the Punjab.

Dr. R. L. Varshney, defendant no 2 and Dr. Chander Bhan, defendant no. 3 have put in separate written statement besides the defendants 12 and 14 supporting the

contention of the defendant no. 1. Defendants 4, 6, 7 and 15 have also filed separate written statment supporting the claim of the defendant no. 1 and refuting the contention put forward by the plaintiffs. Defendants 5th set consisting of certain employees of the University who claimed to be in service since before July 31, 1977 and contend that the defendant no.1 is the duly appointed V.C.of the University.

The learned Civil Judge framed the following issues in the suit.

1 Whether the office-bearers of the registered Arya Pratinidhi Sabha Punjab or the office bearers of the Arya Pratinidhi Sabha Punjab, which was created as a result of trifurcation of the old registered Sabha are entitled to be the members of the Senate of the plaintiff University ?

2 Whether the defendants of Ist set or the defendants of the 2nd set are the legitimate members of the plaintiff University ?

3 Whether the defendant no. 1 was the validly appointed Vice Chancellor of the plaintiff University ? If he was validly appointed, whether his term of office has come to an end ?

4 Whether the plaintiff no. 2 is the validly appointed Vice Chancellor of the plaintiffs University and if it is so, then whether he is entitled to continue in office as the Vice Chancellor ?

5 Whether the services of defdt. 18-94 was validly terminated by the plaintiff and whether reinstatment of any or all of them by the Administrator will be binding on the plaintiff after the decision of the suit and the discharge of the Administrator ?

6 Whether defdt. no 2 is validly appointed Registrar of the plaintiff University ?

7 Whether the Arya Pratinidhi Sabha Punjab as it existed prior to 14-9-75 is still existing ? If so, whether plaintiff no. 2 is the V. C. and Mukhya Adhishthata of plaintiffs 1 and 3 respectively; and defendant no. 8 is the Chancellor of the plaintiff no. 1; and the president of defendant no, 1; and defendant no. 1; is the Secretary of defendant no. 15 as alleged by the plaintiff ?

8 Whether Arya Pratinidhi Sabha Punjab which existed prior to 11-9-75 was trifurcated as alleged of defdts, Ist set ? If so, are the defendants Ist set Office-bearers of the newly constituted Arya Pratinidhi Sabha Punjab ?

9 Whether V. S. Verma entitled to sue on behalf of plaintiffs no. 1 and 3. ?

10 Are plaintiffs 1 and 3 liable to be struck off the array of plaintiffs in view of para 47 of W. S of defendant no 1 and para 38 of W, S. of defendants 15, 7, 6 and 4 ?

11 Whether Gurukul Kangri, plaintiff no, 3 is entrusted with the economic activities of defendant no. 15, as alleged in para 11 of the plaint and to what effect ?

12 Whether Gurukul Kangri Pharmacy is run by plaintiff no. 3 as alleged in para 10 of the plaint ?

13 Whether this court has jurisdiction over the whole of the subject matter of suit ? If not, its effect ?

14 Whether the suit is bad for misjoinder of parties and causes of action ?

15 Whether the suit is bad for non-joinder of Padma-bhushan Dr. Dukkhan Ram of Patna University, Ex-V. C. and Visitor of Gurukul Kengri Vishwavidyalaya. Haridwar and University Grants Commission ?

16 Whether the suit is barred by Sec. 80 C. P. C. as admittedly no such notice is alleged to have been served on Union of India and University Grant Commission ?

17 Whether the suit is liable to stay u/s151 and 10 C.P.C. because of previously instituted suit pending decisions as alleged in para 28 of W. S. of defdts 15, 7. 6 and 4 ?

18 Whether the pleas raised in application challenging the division of Arya Pratinidhi Sabha Punjab in three, allowable to plaintiffs and is the same not barred by resjudicata ?

19 Whether the plaintiffs have any locus standi to file the present suit ?

20 Whether the suit on behalf of plaintiffs 1 and 3 has been instituted by a duly authorised person competent to sign and verify the plaint ?

21 Whether plaintiff no. 3 is a juristic person and entitled to sue as such ?

22 Whether any of the plaintiffs are competent and entitled to challenge the validity of the trifurcation of Arya Pratinidhi Sabha Punjab ?

23 Whether Civil Caurt has any jurisdiction to decide the domestic matters of the Sabha, i. e. Arya Pratinidhi Sabha, Punjaq, Haryana and Delhi which all the three stand registered ?

FINDINGS

Issues Nos. 1, 4, 7 and 8.

These issues may conveniently be taken together.

Reference has been made already to salient features of the Constitution of the University. The Senate is the supreme authority. Of its 27 members,14 are representatives of the S.A.P Sabha including the nine office bearers thereof The President of the Arya Sabha Punjab is the ex-officio Chancellor of the University. The Senate appoints the Visitor for a term of three yaars. For the appointment of the V. C there is Selection Committee comprising of three persons of whom two are nominated by the Senate and the third who is the chairman of the Selection Committee is nominated by the Visitor. The appointment has to be made by the Visitor from out of panel of three names selected by the Selection Committee. The term of the V. C. is three years subject, however, to further extension. It is indisputable that each of these constitutes indispensible link in the entire chain. The appointment of a V. C. cannot in other words be considered to be duly made without each of these essential requirements being shown to be strictly fulfilled. The relief sought by the plaintiffs namely that of declaration to the effect in substance that the plaintiff no.2is the V.C. of University implies a decision that he is duly appointed as such and hold in this manner a right as to property within meaning of sec. 34 of the Specific Relief Act 1963 corresponding to sec. 42 of the Old Act. Sec. 34 similar to sec. 42 is in reference to any person to any legal character or to any right as to any property. The concept of legal character in this context came to be considered in A. I. R. 1959

Bombay 201 (Major General Shanta Shamsher Jang Bahadur Rana. Vs. Kamani Brothers Pvt. Ltd), At page 212 it was observed ;--

"As seen earlier, status arises by reason of some peculiarity of the person of inherence or the person of incidence. The person may be a natural person i. e., a human being or an artificial pereson, i. e., a juristic person, like a company or what is khown in English Law as a Corporation Sole. The personality of an artificial person is different from that of a normal natural person and it constitutes his status in law. But amongst the natural persons themselves some have certain peculiarities about their personality and to illustrate the same, Holland says (at page 351) :

"The chief varieties of status among natural persons may be referred to the following causes; 1, Sex; 2. minority; 3. 'patria potestas' and 'manus'; 4: coverture; 5. celibacy; 6. mental defect; bodily defect; 8. rank caste, and official position; 9. race and colour; 10. slavery; 11. profession! 12. civil death; 13. illegitimacy; 14. heresy; 15. foreign nationality; 16. hostile nationality. All of the facts included in this list, which might be extended, have been held, at one time or another to differentiate the legal position of persons affected by them from that of persons of the normal type". It is this passage from Holland which has been quoted by Benerjee in his Law of Specific Relief in British India, and which has been reproduced in the said case of ILR 39 Mad. 80; AIR 1915 Mad 584.

As observed by me earlier "legal character" as used in sec. 42 is equivalent to legal status and legal status in a legal right when it involves a peculiarity of personality arising from anything unconnected with the nature of the act itself which the person of inherence can enforce against of incidence."

In the instant case the right claimed is also in relation to property, namely, the office of the V, C. of the University. The abstract question of onus of proof does not arise because evidence has been led on both sides but it nonethe less remains upon the plaintiff to estabiish from the material placed on the record on either or both sides that the right of the claim that he lays has been made out,

In view of the above, the plaintiffs haye necessarily to establish in the case that :--

(i) The Senate that took relevant decision on the subject was duly constiuted;

(ii) The Senate appointed the Visitor;

(iii) (a) The Senate nominated two members of the Selection Committee:

(b) The Visitor named the third member of the Selection Committee; and

(iv) The Visitor appointed the Vice Chancellor from the panel recommended by the Selection Committee.

Broadly stated the contention for the contesting defendants has been two fold, namely, that the Senate upon the decisions of which plaintiffs rely was not properly constituted and seco ndly that no appointment came in fact to be made of the plaintiff no. 2 and the proceedings in that behalf are fabricated.

Taking up question no. (1) first, it is the common case of the parties that Ram Gopal Shalwale D. W. was elected President of the S, A. P. Sabha on August 17, 1974 at its General Meeting upon the proposal of P. W. Swami Agnivesh. Vital Changes had occurred since the Arya Sabha

Punjab was constituted in 1835. The province of Punjab was divided. Shortly after indepenpence, the idea mutated as early as Jan. 22, 1951 for the jurisdiction of each of these affiliating Sabhas to coincide with their constitutional boundaries. With the reorganisation of the States in subsequent years, this seems to have been further felt to be necessary. Jammu and Kashmir and Himachal Pradesh units separated and consituted themselves apart from the joint body. The S. A. P. Sabha also accorded recognition to these separated units. On August 18, 1974 there was a resolution placed at the general meetting of the S. A. P. Sabha reiterating the demand for trifurcation and this was passed asking also the Executive Committee to implement the decision. The proceedings threrof are found recorded in the Minute Book which was affirmed on oath by D. W. Shalwale who also produced the same. P. Ws. Swami Indervesh and Agnivesh both were president at the meeting having been nominees there to for and on behalf of the Arya Sabha Punjab. Swami Indervesh avoided answer to relevant questions on the point and made attempts to take shel ter at places considered inconvenient behind lapse of memory. He even went on to say that he could not recollect if there was a resolution for trifurcation. He then changed and said that a resolution came on the subject but he may not say whether that was passed. A copy of the proceedings of the meeting was received by him but admittedly he made no protest against the same. Swami Agnivesh P. W, admitted that there was such a resolution at the meeting and that it was passed and also that Swami Indervesh was Present at the meeting. On August 23, 1974 there was a letter addressed to the Arya Sabha Punjab by the Sa. A. P. Sabha (Executive Committee) to elicit their views on the Subject. This was put up before the Executive Committee of the Arya Sabha Punjab on Nov. 16; 1974. Both P. Ws. Swami Indervesh and Swami Agnivesh and D. W. Shalwale

participated in the proceedings at that meeting in their capacity as members of the Arya Sabha Punjab, The minutes thereof record that the Executive committee accepted the proposal in principle and for the implementation thereof a sub committee comprising of nine members was constituted which included as well Swami Indervesh and Swami Agnivesh. The sub Committee had its deliberations on 25-4-75 wherein a resolution was passed endorsing the proposal. The resolution also provided that any properties of the Arya Sabha Punjab situated outside the boundaries of Punjab Haryana and Delhi as well as Himachal Pradesh all these States would be represented after trifurcation. This came up before the Executive Committee of the Arya Sabha Punjab on April 26, 1975. The resolution was adopted as mooted by the sub committee accepting the trifurcation to be made and endorsing the task to the S. A. P. Sabha. In this connection also there was in the coures of evidence attempt by Swami Indervesh and Swami Agnivesh to deviate and distort the proceedings which took place on 25th and 26th April 1975 in their immediate presence and with their participation but, this was in patently clumsy manner which the Plaintiffs'learned counsel did not find possible to support in the course of arguments. In pursuance of this decision, the President S. A. P. Sabha issued directives dated July 10, 1975 supplemented by the letter dated July 14, 1975 both sides have put in copies of the same, vide paper no. 943/942 C on the record. Learned counsel for the plaintiffs described these directives as their sheet anchor. He also stated expressly that the validity of those directives is not being disputed by him since he said if this were to be done that might led to this suit being stayed on account of proceedings pending before the Civil Courts in the Punjab. The contention is that in accordance with these directives the old Constitution of the Arya Sabha Punjab had to be changed and the amendment registered

under the Societies Registration Act but this has not been done and hence the position as existing prior to July 1, 1975 continues to obtain, The contention is unsupported from the report. As is manifest from the C. L. dated July 10, 1975 the decision taken was to trifurcate the Arya Sabha Punjab and to confine the boundaries of the new units of the Punjab, Delhi and Haryana to their respective constitutional boundaries. Until further partition of the properties, adhoc committees were constituted under the same directives for Delhi, Haryana and Punjab. This was done on dissolution of the existing Arya Sabha Punjab. Arya Sabha Punjab was divided in other words into three adhoc committees known as Arya Pratinidhi Sabha Punjab Adhoc Committee, Arya Pratinidhi Sabha Haryana Adhoc Committee and Arya Pratinidhi Sabha Delhi Adaoc Committee respectively. The Punjab Adhoc Committee was to comprise of 15 persons with Pirthi Singh Azad as the President and D. W. Virendra as the convener. Term specified for the adhoc committees was three months i. e. upto 13-10-75. Direction was made that prior to that date these adhoc committees would constitute Pratinidhi Sabhas within their respective areas and the election thereto shall be made adopting the list of delegates as approved in the judgement of the High Court dated 9-1-74, Clause (6) of the C. L, dated 10-7-75 also provided that the title to the University shall vest in the Arya Vidya Sabha upon tbe same being registered and further that until the Arya Vidya Sabha is newly constituted and registered, the existing Vidya Sabha shall continue to operate as before. C. L. dated 14-7-75 made it clear in clause (2) (ka) that until the election to the three Sabhas is made there shall be no change in the composition of the Arya Vidya Sabha except that in place of the existing officers thereof the office bearers of the Pratinidhi Sabha Adhoc Committee shall be deemed to be the office bearers of the Arya Vidya Sabha ex-officio and the President and the Secretary of the Arya Pratinidhi

Sabha (Adhoc Committee Punjab) shall be respective the president and the Secretary of the Arya Vidya Sabha. In clause 1 (3) of this C L. it was also specified that till then the Senate of the University shall continue to be represented, in place of the nine office bearers of the Arya Sabha Punjab, by the office bearers of the Adhoc Committee, namely the President, Vice Presidents, The Secretary, Asstt. Secretaries, Treasurer and the Librarian. In accordance with clause 4 of this C L. the President of the Adhoc Committee was to remain the Chancellor of the University until arrangement was made in the Constitution of the University. For election the date, namely, Sept 14, 1975 was also fixed through this C. L. and the venue was fixed at Ambala. From these two C. Ls. the validity of which, as mentioned above, is not disputed on either side, it is manifest that there is no vaccum created. On the contrary the the place of the Arya Sabha Punjab was taken by the three newly constituted adhoc committees appointed under the same directives. The old Constitution continued to govern subject to these changes and accordingly the office bearers of the adhoc committee were to comprise the Arya Vidya Sabha.

Evidence on the record also shows that on Sept.14,1975 elections were held at Ambala as envisaged in these directives. RamGopal Shalwale and VirendraD.Ws.both were personally present in those proceedings. Swami Indervesh P.W. was not in a position to rebut because he was in jail being detained under the MISA since 26-6-75. P. W. Swami Agnivesh was detained on Jan. 26, 1976 under the MISA but he was not present himself at meetings held on 14-9-75 at Ambala. In accordance with clause 24 (xi) D. W. Ram Gopal Shalwale the vice President could preside in absence of the President,namely,Swami Indervesh. It was said for the plaintiffs that D. W. Shalwale had been suspended from the office of the vice President on 25-6-75 by Swami Inder-

vesh, the president. An order purporting to have been made by P. W. Swami Indervesh on 25-6-75 was filed in the case on 2-5-80 vide paper no. 932 C. This is not the original nor is the original accounted for despite so much of time having elapsed since commencement of the suit. It is only a photostat copy attested by Notary. The mere filing of this paper cannot amount to proof of the truth of its contents. There is no evidence moreover that any such suspension was actually communicated to the person concerned. Clause 24 (ii) and (v) of the Constitution of the Arya Sabha Punjab cannot be held to empower the President to place the Vice President under suspension. Clause 20 refers to the Vice President as among the office bearers of the Sabha. As has been mentioned above Shalwale D. W. was made Vice President upon the basis of the resolution adopted by the Arya Sabha Punjab agreeing to nomination of the President elected under the auspices of the High Court and those nominations had also received the seal of approval of the High Court of Punjab and Haryana through the judgment dated 9-1-74. The power as such to remove or suspend D. W. Shalwale from the office of the Vice President could be exercised by the Arya Sabha Punjab and not by the President alone. In the course of the evidence, it was also suggested for the plaintiffs that the delegation of D. W. Shalwale to the S. A. P. Sabha was withdrawn by P. W. Swami Indervesh before he was detained with effect from June, 26, 1975 There is no such paper on the record that might be said to indicate that any such withdrawal took place. On the contrary while under detention P. W. Swami Indervesh wrote letter dated 16-7-75, vide paper no. 442 C2/60 addressed to Veerji. Therein he asked the addressee to continue to look after the affairs of the Societies. Swami Indervesh found himself in an awkward position when confronted with this letter in the course of cross-examination. He attempted to deviate from the obvious by

pretending that this letter was not addressed by him to D. W. Virendra, Secretary but to Veerji suggesting thereby some worker in general attached to the Society. It was stated by him that this does not refer to any one particular individual. It had to be conceded all the same that Ram Gopal Shastri whom he claims to have appointed Secretary in place of D. W. Virendra was not known as Veerji. He further evaded the answer by saying that it is not necessary to describe D. W, Virendra as Veerji and lastly that he cannot say if he was also known as Veerji. P. W. Swami Agnivesh admitted that D. W. Virendra is known as Veerji Swami Indervesh undoubtedly distorted the answer knowingly with the object merely to sustain his contention that the delegation had been withdrawn by him before he went to jail. The position as at present is that the Constitution and the rules of the Arya Sabha Punjab continued to govern subject, however, to the Scheme laid down on July 10|14, 1975. In accordance with that scheme, the validity of which is not in dispute followed by elections held on Sept. 14, 1975 Pirthi Singh Azad was the President of the Arya Sabha Punjab and in this capacity the Chancellor of the University. The office bearers of the newly constituted Punjab unit were elected on 14-9-75 and they were competent to be nominated for that Sabha to the Senate. The office bearers of the Arya Sabha Punjab existing prior to July 10, 1975 no longer remained eligible to represent in the Senate since the Arya Sabha Punjab itself became defunct with effect from that date. The Delhi unit was also registered separately on 16-7-76. The Himachal Pradesh unit also got itself registered separately. The Punjab unit was no doubt not registered separately but the interim scheme as envisaged in the directives dated 10|14-7-75 are not rendered inoperative on this account because they came in force upon the issue of those directives themselves. Without waiting for the registration to be made and those directives did conte-

mplate the position as it would obtain in so long as the registration is not made or the constitution newly drafted.

According to the contention for the plaintiffs in the course of evidence the relevant decision by the Senate in this behalf were taken on;--

(i) July 18, 1976 when Dr. D. Ram was removed from the office of the Visitor and Brahm Muni appointed in his place and also B. K. Hooja-defendant no. 1 removed from the office of the V. C.

(ii) August 28, 1977 when the Senate nominated Dr. Pasricha and Dr. Ram Prakash to the Selection Committee and resolved to authorise the Chancellor to make adhoc appointment of the V. C.

(iii) Jan. 26, 1978 when Dr. R. C Paul was appointed Visitor by the Senate.

On all these dates the Senate was constituted according to the plaintiffs of the office bearers and representatives of the Arya Sabha Punjab existing prior to July 10, 1975. It is said that elections to that body were held on 13-9-75, 16-5-76 and 9-10-77. It was also pointed in this connection that Jyoti Prassad Gupta, and Amrit Sethi besides Hira Lal filed O. S. 418|75 in Court of Sub Judge Delhi against Swami Indervesh etc. seeking injunction against the proposed meeting dated 13-9-75. On 29-4-76 application was moved as against the meeting proposed to be held on 16-5-76. These were rejected by the Sub Judge on 15|5|76 as is manifest from the copy of the judgment 109 C. There is no evidence on the record to establish that the ad-interim injunction relating to the meeting dated 13-9-75 or on any other subsequent date was actually communicated to the persons concerned. On the basis of this judgment, therefore, it may not be assumed that those meetings could

not have been held. Assuming thus that those meetings did take place, the fact remains that these were of the Arya Sabha Punjab as then existing and hence unconstitutional with the change effected by the directives dated July 10|14| 1975. The elections, if any, had to take place as per those directives convened by the Adhoc Committee appointed for the purpose.

This takes us to the question whether in fact the alleged appointment of the plaintiff no. 2 as V. C. proceeded on requisite premise. Learned counsel for the defandants contended that the evidence for the plaintiffs on the subject is in departure from the pleading and it may not, therefore, be taken into consideration. The plaint comprising of 78 paras spread over 28 typed pages does not, it is significant, make specific reference in relation to the mode and other particulars of the alleged appointment of the plaintiff no. 2 as V. C. although, it may not be denied that is the most crucial part of the entire suit. In paragraph 9 of the plaint it is stated that the "V. C. is appointed by the Visitor. The Visitor is appointed by the Senate". This obviously is a general preposition stated on the relevant rules or regulations. Paragraph 29 says that "according to the plaintiffs it is the defendants 2nd set who are the validly elected office bearers of the Sabha and consequently the members of the Senate and since the defeneants 2nd set appointed plaintiff no. 2 as V. C. of the University and the Mukhya Adhishthata (governor) of plaintiff no. 3. Paragraph 76 recites,

> "That the cause of action for the suit is a recurring cause of action and it arose for the first time on 7-9-77 when the plaintiff no. 2 took over charge of the office of the V. C. of the plaintiff no. 1 and as Mukhya Adhishthata of plaintiff no. 3 and on every subsequent date when the validity of the appoint-

> ment of the plaintiff no. 2 was doubted by any of the defendants and finally on 3-5-78 when the statement was made before the High Court by Senior Standing Counsel of the Union of India, as mentioned in para 64 above,"

It would be observed that there was no indication given absolutely that the appointment of the plaintiff no. 2 as V. C took place by specific order of Visitor It is not indicated as to when was the order by the Visitor made, if any, in the matter or as to when was the Visitor appointed for that purpose. It is also not suggested as to when was the Selection Committee constituted and by whom There is also no indication in the plaint that the appointment of the plaintiff no. 2 was initially on adhoc basis nor is it indicated as to where from was the authority to appoint on adhoc basis derived. It is also not suggested as to when was the said appointment made regular or permanent and by whom. It may not be denied that these are the material facts to have been pleaded considering that the relief sought was declaration in favour of the plaintiff no, 2 and permanant injunction on that footing. With a view to clarify the position statement was recorded of the plaintiffs' counsel by the Civil Judge Roorkee on 3-3-79 under Order 10 Rule 2 C. P. C. where in it was given out by him:--

> "On. 5-9-77 the plaintiff was appointed V. C. by the Senate comprising of the defendants 2nd set and took charge of the office on 7-9-77 after appearing before the Selection Committee. The plaintiff no. 2 was given finally permanant appointment on 9-2-78. The Selection Committee was appointed by the Senate comprising of defendants 2nd set."

From this statement under Order 10 Rule 2 C. P. C. as well the position in this behalf does not improve. The

relevant particulars or material facts remained unindicated still and the conflict between the pleadings (including the statement under Order 10 Rule 2) and the evidence adduced for the plaintiffs continues to remain in tact. The importance of the statement under Order 10 Rule 2 C, P C. connot be underrated. In **Smt. Mango Vs Prem Chand A.I.R 1962 Alld 447** cited for the defendants, referring to **Man Mohan Dass Vs Mt. Ram Devi A. I. R. 1931 P. C 175** it was pointed out that the statement under Order 10 Rule 2 C. P. C is intended for the purpose of clarification of pleadings relating to the suit and should not be allowed to supersede the evidence. At the same time the value of a statement recorded under Order 10 Rule 2 connot also be set at naught by any subsequent tutored statement in evidence. The Trial Court would insist indeed of examining the party at the first hearing so that "bogus litigation can be shut down at the earliest stage", vide **A, I, R 1977 S C 2421 at Page 2423 (T. Arivindandas Vs T B. Satyapal and other).** In **Bhagat Singh and other Vs. Jaswant Singh A.I R 1966 S.C, 1861** relying upon **A I R 1930 P, C. 57 Siddiq Mahomed Shah Vs. Mt. Saran)** it was reiterated that where a claim has been never made in the defence presented no amount of evidence can be looked into upon a plea which was never put forward The mere fact that the issues as framed did involve the consideration of the points in controversy give the vague allegation in the **W. S** with the definiteness of the requisite pleadings. **It is** well settled that if a party asks for a relief on a clear and specific ground and in the issues and at the trial no other ground is covered either directly or by necessary implication, it would not be open to the said party to attempt to sustain the same claim on ground which is entirely new, At the same time, as observed by the Lordships of the Supreme Court in **Bhagwat Prasad Vs. Chandramauli A. I. R. 1966 S.C. 735.**

"If a plea is not specifically made and yet it is covered by an issue by implication, and the parties knew that said plea was involved in the trial; then the mere fact that plea was not expressly taken in the pleadings would not necessarily disentitle a party from relying upon it if it is satisfactorily proved by evidence. The general rule no doubt is that the relief should be founded on pleadings made by the parties. But where the substantial matters relating to the title of both the parties to the suit are touched though indirectly or even obscurely, in the issues and evidence has been led about them, then the argument what a particular matter was not expressly taken in the pleadings would be purely formal and technical & cannot succeed in every case. What the court has to consider in dealing with such an objection is, did the parties know that the matter in question was involved in the trial, and did they lead evidence about it ?"

In this connection it is worthy of note in the instant case before us particularly that no objection from the side of the defendants appears to have been raised during the course of the recording of the evidence to the effect that the evidence being adduced on any point is in departure from the pleadings. It was submitted by the learned counsel for the defendants in the course of the arguments before me that this kind of objection was raised from their side before the Civil Judge Roorkee. The record shows that the evidence of P. W. V. S. Verma had just commenced before that Court when the case was transferred. No indication of any such objection finds place on the record. The evidence thereafter was recorded before me but no such objection came to be put forward. It does not also appear to me that the defendants may invoke A. I R, 1977 S. C. 680 (M/s Modi Spinning and Weaving Mills

Co Vs, Ladha Ram and Co) to their aid since the question herein is not of any amendment in the pleadings. The statement under Order 10 Rule 2 C P. C. forms part of the pleadings themselves. In the peculiar circumtances of the case, therefore, the evidence on the subject adduced by the parties might be looked into even though the fact remains that the Pleadings for the plaintiff on the subject are vague and unspecific.

Admittedly Dr. D. Ram was appointed Visitor on 12-4-74 as is also recorded at pages 115-116 of the minutes of the Senate through resolution no. 5 of that date P. W. Swami Indervesh presided at that meeting in his capacity as the Chancellor. Swami Agnivesh was also present as a member of the Senate besides D. W Ram Gopal Shalwale and others. Both P. Ws. Swami Indervesh and Swami Agnivesh admit in the course of their statements this appointment of the Visitor to have been made. In accordance with paragraph 4 of the Constitution of the University, the visitor has the initial term of three years but it also provides that he shall continue to hold office until the appointment of his successor at the next meeting of the Senate. No such appointment of his successor having been made by the Senate duly constituted, Dr D. Ram is to be deemed to continue as Visitor on the extended terms unless, it were established from the side of the plainttffs that his appointment was duly terminated during the intervening period. B. K. Hooja defendant no. 1 was appointed V C by Dr. D. Ram Visitor on 8-10-75, vide 44T C-8. This was from a panel of three names suggested by the Selection Committee comprised of D W. Virendra and Vedvrat appointed thereto by the Senate on 24-7-75 at page 136 of the minutes of the Senate and presided by Dr Suraj Bhan nominated to the Selection Committee by the Visitor himself. The initial appointment of the V. C. was for a term of three years from the date of taking over charge. The charge

was taken over by Dr. Hooja on 8th Nov. 1975. In accordance with paragraph 8 (c) of the Constitution of the . University, the V, C. shall hold office for a term of three years at a time He shall, however, be eligible for further extension. On Oct 28, 1978 the term of the defendant no. 1 as V. C. was extended by the Visitor until the appointment of a new V. C , vide paper no, 441 C2|64. Accordingly the defendant no, I continued to retain the office as V C. on the extended terms. Dr D. Ram having been appointed Visitor on 12-4-74 admittedly and B. K. Hooja defendant no. 1 having been appointed V C. on Oct. 8, 1975, no vacancy could arise either against the office of the Visitor or the V. C. unless these office bearers were duly removed. This is claimed to have been done for the plaintiffs on July 18, 1976 through resolutions nos. 3 and 5 respectively by the Senate over which Swami Indervesh presided. For the defendants the learned counsel contended that the proceedings are fabricated Upon a reference to the minutes book of the Senate it would be apparent that the method adopted ordinarily was to paste the proceedings of the minutes on pages of the register maintained in the form of minutes book. This same method was adopted at pages 142-45 containing the proceedings of the meeting dated 12-4-76 held with Pirthi Singh Azad as the Chancellor. In the normal course the proceedings dated July 18, 1976 should have as well been found pasted on the relevant pages of the register. Instead we find them inserted in between in the form of cyclostyled loose paper Even if these papers could not be pasted on the pages of the register, they must have been given the page numbers in sequence from page no. 146 onwards provided they were actually brought on the register at that time in due course. No reason absolutely could be assigned for the plaintiffs despite close questioning in cross-examination for these minutes being not maintained in the normal course. The register had been in the custody of the plaintiffs. It was produced in

Court through P. W. Sadhu Ram on March 31, 1980 when he entered the witness box. He was asked about the maintenance of the register including as to when or how and by whom these papers came to be insereted in the register but he claimed to be ignorant. There was no occasion indeed for his presence at the alleged meeting dated July 18, 1976. He said that he was there to represent the Karamchri Sangh. A representative of this Sangh is not among the members of the Senate as is clear the constitution of the University It is said by the witnes that there was a resolution adopted by the Sansh for such represenation but no such resolntion has seen the light of the day. It was stated that registor is with one Amresh Kumar which has not been produced. He also said that Pirthi Singh Azad has written for such represenation in 1974-75 but no such letter is brought on the record. According to him, moreover the resolution by the Sang came to be passed in Jan 1977. In any case there was no occasisn for his presnce at the said meeting held on July 18, 1976 on that basis. His signature at page 146 appears at the end which would not have been difficult to manipulate. P. W. Sadhu Ram has had moreover reason to be disgruntled against defedan. no. 1 and those of his group. Upon the report made by V.P. Singh in capacity Ragistrar (who supports the defendant no. 1) dated 26-5-79 P. W. Sadhu Ram the clerk officiating as accountant was placed under suspension by the Administrator on 31-5-79, vide 447 C2/3 and he was also directed to refund the imprest of Rs. 1000/-which he held with him. The order was communicated to P. W. Sadhu Ram on 4-6-79 by V. P. Singh aforesaid, vide paper no. 447 C2/2- The report was made in sepuence of absence of Sadhu Ram from duty with effect from 14th May 1979. At the instance of the opposite group Sadhu Ram is also being prosecuted for alleged offence under sec. 420/409 I. P. C. along with the plaintiff no. 2 and others of that group. All this was

put to him in cross-examination. In relation to his salary he has put in representation which has to be considered by the person holding the office of the V. C. In face of all these P. W. Sadhu Ram is naturally an interested witness. P. W. Swami Agnivesh was himself under detention on July 18, 1976 and hence absent from the alleged meeting. P. W. V. S. Verma was himself not present nor was there any occasion for him to be there. Exen P. W. Swami Indervesh does not testify to this meeting of the Senate and all these resolutions being passed therein. In the absence of definite and reliable evidence, therefore, it cannot be held that Dr. D. Ram and B. K. Hooja were dualy removed from their respective offices and vacancy created against the same.

For the plaintiffs it was contended then that the plaintiff no. 2 was appointed V, C. on adhoc basis by the pnale (Swami Indravesh) on Sept, 5, 1977, vide 955 C. need not repeat the reoson for the finding that Swami Indervesh had ceased to be the chancellor of the University prior to Sept 5, 1977. The rules and regulations of the University described herein after as its constitution do not envisage adhoc appointment of V.C.being made by the Chencellor,vide paper no, 900 A. Paragraph 8 (c) thereof as teproduced above lays down the machinery and the process through which alone the V. C. of the University is to be appointed. There are no inherent powers contemplated in the Chancellor on the subject. The argument of Swami Agnivesh was that adhoc appointment of the V, C. could be directed by the Senate. This also is not contemplated under Constitution of the University. In Paragraph 2, the Senate is no doubt described as the supreme authority of the University but it has necessarily to act within the four corners of the rules and regulations of which it is the creation. In regard to the subject of the appointment of V.C. the powers conferreo upone the Senate are only that it is shall appoint the Visitor and nominate two members of the Selection Cnmmittee.

No appointment of the V. C, is to be made directly by the Senate The Sanate conld not assume to itself thus a power which the rules and regulations do not confer upon it and authorise the Chancellor to appoint V. C. on adhoc basis. The argument for the plaintiffs is that the authorisation by the Senate to the Chancellor to make adhoc appointment was given at the meeting of the Senat held on Aug. 28, 1977. Resolution no. 3 of that date refers that Dr, Pasricha and Dr. Ram Prakash were nominated as members of the Selection Committee Resolution No, 8 refers then that pending appointment of the V. C., Baljeet Singh Arya the Registrar was being appointed officiating V. C. In resolution no. 18 at the end it is then stated that the regular appointment of the V C. would take time, and, therefore, the Chancellor was being given the power to make adhoc appointment of V. C. untill regular appointment is made. Learned counsel for the defendants rightly submitted in my view, that the inconsistency between resolutions 8 and 18 manifest. Resolntion no. 18 is on its face superfluous in presence of resulution no. 8, The arrangement for the interim period being made throngh resolution no. 8 by appointment of officiating V. C. there was no occasion absolutely for resolution no. 18. There is substance in the contention that to insert resulution no 18 was in all probability felt to be necessary becausc Baljeet Singh Arya dose not come forward to support the plaintiffs' case and secondly since it also seems to have been realised that any order made by the Chancellor would be without authority otherw this behalf. The order 955-C filed for the plaintiffs for the first time on 23-5-80 along with applciation 950 C when the case was in the middest of arguments and without assigning any reason for the intervening pe.iod does not refer to the resolution of the Senate. There is no evidende that this was actually despatched on Sept. 5, 1977 in the ordinary course. All this is in addition to the apparent interpolation in the paging at therelevant places in the minute book (page 164-67) weich also has

remained unexplained from the plaintiffs' side despite being questioned in cross-examination. I find accordingly that there was no authority vesting in the Chancellor to make adhoc appointment to the office of the V. C.

On plaintiffs' behalf the contention further was that the plaintiff no 2 V. S. Verma was appointed V. C. by Dr. R. C Paul, the Visitor on Feb. 9, 1978. The appointment of Dr Paul as Visitor is alleged to have been done by the Senate at the meeting dated Jan. 26, .1978 presided by P. W. Swami Agnivesh. Dr R C Paul was cited as witness for the plaintiffs but not produced, nor is there any reason a signed. The order relating to his appointment was not brought on reoord in original at any stage We do not also have on record copy of intimation given to Dr. Paul for his appointment as Visitor. There is copy of a letter dated 30-1-78 purporting to be from Dr. Paul acknowledging receipt of letter dated 27-1-78 and indicating his acceptance for the office of the Visitor, vide 954 C I filed on 23-5-80 and corresponding to 68 C filed earlier, That letter dated 27-1-78 or the copy thereof has not seen the light of the day. We do not konw in the absence thererof whether it emanated from any decison taken by the Senate on the subject. Nor do we have on record as mentioned above the letter or copy thereof issued from the University appointing Dr. Paul as the Visitor. P. W. V. S. Verma the plaintiff no. 2 was cross-examined at length on the subject. He said tha twhile the plaint was being drafted he does not remember whether he had indicated to the counsel that he was appointed by the visitor. To another question his answer was that the counsel may not have considered it necessary to indicate in the plaint that his appointment took place by order of Dr. R, C, Paul as Visitor. This is un-understandable since In the event of the appointment having been made by order specifically made by Dr. Paul it does

not seem that there could be omission to refer this very material fact in the pleading at the earliest stage. V. S. Verma felt tempted at one stage of the cross-examination to say also that he was present at the meeting of the Senate wherein R. C. Paul was appointed Visitor although he was not a member of the Senate at the time On being asked as to in what capacity could he be there at all at the time of the meeting, he had no option except to concede that he was not present. In the normal course copy of the order issued to Dr. Paul appointing him as Visitor should have been available on the record of the University and it could be brought before the Court indicating also the serial number of the issue of the same. The despatch register would have been relevant to make out that the appointment was actually issued when it is alleged to have been done. There was repeated questioning with regard to this register but it was not produced even though other papers continued to be filed till almost the last date. The proceedings of the alleged meeting dated 26-1-78 are said to have been recorded by Ziley Singh in capacity as the Secretary of the Senate but he is not examined either. The alleged presence of P.W. Sadhu Ram on the occasion has already been commented upon earlier and it need not be repeated. Papers relating to the traveling allownce might have as well been of some help in this behealf; P. W. Sadhu Ram stated that those papers might be in the office but they also were not produced nor accounted for. All this is besides the contention that for reasons disclosed above Swami Agnivesh could not have been the Chancellor of the University on Jan. 26, 1978. Reference has been made for the plaintiffs to the Universities Handbook 1979 wherein V. S. Verma, plaintiff no. 2, is mentioned as V C. It does not seem that by itself this may serve to recognise him as the V. C. dejure despite all that has been found above on the subject.

In view of the discussion referred to above, I find that (i) The office bearers of the Arya Pratinidhi Sabha Punjab as it emerged after trifurcation in pursuance of the directives of the S. A. P. Sabha dated 10/14, 1975 and subsequent to the elections held on Sept. 14, 1975 are the persons entitled to membership of the Senate under the Constitution of the Arya Pratinidhi Sabha Punjab;

(ii) The defendants 2nd set do not represent the Arya Pratinidhi Sabha Punjab in the Senate.

(iii) The plaintiff no. 2 is not the Vice Chancellor of the University or the Governor duly appointed as such.

(iv) The defendant no. 1 is and continues to remain the Vice Chancellor of the University duly appointed

The issues are decided accrdingly

Issues Nos. 9, 19, 20 and 22 :

These issues are overlapping The unfortunate feature of this case has been that the issues were drawn by the then Civil Judge Roorkee without it seems application of his mind and on the basis of issues proposed on both sides, This has resulted into a number of issues being drawn which are redundant and constitutes a mere duplication, The plaintiff no. 2 is not entitled to sue for or in the name of the plaintiffs no. 1 and 3 since it has been held that he is not the Vice Chancellor of the University duly appointed as such and in consequence the plaintiffs have no locus standi in the matter.

The issues are decided accordingly.

Issue No. 21 :

In the course of arguments it was conceded for the

plaintiffs that the plaintiff no. 3 is not a juristic person and as such it is not entitled to sue It is not a Society registered as such or a corporation otherwise. The issue is decided accordingly

Issues nos. 10, 17 and 18 :

These were not pressed on either side in the course of arguments.

Issues nos. 11 and 12 :

These issues do not arise in view of the question raised in the suit being whether the plaintiff no. 2 is the duly appointed Vice Chancellor of the University nor have they been pressed on either side.

Issues Nos. 13 and 23 :

These also were not pressed and are, therefore, decided against the defendants.

Issue no. 6 :

This dose not arise because for purposes of the relief sought by the plaintiffs it is immaterial whether the defendant no. 2 is or is not duly appointed Registrar of the University.

Issue no. 15 :

Dr. D. Ram was initially impleaded as defendant no. 5 and the University Grants Commission was impleaded as defendant no. 17. Subsequently by order of the learned Civil Judge both of them were, however, omitted. Paras 34 to 60 of the plaint is in reference to the University Grants Commission. In so far as Dr. D. Ram is concerned he cannot be regarded as a necessary party to the suit. For

purposes of adjudication the right or title claimed by the plaintiffs in this case, it is not necessary that Dr. D. Ram the Visitor should have been impleaded also as a party. In relation to the U. G. C., paras 34 to 60 of the plaint have obviously become redundant in view of the Commission being deleted from the array of parties. There is no relief as such sought against the U. G. C, any longer. For a person to be declared as the V. C; recognition by the U. G. C, is not the sinequanon. Learned counsel for the defendants referred to the proviso to Or. 1 Rule 9 C P. C, inserted by the Central (Amendment) Act 1976. The general provision contained in rule 9 is that no suit shall be defeated by reason of the misjoinder or non-joinder of the parties and the Court may in every suit dealing with the matter in controversy so far as regards the rights and interest of the parties actually before it. The proviso says that anything in this rule shall apply to non-joinder of a necessary party. In order that the proviso may be attracted it has be shown necessarily that the party concerned is necessary for purposes of adjudication of the suit. That cannot be said to be true in relation either to Dr. D. Ram; or the University Grants Commission in this case. The suit cannot, therefore, fail on account of the non-joinder of them as parties.

Issues decided accordingly,

Issue no. 16 :

In so far as the University Grants Commission is concerned, the issue does not arise because the U. G. C. is no longer arrayed as party. As regards the Union of India admittedly there was no notice given under sec. 80 C.P. C. nor is the absence thereof accounted for on any other basis. The suit as against the Union of India, defendant no. 16, would, therefore, be bad on this account also. Issue is decided accordingly,

Issue no. 5 :

Defendants 18 to 94 were not parties to the suit initially instituted. The plaintiffs have not sought any relief still against any of these defendants. As would appear from paragraph 75 A of the plaint they were added in consequence of the order made by the learned Civil Judge. The grievance of these defendants who claim to be the employees of the University in various categories mainly is that the salary due to them has not been paid, since about July 1977. For the plaintiffs it was asserted on the other hand that the services of these defendants were terminated and that the reinstatement directed, if any, by the Administrator during the intervening period would not obtain or hold good subsequent to the decision of the suit. Evidently, the subject matter of this suit does not call for any adjudication with regard to the salary claimed by defendants 18 to 94 to be due to them. Being not arrayed as plaintiffs, no relief can be awarded to them. The funds of the University are not subject matter of this dispute. The Court has no control over the said funds. The crux of the matter involved in the suit only is whether the plaintiff no. 2 is the V, C. duly appointed as such. This has been answered in the negative. It is upto the defendants 18 to 94 to seek appropriate remedy against the person authorised to manage the institution and competent to pay them the dues claimed, if any. The issue is decided accordingly.

Upon the findings referred to above the plaintiffs are not entitled to any relief in this suit.

Evidently this does not put to end the controversy between the parties in its entirety. The differences between them are deep rooted and they have their origin in the dispute concerning the Arya Pratinidhi Sabha, Punjab some of which are pending adjudication still in the Punjab.The deci-

sion in the present could not extend beyond the scope of the subject matter of the plaint In the process, however, the victim is the institution the Gurukul Kangri University founded with noble objects. The administration thereof is paralysed; the studies and the examinations are dislocated; the staff is disgruntled having not been paid its emoluments for long and due to uncertainty pervading as to the future while these claiming to be the trustees are engaged in private feuds for personal ends at the cost of public money. The entire enviornment is polluted with a series of cases-civil and criminal pending around and the efficiency or integrity has touched the lowest ebb. The end to this does not appear in sight unless Government, it seems, steps in with suitable legislative measure under Article 31-A (i) (b) or Entry 26 of the Concurrent List of the Constitution or such other measure as is deemed fit before things get into a point of no return.

ORDER :

The suit is dismissed with costs to the defendants 2nd set and the 4th sets. The other defendants shall bear , their own costs.

(B. D. AGRAWAL)
Distritct Judge, Saharanpur
2-7-1980

Judgment signed, dated and pronounced in the open Court,

(B. D AGRAWAL)
District Judge, Saharanpur.
2.7-1980

IN THE COURT OF CIVIL JUDGE

ROORKEE

SUIT No. 29 OF 1978,

1. Gurukula Kangri Vishwavidyalaya, Hardwar District Saharanpur, through the Vice-Chancellor.
2. Sri V.S. Verma, Vice-Chancellor, Gurukula Kangri Vishwavidyalaya, Hardwar, District Saharanpur.
3. Gurukula Kangri, through Sri V. S. Verma, Mukhya Adhishthata- · · · ·PLAINTIFF.

VERSUS

1. Sri Balbhadra Kumar Hooja r/o D-329 Defence Colony, New Delhi.
2. Sri Radhey Lal Varshney,18Akhand Nagar Flats, Kankhal
3. Sri Chandra Bhan Akinchan r/o Jwalapur Mahavidyalaya, Hardwar.
4. Sri Virendra, r/o Editor Veer Pratap Jullundur.
5. Dr. Dukhan Ram.
6. Sri Ram Gopal Shalwale r/o Sarvdeshik Bhawan, Delhi.
7. Sri Prithvi Singh Azad r/o Kharar (Ropar).

   · DEFENDANTS Ist Set.
8. Swami Agnivesh (Chancellor, Gurukula Kangri Vishwavidyalaya and President Arya Pratinidhi Sabha, Punjab)
9. B.S Arya (Registrar Gurukula Kangri Vishwavidyalaya).
10. Prof.R.C.Paul(Visitor,Gurukula Kangri Vishwavidyalaya).
11. Pt Murari Lal Sharma, Secretary Arya Pratinidhi Sabha, Punjab DEFENDANTS 2nd Set.
12. Sri Hari Prakash c/o Gurukula Kangri Pharmacy Hardwar
13. Sri Ram Babu Pachbhaia r/o Panch Puri, Hardwar.
14. Sri Ved Prakash (Asstt. Manager) Gurukula Kangri, Pharmacy, Hardwar. · DEFENDANTS 3rd Set.
15. Arya Pratinidhi Sabha, Punjab through its Secretary.
16. Union of India through the Secretary Education, Government of India, New Delhi.
17. University Grants Commission, through the Secretary (U.G.C) Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi.

   ·· ····· DEFENDANTS 4th Set.

18 Dr Nigam Sharma Lecturer
19. Dr.Budh Dev ,,
20. Ved Prakash ,,
21. Sri Ram Prasad Reader
22. Bharat Bhushan
23. Satya Vrat Lecturer
24. Sada Shiv Bhagat Reader
25. Narain Sharma Lecturer
26. Ved Prakash ,,
27. Omprakash Mishra Reader
28. Har Gopal Singh Lecturer
29. Chandra Shekhar Lecturer
30. Satish Chandra ,,
31. Vinod Chandra Reader
32. Shiv Narain Singh Lecturer
33. Vijay Shankar Reader
34. Ram Kumar Paliwal Lect.
35 Kaushal Kumar ,,
36. Greesh Chandra Clerk
37. Nand Gopal ,,
38. Bhairava Datt ,,
39. Jagdish Prasad ,,
40. Jag Mohan Peon
41. Ram Singh ,,
42 Som Prakash Clerk
43. Jai Singh Gupta ,,
44. Jeet Singh Coach
45. Kunwar Singh Peon
46. Hans Raj ,,
47. Nirendra Singh ,,
48. Jaggan Sweeper
49 Nanku Mali
50. Hari Bhajan Clerk
51. Suresh Chand Tyagi Principal Science College.
52. Harish Chand Lecturer
53. Vijendra Kumar ,,
54, Shri Krishan ,,
55. Surya Prakash Clerk
56. Shiv Charan Clerk
57. Purna Singh Clerk
58, Prem Chand ,,
59. Devi Prasad ,,
60. Satya Singh Peon
61. Sher Bahadur Chaukidar
62. Man Singh Lab Boy
63. Ram Chand Sweeper
64. Dhan Pal Peon
65. Mahendra Singh Negi Clerk
66. Lal Nar Singh Lab. Astt.
67, Tara Chand Peon
68. Balbir Singh ,,
69. Prem Singh Clerk
70. Hari Singh Peon
71. Bhagwati ,,
72. Prem Prakash Clerk
73. Jagpal Singh Peon
74. Jai Prakash ,,
75. Ghanshyam ,,

76. Chandra Bhan	Peon	86. Maha Nand	Peon
77. Anand Kumar	Clerk	87. Harish Chand	Lab Asstt.
78. Rudra Mani	Lab Asstt.	88. Pramod Kumar	"
79. Man Singh	Lab Bay	89. Thakur Singh	Lab Boy
80. Pritam Lal	Peon	90 Vijay Singh	"
81. Ram Dass	"	91 Har Giyan	Peon
82. Suraj Deen	Mali	92 Ram Asre	Mali
83. Nathu Singh	Chaukidar		
84 Govind Singh	Peon	93. Jagdish	Sweeper
85 Ram Sarup	"	94 Jabar Singh Saingar	Lect.

All employees resident of Gurukula Kangri University, Hardwar.

······DEFENDANTS 5th Set.

●●●

ओ३म्

१९८१-८२

८२वां वार्षिक-विवरण

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

विषय-सूची

●●●

अशुद्धि-शुद्धि पत्र

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६	१६	धर्मबिलम्बियो	धर्मावलम्बियों
१२	१६	पर	कर
१३	४	दाष्ट	दृष्टि
१६	३	अश	अश
१६	३	वैज्ञाकिों	वैज्ञानिकों
१७	६	टेनोनोजी	टेक्नालोजी
१७	२६	कुल	कुछ
१८	३	आड़े	ओढ़े
१८	११	उद्दश्य	उद्देश्य
१९	१६	अन्तनिहत	अन्तर्निहित
,,	१८	वो	को
२०	१२	उपेक्षी	×
२१	२२	नपे	नये
२२	१३	ज्यीतित	ज्योतित
,,	१४	मत्यं	मर्त्य
२३	१८	अरम्भ	आरम्भ
२४	१	चिकिासालय	चिकित्सालय
,,	७	है	था
,,	१५	ससदीय	संसदीय
२५	३	हागा	होगा
,,	१७	जाखिक	जोखिम
२६	३	उछंखलताये	उच्छृंखलताए
,,	६	मुसिबतों	मुसीबतो
,,	१३	स्रजन	सृजन
२६	१५	उपस्तिथि	उपस्थिति
,,	२३	प्राध्यपक	प्राध्यापक
३०	७	सकर्ता.	सकता
,,	२२	कैनडियन	कैनेडियन

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३१	८	सम्बन्ध इस	इस सम्बन्ध
,,	१६	उद्दयों	उद्देश्यों
३३	१६	अवनतिक	अवैतनिक
३६	१३	क	के
,,	१७	आपक	आपके
३७	४	मथन	मन्थन
,,	१०	क्रे	के
,,	२५	विश्वेश्वरोय	विश्वेश्वरैया
४२	८	जाता	जाना
,,	,,	भी	×
,,	१२	महीनों के	वर्षों का
,,	१३	की	के
४३	१७	सूचना	अनुसूची
,,	१९	के	मे
४४	५	विज्ञान	विज्ञान की
४५	२१	१९८२	१९८१
४६	१	प्राप्त	प्राप्त न
,,	२	कौ	को
४७	२१	सिंह	हंस
५०	११	अगवाई	अगुवाई
५४	१८	तमान	वर्तमान
५५	११	अप्रैल	अप्रैल से
,,	१५	भी	थी
५६	८	नवीनन	नवीन
५७	३	उपलबधि	उपलब्धि
५९	१७	सभझता	समझना
६१	१७	प्रो०	श्री
६२	१६	जो	जी
६४	३	उसको	उसकी
६५	१६	प्रो०	श्री
६७	११	बिजीटर	विजिटर

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६८	१८	प्रो०	श्री
७३	७	औन	और
७५	७	काशमीर	काश्मीर
,,	८	खेद	खेल
,,	१०	काशमीरा	काश्मीर
७८	२१	पर	परक
८०	१२	आमप्रकाश	ओमप्रकाश
८३	३	श्री प्रो०	श्री
,	१२	गुरू	गुरु
८४	२	प्रो०	श्री
,,	३	,,	,,
,,	४	,,	,,
,,	५	,,	,,
,,	८	व्ववस्था	व्यवस्था
,,	,,	प्रो०	श्री
,,	६	,,	,,
,,	१०	,,	,,
,,	१३	,,	,,
८५	१०	वार्स्णय	वार्ष्णेय
,,	१८	प्रो०	श्री
८८	१	शिक्ष ामंत्रालय	शिक्षा मत्रालय
,,	५	रूडकी	रुडकी
,,	१२	Physies	Physics
६७	१२	बालिकये	बालिकाएं
,,	१३	हरिद्ववार को	हरिद्वार को
,,	२२	रह	रहा
६८	२	धम	धर्म
,,	५	वेदांक	वेदांग
,,	८	का	की
,,	११	जिनमें	जिसमें

पृ०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९८	१४	कुवेत	कुवैत
१००	४	सगीत	संगीत
,,	१७	गुरूकुल	गुरुकुल
,,	२१	स्कोलरशिप	स्कालरशिप
,,	२२	को	कौ
१०३	१	भृंत्य	भृत्य
,,	२४	आचलित	आंचलिक
,,	२६	संगृहीत	संग्रहीत
१०५	३	,,	,,
११०	१४	दिताक	दिनांक
१११	१७	तकमीको	तकनीकी
११२	२	निशुल्क	नि:शुल्क
,,	३	आय	आर्य
,,	१५	पुस्तकाय	पुस्तकालय
११३	३	बष	वर्ष
,,	७	का	को
,,	२५	कराय	कराया
११४	२३	करवावा	करवाया
११७	१५	इक्ट्ठे	इकट्ठे
,,	२२	कुमार	कुमारी
११८	६	कृष्णाअवतार	कृष्णावतार
,,	१६	उपवित्तसचिव	उपसचिव
,,	,,	वित्तमंत्रालय	शिक्षा-मंत्रालय
१२२	३	अपना	अपने
,,	१६,२०	उपा ध्याय	उपाध्याय
,,	२५	पुरष्कृत	पुरष्कृत
१२३	६	पानि	पांति
,,	१०	क	के
,,	१४	,,	,,
,,	१५	कसिश्नर	कमिश्नर
,,	१६	सम्बन्धित	मम्मिलित

सम्पादक मण्डल

१- श्री धर्मपाल हीरा (कुलसचिव)

२- श्री चन्द्रशेखर त्रिवेदी (उपकुलसचिव)

३- डा० विनोद चन्द्र सिन्हा (अध्यक्ष, इतिहास विभाग)

४- डा० विजय शङ्कर (अध्यक्ष, वनस्पति विभाग)

५- डा० जबरसिंह सेंगर (जन-सम्पर्क अधिकारी)

६- डा० भगवानदेव पाण्डेय (प्रवक्ता हिन्दी विभाग)

७- प्रो० मनुदेव 'बन्धु' (प्रवक्ता, वेद विभाग)

विश्वविद्यालय के वर्तमान अधिकारी

विज़ीटर – डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालङ्कार, विद्यामार्तण्ड
भूतपूर्व कुलपति, गु०कां०वि०वि

कुलाधिपति – श्रीवीरेन्द्र, प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब, जालंध

कुलपति – श्री बलभद्र कुमार हूजा (अवकाश प्राप्त आई०ए०एस०

आचार्य एवं उपकुलपति – श्री राम प्रसाद वेदालङ्का

कुलसचिव – श्री धर्मपाल ह्री

उपकुलसचिव – श्री चन्द्रशेखर त्रिवेद

वित्ताधिकारी – श्री ब्रजमोहन थाप

विशेषाधिकारी – श्री जबरसिंह सेग

प्रिन्सिपल विज्ञान महाविद्यालय – श्री सुरेशचन्द्र त्या

पुस्तकालयाध्यक्ष – श्री जगदीश वेदालङ्का

आमुख

प्रत्येक संस्था का अपना कोई न कोई गौरवमय इतिहास होता है जिसकी रक्षा करना संस्था का उद्देश्य होता है। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का देश के शिक्षण संस्थाओं में अपना अलग स्थान रहा है। इस संस्था पर स्थापना से लेकर अब तक काले बादल छाये रहे हैं। यह अपने आरम्भिक क्षणों में अंग्रेजों का कोप-भाजन बना रहा तो बाद में चलकर स्वार्थी तत्वों का। फिर भी यहां के स्नातकों, उपाध्यायों एवं कर्मचारियों ने अपने आत्मोत्सर्ग से इसे पल्लवित करने का सकल्प दोहराते हुये इतिहास के गौरव की रक्षा में संलग्न रहे। स्वतन्त्रता संग्राम रहा हो अथवा सामाजिक कुरीतियों के प्रति विद्रोह, यहां के संस्थापक और सदस्य अपने को न्यौछावर करते रहे और संस्था को गौरवान्वित करते रहे।

विगत वर्षों के आपसी विवादों के कारण इस विश्वविद्यालय से जुड़े प्रत्येक सदस्यों को अनेक कष्टों का सामना करना पड़ा है और विश्वविद्यालय की गरिमा और प्रतिष्ठा को भी धक्का पहुंचा है। इस संस्था को चलाने के लिए जितने प्रयत्न किये गए सम्भवतः उतने प्रयत्न एक नई संस्था को चलाने के लिए नहीं किये जाते हैं। विश्वविद्यालय के पुनरुत्थान के लिए शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियों ने भली-भाँति अपना सहयोग प्रदान किया है।

इस संस्था की गौरवगाथा से आकर्षित जब मैं यहां आया, तब तक यहां पर छाये काले-बादल इधर-उधर छिटक चुके थे और यहां सर्वत्र आपात के बाद छाई हुई शांति अपनी गाथा का मूक-संदेश दे रही थी। यहाँ के सदस्यों के सहयोग से विश्वविद्यालय को सुचारु रूप से आगे बढ़ाया गया। कई वर्षों से बाकी एरियर आदि का

भुगतान कर्मचारियों को किया गया, परिसर की सफाई एवं वृक्षारोपण का कार्य हुआ, भवनों की मरम्मत एव व्यवस्थित किया गया तथा प्रयोगशालाओ मे उपकरणों की आवश्यकताओं की पूर्तिकी गई। पठन-पाठन सुचारु रुप से चला एवं सरस्वती यात्रा एवं अन्तर्विश्वविद्यालयीय खेल-कूद प्रतियोगिताओं यथा- हाकी, बैडमिण्टन, क्रिकेट आदि में भाग लेने के लिए भेजा गया। विश्वविद्यालय मे विभिन्न पत्रिकाओ का प्रकाशन कराया गया। दीक्षान्त समारोह के अवसर पर लोकसभाध्यक्ष श्री बलराम जाखड की उपस्थिति ने विश्वविद्यालयीय गरिमा को बढ़ाया। इस अवसर पर माननीय अतिथि को "विद्यामार्तण्ड" की मानद उपाधि से विभूषित किया गया। और गतवर्ष में उत्तीर्ण १३५ स्नातको को उपाधियां वितरित की गई।

इस विश्वविद्यालय को मान्य कुलपति महोदय ने अखिल भारतीय विश्वविद्यालय संघ की सदस्यता दिलाते हुए और सबका मनोबल बढ़ाते हुए प्रगति को प्रेरणा दी। इसके अतिरिक्त रिक्त पदों पर योग्य व्यक्तियों का चयन कराया और विश्वविद्यालय की प्रगति की।

यद्यपि विश्वविद्यालय प्रगति कर रहा है पर इसी उपलब्धि से यहां के शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारी संतुष्ट रहे यह उचित एवं न्यायसंगत नहीं है। गुरुकुल विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा को, पठन-पाठन, उत्कृष्ट शोध-कार्य तथा खेलों एव चरित्र-निर्माण आदि से पुनः प्राप्त करने के लिए अत्याधिक निष्ठा एवं प्रयत्नो की आवश्यकता है जिससे संस्था की प्रगति देश की उन्नति में भागीदार बन सके। इस तरह के संकल्प के साथ हम सभी प्रयत्नशील होकर विश्वविद्यालय का विकास करने में सहयोग दे।

हम लोकसभाध्यक्ष श्री बलराम जी जाखड़ एव अभ्यागत आगन्तुकों के आभारी हैं कि उन्होंने हम लोगो के बोच आकर हमारे प्रयासों का प्रोत्साहित किया। हम उन अन्य महानुभावो का भी

धन्यवाद करते हैं जिन्होंने इस विश्वविद्यालय को प्रगति के मार्ग पर लाने के लिए प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रुप में समय-समय पर सुझाव एवं सहयोग प्रदान किया।

इस प्रतिवेदन को प्रस्तुत करने में हर सम्भव प्रयत्न किया गया। अत्यधिक अस्त-व्यस्त व्यवस्था के कारण यदि इसमे कुछ त्रुटियां रह गई हों, जिसमे प्रगति के लिए किये गए प्रयासों एव उपलब्धियों को पूर्ण रुप से प्रस्तुत किया न जा सका हो तो आगामी वार्षिक विवरण में उसे सुधार कर सही रुप में प्रस्तुत किया जायेगा। इस प्रतिवेदन के लिए सूचना एकत्रित करने एवं रुपाकार के लिए सम्पादक मण्डल ने विशेष प्रयत्न करके दिया है। मैं मण्डल के सदस्यों को इस सहयोग के लिए धन्यवाद देता हूं।

अन्त में भारत सरकार, विश्वविद्याल अनुदान आयोग तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सफल निर्देशन एव सहृदयता के लिए विश्वविद्यालय की ओर से सबका धन्यवाद प्रस्तुत करता हूं।

धर्मपाल हीरा
कुलसचिव
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार।

●●●

गुरुकुल कांगड़ी : संक्षिप्त परिचय

जैसे ही बीसवीं शताब्दी की उषा-लालिमा ने अपने तेजस्वी रुप की छटा बिखेरनी प्रारम्भ की, एक नई आशा, एक नये जीवन, एक नई स्फूर्ति का जन्म हुआ। ४ मार्च सन् १९०२ ई० को स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने कर कमलों से एक नये पौधे का रोपण किया। यही नन्हा सा पौधा आज ८१ वर्ष बाद ऐसा वृक्ष सिद्ध हुआ जिसने अपनी शाखाओं को पुन: धरती में सजा लिया और फिर उन्हीं शाखाओं से नयी टहनियाँ फूट आई। यह पौधा था गुरुकुल कांगड़ी, जिसकी स्थापना गंगा के पूर्वी तट पर हरिद्वार के निकट कांगड़ी ग्राम के समीप हुई थी।

१९ वीं शताब्दी में लार्ड मैकाले ने भारत में वह शिक्षा पद्धति चलाई, जो उनके देश में प्रचलित थी। पर मुख्य अन्तर यह था कि जहां इंग्लैण्ड में शिक्षित युवक अपनी ही भाषा के माध्यम से शिक्षा करके सम्मान जनक नागरिक बनने का स्वप्न देखते थे, वहां भारत में विदेशी भाषा के माध्यम से पढ़े लिखे हुए युवक ब्रिटिश शासन के सचिवालयों में नौकरी की खोज करते थे। एक ओर तो शासन द्वारा प्रतिपादित शिक्षा पद्धति का यह स्वरुप था, दूसरी ओर वाराणसी आदि प्राचीन शिक्षा स्थलों पर पाठशालायें चल रही थीं। विद्यार्थी पुरानी पद्धति से संस्कृत साहित्य तथा व्याकरण का अध्ययन कर रहे थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने एक ऐसी शिक्षण-पद्धति का आविष्कार किया, जिसमें दोनों शिक्षा पद्धतियों का समन्वय हो सके, दोनों के गुण ग्रहण करते हुए दोषों को तिलान्जलि दी जा सके। अत: गुरुकुल की प्रारम्भिक योजना में संस्कृत साहित्य और वेदांग की

शिक्षा के साथ साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा को भी यथो-चित स्थान दिया गया था और शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हिन्दी रखा गया था। निस्सन्देह स्वामी जी के मन मे शिक्षा के क्षेत्र मे आई इस मानसिक क्रान्ति का स्रोत महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के शिक्षा सम्बन्धी विचार थे जिन्हे मूर्तरुप प्रदान करना चाहते थे। इनमे ब्रह्मचर्य और गुरु-शिष्य के सम्बन्धो पर बल था।

कुछ वर्षो बाद महाविद्यालय विभाग प्रारम्भ हुआ। महा-विद्यालय स्तर तक गुरुकुल मे सब विषयो की शिक्षा मातृ-भाषा हिन्दी के माध्यम से दी जाती थी। उस समय आधुनिक पुस्तके हिन्दी मे बिलकुल नही थी। गुरुकुल के उपाध्यायो ने पहिले-पहल इस क्षेत्र मे काम किया। प्रो० महेश चरण सिंह जी की हिन्दी कैमिस्ट्री प्रो० रामचरण दास सक्सेना का गुणात्मक विश्लेषण, प्रो० साठे का विकासवाद, श्रीयुत गोवर्धन की भौतिकी और रसायन, प्रो० सिन्हा का वनस्पति शास्त्र, प्रो० प्राणनाथ का अर्थशास्त्र और प्रो० सुधाकर का मनोविज्ञान, हिन्दी मे अपने-अपने विषय के ग्रन्थ है। प्रो० रामदेव ने मौलिक अनुसधान कर अपना प्रसिद्ध 'भारत वर्ष का इतिहास'' प्रकाशित किया।

१९१२ मे प्रथम दीक्षान्त हुआ जब गुरुकुल से दो ब्रह्मचारी हारश्चन्द्र और इन्द्र(दोनो स्वामी श्रद्धानन्दजी के सुपुत्र)अपनी शिक्षा पूर्ण कर स्नातक हुए।

गुरुकुल निरन्तर लोकप्रिय होता जा रहा था। केवल भार-तीय जनता ही नही अनेक विदेशियो को भी गुरुकुल ने अपनी ओर आकृष्ट किया। प्रमुख विदेशी आगन्तुको मे सी०एफ० एण्ड्रयूज ब्रिटिश ट्रेड यूनियन के नेता श्रीयुत सिडनी बेब और ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री रेम्जे मेंकडानल्ड उल्लेखनीय है।

ब्रिटिश सरकार ने पहले गुरुकुल को राजद्रोही सस्था समझा। सरकार का यह भ्रम तब तक दूर नही हुआ, जब तक सयुक्त प्रात के गर्वनर सर जेम्समेस्टन गुरुकुल को अपनी आखो से नही देख गये।

सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल मे चार बार पधारें। भारत के वायसराय लार्ड चैम्सफोर्ड भी गुरुकुल पधारे। गुरुकुल राजद्रोही न था, परं जब कभी धर्म, जाति व देश के लिए कोई सेवा और त्याग की आवश्यकता हुई, गुरुकुल सबसे आगे रहा। १६०७ के व्यापक दुर्भिक्ष, १६०८ के दक्षिण हैदराबाद के जल-विप्लव, १६११ के गुजरात के दुर्भिक्ष और दक्षिण अफ्रीका मे महात्मा गाधी द्वारा प्रारम्भ सत्याग्रह सग्राम मे गुरुकुल के ब्रह्मचारियो ने मजदूरी करके और अपने भोजन मे कमी करके दान दिया। इसी भावना को देख कर महात्मा गाधी तीन बार गुरुकुल पधारे। वह कुटिया अब भी विद्यमान है, जिसमे महात्मा गाधी ठहरे थे बहुत पीछे गुरुकुल क ब्रह्मचारियो ने हैदराबाद सत्याग्रह और हिन्दी आन्दोलन मे सक्रिय भाग लिया और जेल भी गये।

गुरुकुल ने एक आन्दोलन का रूप धारण कर लिया। परिणाम स्वरुप मुलतान, कुरक्षत्र भटिड सूपा आदि स्थानो पर गुरुकुल खोले गये। बाद मे झज्जर, देहरादून, भटिडा, चित्तौडगढ आदि स्थानो पर भी गुरुकुल खोले गये। अन्य धर्मविलम्बियो ने भी महर्षि दयानन्द के शिक्षा सम्बन्धी आदर्शो को स्वीकार करक गुरुकुल क ढग के शिक्षणालय खोलने शुरु किये।

१५ वर्ष तक अर्थात् १६१७ तक महात्मा मुशीराम जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता रहे। उसी वर्ष उन्होने सन्यास धारण किया और वे 'मुशीराम से श्रद्धानन्द' हो गये। उस वर्ष विद्यालय मे २७६ और महाविद्यालय विभाग मे ६४ विद्यार्थी अध्ययन कर रहे थे।

१६२१ मे गुरुकुल विश्वविद्यालय के रुप मे परिणत हो गया। इसी वर्ष इस विवाद का अन्त हो गया कि गुरुकुल केवल एक धार्मिक विद्यालय है और सामान्य शिक्षा देना गुरुकुल का काम नही है। यह भी निश्चय हुआ कि विश्वविद्यालय के साथ निम्न महाविद्यालय होगे–

(१) वेद महाविद्यालय
(२) साधारण (कला) महाविद्यालय

(३) आयुर्वेद महाविद्यालय
(४) कृषि महाविद्यालय
बाद मे एक व्यवसाय महाविद्यालय भी इसमे जोड़ दिया गया।

१९२४ मे गंगा में भंयकर बाढ आई और गुरुकुल के बहुत से भवन नष्ट हो गए। अत: निश्चित किया गया कि गुरुकुल उसी स्थान पर खोला जाये, जहां पर इस प्रकार के खतरे की आशंका न हो। यह स्थान हरिद्वार से ५ किलोमीटर की दूरी पर ज्वालापुर के समीप गंगा नहर के किनारे स्थित है।

१९२७ का वार्षिकोत्सव रजत जयन्ती (सिल्वर जुबली) के रुप मे मनाया गया। इसमें ५० हजार से अधिक यात्री विविध प्रांतों से सम्मिलित हुए। इनमे महात्मा गांधी, पं० मदन मोहन मालवीय, बाबू राजेन्द्र प्रसाद, सेठ जमुनालाल बजाज, डा० मुन्जे साधुवर, वासवानी आदि उल्लेखनीय हैं। जयन्ती महोत्सव तो बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ, पर ३ मास पूर्व २३ दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द का बलिदान हो गया था, जिसका अभाव सबको खटकता रहा। १९२१ से पं० विश्वम्भरनाथ जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए, पर १९२७ मे रजत जयन्ती महोत्सव सम्पन्न करवाने के बाद गुरुकुल से चले गये।

पं० विश्वम्भरनाथ जी के बाद १९२७ में आचार्य रामदेव जी, जो १९०५ में गुरुकुल आये थे, मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए। इनके प्रयत्न से लाखों रुपया दान मिला। गुरुकुल की नई भूमि पर भवन बनने शुरु हो गये। आचार्य रामदेव जी के पश्चात प्रसिद्ध विद्वान और प्रचारक पं० चमूपति जी तीन वर्ष तक मुख्याधिष्ठाता रहे। १९३५ मे पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुये और पं० देव शर्मा जो विद्यालंकार आचार्य पद पर आसीन हुये। सन् १९४२ मे स्वास्थ्य खराब होने के कारण पं० सत्यव्रत जी ने मुख्याधिष्ठाता पद से त्यागपत्र दे दिया और उनके स्थान पर पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति नियुक्त हुये। कुछ समय बाद

आचार्य अभयदेव जो ने भी त्याग पत्र दे दिया। पं० बुद्धदेव जी गुरुकुल के नये आचार्य बने पर वे भी १६४३ में चले गये। उनके स्थान पर पं० प्रियव्रत जी आचार्य नियुक्त हुए।

मार्च १६५० में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का स्वर्ण जयन्ति समारोह मनाया गया। दीक्षान्त भाषण स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद ने दिया। इस अवसर पर पधारने वालो मे श्री चन्द्रभानु गुप्त, श्री घनश्याम सिंह गुप्त, राजाधिराज श्री उम्मेदसिंह जी शाहपुराधीश, दीवान बद्रीदास जी, पं० ठाकुरदास जी, महाशय कृष्ण जी, स्वामी सत्यानन्द जी, स्वामी आत्मानन्द जी, श्री वासुदेव शरण जी अग्रवाल, पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार, प० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार कुंवर चांदकिरण जी शारदा उल्लेखनीय है। भारत सरकार की ओर से राष्ट्रपति ने एक लाख रुपये का दान दिया। यह प्रथम अवसर था कि गुरुकुल ने सरकार से अनुदान लिया था। १६५३ मे पं०धर्मपाल जी विद्यालंकार महा०मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए जो लगभग २०वर्ष रहकर सेवा मुक्त हुए।

१ अगस्त १६५७ को पं० जवाहरलाल नेहरू गुरुकुल पधारे और उन्होंने विज्ञान महाविद्यालय का उद्घाटन किया। १६६० मे विश्वविद्यालय की हीरक जयन्ती मनायी गई। इस वर्ष पर एक पुस्तिका भी प्रकाशित की गई, जिसका नाम गुरुकुल कांगडी के ६० वर्ष। २० वर्ष से भी अधिक कुलपति एव मुख्याधिष्ठाता रहने के पश्चात् पं० इन्द्र जी को गुरुकुल से विदाई दी गई। उनके पश्चात् पं०सत्यव्रतजी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल के कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता बने। इन्ही के समय १६६२ में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को भारतसरकार के विश्वविद्यालय के समकक्ष मान्यता मिली। विधिवत् ८ विषयों में एम० ए० कक्षाए भी चालू हुई। चार विषयो मे पी-एच० डी० (शोध व्यवस्था) भी है। इन्ही के समय १६६६ में डा० गंगाराम जी प्रथम पूर्णकालिक कुलसचिव, जो अंग्रेजी विभाग में १६५२ से कार्य कर रहे थे, नियुक्त हुए। आचार्य प्रियव्रत जी जो

१९४३ से आचार्य पद पर चले आ रहे थे, १९६६ में गुरुकुल के कुलपति बने। इनके प्रयत्नों से विश्वविद्यालय को पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत धन प्राप्त हुआ और स्टाफ के वेतनमानों में संशोधन हुआ।

गुरुकुल को स्थापित हुए ८१ वर्ष हो गये हैं। गुरुकुल के स्नातकों ने प्राचीन इतिहास, वेद, संस्कृत, हिन्दी, आयुर्वेद, पत्र-कारिता आदि के क्षेत्रों में जो उल्लेखनीय योगदान किया, वह सदा स्मरणीय रहेगा।

विश्वविद्यालय के उपाध्यायों ने भी लेखन के क्षेत्र में एवं शोध कार्य मे आशातीत प्रगति की है। गुरुकुल की पत्रिकाओं के माध्यम से हम शैक्षिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र मे काफी योगदान कर रहे है। जनहित क्षेत्र में भी हमने अपना मातृग्राम कांगड़ी को अंगीकृत किया है, जिसमे गोवर्धन शास्त्री पुस्तकालय की स्थापना की जा चुकी है और उसके लिए कुलपति श्री हूजा जी ने ५००) रुपये का दान भी संवड़ विद्या सभा से दिलवाया है इसी प्रकार से विश्वविद्यालय ने ग्राम कांगड़ो एवं ग्राम जगजीतपुर को अंगीकृत किया है और स्वास्थ्य, सफाई, सांस्कृतिक, प्रौढ़ शिक्षा आदि कार्यों पर जोर दिया जा रहा है।

इस समय निम्न संरचना विश्वविद्यालय के अन्तर्गत कार्य कर रहे हैं :-

विद्यालय :-

प्रथम कक्षा से १० वीं कक्षा तक। अंतिम परीक्षा उत्तीर्ण करने पर विद्याधिकारी का प्रमाण-पत्र दिया जाता है।

वेद महाविद्यालय :-

प्रथम वर्ष से चतुर्थ वर्ष तक। उत्तीर्ण करने पर वेदालंकार की उपाधि प्रदान की जाती है। इसी महाविद्यालय के अन्तर्गत वेद और संस्कृत में एम०ए० और पी-एच०डी० उपाधियां प्राप्त करने की व्यवस्था है।

साधारण (कला) महाविद्यालय –

इसमे प्रथम वर्ष से चतुर्थ वर्ष तक उत्तीर्ण करने पर विद्यालकार की उपाधि दी जाती है। इसी महाविद्यालय के अन्तर्गत दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास, एव सस्कृति, मनोविज्ञान, हिन्दी, गणित और अग्रेजी मे एम० एम० तक के अध्ययन की व्यवस्था है। पी-एच०डी० उपाधि प्राचीन भारतीय इतिहास और हिन्दी विषयो मे दी जाती है।

विज्ञान महाविद्यालय -

इसमे प्रथम वर्ष तथा द्वितीयवर्ष उत्तीर्ण करने पर बी एस-सी की उपाधि प्रदान की जाती है। सम्प्रति भौतिकी रसायन, वनस्पति शास्त्र, जन्तु विज्ञान और गणित मे अध्ययन की व्यवस्था है।

गुरुकुल कागड़ी फार्मेसी -

आयुर्वेद औषधियो के निर्माणार्थ एक बहुत बडी फार्मेसी है। बिक्री ६० लाख से ऊपर है। इससे प्राप्त लाभ ब्रह्मचारियो पर खर्च किया जाता है।

३-इस समय जो गुरुकुल क भवन है, उनका अनुमानत मूल्य १ करोड से कही ऊपर है। इन भवनो मे वेद तथा साधारण महाविद्यालय, विज्ञान महाविद्यालय, पुस्तकालय, सग्रहालय, टेकचन्द नागिया छात्रावास, सीनेट हाल, विद्यालय, विद्यालय आश्रम, गौशाला, राजेन्द्र छात्रावास, उपाध्यायो तथा कर्मचारियो के आवास गृह सम्मिलित हैं। इसक अतिरिक्त जो भूमि है, इसका भी अनुमानत मूल्य १ करोड से कम नही है।

४-१९७५ से श्री बलभद्र कुमार हूजा, आई०ए०एस०(अवकाश प्राप्त) कुलपति एव मुख्याधिष्ठाता का कार्य कर रहे हैं। सम्प्रति डा० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालकार गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के विजिटर हैं और श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा, पजाब, कुलाधिपति।

विश्वविद्यालय के विजिटर महोदर जो सुप्रतिष्ठित विद्वान हैं को राष्ट्रपति पुरस्कार तथा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी से भी लेखन के क्षेत्र में पुस्तकों पर पुरस्कार मिल चुका है। श्री कुलपति जी भी इस संस्था को बनाने में जो विशेष प्रयत्न कर रहे हैं वे आज हमारे सामने है और उससे गुरुकुल को काफी प्रतिष्ठा मिली है और आशा है उनके सफल नेतृत्व में गुरुकुल आगे भी खूब प्रगति करेगा। मान्य कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी का भी इस संस्था के हित में मन वचन कर्म से सदा हम सब पर वरदहस्त रहा है। आशा ही नहीं हमे पूर्ण विश्वास है कि आगे भी प्रभु की कृपा एवं सबका सहयोग बना रहा तो गुरुकुल अबाधगति से आगे बढता रहेगा और अपनी उपलब्धियों से चहुं ओर के वातावरण को सुगन्धित करता रहेगा।

रामप्रसाद वेदालंकार
आचार्य एवं उप-कुलपति

●●●

दीक्षान्त भाषण

माननीय श्री बलराम जाखड़

(अध्यक्ष, लोकसभा)

दिनांक ११ अप्रैल १९८२

ओ३म् सह नाववतु सह नो भुनक्तु।
सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वी नावधीतमस्तु।
मा विद्विषावहै॥
ओ३म् शान्तिः! शान्तिः! शान्तिः!

परम माननीय कुलाधिपति महोदय!
माननीय कुलपति जी!
आदरणीय अध्यापकगण!
आदरणीय आर्य महिलाओं! आर्य पुरुषों!
प्रिय नवस्नातकगण!

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के १९८२ के दीक्षान्त समारोह पर आमन्त्रित कर आपने मुझे सम्मानित किया, आभार प्रकट करता हूं। साथ ही भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं, स्वामी श्रद्धानन्द जी को, जिन्होंने युगद्रष्टा महर्षि दयानन्द के वैदिक पद्धति सम्मत सिद्धान्तों को मूर्तरूप देने के लिए, पहले गुजरांवाला में, बाद में गंगापार की रेती के कांगड़ी ग्राम के निकटस्थ अरण्य में इस संस्था का बीजारोपण किया था।

महर्षि दयानन्द भारत को अविद्या, अकर्मण्यता, अज्ञान और परतन्त्रताजन्य तिमिर से निकाल कर सत्य, पवित्रता और स्वतन्त्रता के पथ पर आरूढ़ करने का आजीवन प्रयत्न करते रहे। महर्षि शिक्षा को केवल व्यक्तिगत विकास नहीं मानते थे अपितु उनकी दृष्टि मे शिक्षा का कार्य था समाज में ऐसे नर-नारियों का निर्माण करना जो अपने कर्त्तव्यों को, उत्तरदायित्व को भली-भांति निभा सकें। सबकी उन्नति मे अपनी उन्नति समझें, संसार का उपकार करें। बालकों को शिक्षा में सबसे महत्वपूर्ण उपाय- माता. पिता और आचार्य द्वारा सही आदर्श प्रस्तुत करना है। बालकों का आचरण माता, पिता और आचार्य की कथनी की अपेक्षा उनकी 'करनी' का अनुकरण होता है।

मातृमान् पितृ मान् आचार्यमान् पुरुषो वेद।

स्वामी श्रद्धानन्द के तप, त्याग और आदर्श जीवन ने गुरुकुल कांगड़ी को मूर्धन्य राष्ट्रीय शिक्षण संस्था बना दिया। उन्होंने समर्पित जीवन जीया। शास्त्राभ्यास के साथ बालकों के चरित्र निर्माण, तप, अनुशासन पर बल दिया।

एतद् देश प्रसूतस्य सकाशाद् अग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः॥

ईश्वरीयज्ञान वेद के चारों अंगों, विज्ञान, कर्म, उपासना को प्राथमिकता दी। उनके हृदय में अपार प्रेम, धैर्य और उत्साह था, आत्मीयता थी। वे बालकों के पिता थे और प्रेरणा के अजस्र स्रोत। गुरुकुल प्रेम सत्य और सौन्दर्य का काव्य था।

पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति।

ब्रह्मचारियों पर उन्हें अगाध निष्ठा थी। उन्होंने मधुरता और प्राकृतिक ऐश्वर्य के परिवेश में अध्ययन, अध्यापन, चिन्तन और सर्जना का वातावरण बना दिया। आत्मिक ज्ञान के साथ आधुनिक विज्ञान के समन्वय का श्रीगणेश किया। उनके आदर्श मे अनुप्राणित

वर्चस्वी स्नातको और आचार्यों के धर्म, सस्कृति समाज, वेदज्ञान एव सस्कृत वाग्मय प्रचार प्रसार, हिन्दी मे उच्चस्तरीय शिक्षण के लिए पाठ्य-पुस्तक निर्माण, प्राचीन इतिहास सम्बन्धी शोधकार्य, आयुर्वेद, पत्रकारिता आदि मे विशिष्ट योगदान दिया। देश भक्ति से आप्लावित और राष्ट्रीय भावना से उद्दीप्त गुरुकुल ने देशव्यापी सेवाकार्य और स्वाधीनता सग्राम मे स्तुत्य भाग लिया।

खेद है, कालान्तर मे यह छवि धूमिल हो गई। अनियोजित विस्तारजन्य आर्थिक कठिनाई व्यवस्था मे दरार अभिभावको की उदासीनता स्नातको का अवमूल्यन वैमनस्य अनुशासनहीनता नैतिक सकट, कारण कुछ भी रहे हो, स्थिति दयनीय थी। क्रमश यह कुहासा छट गया—

अज्ञान के भ्रान्ति के अधेरे से निकलकर, ज्ञान की जगमगाती ज्योति की ओर बढते हुए हम उन्नति करने लगे।

उद्वय तमसस्परि
ज्योतिष् पश्यन्त उत्तरम्।
देव देवत्रा सूर्यम्
अगन्म ज्योतिर उत्तमम्॥

इसी परिप्रेक्ष्य मे समावतन सस्कार के लिए उपस्थित ब्रह्मचारियो का अभिनन्दन करता हू। उपाधि प्राप्ति पर बधाई देता हू।

प्रिय स्नातको !

स्वाभाविक है कि आपके हृदय मे हर्लोल्लास भरा हो भविष्य के सुहाने सपने सजोय हो। कैसा है आपका स्वप्नलोक ?

यत्र ज्योतिर अजस्त
यस्मिन् लोके स्वर हितम्।
तस्मिन् मा धेहि पवमाना
ऽमृते लोके अक्षित (अनश्वर)
इन्द्रायेन्दो परिस्रव॥

यत्रानन्दाश्च मोदाश्च
मुद: प्रमुद: आस्ते।
कामस्य यत्राप्ता: कामास्
तत्र माम् अमृत कृधी--
इन्द्रायेन्दो परिस्रव ॥

क्षमा कीजिये, कही स्वप्न विभीषिका तो नही ?

अविद्यायाम् अन्तरे वर्तमाना.
स्वय धीरा: पण्डित मन्यमाना: ।
दन्द्रम्यमाणा: परियन्ति मूढा
अन्धनेव नीयमाना यथान्धा: ।

आप विद्यानिष्णात हैं, विवेक शील हैं जानते है कि अंधेरे और ज्योति का, देव और असुर का संग्राम निरन्तर हमारे हृदय मे चलता रहता है। हृदय ही में क्यों? घर, समाज, विश्व भर में चल रहा है। गुरु और शिष्य, पति और पत्नी, पूर्व और पश्चिम के बीच अनवरत चल रहा है। इसी लिये तो दीक्षान्त-भाषण के आरम्भ में आन्तरिक और बाह्य परिवेश में आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधि-दैविक सुख शान्ति के लिये द्वेष रहित परस्पर प्रेम और सहयोग के लिये, एक दूसरे की सुरक्षा, अभय, उत्पादन, बांट कर खाना, पुरुषार्थ, वीरता, नई चेतना और तेजस्विता के उद्बोधन की शुभकामना की गई। उद्बोधन अनुसार आचरण अंधेरे से ज्योति की ओर ले जाने वाला है--

तमसो मा ज्योतिर्गमय।

परिवेश को रेखांकित इस लिये कर रहा हूं कि आज विज्ञान का, गतिशीलता का युग है। इस युग मे आपका सामजस्य किस स्तर पर और किस प्रकार होगा ? उपभोक्ता के रूप में या स्रष्टा के रूप में? आप में सर्जना की अनंत सम्भावनायें प्रसुप्त पड़ी हैं, उन्हें जगाना है--

उत्तिष्ठत, जाग्रत, प्राप्य वरान् निबोधत।

आइये, परिस्थिति का थोड़ा सा सिंहावलोकन करें। विज्ञान इतनी शीघ्र प्रगति कर रहा है कि पांच-सात साल में ही इसका बड़ा अंश पुराना पड़ जाता है। संख्या की दृष्टि से भारतीय वैज्ञानिकों का संसार में तीसरा स्थान है। उनकी योग्यता भी किसी से कम नहीं। भारतीय वैज्ञानिकों की उपलब्धियां हमारा गौरव हैं। आर्यभट्ट, रोहिणी, भास्कर, एप्पल के बाद अभी गत आठ अप्रैल को संचारी उपग्रह इन्सेट कक्षा में स्थापित किया गया। प्रत्यक्ष है कि यह सब पाश्चात्य विज्ञान है। मानव कल्याणके लिये हमने इसे अपनाया है। इसका भारतीयकरण अभी शेष है।

अन्तरिक्ष अनुसन्धान, कृषि द्वारा हरित् क्रांन्ति,कपड़ा, इस्पात बिजली, पेट्रोलियम खनन आदि उद्योग, विविध व्यवसाय हमारी आर्थिक समृद्धि के नये आयाम पश्चिम की देन हैं। हमारे यहां मन्त्र, तन्त्र तो जोर शोर से चलते रहे, पर हमारी वैज्ञानिक प्राचीन सभ्यता संस्कृति के वाहक यन्त्र सम्भवतः तब ठप पड़ गये होगे जब यह लिखा गया--

यन्त्राणां घटना नोक्ता न त्वज्ञानवशाद् गुप्त्यर्थम्।

इस संदर्भ में "गुप्त्यर्थम्" का पर्याय है स्वार्थ। कहा जाता है--

बुभुक्षः कि न करोति पापम्।

मुझे कहने की अनुमति दीजिए---

स्वार्थी किं न करोति पापम्।

इन स्वार्थी लोगों ने देश को ह्रास, पतन और परतन्त्रता के गर्त में धकेल दिया।

स्वतन्त्रता के बाद हम देश के औद्योगिक नवनिर्माण मे जुट गए। ऐतिहासिक कारणों से विज्ञान, टेक्नोलोजी की थाती हमें केवल अंग्रेजी से मिली। हिन्दी भले हो हमारे हृदय की भाषा हो पर अंग्रेजी हमारे मस्तिष्क की जीविका की भाषा है। जब तक हृदय मस्तिष्क, जीविकोपार्जन की भाषा एक न हो सांस्कृतिक विकास

दीक्षान्त भाषण देते हुए श्री बलराम जाखड़

अवरुद्ध रहता है। बालक को संस्कृति केवल अपनी मातृ भाषा से मिलती है। हमें हिन्दी को संस्कृति और आधुनिक विज्ञान की वाहिका बनाना है। विज्ञान का भारतीयकरण हिन्दी में विज्ञान की सर्जना से अनायास होगा-अनुवाद से नहीं। यह अपना दायित्व है।

यस्य ज्ञानं केवलं जीविकायै, तं ज्ञानपण्य वणिज वदन्ति।

यह स्पष्ट है कि विज्ञान, टेक्नोलोजी के लिये प्रयोगशाला, उपकरण, सामग्री, पुस्तकालय, निर्देशन का प्रचुर प्रावधान किया जाए। यह भी सत्य है कि विश्व के महान् आविष्कारको के पास न तो प्रयोगशालायें थी, न हो पर्याप्त सुविधायें। महर्षि दयानन्द ने एक विश्वविद्यालय के कुल निकायों से अधिक ही कार्य सम्पन्न किया होगा। उनके रचे ग्रन्थो की संख्या चालीस के लगभग है। पत्र व्यवहार, पत्र, पत्रिका प्रकाशन अलग। भौतिकी नोबेल पुरस्कार के एक मात्र भारतीय विजेता डाक्टर चन्द्रशेखर वेंकटरमण कहते थे "रमण-प्रभाव" आविष्कार के लिए मैने मात्र दो सौ रुपये खर्च किये जबकि अन्य विजेता लाखों डालर खर्च करते थे। प्रतिभा से चमत्कार सम्भव है। असम्भव तो एक दिन में भी सम्पन्न किया जा सकता है। चमत्कार को थोडा समय लगता है। सफलता के तीन ही तो रहस्य है--पहला-परिश्रम,दूसरा-परिश्रम,तीसरा भी परिश्रम।

भारत ही विश्व का एकमात्र देश है, जहा जीवन की शत-वर्षीय वैज्ञानिक योजना बनी–

जीवेम शरदः शतम्।

और अब तक चली आ रही है। भारतीय उदात्त जीवन की व्यापक दृष्टि और दिव्यता का रहस्य है– ब्रह्मचर्य आश्रम, गृहस्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम और सन्यास आश्रम।

हम विज्ञान और टेकनोलोजी में परिश्रम के ऋणी हैं। हमारे कुल लोग दुर्भाग्यवश अपनी संस्कृति और भाषा को भी हीन, हेय और द्वितीय श्रेणी की समझने लगे हैं।

विसांस्कृतिकरण का यह विष सुरसा की तरह फैलता ही जा रहा है। फिल्मों, रेडियो और दूरदर्शन ने इसे उग्र रुप दे दिया है। आयातीत आरोपित संस्कारों की चादर ओढ़े, जीन्स पहने तथाकथित सभ्य लोग अपने धर्म, भाषा और संस्कृति की अवहेलना करते हैं। उनका काक-कीर-कपिवत् आचरण ग्लानिप्रद है। पश्चिम मे ऐसे लोग रीढ़हीन और हास्यास्पद माने जाते हैं।

उद्धरेद् आत्मनात्मान
नात्मानम् अवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुर
आत्मैव रिपुरात्मनः

उद्देश्य प्राप्ति के लिए योजनाबद्ध कार्य और उसका मूल्यांकन स्वयं एक अनुशासन है। दूसरों के साथ मधुर सम्बन्ध स्थापित करना और मिलकर काम करना भी अनुशासन है। सबके हित के लिए, समाज के लिए काम करना सबसे बड़ा अनुशासन है–

सर्वभूत हिते रताः।

ज्योतिर् लोक को धरातल पर उतारना, अस्मिता की पहचान और विसांस्कृतिकरण से जूझना, पुरुषार्थ की साधना अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की कार्य योजना अन्वित करने का प्रयास आपको वर्तमान में जीने की क्षमता प्रदान करेगा। अतीत के गौरव मे जीवन जीया नहीं जाता, भविष्य के लिए जीना मानसिक रोगों को न्यौता देना है। अतीत के अनुभवों से हम सीखते हैं, उज्जवल भविष्य के लिए योजना तैयार करते हैं, पर जीना तो वर्तमान मे ही है। कोई चीज इसलिए अच्छी नही, की पुरानी है, और नया होना कोई बुराई नही है। मूल्यांकन करके आप चाहे चुन सकते हैं। केवल मूर्ख लोग दूसरों के विश्वास पर चलते है। हमे अपने लिए सोचना है और दायित्व सम्भालना है।

पुराणमित्येव न साधु सर्वं
न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम् ।
सन्तः परीक्ष्यान्तरद् भजन्ते
मूढः पर प्रत्यय नेय बुद्धिः ॥

नया हो या पुराना, पूर्व हो या पश्चिम हमारी परम्परा है–

ज्ञानं विज्ञान सहितम्

प्रिय स्नातकों !

अर्जित ज्ञान और सस्कारों के आधार पर आपको अपना दायित्व निभाना है। ध्येय निश्चित करना है। शरीर, मन और आत्मा का सर्वांगीण विकास करना है। तैत्तिरीय उपनिषद् के अमर अनुशासन वाक्यो पर–

सत्यं वद । धर्मं चर ।.........

विशेषतया,

स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्य,

पर शाश्वत् आचरण करना है।

इसपर आचरण से आपकी अन्तर्निहत शक्तियों का दिव्यता का गर्जना का, पूर्ण विकास होगा। जीवन को नई दिशा, आशा और उत्साह मिलेंगे। आपके व्यक्तित्व और कृतित्व को नये आयाम प्राप्त होंगे। प्रश्न आपके जीवन से, जोवन धारा से जुडने का है। लहर की शक्ति समुद्र में है, समुद्र से बाहर कुछ भी नहीं। जीवन से जुड़ना, अपने परिवेश की किसी भी ज्वलन्त समस्या का वैज्ञानिक अध्ययन, विश्लेषण और समाधान करना है। समस्या तो चुनौती है।

ज्वलिति चलितेन्धनोऽग्निर
विप्रकृतः पन्नगः फणं कुरुते ।
प्रायः स्व महिमानं क्षाभात्
प्रतिपद्यते हि जनः ॥

मन और हृदय में जब मन्थन होगा, चक्रवात उठेगा, क्षोभ होगा आप उसका नियन्त्रण करेंगे, उसी प्रक्रिया में आपको अपनी महिमा से साक्षात् होगा, दिव्यता की ज्योति दिखाई देगी। अपनी पहचान होगी। कोई भी आपके लिये यह नहीं कर सकता, आपको स्वयं ही अपना दीपक बनना होगा, उद्धार करना हो। अपने आप को ऊंचा उठाओ, नीचे नहीं गिराओ, आप अपने ही मित्र है, आपको कोई नीचे नही गिराता, स्वयं ही गिरते है आपका कोई शत्रु नही, स्वयं ही अपने शत्रु हैं—

इसका पोषण, उन्नयन और संवर्धन करे। आध्यात्मिक ज्ञान और भौतिक ज्ञान का समन्वय करें। यही उपचार हमे पश्चिम को देना है। आदान-प्रदान तो ठीक है, पर भिखमंगों की तरह सदा पर-मुखापेक्षी उपेक्षी रहना, हाथ फैलाये रखना, शोभा नही देता। लेने और देने वाले किसी के लिये भी श्रेयकर नही। पश्चिम मे विज्ञान की उपलब्धियों को अपने तक सीमित रखने की परिणति क्या हुई ? वैज्ञानिक प्रगति ने परिश्रम को क्या दिया ?

साम्राज्य लिप्सा
शोषण वृत्ति,
भोगविलास की विपुल सामग्री,
दो महायुद्ध,
विश्व विध्वंश के साधन,

अनन्त ऊब,

अपरिमेय चिन्ता
दूसरों के दुःख के प्रति असंवेदनशीलता और
परिणाम स्वरूप युवाक्रोश,
मानव मूल्यों और मान्यताओं का ह्रास।

भौतिक विज्ञान की प्रगति वरदान न होकर अभिशाप क्यो बन गई ? जो केवल अपने लिये पकाते हैं, अकेला ही खाते हैं वे पापी है और अधोगति को प्राप्त होते है।

भुंजते ते त्वघं पापा
ये पचन्त्यात्म कारणात्
केवलाधो भवति केवलादी।

विश्व शान्ति के लिये, भौतिकवादी परिश्रम की प्रलयंकारी हिंसा को नियन्त्रित करने के लिए भारत की संजीवनी आध्यात्मिक शक्ति के साथ सामंजस्य ही एकमात्र उपाय है।

प्रिय स्नातकों !

आप शका मत कीजिये आसुरी संपत् पर विजय पाने के लिए आपके हृदय में देवी संपत् की शाश्वत् धरोहर है। अपने आप और देश पर, अपने धर्म और संस्कृति पर श्रद्धा रखें। श्रद्धा अध-विश्वास नही। श्रद्धा से ज्ञान, विज्ञान प्रेयस, श्रेयस् और निःश्रेयस् उपलब्ध होते हैं और संशय से महानाश।

श्रद्धावान् लभते ज्ञानम्
संशयात्मा विनश्यति ।

जैसी आपकी श्रद्धा है, वैसा ही आपका स्वरुप। जैसी आपकी भावना है आप वैसा ही बन जाते हैं।

यथैव भावयत्यात्मा सततं भविष्यति स्वयम्।

धर्म पर विश्वास के साथ, बुद्धि विशाल हो सके ताकि आप नये तथ्य ग्रहण कर सकें, ज्ञान-विज्ञान के नये क्षितिज खोजे, गहराइयां मापें। हृदय विशाल हो जो नई चेतना और आत्मीयता का माध्यम बन सके–

धर्मे ते धीयतां बुद्धिर् मनस् तु महदस्तु।

आप अपने देश के कर्तव्यनिष्ठ नागरिक बनें। केवल अपनी उन्नति से ही संतुष्ट न रहें, वरन् सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझें।

यह दीक्षान्त नहीं है, नया आरम्भ है-

आपके अभियान की सफलता की हार्दिक शुभकामनायें!

सभी आर्य भाई-बहिनों को बैशाखी के पर्व पर सुख-समृद्धि की मङ्गलकामनायें करते हुए आह्वान करता हूं-

साथ चलो, सबके हित बोलो, बनो संगठित
साथ मनन कर, करो समान गुणों को अर्जित।
एक ज्ञान और एक प्राण सब रहो सम्मिलित
तुम देवों के तुल्य बनो, सहयोग समन्वित।
व्रत से दीक्षा, दीक्षा से दक्षिणा ग्रहण कर
उससे श्रद्धा, श्रद्धा से कत प्राप्त सत्त वर।
ऋतंभरा प्रज्ञासे भर निज ज्योतित अन्तर
तुम देवों के योग्य बनो, बन मर्त्य से अमर।

ओ३म् संगच्छध्वं सं वदध्यम्
सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे
संजानाना उपसते॥
समानो मन्त्रः समितिः समानी
समानं मनः सहचित्तम् एषाम्
समानं मन्त्रम् अभि जन्त्रये वः
समानेन वो हविषा जुहोमि॥
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः
समानमस्तु यो मनः यथा वः सुहासति॥
ओ३म्, शान्तिः! शान्तिः! शान्तिः!

●●●

दीक्षान्त समारोह में यज्ञ करते हुए–
सर्वश्री बलराम जाखड़, बीरेन्द्र जी, हूजा जी, प्रो० राम प्रसाद

ओ३म्

दीक्षान्त–समारोह

कुलपति

श्री बलभद्र कुमार हूजा

११ अप्रैल, सन् १९८२

अर्चनीय संन्यासीगण, आदरणीय कुलाधिपति महोदय, माननीय श्री जाखड जी, देवियों, सज्जनों एवं ब्रह्मचारियो !

आज का दिन हमारे लिये बड़ा शुभ दिन है। माननीय "श्री बलराम जाखड़" अध्यक्ष, लोकसभा, अपने व्यस्त कार्यक्रम में से समय निकालकर नव स्नातकों को आशीर्वाद देने हेतु यहाँ पधारे हैं।

"श्रीबलराम" का जन्म पंजाबके जिला फिरोजपुर के पंजकौसी ग्राम में २३ अगस्त १९२३ को एक सम्भ्रान्त कृषक परिवार में हुआ। उनके पिता "श्रीराजाराम" शिक्षा प्रेमी थे। अतः उन्होंने श्रीबलराम को आधुनिक शिक्षा प्रदान की। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान के गंगानगर जिलेके सुविख्यात सारिया विद्यालय में हुई। तत्पश्चात आपने फोरमेन क्रिश्चयन कालेज लाहौर में संस्कृत अनार्स लेकर स्नातक उपाधि प्राप्त की।

सामाजिक कार्यों में आपकी आरम्भ से ही रुचि रही है। आप स्वभाव से ब्रती साधक हैं। आपने युवा अवस्था में ही प्रण लिया था कि अपने गाँव का सुधार करेंगे। जिस गाँव में कभी कुछ

नहीं था, आज वहां शिक्षण संस्थायें, चिकित्सालय, पक्की सड़कें, तथा बिजली पानी आदि की अनेक सुविधायें उपलब्ध हैं। यह सब आपके पुरुषार्थ का ही फल है। आप एक ओर कला, साहित्य, संस्कृत तथा विज्ञान के पण्डित हैं तो दूसरी ओर फल उत्पादन के क्षेत्र में और विशेषकर अंगूर उत्पादन के क्षेत्र में ख्यातिलब्ध विशेषज्ञ है और यही कारण है कि १६७५ में आपको अखिल भारतीय उद्यान पंडित के सम्मान से अलंकृत किया गया है। सामाजिक कार्यों के लिये समर्पित आपका राजनैतिक जीवन इन्द्रधनुषी रंगों की तरह हैं जिसमे दुस्तर कार्य साधन को ऊष्मा तथा करुणा तप और त्याग के जल बिन्दु भी रसधारा का रूप ग्रहण कर लेते है। आप १६७२ में पहलीबार पंजाब विधान सभा के लिए विधायक निर्वाचित हुए। १६७३ मे आप सहकारिता सिंचाई एवं बिजलीमन्त्रालय के उपमन्त्री बनाये गये। १६७७ से १६८० तक आप पंजाब विधान सभा के सदस्य रहे। १६८० मे आप पहली बार संसद के लिये उल्लेखनीय बहुमत से चुने गये और लोकसभा के अध्यक्ष संसदीय प्रणाली की जानकारी तथा जनतंत्र के प्रति अटूट आस्था के कारण सदन की सुचारु कार्यवाही के संचालन मे आपकी अपूर्व दक्षता, सूझ-बूझ तथा गरिमा पूर्ण निर्णायक भूमिका लोक सभाध्यक्षों की परम्परा मे उच्च मानदण्ड बन गई है। निसंदेह ऐसे महान् व्यक्ति को अपने बीच पाकर हम समस्त कुलवासी अत्यन्त हर्ष और उल्लास का अनुभव कर रहे हैं।

महानुभावो !

आज हमारे बीच मे एक अन्य विभूति भी विद्यमान है। मेरा संकेत आर्य-कुलशिरोमणि परम मनीषी "डा०सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार की ओर है। यह सच्चे अर्थों मे गुरुकुल के पितामह है। गत वर्ष महामहिम राष्ट्रपति महोदय ने उन्हें प्राचीन भाषाओं के राष्ट्रीय विद्वान् के रूप मे सम्मानित किया अभी-अभी आप मद्रास से राजा जी पुरस्कार से समादृत होकर लौटे है। इनकी अनेक शैक्षिक और सामाजिक उपलब्धियों से कुलमाता गौरवान्वित हुई है आप सबकी ओर से मैं पूज्य पण्डित जी का हार्दिक अभिनन्दन करता हूं।

इस अवसर पर मैं आर्य जगत् की एक अन्य विभूति का भी अभिनन्दन करना चाहूगा, जिन्होने इस वर्ष 'गोवधन शास्त्री पुरस्कार' प्राप्न किया है। आपको स्मरण होगा कि गत वर्ष गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय मे सघड विद्या सभा ट्रस्ट जयपुर के अनुदान से इस पुरस्कार की स्थापना की थी। यह पुरस्कार प्रतिवर्ष उस विद्वान् अथवा प्रचारक व्यक्ति या दल को दिया जाता है जो जन साधरण मे वैदिक मूल्यो के प्रचार प्रसार मे अमूल्य सहयोग दे। इस वर्ष सघड विद्या सभा ने इस पुरस्कार से डा० भवानीलाल भारतीय को अलकृत करने का निश्चय किया है। डाक्टर भारतीय सम्प्रति पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ मे दयानन्दपीठ के अध्यक्ष है और वर्षो से वेद तथा आर्य सिद्धान्तो के पोषक साहित्य की साधना मे लगे हुए है। भगवान् उन्हे चिरायु करे और यश दे।

मित्रो !

इस अवसर पर मै भारत के ओजस्वी 'अटारकटिक विजयी" दल को भी उनकी अनुपम सफलता पर गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की ओर से हार्दिक बधाई सन्देश भेजना चाहूगा। इस दल ने बहुत जाखिम उठाकर गत ९ जनवरी को 'दक्षिणी ध्रुव" पर स्थित अटारकटिक महाद्वीप के बर्फील क्षेत्र मे भारत का तिरगा फहराकर भारतीय समुद्री इतिहास म एक स्वण-पृष्ठ जोडा है। इस क्षेत्र मे अब तक सम्पन्न राष्ट्रो का वर्चस्व था। भारत ने यहाँ प्रवेश कर इस क्षेत्र की असीम खनिज और समुद्री सम्पदा पर अपना हक जमाया है। सही अर्थो मे तो ऐसे वीर धीर पुरुष ही असली ब्रह्मचारी है। मै उस दिन की प्रतीक्षा मे हू जब गुरुकुल के ब्रह्मचारियो को ऐसे दलो मे भाग लेने के लिए आमन्त्रित किया जायेगा। आइये, हम इस दल का सकल्प लकर अभिनन्दन करे।

मान्य अतिथि !

आप गुरुकुल कागडी के इतिहास से सुपरिचित है। जैसा कि स्वामी श्रद्धानन्द ने अपनी जीवनी मे लिखा

है कि उनका यौवनकाल बहुत तूफानी रहा। एक पुलिसअफसर के पुत्र होने के नाते वे कुसङ्ग और दुर्व्यसनों के शिकार हुए। उन्होंने क्या-२ उच्छृंखलतायें नहीं की ? किन्तु भगवत् कृपा से जब वे वेदमार्तण्ड स्वामी दयानन्द के सम्पर्क में आये और उन्होंने स्वामी जी द्वारा रचित "सत्यार्थ प्रकाश" का अध्ययन किया तो उनके दिव्य नेत्र खुल गये। उनके जीवन ने १८० अंश पलटा खाया। वे भोगी से योगी बन गये। उन्होने अनुभव किया, जैसे उनसे पहले स्वामी दयानन्द ने अनुभव किया था और स्वामी दयानन्द से पहले स्वामी विरजानन्द ने अनुभव किया था कि देश की कठिनाइयों और मुसिबतो का मूल कारण अनार्ष ग्रन्थों का प्रचार एवं विदेशी शासन का अस्तित्व है। यह भी अनुभव किया कि यदि देश को संकटों से मुक्त कराना है तो उसके लिए वज्र समान दृढ, नैतिक मूल्यों से ओत-प्रोत, तपस्वी एव समर्पित युवक समुदाय का सृजन करना होगा। ऐसा युवक समुदाय जो न केवल प्राचीन संस्कृति के मूल्यों पर आचरण करता हो अपितु आधुनिक विज्ञान की शक्ति से सुसज्जित हो। प्रमाद, आलस्य, अज्ञान, असत्य से ऊपर हो, भ्रष्टाचार पाखण्ड से ऊपर हो। ब्रह्म-चारी हो अर्थात ब्रह्माण्ड में विचरण करे और ब्रह्माण्ड के रहस्यो को लूट-लूट कर ग्रहण करे और उनका सर्वसाधारण के हित मे वितरण करें।

समादरणीय विद्वज्जन !

इसी प्रकार के ब्रह्मचारी पैदा करने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल की स्थापना की थी।

इसमे कोई सन्देह नही कि गत ८० वर्षो से गुरुकुल ने देश को बड़े-बड़े सत्याग्रही दिये, व्यापारी दिये, लेकिन हमको मानना पडेगा कि देश की प्रगति में गुरुकुल का योगदान आटे मे नमक के बराबर रहा है। देश की दशा कहाँ तक सुधरी है यह सर्व विदित है।

जहां एक ओर देश में हरित क्रांति हुई है, 'आर्य भट्ट' और 'भास्कर' को उड़ाने हुई हैं, 'गोविन्द सागर', 'नागार्जुन सागर' जैसे

बड़े-२ बांधों का निर्माण हुआ है, सीमेन्ट और खाद के कारखाने खुले हैं, वहां दूसरी ओर गरीबी और बेरोजगारी के दानव अब भी मुंह बाये खड़े हैं, हरिजनों पर अत्याचार हो रहे हैं, दहेज की कुप्रथा के कारण हजारों नारियो का जीवन नरकमय बन रहा है, सैकड़ों ग्रामों में पीने के लिए शुद्ध जल नहीं मिलता, ऊंच-नीच की, जांत-पांत की, प्रान्तीयता, प्रदेशवाद की समस्याये घुन की तरह देश की एकता और शक्ति का ह्रास कर रही हैं। भ्रष्टाचार का बोलबाला है। विश्वविद्यालयों में, सचिवालयों में तोड-फोड़ है। यद्यपि अंग्रेज यहाँ से चले गये हैं, किन्तु अंग्रेजियत का वर्चस्व बढ़ रहा है। दयानन्द के नाम से चलाई जा रही शिशु पाठशालाओं मे गलत या सही गिट-पिट हो रही है।

सच पूछिये तो आज "मैकाले" अपनी कब्र मे पड़ा हुआ हंस रहा होगा और "स्वामी दयानन्द" और "श्रद्धानन्द" की आत्मा हमारी दास मनोवृत्ति और आत्मबल हीनता पर हमे फटकार रही होगी।

युवक सदा आदर्शवादी होता है। वह संसार मे फलना-फूलना चाहता है। मार्ग दर्शन मांगता है। लेकिन जब उसे माता, पिता, आचार्यगण से सही मार्ग दर्शन नही मिलता तो वह छटपटाता है। आज युवकसमुदाय में जो परेशानी है, छटपटाहट है, यही कारण है।

"ऋषि दयानन्द" ने कहा था "मातृमान् पितृवान् आचार्यवान् पुरुषो वेद।" उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश तथा अपने अन्य ग्रन्थो द्वारा हमारे सन्मुख मानव के निर्माण का नुस्खा प्रस्तुत किया था। सत्यार्थ प्रकाश के प्रारम्भ में ही उन्होंने नवभारत को कैसी शिक्षा की आवश्यकता है, इस विषय पर अपने विचार प्रतिपादित किये। "स्वामी श्रद्धानन्द" ने उन्हीं आदर्शों को लेकर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना की किन्तु कालान्तर में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय भी अपनी परम्पराओं को त्याग कर साधारण विश्व-विद्यालयों का अनुकरण करने लग गया।

आज देश के शिक्षा क्षेत्रो मे १०+२+३ की बात चलती है। दिसम्बर १९७७ मे "स्वर्गीय श्रीमन्नारायण" की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन हुआ था। गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति के नाते मुझे भी उसमे भाग लेने का अवसर प्राप्त हुआ। उसमे १०+२ की बजाय ५+३+४ का फार्मूला उभर कर सामने आया था। अर्थात् पहले ५ वर्ष में बालक मातृभाषा का ज्ञान प्राप्त करे। इस अवस्था मे बालकों को वेद मन्त्र, सुभाषित आदि कण्ठस्थ कराये जाये जिससे कि उनके मन एव चित्त बल प्राप्त करे और जीवन यात्रा के सघर्ष मे समय-समय पर उन्हें वेद वाणी और देववाणी से मार्ग दर्शन प्राप्त हो।

इसके बाद आगामी तीन वर्षो मे बालकों को संस्कृत, अग्रेजी या अन्य कोई भाषा सिखलाई जाये जिससे उनके अन्दर एक देशीय एव अन्तर्राष्ट्रीय भावना का उद्भव हो। इस काल मे उन्हे वैज्ञानिक शिक्षा भी प्रदान की जाय जिससे वे वैज्ञानिक उपलब्धियों से सुपरिचित हो सके और उनके मस्तिष्क का विकास हो।

इसके बाद अगले ४ वर्षो में अर्थात् ८ वी श्रेणी से १२ वी श्रेणी तक प्रत्येक विद्यार्थी को एक न एक धन्धा, हस्तकला जिसे स्वामी दयानन्द ने "सत्यार्थ प्रकाश" के तीसरे समुदाय में हस्त क्रिया की संज्ञा दी है, सिखलाए जायं ताकि १६ वी कक्षा करते करते वह किसी न किसी धन्धे मे समुचित दक्षता प्राप्त कर ले और चाहे तो १८ वर्ष की वय को प्राप्त करते ही बैंक से उधार लेकर अपना निजी धन्धा स्थापित कर सके। आखिर कितने नवयुवक सरकारी नौकरियो मे खप सकते है? अधिकांश को तो निजी धन्धे चलाने ही पड़ेगे।

अब रही विश्वविद्यालय के स्तर की शिक्षा की बात। अब प्रायः सभी कुलपति, शिक्षा विशारद और देश हितैषी इस बात को स्वीकार करते है कि वर्तमान विश्वविद्यालय शिक्षा प्रणाली खोखली हो चुकी है।

हमारे विश्वविद्यालय रोजगार की गाड़ी की प्रतीक्षा करते हुये बेरोजगारो के वेटिंग हाल (प्रतीक्षालय) बने हुये है न कि नव मानव के निर्माण के यज्ञ कुण्ड।

जहाँ विद्याध्ययन, अनुसंधान होना चाहिये वहा लाठी, गोलिया चल रही है। सौम्य शान्तिमय वातावरण की जगह भय और आतक का राज्य है। सरस्वती की न होकर रुद्र की प्रतिष्ठा है। प्रतिबद्ध गुरु का स्थान नङ्काल् थानेदार ने ग्रहण कर लिया है। बहुत कम गुरु ऐसे मिलेगे जो शिष्यो के अध्ययन अध्यापन, चरित्र निर्माण, सर्वागीण विकास मे समुचित रुचि रखते हो। अधिकाश गुरु तो अपने शिष्यो के नामो से भी अपरिचित होते है।

उपाधि प्राप्त करने की होड तो है लेकिन उनके लिए तप करने की इच्छा नही है।

जहाँ कम से कम २०० दिन पढाई होना चाहिये वहा केवल ८०-९०-१०० दिन ही पढाई होती है। उसमे भी शिष्य कितने दिन उपस्थित रहता है यह तो पूछिये ही न। शून्य उपस्थिति वालो को भी परीक्षा में प्रवेश मिल जाता है। फिर क्यो न परीक्षाओ मे नकल-बाजी हो? क्यो न छुराबाजी हो।

जब मै नवम्बर १९७५ में गुरुकुल कागडी आया तो यह मै जानता था कि समय पर वेतन न मिलने के कारण यहा के अध्यापक-वर्ग मे रोष व्याप्त है और यहां अभद्र घटनाये घटित हो चुकी है किन्तु मैं इस बात को सुनने के लिए कदापि तैयार न था कि यहाँ भी नकलबाजी चलती है। १९७३ में यहा के रसायन विभाग के सत्यनिष्ठ प्राध्यपक स्व० श्री ओम प्रकाश सिन्हा को नकलबाजी रोकने के प्रयास मे ही अपनी बलि देनी पडी थी। क्या हम छाती पर हाथ रखकर कह सकते हैं कि आज स्थिति मे सुधार हुआ है?

आपने कभी सोचा है कि नकलबाजी के लिए जिम्मेदार कौन है ? मै पूछना चाहूगा कि ऐसे कुकृत्यो के लिए हम केवल विद्यार्थियो को ही क्यों दोष दें ? क्या इस प्रसङ्ग में समाज अथवा सरकार उत्तरदायी नही है ?

जब प्रत्येक अच्छी नौकरी के लिए बी०ए० की शर्त लगाई जायेगी तो येनकेन प्रकारेण बी०ए० करना चाहेगे। फिर डिवीजन भी उपयोगी सिद्ध हो सकती हो तो येनकेन प्रकारेण डिवीजन लेना भी आवश्यक हो जाता है।

प्रश्न यह उठता है कि पुलिस की नौकरी के लिए बी०ए० की शर्त क्यों लाजमी हो ? यदि फौज की नौकरी के लिए केवल १२ कक्षा पास व्यक्ति कोशिश कर सकता है और उचित फौजी प्रशिक्षण के बाद जनरल बनने की आकांक्षा रख सकता है तो क्यो न आई.जी. पुलिस बनने के लिए १२वी के बाद ही क्षेत्र खुल जाये ? इसी तरह आई०ए०एस०, पी०सी०एस०, तहसीलदार, बैंक मैनेजर आदि के लिए भी क्यों न १२वी के बाद चयन कर लिया जाये ? बाकी प्रशिक्षण तत्सम्बन्धी विशेष विद्यालयों में हो हो ?

इस सन्दर्भ में मैं शिक्षा शास्त्रियों के सम्मुख १२+३की बजाय १२+क्ष का फार्मूला रखा करता हूं। हम १२ के बाद डिग्री कोर्स को २ या ३ वर्ष की अवधि मे ही समाप्त करने का लक्ष्य क्यों रखे ? क्यों न इस बात की छूट दे दी जाय कि जब विद्यार्थी विभिन्न निर्धारित विषयों मे यथेष्ट दक्षता प्राप्त कर ले, वह स्नातक की उपाधि प्राप्त कर सकता है। जैसा कि मैंने कई कैनडियन और अमरीकी विश्वविद्यालयों में देखा है इन विश्वविद्यालयों मे डिग्री प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि विद्यार्थी १५ क्रेडिट (अथवा अलंकार) प्राप्त करे। वह एक वर्ष में ५ से अधिक अलंकार प्राप्त नही कर सकता। इस तरह उसे बी०ए० करने के लिए कम से कम तीन वर्ष तो लगते ही हैं। जब वह १५ क्रेडिट (अलंकार) प्राप्त कर लेता है तो विश्वविद्यालय से उसे उपाधि प्राप्त हो जाती है। इन सब समस्याओं

सुझावों पर गहराई से विचार करने हेतु हमने शिक्षा पटल को गत ४ अप्रैल की बैठक में एक दक्ष समिति का गठन किया है जिसमे हमारे तीन प्रधानाचार्यों के अतिरिक्त दिल्ली, रोहतक, गढ़वाल विश्वविद्यालय के अध्यापक भी है। आशा है उनके सुझाव हमारे लिये लाभ दायक सिद्ध होंगे।

इसके अतिरिक्त आगामी ग्रीष्मावकाश में हम यहां गुरुकुल कांगड़ो परिसर मे वैदिक शिक्षा प्रणाली पर राष्ट्रीय स्तर पर एक कार्यशाला का आयोजन भी करने जा रहे जिसमे कि हम सम्बन्ध इस मे आर्ष ग्रन्थो से प्रेरणा लेते हुए अपना भावी मार्ग और कर्यक्रम सुनिश्चित कर सके।

साथियों !

आपको स्मरण होगा कि १९७४ मे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय को नोटिस दिया था कि क्यो न इसका विश्वविद्यालय स्तर समाप्त कर दिया जाय और इसके महाविद्यालयो को मेरठ विश्वविद्यालय से सम्बद्ध कर दिया जाय। उनकी मुख्य आपत्ति यह थी कि जिन उद्दश्यों को लेकर यह विश्वविद्यालय स्थापित हुआ था उनकी पूर्ति नही हो रही है। उनकी इच्छा थी कि गुरुकुल के सविधान मे ऐसे परिवर्तन कर दिये जाय जिससे विश्वविद्यालय का वातावरण आसुरी वृत्तियो से मुक्त रहे. वहां शान्ति और गरिमा के साथ अध्ययन-अध्यापन का कार्य होता रहे। इसी उद्देश्य को लेकर १९७६ मे स्वर्गीय पद्म भूषण डा० सूरजभान की अध्यक्षता में एक उच्चस्तरीय समिति का गठन किया गया था, लेकिन इस बीच गुरुकुल मे हुई उथल-पुथल के कारण वह समिति अपना कार्य पूरा न कर सकी।

गतवर्ष इस कार्य की पूर्ति हेतु डा० गंगाराम को विशेषाधिकारी नियुक्त किया गया। उन्होंने शिक्षा मन्त्रालय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और विभिन्न शिक्षा शास्त्रियों के सुझाव को दृष्टिगत

रखते हुये नये संविधान का प्रारुप तैयार किया जिसको गहरे विचार विनिमय के बाद सीनेट द्वारा १० अक्टूबर १९८१ को विशेष बैठक में पारित कर दिया गया। अब तदनुसार कार्य हो रहा है।

इस प्रकार विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की ओर से गुरुकुल काँगडी विश्वविद्यालय का अनुदान रिलीज करने मे जो आपत्ति थी अब वह समाप्त हो गई है।

इसी तरह गत वर्षों में गुरुकुल कांगडी विश्वविद्याल की ओर से आय-व्यय का लेखा न पहुंचने के कारण विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने विकासअनुदान की ग्रान्ट पर भी रोक लगादी थी। आपको यह जानकर हर्ष होगा कि अब १९८० तक का लेखा जा चुका है और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने गुरुकुल को छटी पचवर्षीय योजना के अन्तर्गत ५० लाख रुपये की राशि देना स्वीकार किया है।

इस प्रसङ्ग में एक प्रारम्भिक बैठक अभी हाल मे १८-३-८२ को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अध्यक्ष तथा सचिव के साथ हुई, जिसमें उन्होंने प्रथम चरण मे इस योजना के अन्तर्गत ४ प्रोफ़ेसर पद (१-वेद, २-सस्कृत, ३-दर्शन, ४-प्राचीन भारतीयइतिहास) तथा १ पद पुस्तकालयाध्यक्ष का, १ पद क्रीडाध्यक्ष का, २ सहा०पुस्तकाल-याध्यक्ष के पद स्वीकृत किए हैं। इसके अतिरिक्त उन्होने १० मकानों की और अतिथि गृह पूर्ति की स्वीकृति भी प्रदान की है। इन कार्यों पर लगभग २० लाख रुपये व्यय होने का अनुमान है। हमने अपनी छठी योजना मे कई नये कोर्स जैसे शारीरिक और यौगिक शिक्षा, पुस्तकालय विज्ञान, विज्ञान मे स्नातकोत्तर कक्षायें, कन्या गुरुकुल देहरादून में बी० एड० अथवा गृह विज्ञान मे डिप्लोमा खोलने के प्रस्ताव किये है। इन प्रस्तावों की जांच हेतु आयोग की ओर से एक विजिटिंग कमेटी आयेगी जो वस्तु स्थिति का आकलन करके हमारी योजना को सुनिश्चित करेगी। मैं इन उपलब्धियों पर वित्तअधिकारी श्री थापर एवं कुलसचिव श्री हीरा को बधाई देता हूं।

मित्रो !

आपको स्मरण होगा कि गत वर्ष मैने आपका ध्यान कांगड़ी ग्राम की ओर आकृष्ट किया था। कांगड़ी ग्राम हमारा मातृ ग्राम है। इसका स्मरण करते हम सबको रोमांच हो जाता है। गतवर्ष हमने २५ जुलाई को बड़े पैमाने पर वन महोत्सव मनाया। मुख्य अतिथि थे मुरादाबाद मण्डल के आयुक्त श्री अरविन्द वर्मा, आई.ए.-एस.। बिजनौर के जिलाधीश श्री अनीस अन्सारी के नेतृत्व मे हमे जिलाधिकारियो की ओर से पूर्ण महयोग प्राप्त हुआ। आनन-फानन मे कांगडी ग्राम की लिक रोड बन गई। कोई दो हजार के करीब पेड रोपे गए, ग्रामीण शिल्प के लिये कतिपय उपकरण वितरण किये गये तथा वृद्धों को पेशने दी गई। आप मे से जिन महानुभावो ने इस कार्यक्रम को दिल्ली दूरदर्शन पर देखा होगा वे जानते है कि उस समय ग्रामीणो मे कितना उत्साह था।

कांगडी ग्राम उद्धार के कार्यक्रमो को आगे बढाते हुए गत १२ मार्च को डा० विजय शङ्कर, अध्यक्ष, वनस्पति विभाग, गुरकुल काँगडी विश्वविद्यालय जो इस योजना के अवतनिक निदेशक है एव श्री जगदीश विद्यालङ्कार, पुस्तकालय अध्यक्ष ने नवयुवक मङ्गलदल कागडी ग्राम के सहयोग से श्रद्धानन्द प्राथमिक पाठशाला मे कांगड़ी ग्राम में "गोवर्धन शास्त्री स्मृति" पुस्तकालय की स्थापना की जिसका विधिवत उद्घाटन कुलाधिपति महोदय श्री वीरेन्द्र द्वारा किया गया यह पुस्तकालय गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय विस्तार सेवा के प्रथम चरण के रूप मे स्थापित किया गया है और आशा हैं इस अंचल के ग्रामवासियों के बौद्धिक विकास मे यथोचित योगदान देगा। इस पुस्तकालय के लिये संघड़ विद्या सभा ट्रस्ट जयपुर की ओर से ५०० रुपये वार्षिक अनुदान स्वीकृत हुआ है। कांगडी ग्राम सुधार योजना की सफलता में सर्वश्री जबरसिंह सैगर, के०पी० गुप्ता तथा सहायक मुख्याधिष्ठाता जितेन्द्र जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

कांगड़ी ग्राम में आयुर्वेद औषधालय की शाखा स्थापित करने हेतु गुरुकुल काँगड़ी राजकीय आयुर्वेद महाविद्यालय के प्राचार्य डा०

सुरेशचन्द्र शास्त्री से निवेदन किया गया है। उसमे यह भी निवेदन किया गया कि यहा चलचिकित्सा का भी प्रबन्ध करे जिससे इस ग्राम की और विशेषतौर पर इस अचल की स्वास्थ्य सम्बन्धी आवश्यकतायें पूर्ण हों। कागड़ी ग्राम को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति उपलब्ध है। देश विदेश से लोग इस तीर्थस्थल पर आना चाहते है। प्रश्न यह है कि क्या हम उनको इस ग्राम के दर्शनों के लिये निमन्त्रण देने की स्थिति मे है ?

इस सम्बन्ध में आप देवियों, सज्जनो और समस्त आर्य जगत् के सम्मुख हमारे मान्य कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र का प्रस्ताव दोहराना चाहूंगा और आपसे निवेदन करुंगा कि "कांगड़ी ग्राम सुधार" निधि मे प्रतिव्यक्ति कम से कम एक रुपया दान दे। मुझे विश्वास है कि इस प्रकार हम निधि मे लाखो रुपया एकत्रित कर सकेंगे और तदनुसार हमे सरकारी संस्थाओ की ओर से प्रचुर मात्रा में मैचिंग ग्रान्ट उपलब्ध हो जायेगी।

इसी शृङ्खला मे २७ जुलाई ८१ का मेरठ मण्डल के आयुक्त श्री आर०डी० सोनकर के कर कमलो द्वारा गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय में भी वन महोत्सव का उद्घाटन हुआ। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत विश्वविद्यालय परिसर मे अनेक प्रकार के वृक्ष लगाये गये तथा पुष्प वाटिका का जीर्णोद्धार किया गया। विज्ञान महाविद्यालय के ग्रीन हाऊस के लिए बहुत से दुर्लभ पौधे मगवाये गये।

यहां मै राष्ट्रीय सेवा योजना, राष्ट्रीय कैडिट कोर और आर्य वीर दल का भी जिक्र करना चाहूगा। १९७४ मे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने विद्यार्थियों को राष्ट्रीय सेवा योजना मे नियोजित करने का निश्चय किया था, किन्तु कुछ परिस्थितियों से यह कार्यक्रम आगे बढ़ न पाया। अब मेजर वीरेन्द्र अरोड़ा के नेतृत्व मे यह कार्य क्रम पुन: प्रारम्भ किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत विश्वविद्यालय ने ग्राम कांगडी के अतिरिक्त पडोस के दो गांव जमालपुर एव जगजीतपुर की सेवा करनें का निश्चय किया है। कन्या गुरुकुल देहरादून से कहा गया कि वह अपने समीपवर्ती एक गांव को अपनाये,

इन गांवों के सामाजिक सुधार के लिए विश्वविद्यालय पूर्णरूप से कार्य करेगा। विशेषकर दलित वर्ग के उत्थान के लिए, प्रत्येक सम्भव कार्य किया जायेगा।

इन्ही उद्देश्यों को लेकर गतवर्ष श्री बाल दिवाकर हंस के संचालन में १ से १५ जून तक गुरुकुल काँगड़ी परिसर मे आर्यवीरदल शिविर का आयोजन किया गया। इसका उद्घाटन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री ओम प्रकाश पुरुषार्थी ने किया। इस अवसर पर आर्यवीरो ने विश्वविद्यालय के परिसर मे लगभग ३०० पेड लगाकर अपनी कार्यशीलता की छाप छोडी। आशा है गतवर्ष की भांति इस वर्ष भी आर्यदल का शिविर यहां लगेगा।

इसी शृङ्खला मे २१-१२-८१ को ग्राम जमालपुर में शिशु प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमे ३६ बच्चो के स्वास्थ्य का निरीक्षण किया गया और सर्वश्रेष्ठ बच्चो को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के अवसर पर २३-१२-८१ को श्री के० एन० सिंह जिलाधीश सहारनपुर द्वारा पुरस्कृत किया गया। उसी दिन गुरुकुल मे हरिजन स्नेह मिलन समारोह भी मनाया गया।

एन०सी०सी० के छात्रो ने समाज सेवा के इस कार्यक्रम मे भाग लिया।

इन योजनाओ को प्रारम्भ करके गुरुकुल कागड़ी ने स्वामी श्रद्धानन्द के सपनो को मूर्तरूप दिया है।

देवियों और सज्जनों!

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि इस वर्ष कन्या गुरुकुल देहरादून की "ज्योति समिति" का कार्यक्रम अत्यन्त उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस महाविद्यालय की छात्राओं ने जिलास्तर पर आयोजित राष्ट्रीय समूह गान में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी

प्रकार आर्य समाज देहरादून द्वारा सचालित कुँवर बृजभूषण चल वैजन्ती संगीत प्रतियोगिता में उन्होने प्रथम स्थान प्राप्त किया। खेल कूद प्रतियोगिता मे भी इस महाविद्यालय ने सीनियर वर्ग की चैम्पियनशिप प्राप्त की। इसमें कु० नायब कौर को सर्वश्रेष्ठ खिलाडी के रूप मे सम्मानित किया गया।

मुझे आपको यह सूचित करते हुये हर्ष हो रहा है कि संघड़ विद्या सभा ट्रस्ट जयपुर ने प्रतिवर्ष "माता हूजा" स्मृति निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित करने के लिए कन्यागुरुकुल देहरादून को ५०० रुपये वार्षिक अनुदान देना स्वीकार किया है। हम इसके लिए संघड़ विद्या सभा के प्रति आभार प्रकट करते है।

मुझे आपको यह सूचित करते हुये प्रसन्नता हो रही है कि गन्धर्व महाविद्यालय, नई दिल्ली के प्राचार्य श्री विनयचन्द्र मौदागल्य ने आगामी सत्र से विश्वविद्यालय एव विद्यालय के छात्रों क लिए गन्धर्व वेद की शिक्षा की व्यवस्था करने का हमारा आग्रह स्वीकार कर लिया है।

श्री मौदागल्य के पिता श्री रामचन्द्र स्वामी श्रद्धानन्द के साथ गुरुकुल में अंग्रेजी के अध्यापक रहे। आपक अग्रज व्याख्यान कला के धनी स्वामी समपर्णानन्द जी से कौन परिचित नही है ? मेरे निमन्त्रण पर वे शिक्षा पटल की गत बैठक ४-४-८२ मे सम्मिलित हुये, उन्होंने यहां की स्थिति का अवलोकन किया। आशा है श्रीमौदगिल्य के निर्देशन में गुरुकुल गन्धर्व वेद की शिक्षा की दिशा में यथेष्ठ सफलता प्राप्त करेगा।

भारतीय प्राचीन इतिहास विभाग की देखरेख मे पुरातत्व संग्रहालय उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। पिछले वर्ष संग्रहालय का विधिवत उद्घाटन आर्य संन्यासी स्वामी ओमानन्द द्वारा किया गया। वर्तमान दीक्षान्त समारोह के अवसर पर पुरा-

तत्व संग्रहालय में एक भव्य प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है। आशा है आप इसे देखकर आनन्दित होंगे।

यहां यह उल्लेखनीय है कि इस वर्ष लन्दन मे हो रहे "भारत उत्सव" मे इस सग्रहालय की एक महत्वपूर्ण कलाकृति 'सागर-मथन' प्रदर्शित की जा रही है। दसवी शती का यह पाषाण फलक झीवरहेड़ी (सहारनपुर) से प्राप्त हुआ था।

आपको यह जानकर भी प्रसन्नता होगी कि पुरातत्व संग्रहालय की ऊपरी मजिल मे डा० सत्यकेतु विद्यालंकार की अध्यक्षता मे चल रहे 'आर्य स्वाध्याय केन्द्र' का स्थायी कार्यालय स्थापित कर दिया गया है। आपसे निवेदन है कि आपके पास या आपके मित्रो के पास इस सम्बन्ध मे कोई सामग्री हो जो इस केन्द्र के लिये उपयोगी सिद्ध हो सकती है उसे संग्रहालय-निदेशक डा० बी० सी सिन्हा के पास रक्षार्थ भेजने की कृपा करे।

इसी वर्ष हमने एक अन्य कार्यक्रम को भी आगे बढ़ाया है। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत डा०ताराचन्द शर्मा, अध्यक्ष,रसायन विभाग ने विभिन्न प्रशासनिक सेवाओं के लिये विद्यार्थियो को प्रशिक्षण देने का उत्तरदायित्व स्वीकार किया। प्रतियोगिता के लिये प्रशिक्षण देने

की इन कक्षाओ को चलाने में उन्हें प्रो० चन्द्रशेखर त्रिवेदी, एवं प्रो० सदाशिवभगत की ओर से सहयोग मिला। इस वर्ष ११ छात्रों को फारेस्ट रेन्जर कोर्स की प्रतियोगिता के लिये प्रशिक्षण दिया गया।

इसवर्ष हमारे विद्यार्थियों ने कतिपय सरस्वती यात्रायें भी की। दिसम्बर मास मे विज्ञान महाविद्यालय के छात्रो का एक दल बम्बई गया, जहां इसने समुद्री जानवरों एवं वनस्पति का सग्रह किया। यहां से यह दल बगलौर गया। यहां इन्होंने रमण शोध संस्थान, एच०एम०टी० कारखाना, विश्वेश्वरोय टेक्नीकल विज्ञानइन्स्टिट्यूट, नैशनल बाटनीकल गार्डन का अवलोकन किया। यहां से सरस्वती दल मैसूर गया जहा उन्होंने ज्यूओलोजिकल गार्डन मे संसार के

विभिन्न भागों के जन्तुओं की जातियों का अध्ययन किया। तत्पश्चात् इन्होंने कावेरी नदी पर बना बाँध तथा वृन्दावन गार्डन भी देखा। यह दल मैसूर से मद्रास पहुचा। वहां छात्रों ने मद्रास विश्वविद्यालय, जियम लाइट, स्नेक पार्क, चिलड्रन पार्क इत्यादि को देखा।

कन्या गुरुकुल देहरादून की छात्राओं ने भी मसूरी का कार्यक्रम बनाया।

इसी तरह वेद एवं कला महाविद्यालय तथा विद्यालय के ब्रह्मचारियों के दल जयपुर, अजमेर, पुष्कर, उदयपुर, आबू आदि की सांस्कृतिक यात्राओं पर गये। ब्र० विश्वपाल जयन्त के सौजन्य से कण्वाश्रम की यात्रायें तो विद्यालय के ब्रह्मचारी यदा कदा करते ही रहते है।

मुझे यह सूचित करते हुए भी प्रसन्नता हो रही है कि गतवर्षों की भांति इस वर्ष भी प्रोफेसर चन्द्रशेखर त्रिवेदी एव ईश्वर भारद्वाज और स्नातक आत्मदेव जी के सहयोग से विद्यालय विभाग के वरिष्ठ ब्रह्मचारियों को १०८ वेदमन्त्र हिन्दी पद्यात्मक अनुवाद और भावार्थ सहित कण्ठस्थ कराये गये। इनका पद्यबद्ध रुपान्तर स्नातक आत्मदेव जी ने किया। ये १०८ वेदमन्त्र इस वष "गोवर्धघन ज्योति" नामक पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुए है।

इस वर्ष क्रीडा के क्षेत्र मे प्रो० ओमप्रकाश मिश्र के नेतृत्व मे विश्वविद्यालय ने कुछ कदम आगे बढाये। कन्या गुरुकुल देहरादून का उल्लेख मैं ऊपर कर चुका हूं। विश्वविद्यालय की टीम ने इस वर्ष जोन अन्तर्विश्वविद्यालय हाकी टूर्नामिन्ट मे भाग लिया। बहुत वर्षो के बाद इस वर्ष स्वामी श्रद्धानन्द हाकी टूर्नामेन्ट का आयोजन किया गया। इसमे रुडकी, मसूरी, मुजफ्फरनगर, देहरादून, धामपुर, बरेली, सहारनपुर तथा बी०एच०ई०एल० हरिद्वार की टीमों ने भाग लिया। इस टूर्नामिन्ट में बी०एच०ई०एल० की टीम विजयी रही एवं विश्वविद्यालय की टीम उप विजयी रही।

जनवरी ८२ में विश्वविद्यालय की टीम ने रायबरेली में आयोजित राज्य स्तरीय हाकी टूर्नामेन्ट में भाग लिया और प्रथम स्थान प्राप्त किया।

विश्वविद्यालय की बैडमिन्टन टीम ने नार्थ जोन अन्तर विश्व-विद्यालय बैडमिन्टन टूर्नामेंट में भी भाग लिया। इसी प्रकार क्रिकेट टीम ने भी अन्तर जिला क्रिकेट टूर्नामेन्ट में भाग लिया और वहाँ उप-विजेता रही।

इस वर्ष बास्केटबाल के खेल की व्यवस्था भी की गई। टेबिल टेनिस आदि का खेल तो प्रायः नियमित रूप से हो रहा है।

इस वर्ष विश्वविद्यालय की शिक्षा पटल ने यह प्रस्ताव पारित किया कि अन्य विषयों के शोध-छात्रों को संस्कृत का ज्ञान अवश्यमेव होना चाहिये और संस्कृत के शोध छात्रों को अंग्रेजी का ज्ञान होना चाहिये। इसके लिये ६ मास का लघु कोर्स बनाया जा रहा है। यह भी निश्चय किया गया है कि शोध छात्र अपने शोध विषय की रूप रेखा बनाते समय ऋषिदयानन्द के विचारों को सम्मुख रक्खे और उन्हीं के द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों पर व्यापक परिप्रेक्ष्य में अधिकाधिक शोध के क्षेत्र निर्धारित करें। इसी दृष्टिकोण को लेकर विश्व-विद्यालय में शोध कार्य चल रहा है। उदाहरण के लिये कुछ का उल्लेख यहां प्रासंगिक होगा।

१—संस्कृत में ऋषि दयानन्द के परिप्रेक्ष्य में महाभारत में निर्दिष्ट धर्मों की समीक्षा।

२—संस्कृत में ही--महर्षि दयानन्द के परिप्रेक्ष्य में नारद, वृहस्पति तथा कात्यायन स्मृतियों का समीक्षात्मक अध्ययन।

३—प्राचीन भारतीय इतिहास में-प्राचीन भारतीय नारी शिक्षा एवमहर्षि दयानन्द का योगदान।

४—वेदमें महर्षि दयानन्दकी बृहत्रयी आलोचनात्मक अध्ययन।

५—संस्कृत में महर्षि दयानन्द के शास्त्रार्थ, एक विवेचना-त्मक अध्ययन।

गत वर्ष सुप्रसिद्ध साहित्यकार प्रेमचन्द की शताब्दी विश्वभर में मनाई गई। उन्हें विभिन्न वादों के घेरे में बाधने का उद्योग विश्व के विद्वानों ने किया किन्तु प्रसन्नता की बात है कि प्रेमचन्द पर आर्य समाज के प्रभाव का अध्ययन इस विश्वविद्यालय में हुआ और इस महत्त्वपूर्ण कार्य पर पी०एच०डी०की उपाधि प्रदान की गई। आपको जानकर सुखद आश्चर्य होगा कि प्रेमचन्द गुरुकुल भी आए थे और यहां से लौटकर उन्होंने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली महत्व पर निबन्ध भी लिखा था।

मान्य अतिथि !

इससे पहले कि मैं आपको नव-स्नातकों को आशीर्वाद देने के लिये कहूं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के मान्य कुलाधिपति के प्रति अपनी एवं अपने सहयोगियों की ओर से आभार प्रकट करना चाहूंगा जो अपने व्यस्त कार्यक्रम में से समय निकालकर समय-समय पर हमे सम्भालते रहते है। मैं विश्वविद्यालय के विजिटर डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार के प्रति भी कृतज्ञता प्रकट करना चाहूंगा जिन्होंने इतने व्यस्त कार्यक्रम के होते हुये गत वर्ष यहा एक सप्ताह से ऊपर बिताया और हमारा मार्गदर्शन किया।

साथ ही मे मेरठ डिवीजन के एवं मुरादाबाद डिवीजन के आयुक्तों श्री आर० डो० सोनकर, श्री अरविन्द वर्मा, जिलाधीश सहारनपुर एव बिजनौर श्री के० एन० सिंह एवं श्री अनीश अन्सारी, पुलिस अधीक्षक श्री आर० के० पण्डित, स्थानीय न्यायाधीश श्री घनश्याम पन्त एवं उप पुलिस अधीक्षक के प्रति आभार प्रकट करना चाहूंगा जो समय-समय पर गुरुकुल को अपना पूर्ण सहयोग और प्रेम देते रहे हैं।
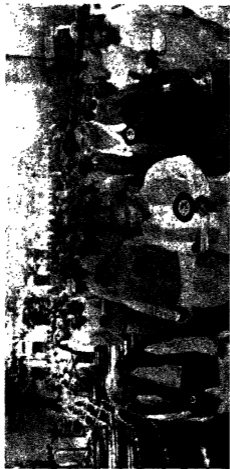
दीक्षान्त समारोह की शोभा - यात्रा

देवियो एवं सज्जनो !

आपने अपना अमूल्य समय प्रदान कर हमारे उत्सव की शोभा बढ़ाई है। सहायक मुख्याधिष्ठाता श्री जितेन्द्र एवं उनके सहयोगियो ने आपकी यात्रा सुखद बनाने के लिए हर सम्भव प्रयत्न किये है। फिर भी यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो आप क्षमा करेंगे।

आपसे निवेदन है कि आप नव-स्नातकों को आशीर्वाद देने की कृपा करें।

बलभद्र

कुलपति

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

●●●

वित्त एवं लेखा

गुरुकुलकाँगड़ी विश्वविद्यालय में तीन वर्ष के बाद उग्र विवाद के कारण कार्यालय का बहुत सा रिकार्ड अस्त-व्यस्त हो गया था। कुछ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रिकार्ड कार्यालय से गायब पाया गया जिसके कारण विवादास्पद अवधि १९७७-७८ से १९७९-८० तक का लेखा तैयार करने मे जटिल समस्या का सामना करना पड़ा। इसी अवधि मे फार्मेसी द्वारा जो धन व्यय किया गया था, उसका समायोजन भी लेखा विभाग में किया जाता था, परन्तु उसका सम्पूर्ण रिकार्ड भी अनेक प्रयत्न करने के बावजूद भी तत्कालीन गणक तथा फार्मेसी से प्राप्त नही हुआ। जो बिल प्राप्त हुए वह लेखा की दृष्टि से पूर्ण नही थे। इन बिलों को पूर्ण करने का प्रयास भी किया गया, परन्तु इसमें सफलता नही मिली। इन तीन महीनों के लेखा आडिट न होने के कारण भारत सरकार की शिक्षा मन्त्रालय ने यह निर्णय लिया कि दिसम्बर १९८१ तक यदि लेखा आडिट नहीं होता है तो विश्वविद्यालय को १९८१-८२ की अवधि का शेष अनुदान नही दिया जायेगा। इन विकट परिस्थितियो में लेखा तैयार करने का काम हाथ में लिया गया, कुछ रिकार्ड पुनः बनाया गया। फार्मेसी से जो बिल प्राप्त हुए थे उनमे से विश्वविद्यालय से सम्बन्धित व्यय के बिलों का उपरोक्त अवस्था मे समायोजन लेखा मे कर लिया गया। इस कार्य को सम्पन्न करने मे लेखा विभाग को अथक परिश्रम करना पड़ा। अन्ततः लेखा तैयार हुआ और उसे नवम्बर-दिसम्बर १९८१ में चार्टर्ड एकाऊन्टैन्ट से निरीक्षित कराया गया तथा जनवरी १९८२ मे १९७७-७८ से १९७९-८० तक का लेखा शिक्षा मन्त्रालय को प्रस्तुत किया गया। इसके बाद ही विश्वविद्यालय को १९८१-८२ का शेष अनुदान ६,५०,०००/- रुपये प्राप्त हुआ। चार्टर्ड एकाऊन्टटैन्ट

द्वारा निरीक्षित लेखा महालेखाकार उ०प्र० को भेजा गया तथा उनसे भी आडिट कराने का अनुरोध किया गया। महालेखाकार उ०प्र० की आडिट पार्टी १६ अप्रैल १९८२ को विश्वविद्यालय मे आई तथा विश्वविद्यालय का १९७७-७८ से १९७९-८० तक का लेखा निरीक्षित कर लिया गया है। अभी ए०जी० आडिट की रिपोर्ट प्राप्त नही हुई है। यहा यह उल्लेख करना आवश्यक है कि समीक्षाधीन वर्ष मे शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार से स्वायत्तशासी संस्थाओं का लेखा महालेखा नियन्त्रक एक्ट के अन्तर्गत कराये जाने का निर्देश प्राप्त हुआ है। इस विषय को वित्त समिति तथा कार्य परिषद् की मई ८२ की बैठकों मे विचारार्थ प्रस्तुत किया गया। तदन्तर महालेखा नियन्त्रक एक्ट की धारा २० के अन्तर्गत आडिट कराये जाने के लिए उपर्युक्त समितियों के निश्चयानुसार भारत सरकार को समुचित कार्यवाही किये जाने हेतु सूचित कर दिया गया है।

जून, ८१ मे विश्वविद्यालय की वित्त समिति ने अपनी बैठक मे वित्त सम्बन्धी कुछ महत्वपूर्ण निश्चय किये, जिनमे मुख्यतः छठी-पंचवर्षीय योजना का प्रारूप तैयार करना, वित्तीय अधिकारो की सूचना तथा वित्तीय प्रक्रिया सम्बन्धी नियम बनाने तथा छात्रो को दी जाने वाली छात्रवृत्ति की दरो मे वृद्धि की स्वीकृति दी गई थी। विश्वविद्यालय के इससे पूर्व वित्तीय प्रक्रिया सम्बन्धी कोई नियमोप-नियम नहीं थे और विभिन्न अधिकारियों के वित्तीय अधिकार भी सुनिश्चित नही थे। वित्त समिति के निश्चयानुसार वित्तीय अधि-कारो की अनुसूचि बनाई गई तथा वित्तीय प्रत्यायोजन की प्रक्रिया निश्चित की गई। यहां यह उल्लेख करना आवश्यक है कि विवाद के कारण जहां विश्वविद्यालय की सम्पत्ति एव गरिमा को क्षति पहुंची, वहां पंचम पचवर्षीय योजना स्वीकृत न होने के कारण विश्व-विद्यालय का विकास भी अवरूद्ध रहा। मान्य कुलपति जी के प्रयास के कारण छठी पंचवर्षीय योजना में इस विश्वविद्यालय को ५० लाख की राशि की विश्वविद्यालय अनुदानआयोग द्वारा स्वीकृति प्रदान की गई।

मान्य कुलपति जी के निर्देश एवं वित्त समिति के निश्चयानुसार छठी पंचवर्षीय योजना का प्रारूप तैयार किया गया, जिसमें भावी योजनाओं को लागू करने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से ६७ लाख रूपये की मांग की गई थी। इस योजना काल में मुख्यतः विज्ञान स्नातकोत्तर कक्षायें आरम्भ करने, कन्या गुरुकुल देहरादून में बी०एड० तथा गृह विज्ञान की कक्षायें, शारीरिक शिक्षा एवं योग के डिप्लोमा कोर्स में अनुसन्धान तथा प्रशासन को गति देने के लिए अतिरिक्त पद एवं भवनों के निर्माण के लिए धनराशि का प्रावधान किया गया था।

मार्च, १९८२ में विश्वविद्यालय की विकास योजनाओं में से कुछ योजनाओं को प्राथमिकता के आधार पर स्वीकृत कराने हेतु अध्यक्षा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने मान्यवर कुलपति जी, कुलसचिव एवं वित्तअधिकारी के साथ अपनी बैठक में निम्नलिखित योजनाओं को तत्काल लागू करने की स्वीकृति प्रदान कर दी थी।

नये पद :–

प्रोफेसर के ४ पद (वेद, संस्कृत, दर्शन तथा इतिहास), पुस्तकालयाध्यक्ष, निदेशक शारीरिक शिक्षा तथा पुस्तकालय सहायकों के पद।

भवन निर्माण :–

शिक्षकों के लिए दस आवास गृह एवं अधूरे पड़े अतिथि गृह का निर्माण।

पुस्तकालय :–

पुस्तकें एवं वृत्तपत्र क्रयार्थ २ लाख रुपये की स्वीकृति दी गई। शेष योजनाओं पर विचार करनेएवंउनकी आवश्यकता अनुमोदन हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की विजिटिंग कमेटी के शीघ्र ही गुरुकुल आने की आशा है।

सितम्बर, ८१ मे विश्वविद्यालय का १९८१-८२ का संशोधित बजट बनाया गया, जिसे वित्त समिति ने अपनी बैठक दिनांक १७-१०-८१ मे निम्न प्रकार पारित किया –

बजट सारांश

	संशोधित अनुमान १९८१-८२	बजट अनुमान १९८२-८३
वेतन भत्ते आदि	१४,९१,०००/-	१५,००,०००/-
भविष्यनिधि अंशदान	४२,९००/-	५०,९००/-
अन्य व्यय	४,२५,०००/-	५,००,०००/-
	१९,५८,९००/-	२०,५०,९००/-
आय–	–१,१६,७५०/-	–१,२२,०००/-
यू०जी०सी० से प्राप्तव्य अनुदान	१८,४२,१५०/-	१९,२८,९००/-

उपर्युक्त बजट के अनुसार विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से १९८१-८२ मे १८,००,०००/- अनुरक्षण अनुदान प्राप्त हुआ। १९८२-८३ के लिए १९,५०,०००/- अनुदान निश्चित किया गया है। इसके अतिरिक्त अनुसंधान छात्रवृत्ति के लिये भी आयोग से ४३,२०० रुपये अनुदान प्राप्त हुआ है।

जैसा पहले उल्लेख किया गया है कि वित्त समिति ने जून, १९८२ की अपनी बैठक मे वित्तीय प्रक्रिया सम्बन्धी नियम बनाये जाने का निश्चय किया था। तदनुसार यह नियम बनाये गये और वित्त समिति की १७-१०-८१ की बैठक द्वारा स्वीकृति के उपरान्त इन्हे दिसम्बर १९८२ से विश्वविद्यालय मे लागू कर दिया गया है। वित्तीयशक्तियों के विकेन्द्रीकरण की दिशा मे यह महत्वपूर्ण कदम है।

समीक्षाधीन वर्ष में संस्था को नियमित अनुदान प्राप्त होने के कारण कर्मचारियों की बढ़ी हुई मंहगाई भत्ते की 'ऐरियर राशि' का भुगतान नहीं हुआ था। यह 'ऐरियर राशि' दिसम्बर १९८० से जून १९८१ के शासनादेशों से सम्बन्धित थी। इस ऐरियर का हिसाब बनाकर मार्च ८२ में इसका भुगतान कराया गया। विभिन्न विभागों मे उनकी आवश्यकतानुसार उपकरण, फर्नीचर आदि क्रय किये गये। वित्तसमिति के निश्चयानुसार विश्वविद्यालय भवन को ओडोटोरियम का रूप देने के लिए उसमें २०० कुर्सिया लगवा दी गई है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से विज्ञान उपकरण, फर्नीचर तथा शोध-प्रबन्ध छपवाने के लिए भी अनुदान देने की प्रार्थना की गई है। जिसके अगले वर्ष में प्राप्त होने की आशा है।

●●●

गुरुकुल परिसर

इस वर्ष गुरुकुल परिसर की चारों ओर से सफाई कराई गई। चौक तथा मार्ग पर नाम पटट् लगाए गये।

दयानन्द द्वार से लेकर श्रद्धानन्द द्वार तक परिसर के मुख्य मार्ग पर पर्याप्त प्रकाश की व्यवस्था की गई। इसी प्रकार बुद्ध एव ओम परिवार मे भी प्रकाश की व्यवस्था की गई।

कण्वाश्रम की यात्रा --

मालिनी नदी के तट पर स्थित कण्वाश्रम की यात्रा हेतु विद्यालय के ब्रह्मचारियों का एक दल मान्य कुलपति जी एव अन्य अधिकारियो सहित ब्र० विश्वपाल जयन्त के गुरुकुल पहुंचा। वहां ब्रह्मचारियो ने आनन्दानुभूति की और अनेक वन पशु जैसे हाथी, मृग, शेर को वन क्रीडा का चांदनी रात मे आनन्द लिया। इसमें श्री विश्वपाल जयन्त जी का योग सराहनीय रहा।

आर्यवीर दल शिविर :--

१ जून से लेकर १९ जून तक सार्वदेशिक आर्यवीरदल की ओर से गुरुकुल प्रांगण में एक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। गुरुकुल परिसर मे खूब चहल-पहल रही। इस शिविर का उद्घाटन १ जून को ओ३म्ध्वज फहराकर किया गया तथा समापन १९ जून को परेड एवं दौक्षान्त समारोह के रूप मे वेदमन्दिर में सम्पन्न हुआ जिसमे देश भर के १७५ आर्यवीरों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस शिविर का सचालन प्रधान आर्यवीर दल श्री बालदिवाकर सिह ने

किया। मुख्य प्रशिक्षक थे—व्यायामाचार्य श्री देवव्रत जी आचार्य। समारोह के अवसर पर सार्वदेशिक के मंत्री श्री ओमप्रकाश जी त्यागी, कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा, डा० सुरेशचन्द्र शास्त्री डा० हरिप्रकाश जी, डा० शिवप्रसाद जी मिश्र आदि महानुभावों ने आर्यवीरों को उत्साहवर्धक आशीर्वाद से उद्वेलित किया।

विद्यालय :—

इस वर्ष चयन समिति द्वारा नियुक्त किये गये अध्यापक प्रत्येक विषय मे मिल जाने से अध्ययन-अध्यापन का कार्य व्यवस्थित हो पाया। ब्रह्मचारियों की संख्या मे भी वृद्धि हुई, किन्तु सख्या की दृष्टि से अब भी न्यूनता है।

क्रीड़ा :—

क्रीड़ा के क्षेत्र में इनडोर और आउटडोर दोनों प्रकार के क्रीड़ा सामान की व्यवस्था की गई। ६ तथा ७ नवम्बर को क्षेत्रीय क्रीड़ा प्रतियोगिता की गई जिसमे क्षेत्र के २० विद्यालयों महाविद्यालयों के लगभग १५० छात्रों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता से छात्रों में एक नवीन स्फूर्ति एव चेतना का जागरण हुआ। क्षेत्रीय क्रीड़ा प्रतियोगिता को सफल बनाने में विद्या मन्दिर इण्टर कालेज बी०एच०ई०एल० के प्रधानाचार्य श्री पी० डी० शर्मा ने भी मुख्य भूमिका निभायी। इसके साथ साथ अन्य खेलकूद (जैसे जिम्नेजियम, योगाभ्यास, मल्लखम आदि) मे भी छात्रों को प्रशिक्षित किया गया। इसमे श्री नन्दकिशोर जी एवं श्री ईश्वर भारद्वाज का प्रयास सराहनीय है।

प्रकाशन के क्षेत्र में विद्यालय की त्रैमासिक पत्रिका ध्रुव के तीन अंक, वनमहोत्सव अंक, भगतसिंह अंक शहीद अंक प्रकाशित हुए। जिसके लिये सम्पादक मडल बधाई का पात्र है।

विद्यालय के ब्रह्मचारियों को सांस्कृतिक कार्य क्रमो में विशेष रूप से भाग लेने के लिये उत्साहित किया जाता है।

इस वर्ष दिनांक २५, जुलाई १९८१ को काँगड़ी ग्राम-विकास योजना के अन्तर्गत वनमहोत्सव का आयोजन किया गया जिसका उद्‌घाटन श्री अरविन्दवर्मा (आई० ए० एस०) आयुक्त मुरादाबाद मण्डल मुरादाबाद के द्वारा किया गया। इस अवसर पर मान्य आयुक्त के स्वागत मे गुरुकुल के कर्मचारियो द्वारा भंगड़ा कर हर्षोल्लास सहित कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर बिजनौर जिले के जिलाधीश श्री अनीस अन्सारी तथा अनेक ग्राम विकास खण्ड योजना अधिकारी एवं समस्त ब्रह्मचारीगण अध्यापकगण परिवार सहित उपस्थित थे। इस अवसर पर दो हजार वृक्षो का रोपण किया गया। यह समस्त कार्यक्रम दिल्ली दूरदर्शन पर प्रदर्शित किया गया।

इसी अवसर पर जीवन-ज्योति पुस्तक का विमोचन किया गया।

२६ जुलाई १९८१ को गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय मे भी वनमहोत्सव का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। मुख्य अथिति के रूप मे श्री आर०डी० सोनकर आयुक्त मेरठ मण्डल ने विश्वविद्यालय मे वृक्षारोपण कार्यक्रम का वृक्ष रोपकर उद्‌घाटन किया। इस कार्यक्रम मे जिला मजिस्ट्रेट श्री के०ए० सिंह सहित अनेक अधिकारियो ने भाग लेकर गुरुकुलवासियों का उत्साहवर्धन किया।

शिक्षक दिवस पर आयोजित कार्यक्रम मे एक नई परम्परा का श्रीगणेश हुआ, जिसमे ब्रह्मचारियों ने माल्यार्पण द्वारा अपने गुरुओं का सम्मान करके भारतीय संस्कृति को गौरवान्वित किया।

१६, १७ नवम्बर को जिला स्तरीय वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विषय था- "भारतीय एकता मे धर्म सबसे बडी बाधा है।" इसमें प्रथम स्थान केन्द्रीय विद्यालय रुडकी ने प्राप्त किया, साथ ही इस अवसरपर ब्रह्मचारियो ने 'लाला लाजपतराय' नाटक का लघु अभिनय किया, जिसकी प्रशंसा कुलपति जी एवं माननीय कुलाधिपति जी ने की।

दिनांक २२ फरवरी १९८२ को ऋषिबोधोत्सव के अवसर पर कांगड़ी ग्राम पुण्य भूमि मे शिविर सम्पन्न हुआ जिसमें मान्य कुलपति जी, श्री सरदारी लाल जी वर्मा तथा अन्य महानुभावों ने भी अपना सहयोग प्रदान किया।

दिनांक २७, २८ फरवरी को आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वाधान में वैदिक आचार्य प्रशिक्षण शिविर का भी आयोजन विद्यालय विभाग में किया गया जिसमें गुरुकुल विद्यालय के अतिरिक्त क्षेत्रीय विद्यालयों के शिक्षको ने भी प्रशिक्षण प्राप्त किया।

विद्यालय में दशहरे के अवकाश के कारण सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी के अवसर पर एक सास्कृतिक यात्रा का आयोजन किया गया, जिसमें श्री जितेन्द्र स० मुख्याधिष्ठाता की अगवाई मे विद्यार्थी दल उदयपुर, अजमेर, माऊंट आबू, हल्दीघाटी पुष्कर चित्तौडगढ आदि स्थानों पर भ्रमण एव ऐतिहासिक ज्ञान की वृद्धि करता हुआ गुरुकुल लौटा।

२३ दिसम्बर से ३० दिसम्बर तक :

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान सप्ताह पर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम २३ दिसम्बर को प्रात. बेला मे शोभा यात्रा श्रद्धानन्द द्वार से प्रारम्भ होकर वेदमन्दिर मे सभा के रूप मे परिणित हुई। इसी दिन हरिजन स्नेह मिलन दिवस पर सहभोज का आयोजन किया गया जिसमे श्री के० एन० सिह जिलाधिकारी सहारनपुर के साथ अनेक अन्य अधिकारियो ने भाग लिया।

इस सप्ताह का विशेष आकर्षण था–स्वामी श्रद्धानन्द हाकी टूर्नामेण्ट की पुरानी टूटी हुई कड़ियों को जोडने का एक लघु प्रयास जिसमें अनेक बाधाओं के आने पर भी पूर्ण सफलता प्राप्त हुई। तीन दिवसीय इस आयोजन में लगभग २० टीमों ने भाग लिया और प्रथम स्थान बी॰एच॰ई॰एल॰ रानीपुर हरिद्वार की टीम ने "प्रथम

चलविजयोपहार" प्राप्त किया तथा द्वितीय स्थान गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की टीम ने पाया। इस सारे आयोजन के लिये श्री दीनानाथ मुख्याध्यापक बधाई के पात्र हैं।

गोवर्धन पुस्तकालय :

पुराने गुरुकुल के समीप कांगड़ी गाव में १२-३-८२ को गोवर्धन पुस्तकालय की स्थापना, सभा प्रधान एव कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी के कर कमलो द्वारा की गई। श्री जगदीश चन्द्र विद्यालंकार पुस्तकालयाध्यक्ष गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय द्वारा ३००० पुस्तके पुस्तकालय के लिए दी गई। मान्य कुलपति श्रीबलभद्र कुमार हूजा जी ने अपने ट्रस्ट से ५००) रु० पुस्तकालय को दिया।

वार्षिकोत्सव पर विविध गतिविधियाँ :

१–वार्षिकोत्सव के अवसर पर प्रतिदिन सामवेद पारायण यज्ञ किया गया जिसके ब्रह्मा श्री पं० राजगुरु जी शर्मा रहे।

२–इस अवसर पर १२ अप्रैल के दिन अधिकारियों सहित वार्षिकोत्सव पर आये अनेक दर्शनार्थियो का दल गंगापार पुण्य भूमि पहुचा। वहां पर यज्ञ के पश्चात् श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन हुआ जिसकी अध्यक्षता स्वामी दीक्षानन्द जी ने की। कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी ने कहा कि यदि समस्त आर्यसमाजी एक-एक रुपया दान करे तो इस जीर्ण शीर्ण इमारत का उद्धार किया जा सकता है। उनकी अपील पर उसी समय २०००/ एकत्रित हुआ।

३–वार्षिकोत्सव के अवसर पर शिक्षा सम्मेलन में श्री नौनिहालसिंह शिक्षामंत्री उ० प्र० सरकार पधारे। आपके द्वारा गोवर्धन ज्योति का विमोचन किया गया। इस पुस्तिका मे वेद मंत्रों की गीतपरक व्याख्या है। इस ज्योति का पाठ विद्यालय मे ब्रह्मचारी प्रति दिन करते हैं। इसके प्रकाशन हेतु संघड़विद्यालय सभा जयपुर ने १०००।- का आर्थिक सहयोग प्रदान किया।

४-१३ अप्रैल की संध्या बेला में वार्षिकोत्सव पर व्यायाम सम्मेलन का आयोजन हुआ। ब्रह्मचारियों ने योगासनों का सुन्दर प्रदर्शन किया। एवशन साग आदि प्रदर्शित कर ब्रह्मचारियों ने दर्शकों को मोह लिया। इस अवसर पर आधुनिक भीम एवं कण्वाश्रम गुरुकुल के संस्थापक ब्र० विश्वपाल जयन्त ने विविध प्रकार के शारीरिक बल के खेलों का प्रदर्शन किया साथ ही गुरदासपुर पुलिस कर्मी श्री मनोहरसिंह कलसी ने शरीर के अग प्रत्यगों को तोड़कर फिर जोड़ने का प्रदर्शन किया और दर्शकों का मनोरंजन किया।

वेदध्वनि एवं समाचार प्रसारण :

इस वर्ष के प्रारम्भ से ब्रह्मचारियो द्वारा अपना एक प्रसारण केन्द्र स्थापित किया गया जहां से प्रातः ४-३० बजे व साय ६-३० बजे वेदमंत्रो/भजनों का प्रसारण किया जाता है। रात्रि ८-०० बजे दैनिक समाचार प्रसारित किये जाते है। इसे ब्रह्मचारियों को देश-विदेश की गतिविधियो का पता चलता है, ये समाचार हिन्दी, अग्रेजी और संस्कृत तीनो भाषाओं मे प्रसारित किये जाते है। इससे ब्रह्मचारियों की तोनों भाषाओं की पुष्टि होती है।

इन समाचारों में अग्रेजी के समाचार लेखन के लिए अग्रेजी विभागाध्यक्ष श्री सदाशिव भगत व हिन्दी सस्कृत समाचारों के लिये आश्रमाध्यक्ष श्री ईश्वर भारद्वाज बधाई के पात्र हैं। समाचार तथा वेदध्वनि प्रसारण से गुरुकुल परिसर के अतिरिक्त जगदीशपुर व जमालपुर गांवों के निवासी भी अवश्य ही लाभान्वित हुए है।

राकेश कैला स्मृति क्रीड़ा उद्यान :

दिल्ली निवासी श्री राममूर्ति कैला ने ब्रह्मचारियों की गतिविधियों तथा क्रीड़ाभावना को देखकर ४०००/ की क्रीडासामग्री दान स्वरूप प्रदान की। इस क्रीड़ा सामग्री से आश्रम उद्यान के एक प्रांगण को राकेश कैला स्मृति बाल क्रीड़ा उद्यान के नाम से सुसज्जित किया गया है।

कृषि फार्म

गत वर्ष कृषि फार्म की लगभग सभी भूमि खाली रही इस वर्ष फार्म को लगभगसभी भूमि को जोतकर कृषि योग्य बनायागया।

धनाभाव के कारण खाद की समुचित व्यवस्था न हो सकी फिर भी धान तथा गेहूं की पर्याप्त उपज हुई। इसके अतिरिक्त हरा चारा जैसे बरसीम चरी आदि की उपज से भी अपनी गौशाला की आवश्यकता पूर्ति करने के उपरान्त शेष चारा बेचकर गुरुकुल को आर्थिक लाभ पहुंचाया गया।

वर्ष भर में कृषि फार्म से लगभग एक लाख बीस हजार रु० की आय हुई।

विद्यालय विभाग

१. स्टाफ की स्थिति–

किसी भी संस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिए स्टाफ व छात्रों की उचित संख्या होना अनिवार्य है। इस वर्ष सत्रारम्भ में मुख्याध्यापक सहित सात अध्यापक, एक लिपिक, दो अधिष्ठाता एवं भृत्य कार्यरत थे, जो कि सर्वथा अपर्याप्त थे। अतः कार्य सुचारु रूप से चलाने के लिए शीघ्र ही सात अध्यापकों, दो अधिष्ठाताओं तथा एक भृत्य की नियुक्ति की गई। नव नियुक्त अध्यापकों में से ही एक अध्यापक ने आश्रमाध्यक्ष और एक ने कम्पाउंडर का भार सभाला हुआ है। इस प्रकार इस समय विद्यालय में १३ अध्यापक, चार अधिष्ठाता, दो भृत्य एवं एक लिपिक सेवा-रत हैं। अक्तूबर से दैनिक वृत्ति पर एक माली की नियुक्ति भी की गई है। विद्यालय तथा आश्रम का परिसर सुन्दर बनाने में उसका महत्वपूर्ण योगदान है।

२. विद्यार्थियों की स्थिति –

जुलाई से प्रारम्भ होने वाले इससत्र में नवीन ब्रह्मचारियों की संख्या ६६ रही। ११३ ब्रह्मचारी पूर्व से अध्ययन रत थे। इस प्रकार कुल छात्र संख्या २१२ रही, इनमें से ५५ ब्रह्मचारियों के नाम विविध कारणों से पृथक हुए। वर्तमान समय में १५७ ब्रह्मचारी आश्रम पद्धति तथा ६३छात्र गुरुकुल परिसर के कर्मचारियों के शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। वर्तमान समय में विद्यार्थियों की कुल संख्या की दृष्टि से अभी न्यूनता है।

-३. प्रगति एवं उपलब्धियां (स्टाफ व छात्रों द्वारा)-

(क) शैक्षणिक–सत्रारम्भ मे हो सभी छात्रों के लिए पाठ्य सामग्री की समुचित व्यवस्था की गई, साथ ही विद्याधिकारी (प्रथम व द्वितीय खण्ड) के पाठ्य-क्रम का सशोधन कर पाठ्य पुस्तके उपलब्ध कराई गई। इस समय तक निरन्तर एव नियमित रूप से सभी श्रेणियों मे विषयानुक्रम से सुव्यवस्थित शिक्षा जारी है। इस समय छात्रो के आत्म-परीक्षण एवं परीक्षोचित योग्यता के अनुभव के लिए कार्य चल रहा है। १० जनवरी से २२ जनवरी तक अर्द्ध-वार्षिक परीक्षाएं सम्पन्न कराई गई २० अप्रेल से १ मई तक प्रथम से अष्टम श्रेणी तक की परीक्षाएं सम्पन्न हुई। २६ अप्रेल १० मई तक विद्याधिकारी की परीक्षाएं सम्पन्न हुई है। इस वर्ष का परीक्षा परिणाम भी उत्तम रहने की आशा हैं।

(ख) क्रीडा– शैक्षणिक एव बौद्धिक विकास का भी शिक्षा में महत्वपूर्ण स्थान है। क्रीड़ा प्रशिक्षक श्री चन्दकिशोर जी का प्रयास स्तुत्य है। फुटबाल, वालीबाल, हाकी, गोला, भाला फेंक, दौड़ आदि के अतिरिक्त जिमनास्टिक व योगाभ्यास कराकर छात्रों का पूर्ण शारीरिक विकास किया जा रहा है। योगासन के लिए श्री भारद्वाज जी (आश्रमाध्यक्ष) का योगदान प्रशसनीय है। साथ ही पी० टी० आई० श्री रणजीतसिह जी लेजम, पी०टी०, स्पूत-निर्माण, लाठी चलाना, मल्लखम्भ आदि कराकर ब्रह्मचारियों की शारीरिक पुष्टि कर रहे हैं।

इसी संदर्भ में १५ अगस्त, ८१ को शुभ बेला में श्री रणजीत जी के नेतृत्व मे विद्यालय छात्रों ने समस्त कुलवासियों के समक्ष लेजिम पी०टी० आदि का प्रदर्शन किया। पूर्व कुलपति व वर्तमान परिद्रष्टा श्री पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालङ्कार के आगमन पर गुरुकुल इण्टर साइंस व विद्यालर-ब्रह्मचारियों के मध्य आकर्षक क्रिकेट मैच का आयोजन किया गया। ६ तथा ७ नवम्बर को क्षेत्रीय क्रीड़ा

प्रतियोगिता की गई, जिसमें दशम कक्षा के ब्र० रणवीर ने व्यक्तिगत चेम्पियनशिप प्राप्तकी। इस प्रतियोगिता मे विभिन्न विद्यालयों/महा-विद्यालयों के १५० (लगभग) विद्यार्थियों ने भाग लिया। विद्यालय के अन्य कई ब्रह्मचारियों ने प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किये। इसके अतिरिक्त गुरुकुल महाविद्यालय व ज्वालापुर व डोई-वाला क्लब के साथ ब्रह्मचारियों के क्रिकेट का आयोजन किया गया। मान्य सहायक मुख्याधिष्ठाता जी के प्रयत्नो से क्रीड़ा सामग्री मंगाई, गई, जिससे ब्रह्मचारियो मे एक नवीननस्फूर्ति एव चेतना जागृत हुई।

(ग) सांस्कृतिक कार्यक्रम- विद्यालय के ब्रह्मचारियो को सांस्कृतिक कार्यक्रमो मे विशेष रूप से भाग लेने के लिए उत्साहित किया जाता है। वन-महोत्सव पर कागड़ी ग्राम मे आयोजित कार्य-क्रम में विद्यार्थियो ने सङ्गठित रूप से भाग लिया, विश्वविद्यालय परिसर मे हुये समारोह में भी छात्रों ने विशेष भाग लिया। श्रावणी पर्व के अवसर पर भी छात्रो ने अपूर्व उत्साह से भाग लिया। स्व-तन्त्रता दिवस पर विभिन्न कायक्रमो मे भाग लिया। ब्र० राजेश का कवितापाठ तथा भाषण ब्रह्मचारियों का मन मोह लिया। सस्कृत-दिवस पर विश्वविद्यालय के सस्कृत-विभाग की ओर से आयोजित कार्यक्रम में श्लोक-गायन करके ब्र० हरिशङ्कर ने प्रथम, ब्र० प्रदीप ने द्वितीय तथा ब्र० राजेश ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। शिक्षक दिवस पर आयोजित कार्यक्रम मे ब्रह्मचारियो ने नवीन परम्परा डाली। माल्यार्पण द्वारा अपने गुरुओ का सम्मान करके भारतीय सस्कृति मे स्थिर गौरव का प्रदर्शन किया।

इसके अतिरिक्त रोटरी क्लब ज्वालापुर मे आयोजित आशु भाषण प्रतियोगिता मे ब्र० राजेश अष्टम ने (प्रथम) तथा चित्रकला प्रतियोगिता में ब्र० दीपक चतुर्थ ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।

गणतन्त्र दिवस पर आयोजित कार्यक्रम मे विद्यालय के ब्रह्म-चारियों ने राष्ट्रगान गाकर ध्वजारोहण किया तथा लेजिम प्रदर्शन हेतु सभी तैयारिया की थी, जिसे वर्षा के कारण स्थगित करनापड़ा।

(घ) **धर्मशिक्षा– आश्रम** में प्रतिदिन प्रातः एवं सायं संध्या-हवन नियमित रूप से होता है। इसके अतिरिक्त इस वर्ष धर्मशिक्षा के क्षेत्र में एक नई उपलब्धि हुई। मान्य कुलपति जी की प्रेरणा से वेद–सप्ताह में सत्यार्थ प्रकाश की 'सत्यार्थ-रत्न' परीक्षा विद्यालय के ७५ब्रह्मचारियों ने उत्तीर्ण की तथा पारितोषिक प्राप्त किये। उक्त परीक्षा आश्रमाध्यक्ष श्री ईश्वर भारद्वाजजी के सद्प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप ही सम्पन्न हो सकी।

(ङ) दशहरे के अवकाश पर मान्य सहायक मुख्याधिष्ठाता जी के निर्देशन में सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी के अवसर पर एक सांस्कृतिक यात्रा का आयोजन किया गया। विद्यार्थी-दल जयपुर, अजमेर, माऊन्ट आबू, हल्दीघाटी आदि स्थानों पर भ्रमण करता हुआ, ऐतिहासिक ज्ञान की वृद्धि करके गुरुकुल लौटा।

(च) वेदमन्त्र सग्रह एवं प्रसारण केन्द्र– गत वर्ष जिस प्रकार ब्रह्मचारियों को श्लोक कण्ठस्थ कराकर उनको 'जीवन-ज्योति' नाम से प्रकाशित किया गया था, उसी प्रकार इस वर्ष भी मान्य कुलपति जी के सद्प्रयत्नों से पं० आत्मदेव जी विद्यालङ्कार द्वारा ब्रह्मचारियों को वेदमन्त्र याद कराने का कार्य आरम्भ किया गया जिसमें प्रो० चन्द्रशेखर त्रिवेदी जी ने गत वर्ष की भांति कार्य सम्पन्न कराने में योगदान किया। आश्रमाध्यक्ष श्री भारद्वाज जी ने इन मन्त्रो को कण्ठस्थ कराने का दायित्व लिया और स०मुख्याधिष्ठाता श्री जितेन्द्र जी के सहयोग से उन्होंने इस कार्य को सम्पन्न कराया साथ ही पं० आत्मदेव जी के नेत्र चिकित्सा हेतु जाने के पश्चात् उन्होंने जिस लगन से इस कार्य को गतिदी, वह सराहनीय है। यही नहीं 'जीवन ज्योति' की भांति इस वर्ष 'गोवर्द्धन ज्योति' नाम से वे मन्त्र पुस्तकाकार मे भी प्रकाशित हुए। जिसका विमोचन उ० प्र० के शिक्षा मन्त्री श्री नौनिहालसिह द्वारा वेदारम्भ संस्कार में १३ अप्रैल को किया गया। इन मन्त्रों का पद्यानुवाद भी पं० आत्मदेवजी व श्री भारद्वाजजी द्वारा किया गया। गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी बंघड विद्या सभा ट्रस्ट, जयपुर ने पुस्तक हेतु १०००) रुपये की राशि भेंट की, जिसका धन्यवाद करना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूं।

ब्रह्मचारियों द्वारा अपना एक प्रसारण केन्द्र भी स्थापित किया गया है,जहां से प्रात:४-३०बजे वेद मन्त्र,भजन आदि का प्रसारण तथा सायंकाल में समाचारों का प्रसारण किया जाता है। समाचारो का प्रसारण हिन्दी, सस्कृत व अंग्रेजी तीनों भाषाओं में किया जाता है। हिन्दी-संस्कृत के समाचार श्री भारद्वाज जी व अंग्रेजी के समाचार श्री भगतजी (अंग्रेजी विभागाध्यक्ष) लिखते है, जो विभिन्न ब्रह्मचारियों द्वारा प्रसारित किये जाते हैं। उक्त समाचारों द्वारा व वेद-ध्वनि द्वारा निश्चित रूप से गुरुकुल परिसरवासी लाभान्वित होते है। इन समाचारों के प्रसारण मे प० चन्द्रकेतु शर्मा का योगदान प्रशंसनीय है। साथ ही ब्र० अर्जुन कुमार (दशम), ब्र०पूरणचन्द (अष्टम), ब्र० नरेन्द्र कुमार (नवम), ब्र० हरिशङ्कर (अष्टम), ब्र० संजय कुमार निल्लो (सप्तम्), ब्र० मदनमोहन(सप्तम), ब्र० अजय कुमार(अष्टम) आदि ने समाचार प्रसारण में रुचि लेकर इस कार्यक्रम को गति दी। वे बधाई के पात्र हैं।

(छ) श्रद्धानन्द स्मारक टूर्नामिन्ट— स्वामी श्रद्धानन्द सप्ताह (२३-३१ दि०) में विद्यालय विभाग की ओर से कई कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। २३ दिसम्बर को शोभायात्रा में ब्रह्मचारियों द्वारा लेजम व पी०टी० प्रदर्शन के अतिरिक्त गीत-गायन किये गए। स० मुख्याधिष्ठाता श्री जितेन्द्र जी के नेतृत्व मे जुलूस वेद–मन्दिर मे जाकर एक सभा में परिणत हुआ। इस सप्ताह मे विद्यालय-विभाग व विश्वविद्यालय विभाग के मध्य क्रिकेट मैच का आयोजन किया गया। दो दिवसीय अन्तर्गुरुकुलीय क्रीड़ा प्रतियोगिता मे हमारे ब्रह्मचारियों द्वारा प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किये गए।

इस सप्ताह का विशेष आकर्षण था– "स्वामी श्रद्धानन्द स्मारक हाकी टूर्नामिन्ट।" पुरानी कड़ियों को जोड़ने का एक लघु प्रयास इस वर्ष किया गया, जिसमें पूर्ण सफलता मिली। तीन दिवसीय इस आयोजन में लगभग १० टीमों ने भाग लिया तथा हाकी टूर्नामेन्ट की स्मृति पुनः जागृत हुई।

४- अनुशासन एवं भोजन व्यवस्था-

इस क्षेत्र में कुछ नई उपलब्धियाँ हुई हैं। मान्य सहायक मुख्याधिष्ठाता श्री जितेन्द्र जी के प्रयास से भोजन भण्डार मे नई स्टील को थालियों की व्यवस्था की गई। छात्रों को भोजन एवं अल्पाहार उचित समय पर प्राप्त होता रहा है।

अनुशासन की दृष्टि से आश्रमाध्यक्ष श्री ईश्वर भारद्वाज जी पूर्ण निष्ठा से कर्त्तव्यरत हैं। किसी भी समारोह अथवा कार्यक्रम में ब्रह्मचारियों को इस दृष्टि से परखा जा सकता है। विद्यालय, आश्रम तथा क्रीड़ास्थल- सभी जगह छात्रों का अनुशासित रूप ही देखने मे आता है। सभी छात्र आश्रम में पारिवारिक वातावरण निर्मित किये रहते हैं। बाहर से आये व्यक्ति को ऐसा आभास होता है, जैसे ये सभो ब्रह्मचारी अलग-अलग प्रान्त के नही, अपितु एक ही परिवार के हैं। यह प्रेम मान्य स० मुख्याधिष्ठाता श्री जितेन्द्र जी, आश्रमाध्यक्ष श्रीभारद्वाज जी, अधिष्ठाता समुदाय-पं० चन्द्रकेतुजी, हाकिमसिहजी श्री ईश्वरसिह आर्य जी व पं० वासुदेव जी के सद्‌प्रयत्नों द्वारा ही उत्पन्न हो सका है। साथ ही श्री मदनपाल जी कम्पाउडर का कार्योल्लेख करना भी अनिवार्य समझता हूं,जो अहोरात्रि ब्रह्मचारियों के स्वास्थ्य का पूर्ण ध्यान रखते है। ब्रह्मचारियों को किसी प्रकार की असुविधा न हो इसलिए वे हर कक्षा मे, हर कमरे मे स्वयं जाकर ब्रह्मचारियों का निरोक्षण करते हैं।

५-सफाई आदि की व्यवस्था :-

यद्यपि सफाई आदि की दृष्टि से न्यूनतायें रह सकती हैं फिर भो ब्रह्मचारियों के आश्रम, विद्यालय-भण्डार तथा विद्यालय की सफाई का विशेष ध्यान रखा जाता है। आश्रम का उद्यान व विद्यालय-प्रांगण माली चन्द्र प्रकाश व भृत्य श्री दिलबागसिह व श्री प्रकाशचन्द्र के प्रयत्नों तथा ब्रह्मचारियों की सफाई पसन्दगी के कारण चमकता हुआ दृष्टिगोचर होता है। अमृत-वाटिका व स्नानागार की ओर भी सफाई हेतु ध्यान जाना आवश्यक है, यद्यपि ब्रह्मचारी समय-समय पर इनकी सफाई में भी रुचि लेते रहते हैं।

६- अन्य गतिविधियाँ—

ब्रह्मचारियों को उत्सवावसरों पर दिशानिर्देशन व प्रेरणा प्रदान करने वाले वक्तव्यों द्वारा सहायक मुख्याधिष्ठाता श्री जितेन्द्रजी द्वारा उद्बोधित किया जाता है। वे स्वयं आश्रम व विद्यालय में जाकर कार्य का निरीक्षण करते रहते हैं। सम्पूर्ण व्यवस्था सुचारू रूप से चल रही है। बाल सभाओं का आयोजन इस दिशा में एक ठोस कदम है। ब्रह्मचारियों के मन को झिझक दूर करने के लिए आवश्यक है कि उनको बोलने का अवसर दिया जाये। उनको सामान्य ज्ञान की दृष्टि से भी पुष्ट किया जाता है। नन्हें ब्रह्मचारियों द्वारा वृक्षारोपण से लेकर उनकी देखभाल तक की जिम्मेदारी है। वे इनकी सुरक्षा का विशेष ध्यान रखते हैं।

●●●

वेद एवं कला महाविद्यालय

वेद विभाग

१-विभाग का सामान्य परिचय

वेदविभाग वैसे तो गुरुकुल कांगड़ीविश्वविद्यालय की १६०२ मे स्थापना से ही विद्यमान है, परन्तु इस रूप मे स्थापना तभी हुई जबकि १६६२ मे विश्वविद्यालय-अनुदान-आयोग ने इसे विश्वविद्यालय के समकक्ष घोषित किया। १६६२ से पूर्व इस विभाग मे पं० दामोदर सातवलेकर, आचार्य अभयदेव, प० विश्वनाथ जी विद्यामार्तण्ड, पं० बुद्धदेव जी विद्यालङ्कार एव आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति कार्य कर चुके हैं।

इस विभाग मे इस समय एक रीडर तथा तीन प्रवक्ता हैं :-

२-विभागीय उपाध्याय :-

१-आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार, रीडर (अध्यक्ष तथा आचार्य एवं उप-कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय)

२-डा० भारत भूषण विद्यालंकार, प्रवक्ता।

३-डा० सत्यव्रत राजेश, प्रवक्ता।

४-प्रो० मनुदेव बन्धु, प्रवक्ता।

३-अनुसन्धान कर्त्ता :-

१-इस विभाग से अब तक दो अनुसंधान कर्त्ताओं ने डाक्ट्रेट की उपाधि प्राप्त की है, जिनके नाम निम्नलिखित हैं :-

१–डा० दिलीप वेदालंकार।

२–डा० विश्वपाल वेदालंकार।

इस विभाग में बहुत से शोधार्थी शोध कार्य कर रहे हैं।

४-विभागीय उपाध्यायों का लेखन एवं वक्तृत्व सम्बन्धी कार्य :-

(१) सन् १९८१-८२ मे आचार्य रामप्रसादजी वेदालंकार (विभागाध्यक्ष) की निम्न ९ पुस्तके प्रकाशित हुई :-

१-शयन-विनय, २-वैदिक पुष्पाञ्जलि, भाग ३, ३-वैदिक रश्मियां, भाग १, ४-वैदिक रश्मियां, भाग २ ५-वैदिक रश्मियां, भाग ३ ६-ब्रह्म यज्ञ (वैदिक संध्या), ७-विनय सुमन, भाग ३, ८-विदुर जी की दृष्टि में बुद्धिमान् कौन, भाग-२ ९-वैदिक आदर्श परिवार।

अब तक कुल प्रकाशित कार्य :-

कुल प्रकाशित पुस्तकें :-

१–कौन चैन की नींद नही सो सकता और उसके उपाय

२–विदुर जो की दृष्टि मे बुद्धिमान् कौन ? भाग १ व भाग २

३–महान् विदुर जी के महान् उपदेश

४–वेद सुधा, भाग १ व भाग २

५–वेदोपदेश, भाग १

६–वैदिक पुष्पाञ्जलि, भाग १, भाग २ भाग ३

७–विनय सुमन, भाग १, भाग २, भाग ३

८–प्रार्थना सुमन, भाग १ व भाग २

९–प्रार्थना-प्रसून, भाग १

१०–प्रार्थना-प्रदीप, भाग १

११–वैदिक रश्मियां, भाग १, भाग २ व भाग ३

१२–अनन्त की ओर
१३–वैदिक गृहस्थाश्रम (सुखी गृहस्थ)
१४–प्रभात वन्दन
१५–शयन विनय
१६–ब्रह्म यज्ञ (वैदिक संध्या)
१७–वैदिक आदर्श परिवार
१८–वैदिक त्रैतवाद—अप्रकाशित।

इस प्रकार कुल २६ पुस्तकें वैदिक साहित्य से सम्बन्धित प्रकाशित हुई।

(२) छान्दोग्य उपनिषद् का विवेचनात्मक-अध्ययन पर भी पर्याप्त कार्य किया जा सकता है जो अभी अप्रकाशित है।

(३) इसके अतिरिक्त 'अष्टांग योग', 'वेदाध्ययन', 'याज्ञवल्क्य मैत्रेयी संवाद', नचिकेता के तीन वर आदि पुस्तकें अभी अप्रकाशित हैं।

(४) इस लेखन और प्रकाशन के अतिरिक्त भी वैदिक-साहित्य के प्रचार एवं प्रसार के लिए अवकाश की सुविधा सम्भव होने पर कार्य किया।

(५) २८-५-८१ को "सर्वोदय स्त्री जागरण शिविर" (जो शामली में सम्पन्न हुआ) की अध्यक्षता तथा उसमें दहेज, शराबबन्दी आदि पर अध्यक्षीय भाषण।

(६) १७ सितम्बर ८१ को पौडी गढ़वाल स्थित कण्वाश्रम गुरुकुल महाविद्यालय में छात्रों में "शिक्षा एवं चरित्र निर्माण" विषय पर व्याख्यान।

(७) ६-११-८१ को पब्लिक स्कूल शिवाजी मार्ग, पठानकोट में छात्रों को "जीवन का महत्व और उसका निर्माण" इस विषय पर व्याख्यान।

(८) २१-११-८१ को गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली में "चारों वेदों की परस्पर संगति पर व्याख्यान" तथा "यज्ञ का महत्व और उसको मानव जीवन में उपयोगिता" पर विचार रखें।

(९) ७-१२-८१ को लखीमपुर खीरी मे वेद सम्मेलन, एवं गौरक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता तथा उसमें वेद एवं गोपालन के महत्व पर अध्यक्षीय भाषण तथा पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय स्मृति माला का विमोचन किया।

(१०) २७ जनवरी ८२ को आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर-प्रदेश के कालेजों के शिक्षक-शिविर में वेद मन्त्रों के आधार पर "शिष्य के कर्तव्य एवं उसके प्रति अध्यापक के उत्तरदायित्व" विषय पर उद्घाटन भाषण दिया तथा २८ जनवरी को "वेदों में अध्यात्मवाद" इस विषय पर यजुर्वेद के ४०वे अध्याय के आधार पर व्याख्यान दिया।

(११) ३०–३१ जनवरी ८२ को गुरुकुल महाविद्यालय कण्वाश्रम में "यज्ञ का महत्व और उसके लाभ" एवं "वैदिक स्वर्गाश्रम" विषयों पर व्याख्यान दिये।

(१२) २मार्च८२ को आर्यकन्या इण्टर कालेज मुरादाबाद मे पुरस्कार वितरण एवं छात्राओं में 'शिक्षा का महत्व' एवं 'उसका जीवन केसाथ सम्बन्ध' विषय पर तथा "वेदाध्ययन और मानव जीवन के लिए इसकी उपयोगिता" विषय पर व्याख्यान दिये। इनके अतिरिक्त भी विभिन्न स्थानों मे यथा सम्भव वेद विषयो पर व्याख्यान देने का अवसर प्राप्त हुआ।

(१३) हरथला रेलवे कालोनी मुरादाबाद में वैदिक विषयों पर व्याख्यान दिये। इसके अतिरिक्त भी विभिन्न स्थानो में यथा-सम्भव वेद विषयों पर व्याख्यान देने का अवसर प्राप्त हुआ।

(१४) श्री सत्यप्रकाश रामबहल- महर्षिदयानन्द की बृहत्रयी,आलोच-नात्मक अध्ययन विषय पर आचार्य रामप्रसाद जी वेदालंकार के निर्देशन में कार्य कर रहे हैं।

(२) १- डा० भारत भूषण जी ने इस सत्र में २१ अक्टूबर से २६ अक्टूबर तक पंचम विश्व संस्कृत सम्मेलन मे वाराणसी मे वेद विभाग की ओर से विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया तथा मेरठकालेज मेरठ के तत्वावधान मे मेरठ विश्व-विद्यालीय संस्कृत परिषद् में "आर्यों का आदि देश" इस विषय पर निबन्ध पढ़ा।

२-इसी प्रकार अन्य शैक्षणिक गतिविधियों में सोत्साह भाग लिया।

(३) विभाग के प्रवक्ता डा० सत्यव्रत राजेश जी, अध्ययन-अध्यापन के अतिरिक्त विभिन्न स्थानों में निम्न कार्यक्रमों में भाग लेने गये

१-हरिजनोत्थान कार्य - कीरतपुर तथा कोटद्वार।

२-वेद सम्मेलन का सभापति- पठानकोट।

३-विशेष अतिथि-गुरुकुल नारसन।

४-रविदास जयन्ती पर रुड़की मे भाषण।

अन्य शैक्षणिक गतिविधियों में सोत्साह भाग लिया।

(४) प्रवक्ता प्रो० मनुदेव बन्धु जी के निम्न लेख भारत की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए—

१-"मानवता की ओर" पुस्तक का लेखन तथा प्रकाशन।

२-निम्न साहित्यिक लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित—

[क] आचार्य यास्क और वेद - विश्वज्योति, परोपकारी तथा जनज्ञान में।

[ख] वेद : निर्वचन शास्त्र का आदिस्रोत- दयानन्द सन्देश, सुधारक में।

[ग] विज्ञान का आदि स्रोत 'वेद'- जनज्ञान में।

[घ] सत्व, रज व तम का मन और इन्द्रियों का प्रभाव–विश्वज्योति में।

[ड.] सत्य क्या है ?-प्रकाशित मन में (पुरस्कृत)

[च] वेद और दयानन्द- जनज्ञान, गुरुकुल पत्रिका मे।

[छ] गृहस्थ और ब्रह्मचर्य - प्रकाशित मन में।

[ज] बिहार तथा बंगाल के नगरों मे वैदिक सिद्धान्तो पर व्याख्यान तथा प्रवचन।

इसके अतिरिक्त सन् १९८०-८१ की वार्षिक विवरणिका के मुद्रण, प्रकाशन तथा लेखशोधन कार्य मे पूर्ण सहयोग किया।

विभागीय छात्रों का कार्य :-

एम॰ ए॰ द्वितीय वर्ष के छात्र श्री धनीराम सैनी ने अपने विभागाध्यक्ष के सरक्षण में सहारनपुर जनपद के विभिन्न ग्रामो तथा शिक्षण संस्थाओं में जाकर वेद का प्रचार-प्रसार किया। उन्होंने जनता इन्टर कालेज बेहट, भारतीय हाई स्कूल गंगोह, आर्य इण्टर कालेज छुटमलपुर, जूनियरहाई स्कूल, कैलाशपुर ग्राम अजीतपुर तथा जूनियरहाई स्कूल लश्करपुर, सबदलपुर कन्या हाईस्कूल, आयसमाज गगोह, आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में विभिन्न वेदविषयों परमहत्व-पूर्ण भाषण दिये। गुरुकुल महाविद्यालय, खुब्बनपुर, शिवमन्डी, हरौडा प्रगना ग्राम मे "वैदिक अर्थात शिव" शीर्षक पर व्याख्यान दिया। इसी प्रकार अन्य विभिन्न स्थानों पर जाकर वैदिक धर्म का प्रचार किया, जिससे छात्रको काफी प्रशंसा मिली तथा विश्वविद्यालय को भी सम्मान प्राप्त हुआ।

इसके अतिरिक्त इस वर्ष अलङ्कार के छात्र "सरस्वती-यात्रा" पर उदयपुर गये।

संस्कृत विभाग

३१ जौलाई १९८१ को संस्कृत विभागाध्यक्ष डा० निगम शर्मा के निर्देशन में संस्कृत विभाग को उन्नत करने के लिए विभिन्न प्रकार की योजनायें तैयार की गयी तथा उन योजनाओं को मूर्त रूप देने के लिये स्व-कार्यालय के माध्यम से विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से प्रार्थना की गयी।

८ अगस्त १९८१ को विभाग के अन्तर्गत श्री देवकेतु की पी-एच० डी० उपाधि हेतु मौखिक परीक्षा करायी गयी।

१४ अगस्त १९८१ को संस्कृत विभाग के अन्तर्गत संस्कृत दिवस समारोह मनाया गया, जिसमें पंचपुरी के सभी प्रतिष्ठित विद्वानों को आमन्त्रित किया गया।

२ सितम्बर १९८१ को पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार "विजीटर" गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय का विभाग की ओर से स्वागत किया गया, उन्होंने छात्रों को संस्कृत के प्रचार एवं प्रसार के विषय मे उद्बोधन किया।

५ सितम्बर १९८१ को विश्वविद्यालय में शिक्षक दिवस मनाया गया, जिसमें विभाग ने पूर्ण सहयोग किया।

१८ सितम्बर को गुरुकुल कण्वाश्रम में संस्कृत पाठ्यक्रम का निरीक्षण करने के लिए डा० निगम शर्मा ने विश्वविद्यालय की ओर से भाग लिया।

१८ अक्तूबर १९८१ को ऋषि संस्कृत महाविद्यालय, खड़खड़ी हरिद्वार में डा० निगम शर्मा ने संस्कृत विभाग की ओर से भाषण दिया।

१६ अक्तूबर को "संस्कृत के छात्र सरस्वती यात्रा में भाग लेने के लिये उदयपुर गये।"

२० अक्तूबर को वाराणसी में सम्पन्न षष्ठ विश्व संस्कृत सम्मेलन में संस्कृत-विभाग की ओर से डा० निगम शर्मा ने भाग लिया तथा 'मल्लिनाथ' पर अपने शोध-पत्र का वाचन किया।

नवम्बर १९८१ में दिल्ली विश्वविद्यालय में आयोजित "इन्द्र विद्यावाचस्पति आशु संस्कृत भाषण प्रतियोगिता में संस्कृत विभाग के छात्र श्री वसन्त कुमार तथा श्री सुरेन्द्र कुमार ने भाग लिया तथा १०० रु० का पुरस्कार प्राप्त किया।

११ दिसम्बर १९८२ को डा० निगम शर्मा ने गढ़वाल वि०वि० की संस्कृत गोष्ठी में भाषण किया।

१५ जनवरी १९८२ को संस्कृत संरक्षण दिवस हरकी पौड़ी सुभाष घाट, हरिद्वार पर मनाया गया, जिसमें समस्त पंचपुरी के संस्कृत विद्यालयों के छात्र एवं अध्यापकों ने भारी सख्या में भाग लिया। जिसके विशाल जनसमूह को अध्यक्ष रूप में प्रो० वेदप्रकाश जी शास्त्री ने सम्बोधित किया एवं संस्कृतोत्थान एवं रक्षण के उपायों पर प्रकाश डाला।

१६ जनवरी १९८२ को डा० निगम शर्मा ने मेरठ कालेज में संस्कृत विभाग के अन्तर्गत भाषण किया तथा १७ जनवरी १९८२ को विभागीय प्राध्यापकों के साथ "हस्तिनापुर" की "सरस्वती यात्रा में भाग लिया"।

२३ जनवरी १९८२ को कुरुक्षेत्र वि० वि० में आयोजित संस्कृत वाद-विवाद प्रतियोगिता में विभाग के दो छात्रों (श्री बसन्त

कुमार तथा श्री सुरेन्द्र कुमार) ने भाग लिया । जिसमे इन्होंने प्रथम और द्वितीय स्थान प्राप्त किया एवं सभी भाग लेने वाले वक्ताओं मे दोनों को सर्वश्रेष्ठ घोषित करते हुए चल विजयोपहार से सम्मानित किया गया।

इसी संदर्भ मे २८ जनवरी १९८२ को उक्त विजयी छात्रों के अभिनन्दन हेतु संस्कृत-विभाग में एक समारोह डा॰ धर्मेन्द्रनाथ जी शास्त्री की अध्यक्षता मे सोल्लास मनाया गया।

११ फरवरी १९८२ को संस्कृत विभाग की अनुसंधान समिति की बैठक सम्पन्न हुई। जिसमे शोधार्थियों के शोध विषय स्वीकृत किए गए।

१२ फरवरी १९८२ को संस्कृत विभाग की ओर से दो छात्रों श्री बसन्त कुमार तथा (श्री सुरेन्द्र कुमार) ने सनातन धर्म कालेज अम्बाला छावनी मे आयोजित संस्कृत भाषण एव श्लोकोच्चारण प्रतियोगिता मे भाग लेकर द्वितीय एव तृतीय स्थान प्राप्त किया।

विभागीय उपाध्याय--

डा० निगम शर्मा रीडर एवं अध्यक्ष,
श्री वेदप्रकाश शास्त्री प्रवक्ता
डा० रामप्रकाश शर्मा ,,

●●●

दर्शन शास्त्र विभाग

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

१-स्थापना १९६७
२-स्थापना अध्यक्ष—स्व० पं० सुदेवदेव विद्यावाचस्पति
३-प्राध्यापक गण—डा० जयदेव वेदालंकार कार्यवाहक
एवं योग्यताएं अध्यक्ष नियुक्ति–१९९८

लेख एवं रचनायें

१– महर्षि दयानन्द की विश्वदर्शन को देन
२– उपनिषदों का तत्वज्ञान

इस वर्ष पदेन अध्यक्ष जयदेवजी ने Indian Philosophical Congress में उत्कल विश्वविद्यालय भुवनेश्वर मे भाग लिया और "Vedic Ontology" पर शोध-पत्र पढ़ा।

डा० जयदेव जी के इस वर्ष के लेख

१– प्राचीन वाङ्मय में पर्यावरण के उपाय।
२– वैदिक साहित्य में विमान विद्या(आर्य भट्ट विज्ञान पत्रिका तथा Vedic Path में छपे हैं।)

व्याख्यान

१५ व्याख्यान आर्यवानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर।

विषय-

१ - वैदिक तत्व दर्शन

२ - अध्यात्मवाद

३ - द्वैतवाद

४ - उपनिषदों में ज्ञान एवं कर्म का विवेचन

५ - योग का महत्व

६ - योग का वैज्ञानिक स्वरूप

७ - यज्ञ का वैज्ञानिक रूप

८ - वेदों में पारिवारिक समस्यायें

९ - ब्रह्म का स्वरूप

१० - जीवात्मा का स्वरूप एवं परिमाण

११ - कर्म का सिद्धान्त

१२ - ज्ञान एवं कर्म का समन्वय

१३ - हठयोग तथा राजयोग

१४ - सृष्टि रचना में विभिन्न दर्शनों के सिद्धान्त

१५ - आचार शास्त्र

आर्यसमाज रुडकी और आर्यसमाज देहरादून आदि में भी इस वर्ष व्याख्यान हुये।

"उपनिषदों का तत्वज्ञान" शोध ग्रन्थ पर क्रमशः २१ जून और २८ जून ८१ को दैनिक हिन्दुस्तान और नवभारत टाइम्स मे समालोचना छपी है।

२-डा० विजयपाल शास्त्री-प्रवक्ता। नियुक्ति-१९८१

लेख--मेरठ विश्वविद्यालय की संस्कृत शोधपत्रिका में छपा।

विषय--पौरुषेय बोधकी प्रणाली में प्रतिबिम्ब विचार, सिद्धान्त और भेद।

३--श्री योगेन्द्र पुरुषार्थी–अस्थायी नियुक्ति जनवरी८२ मे १६ मई से सेवा मुक्त।

अन्य विवरण

दर्शन विभाग को बोर्ड आफ स्टडीज ने Ph-D हेतु शोध कार्य की संस्तुति कर दी है। शिक्षापटल ने भी दर्शन शास्त्र में शोध करने की स्वीकृति प्रदान कर दी है। अतः शीघ्र ही शोध कार्य भी विभाग में प्रारम्भ होने जा रहा है।

●●●

दीक्षान्त समारोह के अवसर पर संग्रहालय प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए स्वामी ओमनन्द जी ।

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना से ही प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति के पठन-पाठन पर विशेष बल दिया जा रहा है। विभाग के लिए यह गौरव की बात है कि अतीत काल मे उसे आचार्य रामदेव, पं० चन्द्रगुप्त वेदालंकार, डा० सत्यकेतु विद्यालकार औत पं०हरिदत्त वेदालंकार जैसे प्रसिद्ध इतिहास वेत्ताओं का सरक्षण प्राप्त रहा है। विभाग के सभी अध्यापक इस समय भी विभाग को पूर्ण रूप से विकसित करने की दिशा मे क्रियाशील है।

विभाग में कार्यरत अध्यापक :

१-डा० बिनोदचन्द्र सिन्हा, रीडर-अध्यक्ष

२-डा० जबरसिंह सेंगर, लेक्चरर

३-डा० श्याम नारायण सिंह, लेक्चरर

४-डा० काशमीरसिंह भिण्डर, लेक्चरर

५-सुखबीरसिंह (एम०ए०) सहायक क्यूरेटर

स्नातकोत्तर कक्षाओं में परीक्षार्थियों की संख्या

एम०ए० प्रथम वर्ष २५ एम०ए० अन्तिम वर्ष १२

शोध कार्य :

लगभग बारह वर्ष के अल्प समय में अब तक ग्यारह महत्वपूर्ण विषयों पर शोध कार्य पूर्ण किया जा चुका है। इस वर्ष के दीक्षान्त समारोह पर अपने विभाग के वरिष्ठ अध्यापक श्री जबरसिंह सेंगर को "भारत और कम्बुज के प्राचीन सम्बन्ध" नामक विषय पर शोध कार्य के लिए "डा० आफ फिलासफी" की उपाधि प्रदान की गई। दिनांक २७ - ५ - ८२ को विभाग के शोध छात्र श्री ललित पाण्डे ने "मौर्य काल में नौकरशाही" नामक विषय पर अपना शोध प्रबन्ध प्रस्तुत कर दिया है। डा० बी० सी० सिन्हा और डा० जे०एस० सेंगर के कई शोध-लेख वैदिक पाथ तथा अन्य पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। आकाशवाणी नजीबाबाद से डा० सिन्हा की दो महत्वपूर्ण वार्ता भी प्रसारित की गई। ३-४ अक्टूबर १९८१ को मेरठ में Gandhian Movement पर एक क्षेत्रीय सेमीनार का आयोजन किया गया। सेमिनार में डा० सिन्हा ने "गांधी और गुरुकुल शिक्षा" अपना शोध पत्र पढ़ा।

विभाग की अन्य गतिविधियां :

जनवरी १९८२ में विभागीय स्तर पर "आर्यो का आदि देश" नामक विषय पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई। विभाग के सभी अध्यापकों और छात्रों ने इसमें भाग लिया। संगोष्ठी का निष्कर्ष यही निकला कि आर्य भारत के ही मूल निवासी थे। उनके बाहर से आने का कोई भी प्रबल प्रमाण अब तक उपलब्ध नहीं हो सका है।

विभाग के तत्वावधान में अप्रैल १९८२ में एक भव्य प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रसिद्ध आर्य सन्यासी स्वामी ओमानन्द जी ने किया। उद्घाटन के अवसर पर कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र, कुलपति श्री बलभद्र कुमार तथा आर्य जगत के गणमान्य लोग उपस्थित थे। वरिष्ठ अतिथियों में भारत में जर्मनी गणराज्य के दूतावास के मन्त्री श्रीएच०वेगनर सपरिवार उपस्थित थे। इन्होंने हरिद्वार में ऐसे विशाल और सुन्दर संग्रहालय को देखकर

आश्चर्य व्यक्त किया। १४ अप्रैल १९८२ को उत्तरप्रदेश के शिक्षामन्त्री माननीय चौ० नौनिहाल सिंह, पुरातत्व संग्रहालय को देखने आये। संग्रहालय देखकर उन्होंने इसकी बड़ी प्रशंसा की। माननीय शिक्षा मन्त्री के साथ इतिहास परिषद् का एक ग्रुप फोटोग्राफ भी कराया गया।

विभाग के लेक्चरर डा० जबरसिंह सेंगर ने १० व ११ मई ८२ को श्रीनगर (काश्मीर) में आयोजित होने वाली World University Service के सम्मेलन में भाग लिया। विश्वविद्यालय के खेद कूद में सक्रिय योगदान देने वाले डा० श्यामनारायण सिंह और डा० काशमीरासिंह भिंडर के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। गत वर्ष की भांति क्रिकेट के इन्चार्ज डा० श्यामनारायण सिंह और बैडमिन्टन, एथलेटिक तथा हॉकी इन्चार्ज डा० काशमीरसिंह भिंडर रहे।

●●●

हिन्दी विभाग

विभाग का संक्षिप्त परिचय :

इस विश्वविद्यालय में हिन्दी-विभाग प्रारम्भ से ही रहा है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हिन्दी को आर्य भाषा नाम प्रदान किया था उसी के आधार पर इसे आर्यभाषा-विभाग के नाम से अभिहित किया जाता रहा है। इस विभाग में अध्यापन के अतिरिक्त शोध-उपाधि (पी-एच०डी०) हेतु शोधकार्य की भी व्यवस्था है।

स्टाफ का विवरण :

प्रारम्भ में इसमें एक विभागाध्यक्ष तथा एक प्रवक्ता की व्यवस्था थी। बाद में प्रवक्ताओं की सख्या क्रमशः बढ़ते-बढ़ते पहले दो फिर तीन हो गई। इस समय मे विभागाध्यक्ष (एवं रीडर) तथा तीन प्रवक्ता है, जिनके नाम इस प्रकार हैं :-

१- डा० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी	:	रीडर एवं विभागाध्यक्ष
२- डा० विष्णुदत्त राकेश	:	प्रवक्ता
३- श्री ज्ञानचन्द रावल	:	प्रवक्ता
४- डा० भगवान देव पाण्डेय	:	प्रवक्ता

डा०वाजपेयी का 'तुलसी के काव्य का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण' शोर्षक डी०लिट्० का शोध प्रबन्ध इस विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित किया गया है। इस शोध प्रबन्ध को बड़ी मान्यता एवं प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। आलोचकों ने इसे तुलसी-साहित्य की मनोवैज्ञानिक समीक्षा का आधारग्रन्थ माना। इस शोध-प्रबन्ध पर आगरा विश्वविद्यालय द्वारा १९६२ में सर्वोच्च शोध-उपाधि डी०लिट् प्रदान की गई थी।

पुराने डी०लिट्० विद्वानों के मध्य में आज डा० वाजपेयी की स्थिति यह है कि आगरा विश्वविद्यालय के अवकाश प्राप्त प्रथम आठ डी०-लिट्० उपाधियुक्त विद्वानों के पश्चात् आगरा विश्वविद्यालय के शेष हिन्दी के समस्त डी०लिट्० उपाधिधारी विद्वानो में (जिनकी सख्या इस समय इकत्तीस तक पहुंच चुकी है) वह सबसे पुराने है। आगरा विश्वविद्यालय के हिन्दी के डी०लिट्० इस समय अलीगढ, वाराणसी तथा कालीकट जैसे विश्वविद्यालयों में हिन्दी-विभागाध्यक्ष के पदों पर आसीन हैं। तुलसी डी०लिट्० विद्वानों में भी वह डा० उदयभानु सिंह जी के अतिरिक्त विश्वविद्यालयों मे सेवारत विद्वानों में सबसे सीनियर है।

इस विभाग के एक प्रवक्ता डा० विष्णुदत्त राकेश को जोधपुर विश्वविद्यालय से पी०एच०डी० तथा विक्रम विश्वविद्यालय से डी०-लिट्० उपाधि प्राप्त हो चुकी है। दोनों शोध प्रबन्धो मे क्रमशः कुलपति मिश्र एव हिन्दी के ध्वनिवादी आचार्यो पर शोधकार्य प्रस्तुत किया गया था।

इस विभाग के एक अन्य प्रवक्ता डा० भगवानदेव पाण्डेय ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से मध्यकालीन सन्तों पर शोधकार्य करके पी-एच०डी० उपाधि प्राप्त की है।

इस विभाग के एक अन्य प्रवक्ता श्री ज्ञानचन्द रावल इसी विश्वविद्यालय से पी-एच०डी० का शोधकार्य कर रहे हैं। पूर्व-प्रवक्ताओं में डा० प्रेमप्रकाश रस्तोगी इस समय बरेली कालेज बरेली में प्रवक्ता हैं।

विभागीय कार्य :

इस विभाग की महत्वपूर्ण उपलब्धि यह रही है कि इस विश्व-विद्यालय से एम०ए० तथा पी-एच०डी० करने वाले छात्रों को अन्य विश्वविद्यालयों ने प्रवक्ताओं के पद पर नियुक्त किया है। विशेष

रूप से एम०ए० में प्रथम श्रेणी प्राप्त करने वाले लगभग सभी छात्रों को आजीविका प्राप्त हो गई है।

पी-एच०डी०उपाधि प्राप्त करने वाले लगभग सभी शोध-कर्त्ता छात्रों को उनके शोधकार्य का श्रेय प्राप्त हुआ है। वह श्रेय विद्वानों द्वारा की गई प्रशंसा के रूप में है। उनके शोध-प्रबन्धों को उच्चस्तरीय माना गया है।

अन्य उपलब्धियां :

जहां तक उपर्युक्त उपलब्धियां हैं वहीं दूसरी ओर सामाजिक कार्य भी हैं। अभी कुछ दिन पूर्व "इन्द्र विद्यावाचस्पति : जीवन तथा कृतियां" शीर्षक पी-एच०डी० के शोध-प्रबन्ध की मौखिकी हुई है। प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध इस विश्वविद्यालय के स्वर्गीय विद्वान कुलपति के जीवन एवं कृतित्व पर समीक्षात्मक ग्रन्थ है। इसका निर्देशन विभागाध्यक्ष डा० वाजपेयी ने किया है। इसी प्रकार भावी योजना यह है कि आर्यसमाज तथा आर्यभाषा हिन्दी के लिए विभिन्न विद्वानों द्वारा जो-जो कार्य किया गया है उसे प्रकाश में लाया जाय। इसके लिए वृहत योजना बनाई गई है। योजना स्वीकृत होने पर उसके सम्बन्ध में प्रकाश डाला जायेगा।

व्याख्यान :

विभाग में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विद्वान तथा लखनऊ विश्वविद्यालय के अवकाशप्राप्त प्रोफेसर एवं अध्यक्षडा०केसरी नारायणजी शुक्ल, एम०ए०,डी०लिट्० का शोध पर व्याख्यान हुआ। दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एवं तुलसी - साहित्य के विद्वान डा० उदयभानु सिंह जी एम.ए.,पी-एच.डी.,डी.लिट् का भी एक ओजस्वी व्याख्यान हुआ। दोनों विद्वानों के भाषणों से विश्वविद्यालय का साहित्यिक वातावरण जगमगा उठा।

विद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा विजिटर द्वारा
श्री सत्यव्रत सिद्धान्तालङ्कार का स्वागत ।

पत्रिका :

इस विभाग से एक पत्रिका भी प्रकाशित होने लगी है। इसका नाम "प्रह्लाद" रखा गया है ताकि यह सभी को आह्लाद प्रदान करती रहे। इसके दो अङ्क प्रकाशित हो चुके हैं। शेष अङ्क शीघ्र प्रकाशित होने वाले है। यह पत्रिका शिक्षकों तथा छात्रों को मौलिक चिन्तन एवं सूझबूझ के हेतु मार्ग प्रशस्त करेगी। इसका निर्देशन विभागाध्यक्ष डा० वाजपेयी द्वारा किया जा रहा है। सम्पादक मण्डल में कुछ छात्रों को सम्मिलित किया गया है ताकि वे सम्पादनकला का ज्ञान प्राप्त कर सकें।

मनोविज्ञान विभाग

स्टाफ :

१- श्री ओमप्रकाश मिश्र, रीडर-अध्यक्ष

२- डा० हरगोपाल सिंह, प्रवक्ता

३- श्री चन्द्रशेखर त्रिवेदी, प्रवक्ता

४- श्री सतीशचन्द धमीजा, प्रवक्ता

५- श्री लालनर सिंह, प्रयोगशाला सहायक

६- श्री कुंवर सिंह, प्रयोगशाला भृत्य।

इस वर्ष कला एवं वेद महाविद्यालय मे प्रवेश सम्बन्धी समस्त कार्य, कला तथा वेद महाविद्यालय के समस्त-विभाग को तत्कालीन आचार्य डा० गंगाराम जी गर्ग ने मनोविज्ञान विभाग के रीडर श्री ओमप्रकाश मिश्र को सौंप दिया।

मनोविज्ञान विभाग की सभी कक्षाओं मे नियमित पठन-पाठन आचार्य जी के निर्देशानुसार समय से प्रारम्भ हो गया, प्रत्येक शिक्षक ने कक्षा मे पढ़ाने के अतिरिक्त छात्रो की व्यक्तिगत कठिनाईयों का निवारण करने में भरसक सहयोग दिया। इस दिशा में अगले वर्ष और भी प्रयास करने का सकल्प है। माननीय कुलपति श्री हूजा जी द्वारा प्रेरित योजना को अपनाने का संकल्प विभाग ने किया है, जिसमें प्रत्येक छात्र किसी न किसी शिक्षक के संरक्षण मे रहकर अपना सर्वांगीण विकास कर सके।

इस वर्ष विभाग के वरिष्ठ अध्यापक डा० हरगोपाल सिंह के तीन लेख विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। उन्होंने स्वामी राम द्वारा आयोजित अखिल भारतीय सम्मेलन, कानपुर में विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया और योग विषय पर सार-गर्भित भाषण दिया। उनके सम्पादन में विश्वविद्यालय की त्रैमासिक शोध-पत्रिका 'वैदिक-पाथ' नियमित रूप से निकल रही है।

विभाग के प्रवक्ता श्रीचन्द्रशेखर त्रिवेदी को माननीय कुलपति श्री हूजा जी ने एक अतिरिक्त उत्तरदायित्व सौंपा,वे उप-कुलसचिव के पद पर कार्य कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त विद्यालय-विभाग मे छात्रों को संस्कृत के श्लोकों को याद कराने का जो कार्य गत वर्ष अपने हाथ में लिया था, इस वर्ष भी कर रहे हैं।

विभाग के रीडर श्री ओमप्रकाश मिश्र ने इस वर्ष नागपुर मे हुई नेशनल कान्फ्रेन्स आन क्रियेटीविटी मे भाग लिया। उन्होने देहरादून में हुई उत्तर-प्रदेश मनोविज्ञान परिषद् के अधिवेशन मे भाग लिया। उन्हें उत्तर-प्रदेश मनोविज्ञान-परिषद् की शोध-पत्रिका का सम्पादक मनोनीत किया गया है। मनोविज्ञान विभाग मे इस वर्ष 'बोर्ड-आफ स्टडीज' की मीटिंग के सहयोग से विभाग के पाठ्य क्रम का संशोधन एवं आधुनिकीकरण किया गया।

इस वर्ष मनोविज्ञान के रीडर श्री ओमप्रकाश मिश्र को विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षकों के प्रतिनिधि के रूप मे 'सीनेट' में तीन वर्षों के लिये निर्विरोध चुन लिया गया। वह गत आठ वर्षों से शिक्षकों का प्रतिनिधित्व विश्वविद्यालय की सीनेट मे कर रहे हैं इसके अतिरिक्त मान्य कुलपति जी ने क्रीड़ा-विभाग का उत्तरदायित्व भी उन्हे सौंप रक्खा है।

इस वर्ष विभाग मे छात्रों ने एम० ए० स्तर पर शोध कार्य किया।

विभाग के छात्रों ने पठन-पाठन के अतिरिक्त खेलकूद में भाग लिया और विश्वविद्यालय की अनेक टीमों के सदस्य रहे।

इस वर्ष एम०ए० द्वितीय वर्ष में श्री अवनीशसिंह एवं एम०ए० प्रथम वर्ष में श्री अवधेश कुमार को विश्वविद्यालय की ओर से मेरिट स्कालरशिप मिली।

विभाग के लिए यह गौरव की बात है कि विभाग के सभी छात्रों ने सम्पूर्ण वर्ष अनुशासन का परिचय दिया।

विभाग के छात्रों को होली के बाद 'सरस्वती-यात्रा' पर जाने की योजना है।

एम० एस-सी०—गणित विभाग

कला महाविद्यालय

१६ अक्तूबर ८१ को विभागाध्यक्ष श्री प्रो॰ विजयपाल सिंह एवं प्राध्यापक श्री महीपाल सिंह जी, छात्रों को सरस्वती यात्रा के लिए उदयपुर, अजमेर आदि स्थानों पर ले गये। छात्रों ने उदयपुर में हो रहे सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी समारोह में सक्रिय भाग लिया। अजमेर में स्वामी दयानन्द निर्वाण स्थान देखा। इसके अतिरिक्त छात्र गुरुकुल चित्तौड़गढ़ भी गये। छात्रोंको Computer Training की व्यवस्था भी दिखाई गई। छात्रों ने गुरुकुल परम्परा को निभाते हुए स्थान-स्थान पर यज्ञ भी किये।

इस वर्ष कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा जी की प्रेरणा से विभागाध्यक्ष श्री विजयपालसिंह जी ने गुरू शिष्य परम्परा को आरम्भ किया। सभी छात्रो को वर्गों में विभाजित किया गया तथा प्रत्येक वर्ग एक शिक्षक को सौपा गया। इसके द्वारा छात्रतथा शिक्षक आपस में निकट आये और छात्रों को अनुशासन प्रिय बनाने में सहायता मिली। इन वर्गों की समय-समय पर मीटिंग बुलाई गई तथा छात्रों से सम्पर्क स्थापित किया गया। इन्ही मीटिंगों द्वारा छात्रों को सेमीनार में बोलने के लिये प्रोत्साहित किया गया।

छात्र न केवल पढ़ाई में विधिवत उपस्थित रहे तथा रुचिपूर्वक अध्ययन करते रहे बल्कि विश्वविद्यालय के खेलकूद आदि प्रतियोगिताओं में सक्रिय भाग लिया। छात्रों को बैडमिटन टूर्नामेंट में इन्टर यूनिवर्सिटी टूर्नामेन्ट खेलने लखनऊ भेजा गया।

विभाग में कार्यरत उपाध्याय–

१–प्रो० विजयपाल सिंह जी रीडर एवं अध्यक्ष
२–प्रो० वीरेन्द्र अरोड़ा–प्रवक्ता
३–प्रो० महीपाल सिंह–प्रवक्ता

बड़े हर्ष का विषय है कि विभाग के प्रो० वीरेन्द्र अरोड़ा को एन० सी० सी० में मेजर रैन्क से सुशोभित किया गया है। वेद एवं कला महाविद्यालय में प्रातः शिक्षण प्रारम्भ होने से पहले यज्ञ आदि की व्यवस्था नहीं थी इस वर्ष से विश्वविद्यालय में प्रो० विजयपाल जी ने अपने विभाग के सहयोगी प्राध्यापक प्रो० वीरेन्द्र अरोड़ा एवं प्रो० महीपालसिंह जी तथा छात्रों के सहयोग से यज्ञ का यह कार्यक्रम प्रारम्भ किया।

इस वर्ष से विश्वविद्यालय में एन० एस० एस० का कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है इसके संचालक प्रो० वीरेन्द्र अरोड़ा है।

●●●

अंग्रेजी विभाग

विभाग में अनेक क्रिया-कलाप हुए। एम० ए० अंग्रेजी के छात्र सरवस्ती यात्रा पर गये। अनेक व्याख्यानों का आयोजन किया। मुख्य था-"Future of English Poetry" पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन जिसमें गोरखपुर विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के उपाध्यक्ष प्रो० नरसिंह श्रीवास्तव तथा अजमेर कालेज के प्रो० एम० एल० मल्होत्रा ने व्याख्यान दिये। विभाग के रीडर श्री सदाशिव भगत चण्डीगढ़ तथा बनारस में हुए शिक्षा सम्बन्धी तथा अमरीकन साहित्य पर हुए सम्मेलनों में भाग लेने गये। अंग्रेजी विभाग के प्रवक्ता डा० आर० एल० वार्ष्णेय की एक पुस्तक "The Poetry of Dylan Thomas" दिल्ली से प्रकाशित हुई। डा० वार्ष्णेय ने रुड़की केन्द्रीय विद्यालय तथा बी० एच० ई० एल० रानीपुर एजूकेशन बोर्ड के ५६ अंग्रेजी के अध्यापकों को पुर्नमार्जित करने और अंग्रेजी के अध्यापन हेतु नवीनतम तकनीकों और प्राविधियों पर पन्द्रह दिन तक व्याख्यान दिये। विभाग के छात्रो ने भी समय-समय पर विभिन्न विषयों पर पत्र-वाचन किये।

विभाग के उपाध्याय–

१--प्रो० सदाशिव भगत, रीडर अध्यक्ष
२–डा० नारायण शर्मा, प्रवक्ता
३--डा० आर० एल० वार्ष्णेय, प्रवक्ता
४--प्रमथेश भट्टाचार्य, प्रवक्ता (अस्थायी)

गणित विभाग

विज्ञान महाविद्यालय

१—इस विभाग की स्थापना सन् १९५८ मे हुई थी। विभाग में एक रीडर तथा दो प्राध्यापक कार्यरत हैं। विभाग में गणित का स्नातक स्तर का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है। विभाग में विशेष प्रश्न-पत्र के रूप मे सांख्यिकी भी पढ़ाई जाती है।

२—विभाग में कार्यरत उपाध्यायों के नाम-योग्यता तथा पद निम्न प्रकार हैं–

१–सर्वश्री सुरेश चन्द्र त्यागी	प्रधानाचार्य एवं रीडर
२– श्री विजयेन्द्र कुमार	प्राध्यापक
३– श्री हरबंस लाल गुलाटी	प्राध्यापक

३—छात्रों के ज्ञान लाभ के लिये विषय के प्रश्नों की विशेष पुस्तको की व्यवस्था विभाग में की गयी है।

४—श्री सुरेश चन्द्र त्यागी जी के निर्देशन में "आर्य भट्ट" पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

प्रधानाचार्य महोदय के नेतृत्व में छात्रों का दल सरस्वती यात्रा पर गया और वहां से विभिन्न शिक्षाये प्राप्त की।

विभाग की योजना एम० एस–सी० सांख्यिकी की कक्षाये प्रारम्भ करने की है। पाठ्यक्रम बोर्ड आफ स्टडीज की मीटिंग में पारित हो चुका है। अनुमति प्राप्त होते ही कक्षायें प्रारम्भ हो जायेंगी।

विज्ञान महाविद्यालय में गणित विषय के लगभग एक सौ छात्र हैं। ●●●

भौतिक विज्ञान विभाग

भौतिक विज्ञान के भवन का निर्माण यू० जी० सी० से प्राप्त अनुदान से हुआ। इस वर्ष विभाग में केवल दो शिक्षक रहे। एक विभागाध्यक्ष और एक प्रवक्ता। विभाग में दो लेबोरेटरी, बी० एस-सी० प्रथम वर्ष एवं द्वितीय वर्ष एक अध्यक्ष रूम, एक स्टाफ रूम तथा दो श्याम प्रकोष्ठ हैं। बी० एस-सी० के क्रियात्मक कार्य के लिए कोर्स सम्बन्धी सभी उपकरण विद्यमान हैं। तीन लेबोरेटरी एम० एस-सी० के लिए तैयार हैं और उनमें इस वर्ष पी० डब्लू० डी० द्वारा बिजली की फिटिंग का कार्य पूर्ण हो चुका है। एम०एस-सी०के लिये काफी उपकरण तथा पुस्तकें यू० जी० सी० डैवल्पमेन्ट ग्रान्ट से खरीदी गई हैं जो कि विद्यमान हैं।

भावी योजना :—

१–भौतिक विज्ञान में पोस्ट ग्रेजुएट कक्षाएं चालू करना।
२–भौतिक विज्ञान विभाग में रिसर्च प्रोग्राम।

विभागीय उपाध्याय:—

१–श्री हरीशचन्द्र ग्रोवर, अध्यक्ष, प्रवक्ता
२–श्री सत्य प्रकाश त्यागी, प्रवक्ता (अस्थायी)

विभाग को देखने आये हुए महानुभावों के नाम :

इस वर्ष विभाग में डा० जगदीश नारायण कुलपति रुड़की विश्वविद्यालय, श्रीएच०आर०खन्ना, जस्टिस रिटायर्ड, श्री टी० एन०

चतुर्वेदी, सचिव शिक्ष ामंत्रालय भारत सरकार, श्री सत्यदेव जी, प्रेजीडेंट इण्डियन इन्स्टीट्यूट आफ केमीकल इन्जीनियर्स, श्रीवीरेन्द्रजी चान्सलर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, डा०एल एस कोठारी प्रो० देहली विश्वविद्यालय, के० एस० त्रिवेदी एन० ए० एस० कालेज मेरठ वी० एस० सक्सेना मेरठ कालेज मेरठ तथा डा० तेजसिंह वर्मा रूड़की विश्वविद्यालय रूड़की पधारे।

इस वर्ष बोर्ड आफ स्टडीज की मीटिंग प्रो० डा० नरेशचन्द्र वार्ष्णेय अध्यक्ष, रूड़की विश्वविद्यालय की अध्यक्षता मे हुई जिस में पाठ्यक्रम को आधुनिकतम रूप दिया गया।

पाठ्यक्रम :

१. बी० एस-सी० प्रथम वर्ष

(a) Mathematical Physies
(b) Mechanics
(c) Optics.

२. बी० एस-सी द्वितीय वर्ष

(a) Thermal Physics
(b) Electricity and Magnetism
(c) Atomic Physics.

प्रकाशन, विभाग के अध्यापकों द्वारा :

निम्नलिखित आर्टीकल्स-विभाग के अध्यापकों द्वारा लिखे गये जो कि आर्य भट्ट पत्रिका के अप्रैल तथा सितम्बर १९८१ अंक में प्रकाशित हुए।

हरीशचन्द्र ग्रोवर :--

(१) सतीशधवन के निर्देशन में आर्यभट्ट
(२) भारत का प्रथम भूस्थाविक उपग्रह 'एपल'

प्रदर्शनी :

इस वर्ष दीक्षान्त समारोह के अवसर पर आर्यभट्ट विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। विज्ञान विभाग ने इस अवसर पर ४० आइटम प्रदर्शित किये। भौतिक विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित प्रदर्शनी मे आर्य भट्ट का एक छोटा किन्तु मनमोहक मॉडल जनता के आकर्षण का केन्द्र था, क्योंकि दर्शकों को इसे बहुत पास से देखने का अवसर प्राप्त हुआ। विभाग के विद्यार्थियों ने तकनीकी दृष्टि से कई उत्तम माडल प्रस्तुत किये जिनमें "सोलर हीटर", "चोरों की सुरक्षा", "हम शेर से नहीं घबराते", "तुम्हारा हमारा सम्बन्ध पुरातन है", "सुरक्षित घर", "ब्लास्ट फरनेस" आदि मुख्य थे।

डा० जगदीश नारायण, कुलपति, रुड़की विश्वविद्यालय, श्री एच०आर० खन्ना, जस्टिस (रिटायर्ड), श्री टी०एन० चतुर्वेदी, सचिव शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार, श्री सत्यदेवजी, प्रेसीडेन्ट इण्डियन इन्स्टीट्यूट आफ कैमीकल इन्जीनियर्स, श्री वीरेन्द्र जी, चान्सलर, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय।

माननीय अतिथियों ने विद्यार्थियों द्वारा आयोजित प्रदर्शनी देखी और कार्य की बहुत सराहना की। विद्यार्थियों द्वारा बनाया, भौतिक विज्ञान की छत पर आर्य भट्ट का विशाल मॉडल दर्शकों की दृष्टि का केन्द्र था।

इस वर्ष विभाग की ओर से सरस्वती यात्रा में विद्यार्थियों ने भाग लिया, इससे विद्यार्थी विशेष रूप से लाभान्वित हुए।

रसायन विज्ञान विभाग

विज्ञान महाविद्यालय की स्थापना सन् १९५८ मे हुई थी, उसी समय से यहां पर रसायन विज्ञान की स्नातक स्तर की कक्षाये नियमित रूप से चल रही हैं। विज्ञान महाविद्यालय के प्रत्येक छात्र के लिए रसायन विज्ञान पढ़ना अनिवार्य है।

इस विज्ञान में तीन प्रवक्ता, एक प्रयोगशाला सहायक, एक लैब ब्वाय तथा एक गैसमैन है :-

१-डा० ताराचन्द्र शर्मा, प्रवक्ता
२-डा० रामकुमार पालीवाल, प्रवक्ता
३-श्री कौशल कुमार, प्रवक्ता

इस वर्ष विज्ञान महाविद्यालय की ओर से रसायन विज्ञान के छात्र सरस्वती यात्रा हेतु बम्बई, गोवा, बंगलोर, मैसूर तथा मद्रास आदि स्थानों पर गये थे, जहां पर उन्होंने अनेक वैज्ञानिक प्रतिष्ठान देखे।

इस वर्ष रसायन विज्ञान की देखरेख में विभिन्न प्रकार की प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने वालों की विभिन्न विषयों की कक्षाये चलाई गयी, जिनमें माननीय श्री कुलपति महोदय ने भी अपने निर्देश छात्रों को दिये। इसके अतिरिक्त विभिन्न विषयो के विद्वानो ने भी सुझाव दिये। समय-समय पर छात्रों को उक्त परीक्षाओं की सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध कराई, गई जिससे लाभान्वित होकर अनेक छात्र प्रतियोगी परीक्षाओं में सम्मलित हुए।

रसायन विज्ञान में एम०एस-सी० खोलने हेतु भवन, उपकरण, पुस्तकें, जर्नल आदि प्रर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं। स्नातकोत्तर कक्षायें प्रारम्भ होने पर विभाग में शोध कार्य तथा अन्य प्रोजेक्ट आसानी से चल सकते हैं जिनसे हमारे आसपास के क्षेत्र को लाभ होगा।

●●●

जन्तु विज्ञान विभाग

सन् १९८१-८२ का सत्र जुलाईमास में बहुत उत्साह से प्रारम्भ हुआ। यद्यपि जन्तु विज्ञान में छात्रों की संख्या गत वर्षों को भांति सामान्य थी, किन्तु छात्र अपेक्षाकृत योग्य एवं चरित्रवान थे। इन विद्यार्थियों ने पूरे सत्र में बहुत लगन से अध्ययन मे रुचि ली तथा विभाग को उनका सहयोग मिला। जन्तु विज्ञान द्वितीय वर्ष के छात्रों ने भी अध्ययन मे अधिक उत्साह दिखाया।

इस सत्र में छात्रों ने प्रयोगात्मक कार्य के अन्तर्गत स्थानीय भ्रमण द्वारा विभिन्न प्रकार के जन्तुओ का अध्ययन तथा संग्रह किया और इस कार्य के लिए पंचपुरी के समीपस्थ विभिन्न स्थानों पर गये। इसके अतिरिक्त छात्र दक्षिण भारत की ओर 'सरस्वती यात्रा' में गये तथा विभिन्न स्थानो के जन्तुओं का अध्ययन किया। यह सरस्वती यात्रा छात्रों के ज्ञान के लिए अत्य-धिक लाभप्रद रही।

इस सत्र में विज्ञान मे अनेक विद्वानों का आगमन हुआ तथा विभाग की उन्नति के लिए उन्होंने विभिन्न परामर्श दिये। इनमें मुख्यत: डा० सी० एल० महाजन, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर, श्री जे०के० श्रीवास्तव, गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्री ए० पी० गोयल, मेरठ विश्वविद्यालय तथा महेश चन्द्र लन्दन से पधारे।

इस प्रकार यह सत्र सुचारु रूप से सम्पन्न हुआ।

वनस्पति विज्ञान विभाग

विभाग मे एक रीडर एवं एक लेक्चरर है। बी.एस-सी.कक्षाओं में वनस्पति विज्ञान के ट्रेडीशनल कोर्सेज पढ़ाये जाते हैं।

निम्नलिखित आर्टिकल उपाध्यायों द्वारा लिखे गये :-

१- डा० विजय शङ्कर-रीडर एवं अध्यक्ष वनस्पति विज्ञान विभाग

1-Environmental education for all -Role of Universities — Contributed to International Conference on enrvironmental education

2-Social Consequences of development of Science & Technology

3-Kangari Gram Vikas Yojna	Arya Bhatt Vijyan Patrika
4-सम्पादकीय	,, ,,
5-विरासत, जीन एवं भविष्य	,, ,,
6-निजात	,, ,,
7-ग्रामीण भारत में वृक्षारोपण	प्रभु

डा० विजय शङ्कर ने विश्वविद्यालय के लिए अतिरिक्त निम्नलिखित सेवाये १९८१-८२ में की :-

१-सम्पादक- आर्यभट्ट विज्ञान पत्रिका गु० का० विश्वविद्यालय
२-डाइरेक्टर-कांगडी ग्राम विकास योजना ,, ,,
३-गु० का० विश्वविद्यालय में वृक्षारोपण
४-काँगड़ी ग्राम में वृक्षारोपण

कान्फरेन्सेज :

डा० विजय शङ्कर ने १६-२० सितम्बर १९८१ में International Conference on envitonmental education, New Delhi में भाग लिया।

२-डा० पुरुषोत्तम कौशिक- प्रवक्ता, वनस्पति विज्ञान विभाग

डा० पुरुषोत्तम कौशिक ने विज्ञान महाविद्यालय में वृक्षारोपण कार्य करवाया तथा आर्य-भट्ट विज्ञान पत्रिका के सम्पादन कार्य में पत्रिका के सम्पादक डा० विजय शङ्कर जी को सहयोग दिया। १४ फरवरी से २२ फरवरी १९८२ तक डा० पुरुषोत्तम कौशिक, आल इन्डिया इनस्टिच्यूट आफ मेडिकल साइन्सिज में "Non-isotopic immunoassays and their applications" विषय पर सिम्पोजियम कम वर्कशाप में भाग लेगे। १९८१-८२ के डा०पुरुषोत्तम कौशिक के निम्न प्रकाशन हैं :-

1. An unknown archaeological site of District Bhiwani : Some observations of Biological and Technological interest. Published in TR Vedic Path September 1981, Vol. 44 Nos. 1-2, 55-62.

2. A note on the vegetation of semi-arid Bhiwani. In Press, for publication in Environment India.

3. आर्किड्ज। प्रकाशित, आर्य भट्ट विज्ञान पत्रिका सितम्बर १९८१ पृष्ठ ४७–५२।

आर्य भट्ट विज्ञान पत्रिका :-

पत्रिका के प्रथम अङ्क का विमोचन ११ अप्रैल १९८१ को विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी ने किया। पत्रिका का दूसरा अङ्क सितम्बर १९८१ मे प्रकाशित हुआ। डा० विजयशकर अध्यक्ष वनस्पति विज्ञान विभाग पत्रिका के सम्पादक हैं।

●●●

राष्ट्रीय छात्र सेना (एन०सी०सी०)

इस वर्ष भी १५ अगस्त १६८२ को स्वतन्त्रता-दिवस समारोह बड़े उल्लास के साथ मनाया गया। इसमें एन०सी०सी० के छात्रों ने भाग लिया, झन्डारोहण उप-कुलपति श्री गंगाराम जी ने किया तथा परेड का निरीक्षण किया।

वार्षिक प्रशिक्षण शिविर रायपुर, देहरादून में लगाया गया। इसमें छात्रों ने सक्रिय भाग लिया, अनुशासित रहते हुए प्रत्येक कार्य में रुचिपूर्वक भाग लिया। शिविर में वाद-विवाद प्रतियोगिता का कार्यक्रम भी हुआ जिसमें हमारे छात्र श्री गिरीश चन्द एवं ललित जोशी ने क्रमशः द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया। विश्वविद्यालय के एन०सी०सी० विभाग के अध्यक्ष कैप्टन वीरेन्द्र को मेजर रैंक प्राप्त हुआ है।

छात्रों के लिए "राइफल क्लब" खोला गया है। इस वर्ष छात्रों ने पेड़ लगाये तथा नर्सरी के लिए उत्तम कार्य किया।

गणतन्त्र-दिवस समारोह मे २६ जनवरी को उप-कुलपति श्री रामप्रसाद वेदालंकार मुख्य अतिथि थे, जिसमे एन०सी०सी० के छात्रों ने भाग लिया।

सामाजिक सेवा के लिए छात्रों ने उत्तम कार्य किया।

कन्यागुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून

की

वार्षिक रिपोर्ट

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एक रजिस्टर्ड संस्था है। इसकी रजिस्ट्री गवर्नमेन्ट आफ इण्डिया "के ऐक्ट २१" १८६० ई० के अनुसार सन् १८८४ में हुई थी। २६ नवम्बर १८९८ को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने गुरुकुल खोलने का निश्चय किया, और उसकी निम्न लिखित परिभाषा की :–

"गुरुकुल उस वैदिक शिक्षणालय का नाम है जिसमे वे बालक व बालिकाये जिनका यथोचित वेदारम्भ सस्कार हो चुका हो, शिक्षा और विद्या प्राप्त करे। आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रस्ताव मे गुरुकुल की परिभाषा करते हुए बालक तथा बालिकयेंदोनों का उल्लेख था। सभा ने बालकों के लिये गुरुकुल कागड़ी हरिद्वार, की स्थापित किया, और उन्हीं नियमो के अनुसार बालिकाओं की शिक्षा के लिये २३ कार्तिक १९८० वि० तदनुसार ८ नवम्बर १९२३ई० को दीपावली के दिन दिल्ली मे कन्यागुरुकुल महाविद्यालय की स्थापना हुई थी। सुप्रसिद्ध आर्य समाजी विद्वान नेता श्री स्व० आचार्य रामदेव जी (जिनका गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के निर्माण में महत्व-पूर्ण योग-दान है) इस संस्था के आदि संस्थापक थे। प्रथम् आचार्या श्री विद्यावती जो सेठ थीं। कन्या गुरुकुल तीन साल के लगभग दिल्ली में रहकर १-५-१९२७ को देहरादून आ गया। और तब से यहीं पुष्पित पल्लवित हो रह है।

वैदिक संस्कृति के आदर्शों के अनुरूप प्रत्येक वर्ग के छात्र छात्राओ को जातिवश सम्प्रदाय और धम के भेदभाव के बिना दीक्षित और शिक्षित करना गुरुकुलीय आश्रम व्यवस्था और ब्रह्मचर्य पद्धति को पुनर्जीवित करके आर्यसमाज के मतव्य के अनुसार वेद-वेदांक संस्कृत भाषा तथा साहित्य के अतिरिक्त आधुनिक विभिन्न विषयों तथा ज्ञान-विज्ञान और भाषाओं की शिक्षा देना, देश तथा मानव जाति की सेवा के लिये विद्यार्थियो को अच्छा नागरिक बनाना इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिये ही कन्या गुरुकुल की स्थापना की गई थी।

यह सस्था सम्पूर्ण भारतवर्ष की एकमात्र राष्ट्रीय शिक्षण संस्था है जिसमें भारत को प्राचीन सस्कृति एवं परम्पराओ को अक्षुण्ण रखने का पूर्ण एवं सफल प्रयत्न जारी है तथा शिक्षा सर्वथा निःशुल्क दी जाती है। यहां पर सम्पूर्ण भारत एवं भारत के बाहर ब्रह्मा, फौजी, अफ्रीका, मलाया, कुवेत, थाइलैण्ड आदि से कन्याये शिक्षा ग्रहण करने के लिये आती हैं।

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि मुसलमान छात्रायें भी यहां शिक्षा ग्रहण कर रही हैं।

परीक्षा परिणाम

पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी परीक्षा परिणाम उत्तम ही रहा। नवम् कक्षा से १४ कक्षा तक लगभग ८४ छात्राये गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की परीक्षा में बैठी। परीक्षा परिणाम लगभग ६६ प्रतिशत रहा।

श्री स्व० आचार्य रामदेव पुस्तकालय तथा वाचनालय

पुस्तकालय में इस वर्ष पुस्तकों की संख्या १३००० तेरह हजार रही। छात्राओं तथा शिक्षिकाओं ने लगभग पांच हजार पुस्तकों द्वारा लाभ उठाया।

ज्योति समिति

इस वर्ष ज्योति समिति का कार्यक्रम अत्यन्त उत्साह पूर्वक मनाया गया। कन्याओं ने विभिन्न प्रकार के ज्ञानवर्द्धक एवं मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। संस्कृत, अंग्रेजी एवं हिन्दी मे वाद-विवाद प्रतियोगितायें, नाटक, एवं टेब्लो संगीत के कार्यक्रम अत्यन्त प्रशसनीय रहे। प्रतियोगिताओं का परिणाम निम्नलिखित रहा–

अल्का एवं शैफालिका हाउस ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।
शुभ्रा एवं राका ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

श्री आचार्य रामदेव चिकित्सालय :–

श्री आचार्य रामदेव चिकित्सालय आश्रम के समीप ४५,००० रु० की लागत से कन्याओं की चिकित्सा के लिये एक चिकित्सालय बना हुआ है। जिसमे २०–शैयाओ के योग्य एक बडा तथा दो छोटे रोगी गृह बने हुए है। साथ मे लेडी डाक्टर का कमरा औषधालय ड्रैसिंग रूम, औषध भण्डार, कम्पाउण्डर तथा नर्स के रहने के कमरे, रसोई स्नान गृह फ्लश शौचालय आदि बने हुए है। चिकित्सालय के दोनों ओर सुन्दर हरी घास के मैदान है। यह चिकित्सालय उप-मेडिकल एडवाइजर तथा एक लेडी डाक्टर की अध्यक्षता मे चल रहा है। इन के साथ दो योजिका कम्पाउण्डर परिचारिका (नर्स) तथा सेविका काय करती है। इस वर्ष चिकित्सालय में २६ हजार रोगियों की चिकित्सा की गई। इस वर्ष चिकित्सालय पर लगभग २० रु० हजार व्यय हुआ एवं उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से १५००) आवर्तक अनुदान प्राप्त हुआ।

विभिन्न सांस्कृतिक प्रतियोगितायें :–

१– जिला स्तर पर आयोजित राष्ट्रीय समूहगान प्रतियोगिता मे सर्व

प्रथम रह कर प्रथम स्थान प्राप्त करके चलविजयोपहार प्राप्त किया।

२- आर्य समाज देहरादून द्वारा संचालित "कुंवर ब्रजभूषण चल वैजयन्ती संगीत" प्रतियोगिता में इस वर्ष कन्याकुरुकुल महाविद्यालय देहरादून ने प्रथम स्थान प्राप्त करके वैजयन्ती जीत ली।

३- आर्य समाज में आयोजित स्नातक तथा स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिये संचालित वाद-विवाद प्रतियोगिता में अनिल वैजयन्ती भी कन्यागुरुकुल महाविद्यालय ने प्राप्त की। वाद-विवाद का विषय था खालिस्तान की मांग मानवता तथा देश के लिये घातक है।

४- प्रतिवर्ष होने वाली खेल कूद प्रतियोगिता में भी इस वर्ष सीनियर वर्ग की चॅम्पियन-शिप भी कन्यागुरुकुल को ही प्राप्त हुई सर्व श्रेष्ठ खिलाड़ी छात्रा के रूप में कु० नायवकौर सम्मानित की गई।

५- इससे भी अधिक प्रसन्नता का विषय है कि इस वर्ष सम्पूर्ण गढ़वाल रीजन की चेम्पियन शिप भी (खेलकूद प्रतियोगिता में) कन्यागुरुकुल को ही प्राप्त हुई।

६- तरुण संगीत एवं विचार मंच द्वारा जिला स्तर पर आयोजित (शिक्षा मंत्रालय द्वारा संचालित) Ability Merit Scholarship Trust 1981 में भी इस वर्ष यहां की छात्राओं कु० सीमा तथा सुमन ने सर्व प्रथम रहकर "चलविजयोपहार" एवं स्कोलर शिप प्राप्त किया इस प्रतियोगिता में देहरादून को लगभग १ हजार छात्राओं ने भाग लिया।

१– श्रीमती दमयन्ती जौ कपूर आचार्या जी ने अप्रैल १९८१ में बम्बई में होने वाली अखिल भारतीय महिला कान्फ्रेंस में भाग लिया।

२– कुरुक्षेत्र यूनीवर्सिटी की सीनेट की सदस्या होने के नाते दो मीटिंगों में भाग लिया।

●●●

पुरातत्व संग्रहालय

स्वामी श्रद्धानन्द जी की प्रेरणा से इस संग्रहालय की स्थापना १९०७-८ में हुई संग्रहालय की स्थापना के पीछे मूल भावना यह थी कि यह विद्यार्थियों के अध्ययन में सहायक हो तथा साधारण जनता को भी लाभ हो सके। सन् १९२४ तक संग्रहालय के पास अच्छा संग्रहालय हो गया, किन्तु इसी वर्ष गंगा की भीषण बाढ मे सग्रहालय की सब वस्तुयें नष्ट हो गई। सन् १९४५ मे संग्रहालय का पुनर्गठन किया गया और ऐतिहासिक वस्तुओ के संग्रह पर विशेष बल दिया गया। मार्च १९५० ई० मे गुरुकुल की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर वेदमन्दिर का उद्घाटन किया गया।

सन् १९७२ ई० में संग्रहालय को विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास संस्कृति तथा पुरातत्व विभाग के आधीन कर दिया गया। इस विभाग के अध्यक्ष संग्रहालय के पदेन निदेशक नियुक्त किये गये।

विश्वविद्यालय अनुदानआयोग की आर्थिकसहायता से पुरातत्व संग्रहालय के लिये एक भव्य भवन निर्मित कराया गया। वर्तमान समय में पुरातत्व संग्रहालय अपने नये भवन में पूर्णत: स्थानान्तरित कर लिया गया है।

संग्रहालय में सेवारत कर्मचारी

१–डा० विनोदचन्द्र सिन्हा, पदेन निदेशक

२–सुखबीरसिंह, सहायक क्यूरेटर

३–कालूराम त्यागी, लेखक गुरुकुल की ओर से

पुरातत्व संग्रहालय में लोकसभा अध्यक्ष श्री बलराम जाखड़

४–रमेशचन्द्र, भृत्य गुरुकुल की ओर से

५–ओमप्रकाश ,, ,,

६–वासुदेव मिश्र, पहरेदार, वेदमन्दिर, माननीय बिड़ला जी की ओर से।

आजकल संग्रहालय के कर्मचारी पूर्ण निष्ठा के साथ संग्रहालय की वीथिकाओं को सजाने और संवारने में लगे हुए है। संग्रहालय को सुचारु रूप से चलाने के लिये पर्याप्त धन और उचित स्टाफ की आवश्यकता है। हर्ष का विषय है कि इस वर्ष से विश्वविद्यालय ने संग्रहालय को आंशिक रूप से सहायता देना प्रारम्भ कर दिया है। हमें आशा है कि अगले वर्ष से विश्वविद्यालय इस संग्रहालय को सुचारु रूप से चलाने के लिये पूर्ण रूप से विश्वविद्यालय का अंग मानते हुए आर्थिक दायित्व का वहन करेगा।

पुरातत्व संग्रहालय गत ३६ वर्षों से अपने उद्देश्यों की पूर्ति में सतत् प्रयत्नशील है। शिक्षा एवं प्रसार के साथ-साथ जनसाधारण का मनोरंजन करना भी संग्रहालय का प्रमुख उद्देश्य है। उत्तराखण्ड मे एकमात्र संग्रहालय होने के कारण यह अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हो रहा है। प्रत्येक वर्ष जब लाखों यात्री हरिद्वार स्नान करने आते है तो इस संग्रहालय को भी देखने आते हैं। इसके अतिरिक्त यह संग्रहालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग की प्रयोग शाला के रूप मे भी कार्यरत है। अतः इतिहास विभाग के छात्रों को भी अध्ययन की दृष्टि से लाभान्वित करता है।

संग्रहालय के उद्देश्य और कार्य :

इस संग्रहालय के मुख्य उद्देश्य दो हैं :-

१– हमारा प्रबल प्रयास है कि यह संग्रहालक आंचलित संग्रहालय के रूप में विकसित हो। अतः हरिद्वार तथा आस-पास के क्षेत्रों से सामग्री संगृहीत करने पर विशेष बल दिया जाता है, जिससे उत्तराखण्ड के इतिहास पर प्रकाश पड़ सके।

२- भारतीय इतिहास और संस्कृति पर प्रकाश डालने वाली सामग्री का संग्रह करना जिससे विश्वविद्यालय के छात्र तथा हरिद्वार आने वाले यात्री भारत के प्राचीन गौरव से परिचित हो सके।

पुरातत्व संग्रहालय मे इस वर्ष ८ से १४ जनवरी ८२ तक सग्रहालय सप्ताह मनाया गया। इस अवसर पर संग्रहालय की वीथिकाओं को विशेष रूप से सजाया गया और प्रकाश का उचित प्रबन्ध किया गया। इसे देखने के लिये काफी दर्शक आये।

अल्पकाल में इस संग्रहालय ने जो उन्नति की है उसकी सराहना देश के अनेक विद्वानों और पुरातत्व वेत्ताओं ने मुक्तकंठ से की है। इस वर्ष यह संग्रहालय भारत में ही नहीं वरन विदेशों मे भी अपनी प्रतिष्ठा अर्जित कर रहा है। मार्च १९८२ में लंदन में लगने वाली प्रदर्शनी में इस सग्रहालय से समुद्रमंथन का पाषाण फलक भेजा गया है। यह कलाकृति नवी-१० वीं शती ईस्वी की मानी जाती है।

पुरातत्व संग्रहालय में भव्य प्रदर्शनी :

इस वर्ष गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के वार्षिकउत्सव और दीक्षान्त समारोह के अवसर पर पुरातत्व संग्रहालय में १०, ११, १२, १३ अप्रैल ८२ को एक भव्य प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन आर्य विद्वान् स्वामी ओमानन्द जी ने किया। प्रदर्शनी का मुख्य आकर्षण श्रद्धानन्द बलिदान कक्ष, आर्यसमाज कक्ष, मृणमूर्तियों का कक्ष, मुद्राकक्ष, मनोविज्ञानकक्ष और विज्ञानकक्ष रहा। प्रदर्शनी के समय संग्रहालय में दर्शकों की काफी चहल-पहल रही और काफी दर्शक प्रदर्शनी देखने आये। प्रदर्शनी के उद्घाटन के समय भारत में जर्मन दूतावास के मंत्री माननीय एच० वेगनर सपरिवार उपस्थित थे।

दीक्षान्त समारोह के अवसर पर संग्रहालय का अवलोकन करते हुये
तत्कालीन शिक्षा मन्त्री चौधरी नौनिहालसिंह

संग्रहालय का पुस्तकालय :

इस सग्रहालय में एक पुस्तकालय की स्थापना भी की गई है। उच्चस्तर की पुस्तकों को इसमें सगृहीत किया जा रहा है। विभाग के शोध छात्रों को इस पुस्तकालय से काफी लाभ मिल रहा है। एम०ए० के विद्यार्थियों को भी कुछ न कुछ सहायता प्राप्त होती रहती है। इस पुस्तकालय मे लगभग एक हजार पुस्तकों का सग्रह किया जा चुका है।

दर्शक संख्या :

इस वर्ष ११२७६ दर्शकों ने संग्रहालय देखा। इस वर्ष जो विशिष्ट महानुभाव सग्रहालय पधारे वे इस प्रकार है :-सोवियत सङ्घ के शिक्षा मन्त्री, निदेशक, राज्य सग्रहालय लखनऊ, आर्य विद्वान स्वामी ओमानन्द जी, श्री टी०एन०चतुर्वेदी, सचिव, शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार, श्री प्यारेलाल, सचिव, राजस्थान विधान सभा, श्री वासुदेवसिह, खाद्य मन्त्री, उत्तर प्रदेश, श्री मनोहर सोमेरा जी, दक्षिण अफ्रीका, श्री एच० वेनगर, मिनिस्टर अ.फ जर्मनी, श्री बलराम जाखड, अध्यक्ष लोकसभा, चौ०नौनिहाल सिह, शिक्षा मन्त्री उत्तर प्रदेश, मुख्य न्यायाधीश, कर्नाटक उच्च न्यायालय आदि।

●●●

क्रीड़ा विभाग

माननीय कुलपति जी के संरक्षण में विश्वविद्यालय में क्रीड़ा-सम्बन्धी गतिविधियों का प्रारम्भ छात्रों के नियमित प्रवेश के पश्चात् प्रारम्भ हो गया। इस सत्र में माननीय कुलपति श्रीहूजा जी ने क्रीड़ाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश मिश्र की संस्तुति पर क्रीड़ा-समिति में डा० श्यामनारायण सिंह तथा डा० काश्मीर सिंह को मनोनीत किया।

विश्वविद्यालय मे सितम्बर ८२ से नियमित रूप से हॉकी, बेडमिन्टन, टेबिलटेनिस, जिम्नेस्टिक आदि का अभ्यास प्रारम्भ हो गया ।

३ नवम्बर ८२ को नार्थ जोन अन्तर-विश्वविद्यालय बेडमिन्टन टूर्नामिन्ट में विश्वविद्यालय की पांच सदस्यों की एक टीम ने डा० काश्मीर सिंह की देखरेख में लखनऊ में भाग लिया। वहां पर उन्हें प्रथम तीन स्थानों मे से यद्यपि कोई स्थान नही मिला, तथापि उनके प्रथम प्रयास को देखते हुए उनका प्रदर्शन सन्तोषजनक रहा। विश्वविद्यालय की बेडमिन्टन टीम को सही ढ़ंग से तैयार करने में डा० काश्मीर सिंह का योगदान प्रशंसनीय है।

नवम्बर ८२ में विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं शिक्षकेतर कर्मचारियों के लिए एक बेडमिन्टन टूर्नामिन्टका आयोजन किया गया। इस टूर्नामिन्ट का उद्घाटन श्री जितेन्द्र जी, सहा० मुख्याधिष्ठाता द्वारा किया गया। प्रथम मैच कुलसचिव श्रीधर्मपाल जी हीरा एव श्रीसुरेश चन्द त्यागी, प्रिंसिपल विज्ञान महाविद्यालय के मध्य हुआ। इस टूर्नामेंट के समापन समारोह की अध्यक्षता माननीय कुलाधिपति

श्री वीरेन्द्र जी द्वारा की गयी। फाइनल मैच जो डा० श्यामनारायण सिंह व डा० काश्मीर सिंह के मध्य खेला गया, को पूरे समय तक माननीय कुलाधिपति जी ने देखकर सभी का उत्साहवर्द्धन किया। इस टूर्नामेन्ट के विजेता डा० काश्मीर सिंह तथा उप विजेता डा० नारायण सिंह थे।

दिसम्बर के प्रारम्भ में विश्वविद्यालय की क्रिकेट-टीम ने रोहालकी में आयोजित "अन्तर-जिला-क्रिकेट टूर्नामेन्ट" मे भाग लिया। वहां वह उप-विजेता रही तथा विश्वविद्यालय की टीम के विभिन्न सदस्यों को क्षेत्र-रक्षण, बैटिंग एव बॉलिंग की प्रशंसा एव पारितोषिक मिले।

१६ दिसम्बर ८१ को विश्वविद्यालय की हाकी-टीम नार्थ-जोन अन्तर-वि०वि० हाकी टूर्नामेन्ट में भाग लेने डा० काश्मीरसिंह भिण्डर एवं श्री करतारसिंह हाकी-कोच के साथ मेरठ गयी।

गुरुकुल एवं गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के सहयोग से "स्वामी श्रद्धानन्द हाकी टूर्नामेन्ट" का आयोजन श्रद्धानन्द सप्ताह में किया गया। इसमें रुडकी, मसूरी, मुजफ्फरनगर, देहरादून, नगीना, धामपुर, बरेली, सहारनपुर, बी०एच०ई०एल०-हरिद्वार की टीमों ने भाग लिया। इस टूर्नामेन्ट में बी०एच०ई०एल०-हरिद्वार की टीम विजेता एवं विश्वविद्यालय की टीम उप-विजेता रही। इस टूर्नामेन्ट के आयोजन तथा इसे सफल बनाने में श्री धर्मपाल हीरा, कुलसचिव, श्री जितेन्द्र जी सहायक मुख्याधिष्ठाता, डा० दीनानाथ जी, मुख्याध्यापक विद्यालय-विभाग, श्री अशोक त्रिपाठी, डा० काश्मीर सिंह, डा० श्यामनारायण सिंह, श्री करतार सिंह तथा श्री बी०एम० थापर, वित्ताधिकारी एव श्री ओम प्रकाश मिश्र का प्रमुख योगदान रहा।

१० जनवरी १९८२ को विश्वविद्यालय की हाकी टीम राय-बरेली में राज्य-स्तर के हाकी-टूर्नामेन्ट मे भाग लेने गयी। वहां पर विश्वविद्यालय की टीम ने विभिन्न जिलों एव क्लबों से आयी हुई

टीमों को पराजित कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस अवसर पर टीम तथा क्रीड़ा-विभाग के अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश मिश्र तथा क्रीड़ा-समिति के सदस्य डा० श्यामनारायण सिंह, डा०काश्मीरसिंह भिण्डर तथा हाकी कोच श्री करतार सिंह का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया।

२४ जनवरी १९८२ को विश्वविद्यालय की हाकी टीम मुजफ्फरनगर में आयोजित "कृष्ण कुमार विष्ट टूर्नामिन्ट" में भाग लेने गई और वहां पर उप-विजेता रही।

फरवरी में विश्वविद्यालय की टीम रायबरेली मे आयोजित टूर्नामेन्ट में भाग लेने गई।

फरवरी के अन्तिम सप्ताह में कला महाविद्यालय के मध्य एक क्रिकेट-मैच का आयोजन किया गया। इसमे कला महाविद्यालय विजयी रहा।

इस सत्र मे जिम्नेजियम हाल का उपयोग विद्यालय विभाग के छात्रो ने श्री करतार सिंह की देखरेख में किया। इस सत्र मे विश्वविद्यालय में बास्केटबाल खेल की व्यवस्था की गई। इसकी फील्ड आदि तैयार हो गई है और अगले सत्र से इस खेल में भी छात्रों को प्रशिक्षण देने की योजना है।

टेबिल-टेनिस का खेल विश्वविद्यालय हाल में नियमित रुप से खेला जाता रहा। गुरुकुल इण्टर कालेज ने जिला-स्तर की टेबिल टेनिस प्रतियोगिताओं को आयोजित करने मे हमारी सहायता ली।

पूरे वर्ष खेल-कूद के आयोजन में डा० श्यामनारायण सिंह, डा०काश्मीरसिंह तथा श्रीकरतारसिंह का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ।

●●●
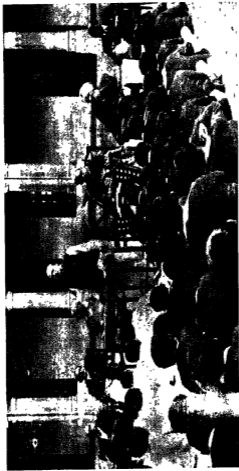
श्री उपकुलपति जी द्वारा खिलाड़ियों का अभिनन्दन ।

पुस्तकालय का कार्यवृत्त

पुस्तकालय का संक्षिप्त परिचय :-

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इस पुस्तकालय की स्थापना की थी। आज इस पुस्तकालय मे मानवीय ज्ञान की विविध शाखाओं की पुस्तकें वृहत परिमाण में उपलब्ध है। हजारों दुर्लभ ग्रन्थ इस पुस्तकालय में विद्यमान है। हाल ही में पुस्तकालय के स्वरूप को अधिक प्रभावी बनाने हेतु पुस्तकालयाध्यक्ष के पूर्ण कालिक पद पर सर्वप्रथम नियुक्ति श्रीजगदीशप्रसाद विद्यालंकार की हुई है। इनको पंजाब,कुरुक्षेत्र तथा पन्तनगर कृषि विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों के कार्य संचालन का अनुभव प्राप्त है। आशा की जाती है कि इस पुस्तकालय को भी इसका लाभ प्राप्त होगा।

पुस्तकालय कर्मचारी :-

पुस्तकालय मे इस समय निम्न १२ कर्मचारी कार्यरत है। हाल ही मे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा एक पद पुस्तालयाध्यक्ष का तथा दो अतिरिक्त पद पुस्तकालय-सहायक के स्वीकृत किये गए है। इस प्रकार वर्तमान कुल पदों की सख्या १८ है जिसमे ६ पद रिक्त है।

१-	सर्वश्री	जगदीश प्रसाद विद्यालङ्कार	पुस्तकालयाध्यक्ष
२-		गुलजार सिंह चौहान	सहा० पुस्तकालयाध्यक्ष
३-		उपेन्द्र कुमार झा	पुस्तकालय सहायक

४- सर्वश्री	प्रेमचन्द्र जुयाल	पुस्तकालय लिपिक
५-	हरिभजन	काउन्टर सहायक
६-	जयप्रकाश	जिल्दसाज
७-	जगपालसिंह	बुक लिफ्टर
८-	गोविन्दसिंह	भृत्य
९-	घनश्यामसिंह	,,
१०-	रामस्वरुपसिंह	,,
११-	बुन्दू	,,
१२-	शशिकान्त	,,

पुस्तकालय सलाहकार समिति :–

पुस्तकालय के समग्र कार्य क्षेत्र का उचित मार्ग-दर्शन प्रदान करने हेतु पुस्तकालय समिति का गठन किया गया है, जिसके निम्न सदस्य हैं। पुस्तकालय सलाहकार समिति की पिछले वर्ष दो बठकें दिनांक २८-७-८१ एवं दिनांक २८-११-८१ को सम्पन्न हुई।

पुस्तकालय सलाहकार समिति के सदस्य :

१ सर्वश्री	बलभद्र कुमार जी हूजा	कुलपति एवं अध्यक्ष
२-	कुलसचिव	कुलसचिव, सदस्य
३-	जितेन्द्र जी	सहा० मुख्याधिष्ठाता, ,,
४-	जबरसिंह सेंगर	भू०पू० पुस्तकालयाध्यक्ष, ,,
५-	रामप्रसाद जी	आचार्य एवं उपकुलपति, ,,
६-	सुरेश चन्द्र त्यागी	प्रिन्सिपल, ,,
७-	बी०एम० थापर	वित्ताधिकारी, ,,
८-	जगदीशप्रसाद विद्यालंकार	पुस्तकालयाध्यक्ष-संयोजक

पुस्तकालय के विभिन्न विभाग :-

१-क्रय विभाग :-

इस वर्ष अप्रैल ८१ से मार्च ८२ तक की अवधि में १०१ पुस्तकें विभिन्न संस्थाओं द्वारा भेंट स्वरूप प्राप्त की गई। इस अवधि में कुल ४०४ पुस्तकें नई क्रय की गई। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा छठी पंचवर्षीय योजना में विकास अनुदान के अन्तर्गत इस पुस्तकालय को २ लाख रुपये स्वीकृत किये गये हैं, जिसमें से २५,००० रुपये की प्रथम किश्त आ चुकी है तथा उसको विनियोजित भी कर दिया गया है। उपर्युक्त स्वीकृत अनुदान का विषयवार विनियोजन निम्न प्रकार किया जाना स्वीकृत हुआ है।

वेद, संस्कृत एवं मानविकी विषयों की पुस्तकों एव पत्रिकाओं हेतु	९०,००० रुपये
विज्ञान विषयों हेतु	५०,००० रुपये
कन्या महाविद्यालय, देहरादून के लिए पुस्तकें क्रय हेतु	१०,००० रुपये
पुस्तकालय उपकरण एवं मिश्रित व्यय हेतु	५०,००० रुपये

२-तकनीकी विभाग :-

पुस्तक विक्रेताओं से जो पुस्तकें पुस्तकालय में आती हैं वे आगत पंजिका में दर्ज होती हैं उसके पश्चात् उन पुस्तकों का विषय के अनुसार वर्गीकरण होता है। प्रत्येक पुस्तक के औसत पांच केटेलाग कार्ड बनवाये जाते हैं। पुस्तकों की चोरी को रोकने हेतु इस बार से पुस्तकों के बाहर टेग पर विद्युत लेखनी से लिखे जाने का क्रम प्रारम्भ किया गया, जिससे कोई छात्र पुस्तक बाहर ले जाने में छल कपट नहीं कर सकता है। इस वर्ष १९८१-८२ में इस विभाग के द्वारा लगभग ५०० पुस्तकें तैयार की गई।

३-पत्र-पत्रिका विभाग :–

पुस्तकालय को १० स्थानीय पत्र निशुल्क प्राप्त होते है। इसके अतिरिक्त ८ पत्र आर्य समाजी क्षेत्र के मगवाये जाते है। दान द्वारा प्राप्त पत्रिकाओं की संख्या ७२ है। इसके अतिरिक्त ७६ पत्रिकाए चंदे से मगवाई जाती हैं। हाल ही मे २६ नयी पत्रिकाओ के मंगवाये जाने के आदेश प्रदान किये गये हैं। इसी प्रकार इन पत्रिकाओं के अंक जो नियमित नहीं प्राप्त होते उनके प्रकाशको को बार बार स्मरण पत्र भेजने का कार्य भी नियमित किया जा रहा है। निकट भविष्य में पुस्तकालय में विभिन्न विषयों के अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं को मगवाये जाने का सिलसिला प्रारम्भ किया जा रहा है। ऐसा प्रयत्न किया जा रहा है कि प्रत्येक विषय के कम से कम दो उच्च स्तर की सार संक्षिप्त पत्रिकाएं (Abstracting and I ndexing Journal) मंगवाये जाये। इमी प्रकार सजिल्द पत्रिकाओं को सदर्भ विभाग से अलग पृथक पत्रिका बनाये जाने का प्रश्न विचाराधीन है। इस समय पुस्तकाय मे सजिल्द पत्रिकाओ की कुल संख्या २०३० है। समाचार पत्रों की मासिक फाइले भी नियमित रूप से सुरक्षित रखी जाती है। इसी प्रकार समाचार पत्र कक्ष की अलग व्यवस्था भी इस वर्ष से विशेष रूप से की गई है।

४-संदर्भ विभाग–

पुस्तकालय के सदर्भ विभाग को सजीव बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है। पुस्तकालय में प्रवेश करते ही प्रधान हाल पार करने के पश्चात् पूछताछ कक्ष की स्थापना की गई है, जिसका कार्य पाठकों एव आगन्तुकों को इस पुस्तकालय की संग्रहीत सामग्री को जानकारी देना है। इसी प्रकार संदर्भकक्ष में नित्य ही अनेकों शोध छात्र एवं पचपुरी के प्रबुद्ध पाठक आकर लाभ उठाते हैं। इस समय संदर्भ विभाग में संदर्भ ग्रन्थों की संख्या ४६७० है। पाठकों को उनकी रुचि के अनुरूप पाठ्य सामग्री प्रदान कराये जाने का कार्य इस विभाग द्वारा किया जाता है।

५-पुस्तक वितरण विभाग–

इस पुस्तकालय का यहां के छात्र, प्राध्यापक तथा समीपस्थ रहने वाले निवासी भी पूर्ण उपयोग करते हैं। १९८१-८२ के वर्ष में छात्रों को घरेलू उपयोग हेतु ९००० पुस्तकें वितरित की गई। पुस्तकालय के कुल सदस्यों की संख्या १९८१-८२ में ३८१ रही। इस वृहत पुस्तकालय का लाभ केवल विश्वविद्यालय के छात्रों, प्राध्यापकों के अलावा पंचपुरी के निवासियों का भी प्राप्त हो इस हेतु इस वर्ष १९८१-८२ से बाह्य सदस्यता देने का प्रस्ताव भी पुस्तकालय सलाहकार समिति द्वारा स्वीकृत कर लिया गया।

६-आरक्षित पाठ्य पुस्तक विभाग –

छात्रों को उनके विषय की पाठ्य पुस्तकें पुस्तकालय में किसी भी समय आने पर उपलब्ध हों, इस हेतु आरक्षित पाठ्य पुस्तकों का संग्रह प्रत्येक विषय का बनाया जा रहा है। इन पाठ्य पुस्तकों को छात्र पुस्तकालय भवन में ही परिचय पत्र देकर उपयोग में ले सकता है। छात्रों में शान्ति एवं मनोयोग से पुस्तकालय में ही पुस्तकें पढने की मनोवृत्ति का भी इस तरीके से विकास होने में सहायता मिली है।

७-जिल्दबंदी विभाग–

१९८१-८२ के वर्ष में जहां ६००पुस्तकें बाहर के जिल्दसाजों से तैयार करवाई गई वहां पुस्तकालय के जिल्दबंदी विभाग द्वारा। १२०० पुस्तकें तैयार की गई। चूंकि यह पुस्तकालय काफी पुराना है अत. जिल्दबंदी का व्यापक कार्य युद्धस्तर पर किये जाने की आवश्यकता है। इस आवश्यकता का अहसास श्री सी० आर० पिल्लै, वित्त उपसचिव, भारत सरकार को भी दिनांक ३०-५-८२ को उनके पुस्तकालय अवलोकन में कराया गया उन्होंने यह सुझाव दिया कि अगले वर्ष के विश्वविद्यालय बजट में इस मद में विशेष धनराशि देने

का प्रस्ताव लाया जाना चाहिये । पूर्णकालिक प्रशिक्षित पुस्तकालयाध्यक्ष ने अपना कार्यभार दिनाक १०-१२-८१ को ग्रहण किया जिसके पश्चात पुस्तकालय के स्वरूप में निम्न परिवर्तन किये गये ।

पुस्तकालयाध्यक्ष के आने के पश्चात किये गये नवीन कार्य
(जनवरी ८२ से जून ८२ तक)

१. विषय-सूची लगायी जाना :

पुस्तकालय का सपूर्ण संग्रह जो विविध विषयो से युक्त है, उसको पूर्ण प्रचारित एवं दिग्दर्शन करने हेतु हाल ही मे पुस्तकालय को सभी अलमीराओ मे ३०० विषय सूची लगाई गई। इन विषय-सूचियों के लगाये जाने से जहां पुस्तकालय का सग्रह सर्वसुलभ तरीके से दिग्दर्शित कर दिया गया है वहां छात्रों, प्राध्यापकों तथा अन्य पाठकों के लिये भी अपने विषय की पुस्तक खोज करना सुविधाजक हो गया है।

२ पुस्तक चोरी पर अंकुश :

सारे पुस्तकालय स्टाफ को जहां पुस्तक चोरी पर नियंत्रण रखने के लिये कटिवद्ध कर दिया गया है। वहां पिछले छः मास में पुस्तक चोरी के १० मामले पकडे गये जिनपर सभी से पुस्तकालय सलाहकार समिति के निर्णयानुसार दण्ड लिया गया। इसी प्रकार पुस्तकों के पृष्ठ फाड़े जाने के ४ मामले भी प्रकाश में आये जिन पर यथोचित कार्यवाही की गई।

३. पुस्तकों का समय पर जमा कराया जाना :

अब सभी पाठकों से पुस्तकों को निर्धारित अवधि में ही जमा करवाया जाने लगा है तथा इसका उल्लंघन करने पर विलम्ब शुल्क नियमानुसार लिया जा रहा है।

४. दीमकों की समस्या का निराकरण :

प्रतिवर्ष इस पुस्तकालय की संकड़ों बहुमूल्य पुस्तके दीमकों के द्वारा नष्ट की जाती रही है। दीमकों की समस्या इस पुस्तकालय की सर्वाधिक ज्वलंत समस्या थी। अब हर्ष की बात है कि सारे पुस्तकालय को 'पैस्ट कन्ट्रोल इ डिया' नामक फर्म से अनुबंध करके दीमक नाशक कार्यक्रम को स्वीकृति ली गई। इस अनुबंध के आधार पर ५ वर्षीय गारन्टी योजना के अन्तर्गत समस्त पुस्तकालय में दीमक नाशक उपचार किया गया। यह प्रसन्नता की बात है कि इस भीषण समस्या का अब निदान कर दिया गया है।

५-नये पत्र-पत्रिकाओं की शुरुआत–

पत्र-पत्रिका विभाग को विश्वविद्यालय पुस्तकालय के स्तर पर स्थापित करने हेतु अनेकों देश विदेश की पत्रिकायें विभिन्न विषयो की मगवाई जा रही है। आशा है विश्वविद्यालय का पत्रिका विभाग शोध के नये आयामों की जानकारी यहां के प्राध्यापक मडल एवं शोध छात्रों को अद्यतन रूप से कराता रहेगा।

६-पाठकों की संख्या में वृद्धि–

पिछले कुछ मास से पुस्तकालय का उपयोग करने वाले पाठको मे असाधारण वृद्धि हुई है जो उत्साह की बात है। पुस्तकालय मे पिछले १९८१-८२ वर्ष में १२,००० पाठकों ने पुस्तकालय का लाभ उठाया जो कि पिछले वर्ष की तुलना से १००० अधिक है।

७-जिल्दबन्दी का कार्य–

पिछले वर्ष १९८१-८२ मे कुल १८०० पुस्तकों की जिल्दबन्दी की गई।

८-आरक्षित पाठ्य पुस्तक विभाग की स्थापना :-

इस विभाग की स्थापना पिछले महीने ही की गई है। छात्रों को उनके विषय की पाठ्य पुस्तके एवं प्रतियोगात्मक सेवाओं की

पुस्तके परिचय पत्र देने पर यहां पुस्तकालय में पढने हेतु दी जाती है। नित्यप्रति अनेकों छात्र इस सुविधा का लाभ उठा रहे हैं।

९-ग्राम्य पुस्तकालय योजना :-

गुरुकुल कांगडी पुस्तकालय के द्वारा ग्रामीणजीवन की बौद्धिक मांग कोपूरा करने हेतु ग्राम्य-पुस्तकालयो की स्थापनाका क्रम प्रारम्भ किया जारहा है। इस शृङ्खला में सर्वप्रथम इसवर्ष दिनांक १२-३-८२ को कांगड़ी ग्राम में पुस्तकालय की स्थापना 'गोवर्द्धन शास्त्री पुस्तकालय' के नाम से की गई। इस ग्राम-पुस्तकालय के लिए जहा १००० पुस्तकों की व्यवस्था की गई वहाँ नित्यप्रति समाचार पत्रो का आना भी प्रारम्भ किया गया। अब तक इस पुस्तकालय का ग्राम बन्धुओं द्वारा प्रचुर लाभ उठाया जा रहा है। इस ग्राम्य पुस्तकालय के लिए सघड़ विद्या सभा ट्रस्ट, जयपुर द्वारा भी ५००)०० रुपये प्रतिवर्ष का आर्थिक अनुदान देना मंजूर हुआ है। इस हेतु हम ट्रस्ट के आभारी हैं। ग्राम्य पुस्तकालय के स्वरूप को और अधिक विकसित करने हेतु राजाराम मोहन राय शिक्षा न्यास, कलकत्ता से भी पत्र-व्यवहार किया जा रहा है जिससे इस पुस्तकालय की विस्तार सेवा समीपस्थ देहाती अंचल मे फैल सके।

१०-पुस्तकालय कर्मचारियों का कार्य विवरण :-

जनवरी ८२ से सभी पुस्तकालय कर्मचारियों को यह निर्देश दिया गया है कि वे अपने दिन प्रतिदिन के कार्य का सम्पूर्ण विवरण मासिक प्रपत्र में भरा करें। जिसके अनुसार अब सभी कर्मचारियों के द्वारा किये जाने वाले कार्य का आंकलन समय समय पर होता रहता है। जिससे पुस्तकालय की व्यवस्था को सुन्दर बनाने में कर्मचारियों का अधिक प्रभावी ढंग से योगदान हो रहा है।

प्रतियोगात्मक पुस्तक संग्रह :-

विश्वविद्यालय के अधिकाश छात्र प्रतियोगात्मक परीक्षाओं मे सफलता प्राप्त करे इस दृष्टि से पुस्तकालय में विभिन्न प्रतियोगात्मक

परीक्षाओं से सम्बन्धित विषय सामग्री का संकलन करने का प्रयास किया जा रहा है। प्रतियोगात्मक पुस्तकों का अलग संग्रह बन जाने से यहां के छात्र प्रतियोगात्मक परीक्षाओं की तैयारी के लिए इस पुस्तकालय का ठोस उपयोग कर सकेंगे। छात्रों को इस दृष्टि से तैयारी करने में सहायता देने हेतु पुस्तकालय द्वारा लगभग सभी सामान्य ज्ञान की पत्रिकाये व प्रतियोगात्मक पत्रिकायें मगाई जा रही हैं।

शिक्षा के साथ आंशिक रोजगार योजना :-

हाल ही मे विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा पुस्तकालय की एक ऐसी योजना को स्वीकृति दी गई है जिसके अन्तर्गत विश्वविद्यालय के छात्र अध्ययन करते हुए भी पुस्तकालय में दो घन्टे अतिरिक्त कार्य करके अर्थोपार्जन कर सकेंगे। छात्रों को आंशिक उपार्जन देने की यह योजना जुलाई ८२ से प्रारम्भ की जा रही है। यह अपने ढंग की प्रथम योजना है जिससे छात्रो की सहायता होने के साथ-साथ वर्षो से इक्ट्ठे पुस्तकालय के विभिन्न कार्य भी पूरे किये जा सकेगें।

विशिष्ट आगन्तुक :-

वर्ष १९८१-८२ मे पुस्तकालय में निम्न विशिष्ट महानुभावों का पदार्पण हुआ। जिन्होंने यहां के पुस्तकालय सग्रह का अवलोकन किया तथा यहां के पुस्तकालय के प्रति संतोष व्यक्त किया।

१–एस० कुमार, मेक्समुलर भवन, नई दिल्ली
टिप्पणी :- दुर्लभ पुस्तकों का सुन्दर संग्रह दिनांक १८-४-८१

२–लक्ष्मी कुमार चूडावत, विधान सभा सदस्य, राजस्थान, जयपुर
टिप्पणी :– पुस्तकालय में वेद-वेदान्त, उपनषिद्, स्मृति आदि पुस्तकों का सग्रह दर्शनीय एवं सराहनीय है। दिनांक ५-६-८१।

३–रामेश्वर लाल चौधरी, विधान सभा सदस्य, राजस्थान
दिनांक ५-६-८१

४–लच्छूराम, विधान सभा सदस्य, राजस्थान
टिप्पणी :– संकलन प्रशंनीय है। दिनांक ५-६-८१

५–प्यारे मोहन, सचिव राजस्थान विधान सभा, जयपुर।
टिप्पणी :– सुन्दर संकलन, वैदिक साहित्य का भण्डार, भारतीय संस्कृति को संजोये रखने का स्तुत्य प्रयास।

६–वीर बहादुर सिंह, सिंचाई एवं परिवहन मन्त्री, उ०प्र० शासन।
टिप्पणी :–मैं इस पुस्तकालय को देखकर विशेष प्रभावित हुआ हूं।
दिनांक–१२-११-८१

७–कृष्णाअवतार, मण्डलीय शिक्षा निदेशक, मेरठ।
टिप्पणी :– पुस्तकों के संग्रह, सरक्षण एवं व्यवस्था की दृष्टि से पुस्तकालय अति श्रेष्ठ लगा।

८–यू०एन० चन्द्रशेखरन, मुख्यन्यायाधीश, कर्नाटक उच्च न्यायालय।
टिप्पणी :–संस्कृत पुस्तकों के वृहतसंग्रह को देखकर मैं प्रभावित हूं
दिनांक २६-४-८२

९–ए०एस० खन्ना, शिक्षा सचिव उ०प्र० शासन। दिनांक ३०-५-८२

१०–सी०आर पिल्लै, उपवित्तसचिव, वित्त मन्त्रालय, भारत सरकार।
दिनांक ३०-५-८२

पुस्तकालय कार्यवृत्त एक नजर में

	१९८०–८१	१९८१–८२
१–पुस्तकालय का कुल संग्रह	८०,९८१	८१,२८२
२–समाचार-पत्र	८	१०
३–पत्रिकायें	११०	१५०
४–पुस्तकों की वितरण संख्या	८०००	९०००
५–पाठकों की संख्या	११,०००	१२,०००
६–औसत रूप से नित्य आने वाले पाठक	३०	४०
७–सदस्यों की संख्या	३३६	३८१
८–नवीन पुस्तके	९२२	५०५

पुस्तकालय की नवीन आवश्यकताएं–

१–दुर्लभ पुस्तकों की रक्षा करने हेतु उनकी माइक्रोफिल्म तैयार करवाना या फोटो स्टेट प्रतियां निकलवाने के लिये पुस्तकालय मे फोटोस्टेट मशीन ली जानी चाहिये।

२–समस्त पुस्तकों के संग्रह को खुले परिवेश मे रखने हेतु स्टील अलमारियों की व्यापक खरीद की जानी चाहिये।

३–पुस्तकालय में आने वाली सारी पत्रिकाओं का प्रदर्शन करने हेतु पत्रिका प्रदर्शन रेक्स (Periodical Display Racks) क्रय किये जाने चाहिये।

४–३०,००० पुस्तकों की एवं ३००० पत्रिकाओं की अविलम्ब जिल्दबन्द की आवश्यकता है, जिसके लिये अतिरिक्त धन की व्यवस्था होनी चाहिये।

५–मानचित्र विभाग की अलग से स्थापना की जानी चाहिये।

६–संदर्भ विभाग में कूलर की व्यवस्था होनी चाहिये।

७–शोध छात्रों एवं प्राध्यापकों के लिये पुस्तकालय में पृथक कक्ष (Cubi cals) का निर्माण किया जाना चाहिये।

८–वर्तमान पुस्तकालय भवन का विस्तार किया जाना आवश्यक है।

कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी वृक्षारोपण करते हुए

भावी योजनाओं पर आधारित पुस्तकालय का स्वरूप (Projected Picture of Gurukul Kangri Library)

विश्वविद्यालय पुस्तकालय (University Library)

अधिग्रहणविभाग (Acquisition Section)	पत्र-पत्रिकाविभाग (Periodical Section)	तकनीकीविभाग (Technical Section)	आवर्तनविभाग (Circulation Section)	संदर्भ विभाग (Reference Section)	बेशकीमती पुस्तकविभाग (Rare & out of Print Books Section)	विश्वविद्यालय पुस्तक भंडार (Univ. Book Depot.	[आरक्षित पाठ्य पुस्तक विभाग (Reserved Text Book Sec.)

रेन्टल पाठ्य पुस्तक विभाग (Rental Text Book Section)	प्रतियोगात्मक पुस्तक संग्रह	वैदिक अनुसन्धान संग्रह Vedic Research Section)	मानचित्र संग्रह (Map & Globe Section)	वैदिक साहित्य अंशदान योजना (Subsidised Vedic Literature Scheme)	उपहार पाठ्य सामग्री योजना (Gift & Exchange Section)	वैदिक साहित्य प्रलेख व कार्य [Vedic Literature Documentation cell]	शोध सलाहकार विभाग (Research advise Unit)

"सामुदायिक एवं प्रसार कार्यक्रम"

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय ने इस कार्यक्रम के अन्तर्गत अपना मातृग्राम, जो कि पुण्यभूमि कांगडी के नाम से जाना जाता है, जहां स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने इस विश्वविद्यालय की स्थापना की थी, उस ग्राम को अंगीकृत किया। सामुदायिक सेवाओ के अन्तर्गत वहां पर २००० पेड लगाए गए, जिसमे मुरादाबाद के कमिश्नर एव बिजनौर के जिलाधीश, गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री हूजा जी के निमन्त्रण पर सम्मिलित हुए। इस कार्यक्रम के अन्तगत वहां पर एक गोवर्धन शास्त्री पुस्तकालय की स्थापना की गई, जिसमे सघड विद्यासभा ट्रस्ट, जयपुर ने दानस्वरूप ५००) रुपये की प्रथम किस्त दी। कांगडो ग्राम के स्वामी श्रद्धानन्द विद्यालय का जीर्णोद्धार कराकर शैक्षणिक वातावरण तैयार किया गया। ब्रिटेन की सस्था "लैट्स बिल्ट ए बैटर वर्ड सोसाइटी" ने भी विश्वविद्यालय के नेतृत्व मे वहां की स्वच्छता एवं बच्चों की सफाई आदि के कार्यक्रम में योगदान दिया।

इसी प्रकार से विश्वविद्यालय की सीमाओं पर लगे दो ग्राम जगजीतपुर और जमालपुर मे भी सामुदायिक कार्यक्रम के अन्तर्गत सफाई एव बच्चो के स्वास्थ्य, प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों को अपनाया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत दिसम्बर, ८१ मे विश्वविद्यालय के उपाध्याय, छात्र एव ब्लाक के अधिकारीगणों ने दोनो गांवों मे जा कर स्वस्थता की दृष्टि से प्रथम-द्वितीय-एवं तृतीय श्रेणी के शिशुओं का चयन किया। परिवार नियोजन के क्षेत्र मे भी इसी प्रकार के परिवार नियोजन की परिभाषा में जो सर्वोतम थे उनका भी चयन किया गया। इन सबको २३ दिसम्बर को, श्री के० एन० सिह जिलाधीश, सहारनपुर के करकमलों द्वारा पुरस्कृत किया गया।

क्र०सं०	अनुक्रमाङ्क	पंजी०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	विषय	डिवीजन
१४	४८४	७६०१३७	सत्यप्रकाश रामबहल	सर्वश्रीहरदेव गोपी	एम०ए०	वैदिक साहित्य	प्रथम
१५	४८५	७६०१३६	स्वामी भगवानदास	बलराम दास	,,	दर्शन शास्त्र	,,
१६	४८७	७६००६४	रामनारायण रावत	बैजनाथ रावत	,,	,,	,,
१७	४८८	७३००६६	योगेन्द्र पुरुषार्थी	नाथूराम	,,	,,	,,
१८	४८६	७६०१५०	अवधेश कुमार शर्मा	जयनारायण शर्मा	,,	प्रा०भा० इतिहास	द्वितीय
१९	४९०	७६०११६	निहाल सिंह	सुक्के सिंह	,,	,,	,,
२०	४९१	७७००२२	नकलीराम	नानकूराम	,,	,,	,,
२१	४९२	७७००३४	प्रमोद कुमार शर्मा	हुक्म चन्द्र शर्मा	,,	,,	प्रथम
२२	४९३	७६०१५१	राजपाल	प्यारे लाल	,,	,,	तृतीय
२३	४९५	७६०१४४	राकेश कुमार	चन्द्र प्रकाश शर्मा	,,	,,	प्रथम
२४	४९६	७६०१५२	विनोद कुमार शर्मा	नरेन्द्र कुमार शर्मा	,,	,,	द्वितीय
२५	४९७	७६००६२	दीपक कुमारी	टेक चन्द्र	,,	,,	,,
२६	४९९	७६००५०	दयाराम	अमर सिंह	,,	हिन्दी साहित्य	तृतीय
२७	५००	७६०१३८	जगदीश प्रसाद	खजान सिंह	,,	,,	प्रथम

क्र०सं०	अनुक्रमाङ्क	पंजी०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	विषय	डिवीजन
२८	५०१	७६•१४०	नवीन चन्द्र पन्त	सर्वश्री हरीदत्त पन्त	एम०ए०	हिन्दी साहित्य	तृतीय
२९	५•२	७६००६५	सुरेश चन्द्र	सुगन चन्द्र	,,	,,	प्रथम
३०	५०३	७८००८८	सुरेश चन्द्र	श्रीराम पाठक	,,	,,	द्वितीय
३१	५०४	७८००६७	सत्यवीर आर्य	मामराज आर्य	,,	,,	,,
३२	५०५	७६०१२३	समय सिह यादव	धूमसिह यादव	,,	,,	,,
३३	५०६	७६०११०	श्रीमती सुरेखा रानी	रामसिह	,,	,,	,,
३४	५०७	७७००६७	श्रीमती शकुन्तलादेवी	आत्माराम	,,	,,	तृतीय
३५	५०८	७६०११०	श्रीमतीपद्मारानीकटियार	राजेन्द्र सिह	,,	,,	द्वितीय
३६	५०९	७६०१२९	कु० तारा देवी	विक्रम सिंह	,,	,,	,,
३७	५११	७७००५१	मनुदेव	हीरालाल	,,	,,	,,
३८	५१२	६९००३०	धर्मवीर	उम्मेद सिह	,,	,,	,,
३९	५१४	७७००२०	धीरेन्द्र सिह परिहार	बी०एस० परिहार	एम०एस-सी०	मनोविज्ञान	,,
४०	५१५	७६०१३९	पवन कुमार कपिल	रतन लाल	,,	,,	,,
४१	५१६	७८००६५	श्रीमती ललितेश जैन	अजित कुमार जैन	एम०ए०	,,	प्रथम

क्र०सं०	अनुक्रमाङ्क	पंजी०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	बिषय	डिवीजन
४२	५१७	७६०१४३	दिदेश कुमार	प्रेम प्रकाश	,,	अंग्रेजी साहित्य	द्वितीय
४३	५१८	७६०१२२	प्रताप सिंह नेगी	बसन्त सिंह नेगी	,,	,,	प्रथम
४४	५१९	७७००२६	राजेश कुमार	तुगंल सिंह	,,	,,	तृतीय
४५	५२०	७६००१५	बिनोद कुमार रतूडी	बी०डी० रतूडी	,,	,,	द्वितीय
४६	५२२	७८०१५२	अरूण कुमार विश्नोई	के०एस० विश्नोई	,,	,,	तृतीय
४७	५२३	७६०११५	अशोक कुमार चौहान	कालूराम	एम०एस-सी०	गणित	द्वितीय
४८	५२४	७७००२९	अनिरूद्ध कुमार	चन्द्र प्रकाश	,,	,,	प्रथम
४९	५२५	७८००९८	अशोक कुमार गौतम	एम०एल० गौतम	,,	,,	,,
५०	५२६	७६०१०२	विनोद कुमार राजपूत	जागेराम	,,	,,	,,
५१	५२७	७६०१३०	कु० मधुबाला गोयल	आर०एस० गोयल	,,	,,	,,

●●●

दीक्षान्तोत्सव १९८२ पर उपाधि प्रदान की जाने वाले छात्र/छात्राओं की सूची

बी० एस-सी०

क्र०सं०	अनुक्रमाङ्क	पंजी०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	वर्ग	श्रेणी
१	३३९	७९००१९	अनिल कुमार छाबड़ा	सर्व श्रीशेरसिह छाबड़ा	गणित वर्ग	प्रथम
२	४०१	७९००२३	अशोक कुमार	चतर सैन	,,	द्वितीय
३	४०५	७९००२०	अरुण कुमार सिंह	रामपालसिंह	,,	,,
४	४०६	७९००२१	अजय चन्द वर्मा	प्रताप चन्द	,,	,,
५	४०७	७९००९८	अवनीश कुमार शर्मा	शिव प्रसाद शर्मा	,,	,,
६	४०९	७९००७२	अमूल्य शर्मा	रमाकान्त शर्मा	,,	,,
७	४१०	७९००८९	आशुतोष शर्मा	विष्णुदत्त	,,	,,
८	४११	७९००२४	बृजेश कुमार शर्मा	जियालाल शर्मा	,,	,,
९	४१२	७९००८६	धर्मपाल गुप्ता	फूल चन्द गुप्ता	,,	,,
१०	४१३	७९००२७	गजेन्द्र प्रसाद त्यागी	हरीश चन्द्र त्यागी	,,	,,
११	४१४	७९००३२	मानसिंह	रंगा सिंह	,,	,,
१२	४१५	७९००३१	मनोज कुमार	हरिश चन्द्र	,,	,,
१३	४१७	७९००८८	मनोज कुमार	भगवान दास	,,	प्रथम

क्र०सं०	अनुक्रमाङ्क	पंजी०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	वर्ग	श्रेणी
१४	४१९	७६०१०४	मुकेश कुमार शर्मा	सर्वश्री सत्यप्रकाश शर्मा	गणित वर्ग	द्वितीय
१५	४२०	७६००७०	नवनीत कुमार चौहान	कबूल सिंह	,,	द्वितीय
१६	४२१	७६००३३	नरेन्द्र कुमार यादव	जयरामसिंह	,,	,,
१७	४२२	७६०१००	प्रमोद कुमार शर्मा	जियालाल शर्मा	,,	,,
१८	४२३	७६००३४	प्रदीप कुमार यादव	हरीराम यादव	,,	,,
१९	४२४	७६००३७	प्रदीप कुमार चौहान	बलबीर सिंह	,,	,,
२०	४२५	७६००९७	प्रवीण कुमार जैन	राजेन्द्र कुमार जैन	,,	,,
२१	४२६	७६००३६	रजनीश कुमार कौशिक	जगदीशप्रसादकौशिक	,,	,,
२२	४२७	७६००९१	रामसिंह चौहान	मेहर सिंह चौहान	,,	,,
२३	४२८	७६००९३	रामेश्वर मिश्र	रामसूरत मिश्र	,,	,,
४	४२९	७६००७८	राजेन्द्र सिंह	भगवत सिंह	,,	प्रथम
२५	४३०	७६००३८	राकेश कुमार	कैलाश चन्द्र	,,	द्वितीय
२६	४३१	७६००३९	रविकान्त सिंह	रामप्यारे सिंह	,,	,,
२७	४३२	७६००७९	ऋषिकेश चन्द्र प्रसाद	उमेश चन्द्र प्रसाद	,,	,,
२८	४३३	७६००४२	शिव कुमार	धर्म सिंह धीमान	,,	प्रथम

क्र०सं०	अनुक्रमाङ्क	पंजी०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	विषय	डिवीजन
२९	४३५	७९००९०	सुदेश कुमार	सर्वश्री कुन्दन लाल		गणित वर्ग	द्वितीय
३०	४३६	७९००४१	शिशुपाल	फूल सिह		,,	,,
३१	४३८	७९००४७	तरूण कुमार शर्मा	फूल चन्द शर्मा		,,	प्रथम
३२	४३९	७९००४९	वीरेन्द्र कुमार जैन	सुरेन्द्र कुमार जैन		,,	द्वितीय
३३	४४०	७९००४८	विजय कुमार	गोरख नाथ		,,	,,
३४	४४१	७९०११३	विजेन्द्र कुमार पालीवाल	कामता प्रसाद शर्मा		,,	,,
३५	४४३	७९००४०	कुमारी रेणु गुप्ता	रामकुमार गुप्ता		,,	प्रथम
३६	४४४	७९००३०	कुमारी मन्जु सौरायण	महेन्द्रपालसिह सौरायण		,,	द्वितीय
३७	४४५	७९००३५	कुमारी पूनम	रहतू लाल शर्मा		,,	,,
३८	४४६	७९००५१	अवधेश कुमार अग्रवाल	राजेन्द्र कुमार अग्रवाल		जीवविज्ञान	प्रथम
३९	४४७	७९००५७	अजय नागयान	कलीराम नागयान		,,	द्वितीय
४०	४४८	७९००५०	अरूण कुमार अग्रवाल	अयोध्या प्रसाद		,,	,,
४१	४४९	७९००७३	भीम सैन	अमर दीनामल		,,	,,
४२	४५०	७९००९६	दलीप सिंह	अमर नाथ		,,	,,

क्र०सं०	अनुक्रमाङ्क	पंजी०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	विषय	डिवीजन
४३	४५१	७६००५३	इन्द्रजीत सिह धिगंड़ा	जगत सिंह चिगंड़ा		जीव विज्ञान	द्वितीय
४४	४५३	७६००५२	हरि शंकर वर्मा	सर्व श्री बसन्त सिह वर्मा		,,	प्रथम
४५	४५४	७६००८३	कीर्ति भूषण	गंगा विष्णु		,,	द्वितीय
४६	४५५	७६००५५	मदन लाल	भगवानदास		,,	प्रथम
४७	४५६	७६००८२	ओम प्रकाश नवानी	गिलोचन प्रसाद		,,	,,
४८	४५७	७६ ०७४	प्रविन्द्र कुमार शर्मा	चण्डी प्रसाद शर्मा		,,	द्वितीय
४९	४५८	७६००५७	राजकिशोर घिल्डियाल	भैरव दत्त शास्त्री		,,	,,
५०	४६१	७६००७१	राजेश चौहान	बलवन्त सिह		,,	प्रथम
५१	४६२	७६००९९	शशीपाल सिह चौहान	आत्मा राम चौहान		,,	द्वितीय
५२	४६३	७६००९२	सुरेश चन्द भट्ट	श्री केशव दत्त भट्ट		,,	,,
५३	४६४	७६०१०१	श्याम सिंह	श्री रामलाल		,,	,,
५४	४६५	७६००५९	सतीश कुमार भूटानी	श्री भगतराम भूटानी		,,	,,
५५	४६६	७६००५४	कुमारी मीनाक्षी छाबडा	श्री शिव कुमार छाबडा		,,	प्रथम
५६	४५२	७७००६६	हरीश कुमार शर्मा	श्री शिव प्रसाद शर्मा		जीव विज्ञान	द्वितीय

●●●

दीक्षान्तोत्सव १९८२ पर उपाधि प्रदान किये जाने वाले छात्रों की सूची--
बी० ए०

क्र०सं०	अनु०	पंजी०सं०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	डिवीजन	विषय
१-	२२६	७९०११४	नन्द किशोर	सर्व श्री भैरव दत्त शास्त्री	बी०ए०	द्वितीय	हिन्दी, अंग्रेजी, इतिहास
२-	२२७	७९०१२१	यशपाल सिंह	जय सिंह	,,	,,	हिन्दी, इतिहास, मनोविज्ञान
३-	२२८	७९०११८	रामपाल सिंह	मामराज सिंह	,,	,,	हिन्दी, अंग्रेजी, मनोविज्ञान
४-	२२९	७९००१२	जुगल किशोर	भैरव दत्त शास्त्री	,,	,,	हिन्दी, अंग्रेजी, इतिहास
५-	२३०	७८०००६	सहदेव सिंह	जगराम सिंह	,,	,,	हिन्दी इतिहास, मनोविज्ञान
६-	२३१	७९००६३	शकील हसन	मीर हसन	,,	,,	हिन्दी, अंग्रेजी, मनोविज्ञान
७-	२३२	७९०१५२	नरेन्द्र सिंह खोराला	केशर सिंह खोराला	,,	,,	हिन्दी, अंग्रेजी, इतिहास
८-	२३३	७९०११७०	अनिल कुमार शर्मा	वेद प्रकाश शर्मा	,,	,,	हिन्दी, इतिहास, मनोविज्ञान
९-	२३४	७९००१०	अनिल कुमार चौहान	कालूराम चौहान	,,	,,	अंग्रेजी, इतिहास, मनोविज्ञान
१०-	२३५	७९०१२०	सुधीर कुमार पंत	प्यारे किशन पंत	,,	,,	अंग्रेजी, इतिहास, दर्शन
११-	२३६	७८०११४	रमेश चन्द	महेश लाल	,,	,,	हिन्दी, अंग्रेजी, इतिहास
१२-	२३७	७९०१२४	कुमारी मीरा गौतम	एम० एल० गौतम	,,	,,	हिन्दी, अंग्रेजी, इतिहास
१३-	२३८	७९०१३५	कुमारी रेखा रानी	बचन सिंह	,,	,,	हिन्दी, इतिहास, मनोविज्ञान
१४-	२३९	७९०१२७	कुमारी रेखा रानी	ईश्वर दास	,,	,,	हिन्दी, इतिहास, मनोविज्ञान
१५-	२४०	७९०१३२	कुमारी राजकुमारी	मुन्ना लाल	,,	,,	हिन्दी, इतिहास, मनोविज्ञान
१६-	२४१	७९०१२८	कुमारी सरोज	प्रेम सिंह बिष्ट	,,	,,	हिन्दी, इतिहास, मनोविज्ञान

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पंजो० सं०	नाम छात्रा	पिता का नाम	श्रेणी	डिवीजन
१-	२१६	७६०१४५	कुमारी इन्द्रा	सर्व श्री बंशोलाल नेगी	अलकार	प्रथम
-	२२०		कुमारी जसबीर	हरबश सिह	,,	द्वितीय
३-	२२१	७००१४७	कुमारी कंचन	पद्मा नन्द	,,	,,
४-	२२२	७६०१४८	कुमारी राजकुमारी	नारायण दास	,,	प्रथम
५-	२२३		कुमारी राकेश	जगवीर सिह	,,	द्वितीय
६-	२२४	७६०१४६	कुमारी रामप्यारी	बंशीलाल नेगी	,,	प्रथम
७-	२२५	७६०१४६	कुमारी सुशीला	दलीप सिह	,,	द्वितीय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

आय का विवरण

१६८१–८२

(क) दान और अनुदान–

क्र०सं०	आय की मद	राशि
१	विश्वविद्यालय की अनुदान आयोग, भारत सरकार से अनुदान	१८,००,०००-००
२	अक्षय निधि का ब्याज	१०२१८-००
	योग–	१८,१०,२१८-००

(ख) शुल्क तथा अन्य स्रोतों से आय–

क्र०सं०	आय की मद	राशि
१	पंजीकरण शुल्क	१४४४-००
२	पी-एच.डी. रजिस्ट्रेशन शुल्क	५६२-००
३	पी-एच.डी. मासिक शुल्क	४०८६-००
४	परीक्षा शुल्क	३८७२१-००
५	अङ्क पत्र	१६७६-००
६	पड़ताल	१५०-००
७	बिलम्ब दण्ड	३१६३-७०

क्र०सं०	आय की मद	राशि
८	माइग्रेशन शुल्क	११२५-००
९	प्रमाण-पत्र शुल्क	२३१८-१०
१०	नियमावली, पाठविधि तथा फार्मो आदि का मूल्य	८०८-००
११	सेवा आवेदन पत्र	१३०१-००
१२	रद्दी व पुराने पर्चे	५-००
१३	शिक्षा शुल्क	२५६३४-५०
१४	प्रवेश व पुनः प्रवेश शुल्क	७०४१-००
१५	भवन शुल्क	१५९०-००
१६	क्रीड़ा शुल्क	४५१२-७५
१७	पुस्तकालय शुल्क	३२५९-००
१८	परिचय पत्र शुल्क	१४९-००
१९	एसोसियेशन शुल्क	५६७-००
२०	मनोविज्ञान लैब	३०७-००
२१	मंहगाई शुल्क	५३३२-००
२२	विज्ञान शुल्क	५१५७-००
२३	पुस्तकालय से आय	२९१२-४०
२४	पत्रिका शुल्क	३८२६-००
२५	ब्याज तथा अन्य आय	१६६७७-२७
	योग–	१९.४२,९०५-७२

●●●

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

व्यय का विवरण

१९८१ – ८२

[क] वेतन

क्र०स०	व्यय की मद	राशि
१	शिक्षक व शिक्षकेत्तर कर्मचारियों का वेतन	१४६६७५७-५०
२	भविष्यनिधि पर संस्था का अंशदान	४५३५२-००
३	अनुगृह राशि	४१७६-००
	योग–	१५,१६,२८५-५०

[ख] अन्य व्यय

क्र०सं०	व्यय की मद	राशि
१	बिजली व जल आपूर्ति	३८०४६-२५
२	टेलिफोन	७८३३-५९
३	मार्ग–व्यय	४५३३३-७६
४	लेखन सामग्री व छपाई	२५५८६-४९
५	वर्दी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	८६२७-५१
६	डाक व तार व्यय	२६२४-५०
७	वाहन अनुरक्षण तथा पेट्रौल	३६५१३-७६

८	विज्ञापन	७११३-६२
९	न्यायिक व्यय	३३०६-००
१०	आतिथ्य व्यय	५६८५-४३
११	लेखा निरीक्षण	१९५६-८५
१२	दीक्षान्तोत्सव	९६२९-३०
१३	लान संवरण	३६१६-८५
१४	भवन मरम्मत	१७७६९-३२
१५	उपकरण	२५३४०-७७
१६	फर्नीचर एवं साज-सज्जा	२३९६०-६३
१७	A I.U. सदस्यता शुल्क	८९००-००
१८	वर्ल्ड यूनिवर्सिटी सर्विस	५००-००
१९	राष्ट्रीय छात्र सेना	११०४-९०
२०	निर्धनता फण्ड	३००-००
२१	छात्रों को छात्रवृत्ति	२३२१४-१७
२२	खेलकूद एवं क्रीड़ा	१२९८३-४२
२३	गोष्ठी एवं संभाषण	११४६-००
२४	सरस्वती यात्रा	९१९०-१८
२५	मनोविज्ञान प्रयोगशाला	१८७९-९४
२६	रसायन ,,	४९५६-५६
२७	भौतिकी ,,	९१६९-८०
२८	वनस्पति विज्ञान प्रयोगशाला	५१९०-४०
२९	जन्तु ,, ,,	४४६६-१०
३०	गैस प्लान्ट	११४७-५०
३१	वि वि. अतिथि गृह	५६०४-०५
३२	पुस्तकें	५६२०-४०

३३	समाचार पत्र व पत्रिकायें	३२०६-६०
३४	जिल्द बन्दी	२०६८-४२
३५	पुस्त सुरक्षा	७६६-५०
३६	कैटेलॉग कार्ड व इण्डेक्सिंग	३४१६-६०
३७	वैदिकपथ, आर्यभट्ट, तथा प्रह्लाद पत्रिकाओं की छपाई व अन्य व्यय	११,२२०-४७
३८	मिश्रित व्यय	३८४४-०५
३९	आकस्मिक/अनपेक्षित व्यय	८६७-६५
४०	विश्वविद्यालय भवन, फर्नीचर एवं सज्जा	४०,६५१-६८
४१	सांस्कृतिक कार्यक्रम	१०४६-०५
	योग–	४,२५,३८५-३७

[ग] परीक्षा

क्र०सं०	व्यय की मद	राशि
१	परीक्षकों का पारिश्रमिक	१४,८३८-०३
२	मार्ग व्यय परीक्षक	२८७७-२२
३	निरीक्षण व्यय	१५६२-७५
४	प्रश्न-पत्रों की छपाई	११,५८१-७६
५	उत्तर पुस्तिकाओं कामूल्य	७२०६-८३
६	डाक, तार व्यय	४४८६ ०५
७	लेखन सामग्री व छपाई	४८१५-१३
८	अन्य व्यय	१८६-५५
९	नियमावली, पाठविधि व फार्मों की छापाई	२१६१-२०
	योग–	४६,७७८-५२
	महायोग क+ख+ग–	१६,६१,४४६-३६

८३

वां

वार्षिक

विवरण

ओ३म्

सत्र

१९८२-८३

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

विषय-सूची

❀❀❀

विश्वविद्यालय के वर्तमान अधिकारी

विजिटर— डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, विद्यामार्तण्ड, भूतपूर्व कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

कुलाधिपति— श्री वीरेन्द्र, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर

कुलपति— श्री बलभद्र कुमार हूजा (अवकाश प्राप्त आई०ए०एस०)

आचार्य एवं उपकुलपति— श्री राम प्रसाद वेदालंकार

कुलसचिव— डा० जबर सिंह सेंगर

वित्तअधिकारी— श्री बृजमोहन थापर

उप-कुलसचिव— श्री चन्द्रशेखर त्रिवेदी

प्रिंसिपल विज्ञान महाविद्यालय— श्री सुरेश चन्द त्यागी

जनसम्पर्क अधिकारी— डा० बिनोद चन्द्र सिन्हा

पुस्तकालयाध्यक्ष— श्री जगदीश प्रसाद विद्यालंकार

आमुख

बुद्धिपूर्वा वा क्यकृतिर्वेदे (१/व. द. ६/१/११

"वेदों के प्रत्येक वाक्य की रचना बुद्धिपूर्व है"

महर्षि दयानन्द जी महाराज १०वी शती के युगप्रवर्तक नेता-ऋषि थे। सत्य सनातन आर्य धर्म में जो अनेक विकार उत्पन्न हो गये थे उन्होंने उनके विरुद्ध आवाज उठाई और वेदों के उस धर्म को जनता के सम्मुख उपस्थित किया जो आदि, मध्य और अन्त सर्वत्र सत्य और पूर्ण है। स्वामी दयानन्द केवल धर्म सुधारक ही नही थे अपितु उन्होंने शिक्षा, राजनीति, समाज संगठन आदि सभी क्षेत्रों में नये विचारों का प्रतिपादन किया। स्वराज्य प्राप्ति का प्रस्ताव सर्वप्रथम स्वामी जी ने ही रखा था। ऋषि दयानन्द ने अपने समय में प्रचलित शिक्षा पद्धति में अनेक दोष अनुभव कर एक नवीन शिक्षा प्रणाली का प्रतिपादन किया और इसे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का नाम दिया। ऋषि दयानन्द ने आदर्श शिक्षा का जो मार्ग दिखाया था, महात्मा मुंशी राम उसके पहले पथिक बने। ब्रिटिश शासन में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का पुनरुद्धार एक असम्भव कल्पना थी परन्तु मुंशीराम जी के सत्प्रयत्नों से यह असम्भव कल्पना सम्भव हो गयी और शिक्षा के क्षेत्र में एक नई क्रान्ति हुई। ऋषि दयानन्द के शिक्षा संबंधी आदर्शों को दृष्टि में रखते हुए गुरुकुल में पढ़ाने के लिए जो पहली पाठविधी बनाई गई थी उसमें वेद और संस्कृत साहित्य के गम्भीर अध्ययन के साथ-साथ अंग्रेजी, गणित, रसायन, भौतिक शास्त्र जीवविज्ञान, वनस्पति शास्त्र, आयुर्वेद और पश्चिमी दर्शन आदि के उच्च कोटि के विषयों के अध्ययन की भी व्यवस्था की गयी थी।

सर्वप्रथम कांगडी ग्राम में गुरुकुल की स्थापना की गयी। अनेक कठिनाईयों को सहते हुए निर्जन बन में हिसक पशुओं के बीच यह ब्रह्मचर्याश्रम फलता-फूलता और लोक-प्रिय होता रहा। गुरुकुल के प्रथम आचार्य प. गगादत्त जी और मुख्याधिष्ठाता स्वामी मुंशीराम जी ने वहां गुरुकुलीय शिक्षा प्रारम्भ की। जब भूतपूर्व ब्रिटिश प्रधान मन्त्री मैकडोनल्ड गुरुकुल पधारे तो उन्होने लिखा कि मैकाले के बाद भारत में शिक्षा के क्षेत्र में जो महत्वपूर्ण और मौलिक प्रयत्न हुआ है वह गुरुकुल है। गुरुकुल वैदिक धर्म, भारतीय सभ्यता और आर्य संस्कृति के पुनरुत्थान के लिए खोला गया था जिसे महात्मा मुंशीराम जी ने पुष्पित पल्लवित किया।

उस समय विज्ञान पढाने हेतु हिन्दी में कोई पुस्तक नही थी। स्व. गोवर्धन शास्त्री ने जीव विज्ञान तथा भौतिक विज्ञान पर हिन्दी में पुस्तके लिखी। उनके द्वारा उस समय के अपनाए गए तकनीकी शब्दो का आज भी प्रयोग हो रहा है। ब्रिटिश काल में विज्ञान की शिक्षा हिन्दी माध्यम से गुरुकुल में देने का श्रेय स्व. गोवर्धन शास्त्री को जाता है।

मुशीराम जी ने १६१७ के वार्षिकोत्सव के पश्चात सन्यास ग्रहण कर लिया, सन्यास ग्रहण करने के पश्चात उनका नाम मुंशीराम से बदलकर स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती हो गया।

गुरुकुल की पुनर्स्थापना के पश्चात १६२७ में जो वार्षिकोत्सव हुआ उसमें देश के महान व्यक्ति पधारे जिनमें-महात्मा गांधी, पं. मदनमोहन मालवीय, बाबू राजेन्द्र प्रसाद, जमनालाल बजाज आदि प्रमुख थे।

सन् १६६२ में गुरुकुल को विश्वविद्यालय की मान्यता मिली और यह विश्वविद्यालय भयंकर विपत्तियो को झेलता हुआ अपने विकास के चरम बिन्दु पर तो नहीं, हां, निरन्तर विकास की ओर अग्रसर है। भारत सरकार और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सहयोग से इस विश्वविद्यालय को पुनर्जन्म मिला। १६७७ में कुछ ऐसे तत्वों ने, जो आर्य सस्कृति से अनभिज्ञ थे, गुरुकुल को पदाक्रान्त किया। पर विश्व-

विद्यालय के कुलाधिपति श्री विरेन्द्र जी एवं कुलपति श्री बलभद्र कुमार जी हूजा तथा शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियों के सतत् प्रयत्नों से यह विश्वविद्यालय शिक्षा जगत में अपना अमूल्य स्थान बनाता जा रहा है।

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय में लगभग ४३ प्राध्यापक है। शिक्षकेतर कर्मचारी लगभग ८५ हैं, जिन्हें इस वर्ष से मकान भत्ते, अवकाश नकदीकरण, चिकित्सा भत्ता, नया वेतनमान, परिवार नियोजन भत्ता आदि प्रदान किया जा रहा है। इन कर्मचारियो के सहयोग पर मुझे गर्व है।

इसी वर्ष ढाई लाख रूपये का अनुदान विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने पुस्तकों के लिए दिया तथा २० लाख रूपया अध्यापक क्वार्टर्स के लिए स्वीकृत किया है। आवर्तक अनुदान भी विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से लगभग बीस लाख मिलने वाला है। इसके अतिरिक्त २५ हजार रू० पी० एच० डी० शोध प्रबन्धों के प्रकाशन के लिए भी मिला है।

परिसर को सुन्दर एवं व्यवस्थित किया गया, भवन मरम्मत तथा नव-निर्माण पर भी जोर दिया जा रहा है। प्रयोगशालाओं को सुसज्जित किया गया है। विश्वविद्यालय भवन को भी सुव्यवस्थित किया जा रहा है।

विश्वविद्यालय से विभिन्न विभागों के छात्र सरस्वती यात्रा पर गये। अन्तर्विश्वविद्यालय खेलकूद प्रतियोगिताओं में गुरुकुल विश्व-विद्यालय ने भाग लिया और हाकी, बैडमिण्टन, क्रिकेट आदि मैचों में भाग लेने हेतु यहां के खिलाड़ी मेरठ, जम्मु, लखनऊ आदि अनेक स्थलों पर गये, तथा अनेक प्रतियोगिताओं में विजयश्री प्राप्त कर उपहार प्राप्त किए।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से कई पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित की जा रही हैं जिनमें वैदिक-पथ ध्रुव, प्रह्लाद, आर्य भट्ट आदि प्रमुख हैं। विज्ञान की पत्रिका आर्यभट्ट का सम्पादन डा० विजय शंकर अध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान विभाग कर रहे हैं। वैदिक पथ

अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित की जा रही है, जिसके सम्पादक डा० हरगोपाल सिंह, प्रवक्ता, मनोविज्ञान विभाग है। प्रह्लाद पत्रिका के सम्पादक डा० अम्बिका प्रसाद बाजपेयी तथा गुरुकुल पत्रिका का सम्पादन मान्य आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार कर रहे है।

४ सितम्बर, ८२ से ८ सितम्बर, ८२ तक विश्वविद्यालय में "वैदिक शिक्षा राष्ट्रीय कार्यशाला" का राष्ट्रीय स्तर पर आयोजन हुआ। इस अवसर पर डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, विजिटर, आचार्य प्रियव्रत वेद-वाचस्पति, डा० भवानी लाल भारतीय, प्रोफेसर, पजाब विश्वविद्यालय, डा० जे० पी० आत्रेय, अध्यक्षदर्शन विभाग, रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, प्रो० रत्न सिह, अध्यक्ष, दर्शन विभाग, मेरठ विश्वविद्यालय, महात्मा आर्य भिक्षु, कुलपति, गुरुकुल अयोध्या, डा० एम० एल० पुरोहित, जबलपुर विश्वविद्यालय, श्रीमती पूनम, रूड़की विश्वविद्यालय, डा० भक्त राम, दिल्ली विश्वविद्यालय, डा० प्रशान्त कुमार, डा० गगा राम गर्ग आदि विद्वानों ने भाग लिया। इसके पश्चात् वैदिक शिक्षा राष्ट्रीय कार्यशाला, स्मारिका प्रकाशित की गई। इसका सफल सयोजन डा० जयदेव वेदालंकार, ने किया। वैदिक कार्यशाला की स्मारिका का विमोचन डा० वासुदेव सिह, मन्त्री उत्तर प्रदेश ने किया।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अनुदान से विश्वविद्यालय में विजिटिंग प्रोफेसर्स/फैलो आदि के रूप में अन्य विश्वविद्यालय से विद्वानों को आमन्त्रित किया गया। इस स्कीम के अन्तर्गत इस विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग में डा० रूपनागपाल, आई. आई. टी. दिल्ली, जन्तुविज्ञान विभाग में डा० टण्डन, लखनऊ विश्वविद्यालय आदि ने भाग लिया। इसके साथ ही गणित विभाग में डा. तोमर, रूड़की विश्वविद्यालय तथा डा. सिन्हा, भू. पू. प्रिंसीपल, प्रा. भारतीय इतिहास विभाग में डा. उपेन्द्र ठाकुर, मगध विश्वविद्यालय आदि को आमन्त्रित किया गया है। जिनका आगमन अगस्त मास से नवीन सत्र प्रारम्भ होने पर आरम्भ हो जायेगा।

विभिन्न विभागों में शोध कार्य भी प्रगति पर हैं। वेद, संस्कृत,

हिन्दी, प्राचीन भारतीय इतिहास में पहले से ही शोध कार्य चल रहा है। अब दर्शन विभाग में भी शोध कार्य प्रारम्भ करने की स्वीकृति विश्व-विद्यालय अनुदान आयोग से प्राप्त हो गई है। इसी प्रकार जूनियर फैलाशिप भी ६ छात्र-छात्राओं को स्वीकृत की गई है।

कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा, के प्रयास से गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय को एसोसियेशन आफ आल इण्डियन युनिवर्सिटीज से मान्यता प्राप्त है तथा कामनवैल्थ एसोसियेशन से भी सबद्धता प्राप्त हो गयी है।

इस विश्वविद्यालय की ओर से श्री राजेन्द्र प्रसाद, प्रवक्ता भौतिकी विभाग, सैकिण्ड, कालेज ऑन माईको प्रासेसर कोर्स में ईटली भेजे गये हैं।

विश्वविद्यालय में एक हजार वृक्ष लगाये गये।

संग्रहालय की दुर्लभ मूर्तियां प्रदर्शनी हेतु विदेश भेजी गयी।

विश्वविद्यालय के वार्षिकोत्सव पर आयोजित वेद सम्मेलन में डा. वासुदेव सिह, मन्त्री, उत्तर प्रदेश शासन, ने भाग लिया। इसके पश्चात् इस अवसर पर आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन भी मान्य मन्त्री जी ने किया।

इस वर्ष की महान उपलब्धि रही दीक्षान्तोत्सव पर महामहिम राष्ट्रपति श्री जैल सिंह का आगमन तथा दीक्षान्त भाषण। श्री जैल सिंह को इस अवसर पर विद्या मार्तण्ड की उपाधि से विभूषित किया गया। दीक्षान्तोत्सव पर इस वर्ष १६५ छात्रों को अलंकार, बी. एस.-सी., एम. ए., एम.एस.-सी. तथा पी-एच. डी. की उपाधि से अलंकृत किया गया।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की प्रगति, भारत सरकार, विश्व-विद्यालय अनुदान आयोग एवं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सहयोग से

निरन्तर हो रही है और यह अपने विकास की ओर अग्रसर है।

विश्वविद्यालय के विकास एवं वित्ताय कार्यों में श्री बी. एम. थापर वित्ताधिकारी का जो सहयोग मिला, उसके लिए हम उनके आभारी है।

गत वर्षों में विश्वविद्यालय परिसर में शांति व्यवस्था को बनाए रखने में श्री के. एन. सिंह भूतपूर्व जिलाधिकारी श्री एल. के. गुप्ता वर्तमान जिलाधिकारी, श्री आर. के. पंडित वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, श्री घनश्याम पत स्थानीय न्यायधीश एवं श्री बैजनाथ सिह उप पुलिस अधीक्षक, का जो सहयोग मिला, उसके लिए हम आभार प्रकट करते हैं।

मैं विश्वविद्यालय की ओर से सभी सहयोगियों का धन्यवाद करता हूँ। जिन्होंने इसके सम्पादन कार्य में सहयोग देकर इस कार्य को सम्पन्न कराया।

डा. जबर सिंह सेंगर
कुलसचिव

गुरुकुल कांगड़ी संक्षिप्त परिचय

जैसे ही बीसवी शताब्दी की उषा-लालिमा ने अपने तेजस्वी रूप की छटा बिखेरनी प्रारम्भ की, एक नई आशा, एक नये जीवन, एक नयी स्फूर्ति का जन्म हुआ। ४ मार्च सन् १९०२ ई. को स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपने कर कमलों से एक नये पौधे का रोपण किया। यही नन्हा सा पौधा आज ८१ वर्ष बाद ऐसा वृक्ष सिद्ध हुआ जिसने अपनी शाखाओं को पुन धरती में संजो लिया और फिर उन्हीं शाखाओं से नयी टहनियां फूट आई। यह पौधा गुरुकुल कांगड़ी, जिसकी स्थापना गंगा के पूर्वी तट पर हरिद्वार के निकट कांगड़ी ग्राम के समीप हुई थी।

१९ वीं शताब्दी में लार्ड मेकाले ने भारत में वह शिक्षा पद्धति चलाई, जो उनके देश में प्रचलित थी। पर मुख्य अन्तर यह था कि जहां इंग्लैन्ड में शिक्षित युवक अपनी ही भाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करके सम्मानजनक नागरिक बनने का स्वप्न देखते थे, वहां भारत में विदेशी भाषा के माध्यम से पढ़े हुए युवक ब्रिटिश शासन के सचिवालयों में नौकरी की खोज करते थे। एक ओर तो शासन द्वारा प्रतिपादित शिक्षा पद्धति का यह स्वरूप था, दूसरी ओर वाराणसी आदि प्राचीन शिक्षा स्थलों पर पाठशालायें चल रही थी। विद्यार्थी पुरानी पद्धति से संस्कृत साहित्य तथा व्याकरण का अध्ययन कर रहे थे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने एक ऐसी शिक्षा-पद्धति का अविष्कार किया, जिसमें दोनों शिक्षा पद्धतियों का समन्वय हो सके, दोनों के गुण ग्रहण करते हुए दोषों को तिलान्जलि दी जा सके। अतः गुरुकुल की प्रारम्भिक योजना में संस्कृत साहित्य और वेदांग की शिक्षा

के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा का भी यथोचित स्थान दिया गया था और शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हिन्दी रखा गया था। निस्सन्देह स्वामी जी के मन में शिक्षा के क्षेत्र में आई इस मानसिक क्रान्ति का स्रोत महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के शिक्षा सम्बन्धी विचार थे जिन्हें वे मूर्त रूप प्रदान करना चाहते थे। इनमें ब्रह्मचर्य और गुरु-शिष्य के सम्बन्धों पर बल था।

कुछ बर्षो बाद महाविद्यालय विभाग प्रारम्भ हुआ। महाविद्यालय स्तर तक गुरुकुल में सब विषयों को शिक्षा मातृ-भाषा हिन्दी के माध्यम से दी जाती थी। उस समय आधुनिक विज्ञान की पुस्तकें हिन्दी में बिलकुल नही थी। गुरुकुल के उपाध्यायो ने पहिले-पहल इस क्षेत्र में काम किया। प्रो. महेश चरण सिंह जी की हिन्दी कैमिस्ट्री, प्रो. राम चरण दास सक्सेना का गुणात्मक विश्लेषण, प्रो साठे का विकासवाद, श्रीयुत गोवर्धन की भौतिकी और रसायण, प्रो. सिन्हा का वनस्पति शास्त्र, प्रो. प्राणनाथ का अर्थशास्त्र और प्रो. सुधाकर का मनोविज्ञान, हिन्दी में अपने-अपने विषय के ग्रन्थ है। प्रो. रामदेव ने मौलिक अनु-संधान कर अपना प्रसिद्ध "भारत वर्ष का इतिहास" प्रकाशित किया।

१९१२ में प्रथम दीक्षान्त हुआ जब गुरुकुल से दो ब्रह्मचारी हरिश्चन्द्र और इन्द्र (दोनो स्वामी श्रद्धानन्द जी के सुपुत्र) अपनी शिक्षा पूर्ण कर स्नातक हुए।

गुरुकुल निरन्तर लोकप्रिय होता जा रहा था। केवल भारतीय जनता ही नही, अनेक विदेशियों को भी गुरुकुल ने अपनी ओर आकृष्ट किया। प्रमुख विदेशी आगन्तुकों में सी. एफ. ए. एण्ड्रज, ब्रिटिश ट्रेड यूनियन के नेता श्रीयुत सिडनी वेब और ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्री रेम्जे मैक्डानल्ड उल्लेखनीय है।

ब्रिटिश सरकार ने पहले गुरुकुल को राजद्रोही संस्था समझा। सरकार का यह भ्रम तब तक दूर नही हुआ, जब तक संयुक्त प्रान्त के

गवर्नर सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल को अपने आंखों से नही देख गये। सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल मे चार बार पधारे। भारत के वायसराय लार्ड चैम्स्फोर्ड भी गुरुकुल पधारे। गुरुकुल राजद्रोही न था, पर जब कभी धर्म, जाति व देश के लिए सेवा और त्याग की आवश्यकता हुई, गुरुकुल सबसे आगे रहा। १९०७ के व्यापक दुर्भिक्ष, १८०८ के दक्षिण हैदराबाद के जल-विप्लव, १९११ के गुजरात के दुर्भिक्ष और दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गाधी द्वारा प्रारम्भ सत्याग्रह संग्राम में गुरुकुल ब्रह्मचारियो ने मजदूरी करके और अपने भोजन में कमी करके दान किया। इसी भावना को देखकर महात्मा गांधी तीन बार गुरुकुल पधारे। वह कुटिया अब भी विद्यमान है, जिसमें महात्मा गांधी ठहरे थे। बहुत पीछे गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने हैदराबाद सत्याग्रह और हिन्दी आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया और जेल भी गये।

गुरुकुल ने एक आन्दोलन का रूप धारण कर लिया और परिणाम स्वरूप मुलतान, कुरुक्षेत्र, भटिंडु, सूपा आदि स्थानो पर गुरुकुल खोले गये। बाद में झज्जर, देहरादून, भटिंडा, चित्तौड़गढ़ आदि स्थानों पर भी गुरुकुल खोले गये। अन्य धर्मविलम्बियों ने भी महर्षि दयानन्द के शिक्षा सम्बन्धी आदर्शों को स्वीकार करके गुरुकुल के ढंग के शिक्षणालय खोलने शुरू किये।

१४ वर्ष तक अर्थात् १९१७ तक महात्मा मुशीराम जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता रहे। उसी वर्ष उन्होंने सन्यास धारण किया और वे मुंशीराम से श्रद्धानन्द हो गये। उस वर्ष विद्यालय विभाग में २७६ और महाविद्यालय विभाग में ६४ विद्यार्थी अध्ययन कर रहे थे।

१९२१ में गुरुकुल विश्वविद्यालय के रूप में परिणत हो गया। इसी वर्ष इस विवाद का अन्त हो गया कि गुरुकुल केवल एक धार्मिक विद्यालय है और सामान्य शिक्षा देना गुरुकुल का काम नहीं है। यह भी निश्चय हुआ कि विश्वविद्यालय के साथ निम्न महाविद्यालय होगे।

(१) वेद महाविद्यालय

(२) साधारण (कला) महाविद्यालय
(३) आयुर्वेद महाविद्यालय
(४) कृषि महाविद्यालय

वाद में एक व्यवसाय महाविद्यायय (Industrial College) भी इसमें जोड दिया गया।

बाढ़ :—१६२४ में गगा में भयंकर बाढ़ आई और गुरुकुल की बहुत सी इमारतें नष्ट हो गई। अत: निश्चय किया गया कि गुरुकुल उसी स्थान पर खोला जाये, जहा पर इस प्रकार के खतरे की आशंका न हो। यह स्थान हरिद्वार से ५ किलोमीटर की दूरी पर ज्वालापुर के समीप गगा नहर के किनारे पर स्थित है।

१६२७ का वार्षिकोत्सव रजत जयन्ती (सिल्वर जुबली) के रूप में मनाया गया। इसमें ५० हजार से अधिक यात्री विविध प्रान्तों से सम्मिलित हुए। इनमें महात्मा गांधी, पं. मदन मोहन मालवीय, बाबू राजेन्द्र प्रसाद, सेठ जमुना लाल बजाज, डा. मुजे साधुवर, वासवानी आलि उल्लेखनीय हैं। जयन्ती महोत्सव तो बडी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ, पर ३ मास पूर्व २३ दिसम्बर १६२६ को स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान हो गया था और उनका अभाव सबको खटकता था। १६२१ से पं. विश्वंभरनाथ जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए, पर १६२७ में रजत महोत्सव सम्पन्न करवाने के बाद वे गुरुकुल से चले गये।

पं विश्वम्भर नाथ जी के बाद १६२७ में आचार्य रामदेव जी, जो १६०५ में गुरुकुल आये थे, मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए। इनके प्रयत्न से लाखों रूपया गुरुकुल को दान में मिला। गुरुकुल को नई भूमि पर इमारतें बननी शुरू हुई। आचार्य रामदेव जी के पश्चात् प्रसिद्ध विद्वान् और प्रचारक पं. चमूपति जी तीन वर्ष तक मुख्याधिष्ठाता रहे। १६३५ में पं. सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए और पं देव शर्मा जी विद्यालंकार आचार्य पद पर आसीन हुए। सन् १६४२ में स्वास्थ्य खराब होने के कारण सत्यव्रत जी ने मुख्याधिष्ठाता पद

से त्यागपत्र दे दिया और उनके स्थान पर पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति नियुक्त हुए। कुछ समय बाद आचार्य अभयदेव जी ने भी त्यागपत्र दे दिया। पं. बुद्धदेव जी गुरुकुल के नये आचार्य बने पर वे भी १९४३ में चले गये। उनके स्थान पर पं. प्रियव्रत जी आचार्य नियुक्त हुए।

मार्च १९५० मे गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मनाया गया। दीक्षान्त भाषण स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद ने दिया। इस अवसर पर पधारने वालों में श्री चन्द्रभानु गुप्त, श्री घनश्याम सिह गुप्त, राजाधिराज श्री उम्मेद सिह जी शाहपुराधीश, दीवान बद्रीदास जी, प ठाकुर दास जी, महाशय कृष्ण जी, स्वामी सत्यानन्द जी, स्वामी आत्मानन्द जी, श्री वासुदेव शरण जी अग्रवाल, पं बुद्धदेव जी विद्यालकार, पं सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार, कुवर चांदकिरण जी शारदा उल्लेखनीय है। भारत सरकार की ओर से राष्ट्रपति ने एक लाख रूपये का दान दिया। यह प्रथम अवसर था जब गुरुकुल ने सरकार ने अनुदान लिया। १९५३ में पं धर्मपाल विद्यालंकार सहा० मुख्याधिष्ठाता नियुक्त हुए जो लगभग २० वर्ष रहकर सेवामुक्त हुए।

१ अगस्त १९५७ को पं. जवाहरलाल नेहरू गुरुकुल पधारे और उन्होंने विज्ञान महाविद्यालय का उद्घाटन किया। १९६० में विश्वविद्यालय की हीरक जयन्ती मनाई गई। इस वर्ष पर एक पुस्तिका भी प्रकाशित की गई, जिसका नाम है "गुरुकुल कांगडी के ६० वर्ष"। २० वर्ष से भी अधिक कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता रहने के पश्चात् पं. इन्द्र जी को गुरुकुल से विदाई दी गई। उनके पश्चात् पं सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार गुरुकुल के कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता बने। इन्ही के समय १९६२ में गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय को भारत सरकार से विश्वविद्यालय के समकक्ष होने की मान्यता मिली। विधिवत् ८ विषयो में एम०ए० कक्षाएं भी चालू हुई। अब चार विषयों में पी-एच०डी० (शोध-व्यवस्था) भी है। इन्ही के समय १९६६ में डा. गंगाराम जी प्रथम पूर्णकालिक कुल-सचिव, जो अग्रेजी विभाग १९५२ से कार्य कर रहे थे, नियुक्त हुए। आचार्य प्रियव्रत जी जो १९४३ से आचार्य पद पर चले आ रहे थे, १९६९ में गुरुकुल के कुलपति बने। इनके प्रयत्नों से विश्वविद्यालय को

पंच-वर्षीय योजना के अन्तर्गत धन प्राप्त हुआ और स्टाफ के वेतनमानों संशोधन हुआ।

गुरुकुल को स्थापित हुए ८१ वर्ष हो गये हैं। गुरुकुल के स्नातकों ने प्राचीन इतिहास, वेद, संस्कृत, हिन्दी आयुर्वेद, पत्रकारिता आदि के क्षेत्रों में जो उल्लेखनीय योगदान किया, वह सदा स्मरणीय रहेगा।

विश्वविद्यालय के उपाध्यायों ने भी लेखन के क्षेत्र में एवं शोधकार्य में आशातीत प्रगति की है। गुरुकुल की पत्रिकाओं के माध्यम से हम शैक्षिक एव सांस्कृतिक क्षेत्र मे काफी योगदान कर रहे है। जनहित क्षेत्र में भी हमने अपना मातृग्राम कागडी को अगीकृत किया है, जिसमें गोवर्धन शास्त्री पुस्तकालय की स्थापना की जा चुकी है और उसके लिए कुलपति श्री हूजा जी ने ५००/- रू. का दान भी संघड़ विद्या सभा से दिलवाया है। इसी प्रकार से विश्वविद्यालय ने ग्राम कांगड़ी एवं ग्राम जगजीतपुर को भी अगीकृत किया है और स्वास्थ्य, सफाई, सास्कृतिक, प्रौढ शिक्षा आदि कार्यों पर जोर दिया जा रहा है।

(२) इस समय निम्न संरचना विश्वविद्यालय के अन्तर्गत कार्य कर रहे है।

विद्यालय :—प्रथम कक्षा से १० वीं कक्षा तक। अन्तिम परीक्षा उत्तीर्ण करने पर विद्याधिकारी का प्रमाण-पत्र दिया जाता है।

वेद महाविद्यालय :—प्रथम वर्ष से चतुर्थ वर्ष तक। उत्तीर्ण करने पर वेदालंकार की स्नातक उपाधि प्रदान की जाती है। इसी महा-विद्यालय के अन्तर्गत वेद और संस्कृत में एम.ए और पी-एच. डी. की उपाधियां प्राप्त करने की व्यवस्था है।

साधारण कला महाविद्यालय :—इसमें प्रथम वर्ष से चतुर्थ वर्ष तक उत्तीर्ण करने पर विद्यालंकार की स्नातक उपाधि दी जाती है। इसी

महाविद्यालय के अन्तर्गत दर्शन, प्राचीन भारतीय इतिहास, एव संस्कृति, मनोविज्ञान, हिन्दी, गणित और अंग्रेजी में एम. ए. तक के अध्ययन की व्यवस्था है। पी-एच. डो. उपाधि प्राचीन भारतीय इतिहास और हिन्दी विषयों में प्राप्त की जा सकती है।

विज्ञान महाविद्यालय :—इसमें प्रथम वर्ष तथा द्वितीय वर्ष उत्तीर्ण करने पर बी. एस.-सी. को उपाधि प्रदान की जाती है। सम्प्रति भौतिकी, रसायन, वनस्पति, शास्त्र, जन्तु विज्ञान और गणित में अध्ययन की व्यवस्था है।

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी :—यह आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माणार्थ एक बहुत बड़ा फार्मेसी है। बिक्री ६० लाख से ऊपर है। इससे प्राप्त लाभ ब्रह्मचारियों पर खर्च किया जाता है।

(३) इस समय जो गुरुकुल के भवन हैं, उनका अनुमानतः मूल्य १ करोड़ से कही ऊपर है। इन भवनो में वेद तथा साधारण महाविद्यालय, विज्ञान महाविद्यालय, पुस्तकालय, सग्रहालय, टेकचन्द नागिया छात्रावास, सीनेट हाल, विद्यालय, विद्यालय आश्रम, गौशाला, राजेन्द्र छात्रावास, उपाध्यायों तथा कर्मचारियों के आवास गृह सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त जो भूमि है, इसका भी अनुमानतः मुल्य १ करोड़ से कम नहीं है।

(४) १९७५ से श्री बलभद्र कुमार हूजा, आई. ए. एस (अवकाश प्राप्त) कुलपति एवं मुख्याधिष्ठाता का कार्य कर रहे हैं। सम्प्रति डा सत्यव्रत जी सिद्धान्तालकार गुरुकल कांगडी विश्वविद्यालय के विजिटर हैं और श्री वीरेन्द्र जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधी सभा, पंजाब, कुलाधिपति।

विश्वविद्यालय के विजिटर महोदय को भी राष्ट्रपति पुरस्कार तथा हिन्दी ग्रन्थ अकादमी से भी इन्हें अपने लेखन कला के क्षेत्र में पुस्तकों पर पुरस्कार मिल चुका है। श्री कुलपति जी भी इस संस्था को बनाने में

जो अथक प्रयत्न कर रहे हैं वो आज हमारे सामने हैं और उससे गुरुकुल को काफी प्रतिष्ठा मिली है एवं प्रगति की ओर अग्रसरित द्रुतगामी गति से हो रहा है। मान्य कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी का भी इस संस्था के हित में वरद-हस्त प्राप्त है।

रामप्रसाद वेदालंकार
आचार्य एवं उप-कुलपति

—0—

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय के

दीक्षान्त समारोह

१५ अप्रैल, १९८३-२५ चैत्र, १९०५ (शक)
के अवसर पर भारत के राष्ट्रपति श्री जैल सिंह का भाषण

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के दीक्षान्त समारोह में शामिल होकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई है। इस अवसर पर आपने जो मुझे सम्मान दिया है और जो प्यार भरे शब्द कहे हैं, उनके लिए मैं आपका आभारी हू।

शिक्षा संस्थाए पवित्र स्थान होते हैं और यह स्थान तो और भी अधिक पवित्र और ऐतिहासिक है, क्योंकि इसका पौधा हमारे स्वतन्त्रता सेनानी और पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज द्वारा लगाया गया था। हमारे लिए यह बड़े गौरव की बात है कि यह विश्वविद्यालय हमारे प्राचीन ऋषियों-मुनियों की गुरुकुल परम्परां पर आज से ८१ वर्ष पहले स्थापित किया गया था, जिसका उद्देश्य वैदिक शिक्षा के अलावा अन्य सभी विषयों की शिक्षा, भारतीय भाषाओं, खास तौर से, हिन्दी के माध्यम से देना है। मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि इस विश्वविद्यालय के आचार्यों ने फिज़िक्स, कैमिस्ट्री, बॉटनी, इकोनोमिक्स, मनोविज्ञान और राजनीति-शास्त्र जैसे विषयों में हिन्दी पुस्तकें तैयार की और हिन्दी को उच्च शिक्षा का माध्यम बनाया।

आज का युग विज्ञान का युग है। दर-असल, वैदिक युग भी विज्ञान का युग था। वेदों में विज्ञान के मूल मन्त्र पाये जाते हैं, जिनसे पता चलता है कि प्राचीन काल से ही भारत विज्ञान और टैक्नोलाजी के क्षेत्र में बहुत आगे था। यह विश्वविद्यालय बधाई का पात्र है कि यहां विज्ञान के विषयों की शिक्षा भी भारतीय भाषा में दी जाती है।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में अध्यापकों और शिष्यों का बड़ा नजदीकी सम्बन्ध होता है। इस प्रणाली में चरित्र निर्माण, सदाचार, त्याग और सादगी पर अधिक बल दिया जाता है। प्राचीन गुरुकुल प्रणाली में यह परम्परा थी कि शिष्य अपनी शिक्षा समाप्त करने के बाद, जब वहां से विदा लेता था तो आचार्य उन्हें अपने जीवन में कुछ आदर्शों का पालन करने की शिक्षा देते थे, जिनमें उपनिषद् का यह अमर वाक्य होता था :

"सत्यम् वद्, धर्मम् चर"

सत्य बोलना चाहिए और धर्म का पालन करना चाहिए। हमारे आज के नौजवानों को भी इस सन्देश की बहुत आवश्यकता है। गांधी जी ने भी सत्य और अहिंसा के जरिये ही देश को संगठित होने और विदेशी शासन से मुक्त होने की प्रेरणा दी थी। मैं यहा यह भी कहना चाहूंगा कि भारत एक धर्म निरपेक्ष राज्य है और यहां सभी धर्मों के प्रति समान आदर की भावना है। इस देश की सांस्कृतिक विरासत बहुत महान् है। इसे समृद्ध बनाने में हमारे ऋषियों, मुनियों, गुरुओं तथा अनेक मत मतान्तरों, पंथो और विचारधाराओं का योगदान रहा है। हमारे देश की आजादी को लडाई भी इन्हीं आदर्शो को लेकर लड़ी गई थी। जिन महापुरुष स्वामी, श्रद्धानंन्द जी के अथक प्रयत्नों से इस विश्वविद्यालय की नीव रखी गई थी, वे बहुत बडे साहसी और देश भक्त थे। उन्होंने आर्य समाज का प्रचार करते हुए भी, राष्ट्रीय एकता और आजादी के लिए अपना सब कुछ न्यौछावर कर दिया था। इनसे पहले आर्य समाज के संस्थापक, स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ऐसे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने स्वराज्य का नारा बुलन्द किया था और निडर होकर घोषणा की थी कि विदेशी सरकार कितनी भी अच्छी क्यों न हो उससे स्वदेशी सरकार सदा ही बेहतर है। इसी से देश के अनेक नेताओं को प्रेरणा मिली और आर्य समाज के अनेक नेताओं ने देश की आजादी के लिए कुर्बानियां दी। लाला लाजपतराय, स्वामी श्रद्धानन्द, रामप्रसाद बिस्मिल, उनके मित्र अशफाक उल्लाह खां, ठाकुर रोशन सिंह, शहीद भगत सिंह तथा सुखदेव, भाई परमानन्द, पंडित गैंदालाल दीक्षित

जैसे भारत के अनेक सपूत आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। यह संस्था भी उसी श्रृंखला की एक कड़ी है।

शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास करना है, जिससे कि वह समाज का एक उपयोगी अंग बन सके। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि इस विश्वविद्यालय में पढाई के साथ-साथ सदाचार और चरित्र निर्माण पर भी विशेष बल दिया जाता है। आज के इन नौजवानों के हाथों में ही कल के भारत की बागडोर होगी। राष्ट्र की आजादी के लिए जिन हजारो नेताओं और वीरो ने कुर्बानियां दी थी, जिन माताओ और बहनों ने अपार कष्ट और मुसीबतें झेली थी, उस आजादी की रक्षा करना अब इन नौजवानों की जिम्मेदारी है। आज देश में साम्प्रदायिकता और क्षेत्रवाद की ताकतें फिर से सर उठा रही है। राष्ट्रीय एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए इन चुनौतियों का डटकर मुकाबला करना होगा। शिक्षा संस्थाओं में उग्रवादी तत्वों को कभी भी शरण नहीं देनी चाहिए।

हमारा देश सदा से ही एक अमन पसन्द देश रहा है। हाल ही में दिल्ली में हुए सौ से अधिक देशों के गुट-निरपेक्ष सम्मेलन में एक स्वर से भारत की शान्ति की नीति को स्वीकार किया गया और हमारी प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की रहनुमाई में विश्वास व्यक्त किया गया। हम सब को चाहिए कि अपने देश के सम्मान को सुरक्षित रखने के लिए मेल-जोल, भाईचारे और आपसी सहयोग से काम लें।

यह बड़ी खुशी को बात है कि इस विश्वविद्यालय के छात्र खेलकूद के क्षेत्र में भी बढ-चढ़ कर हिस्सा ले रहे हैं। मुझे यह भी बताया गया है कि यहां विदेशी खेलों के साथ-साथ अपने देश में प्रचलित कबड्डी, खो-खो, गुल्ली-डन्डां जैसे भारतीय खेलों को भी पूरी तरह बढ़ावा दिया जा रहा है और यहां की कबड्डी की टीम एक बेहतरीन टीम मानी जाती है। हमें चाहिए कि इन परम्परागत भारतीय खेलों को भी समुचित प्रोत्साहन दिया जाये। पिछले दिनों दिल्ली में नवं एशियाई खेलों का आयोजन किया गया था, जिसमें हमारे देश के मुखतलिफ

हिस्सों के नौजवान खिलाडियों ने खेल का सराहनीय प्रदर्शन किया था। इससे देश का नाम तो ऊंचा हुआ ही है, देश में खेलों के प्रति रूचि भी बढ़ी है। खेल-भावना बच्चों और नौजवानों में पैदा की जानी बहुत जरूरी है। जीवन के हर क्षेत्र में यह भावना मौजूद रहनी चाहिए।

जीवन में परिश्रम का बहुत महत्व है। मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई है कि यहां के छात्रों ने पिछले दो वर्षों में लगभग दो हजार पेड़ लगाए और उनकी देखभाल की। यह एक बहुत नेक काम है। वृक्ष हमारे लिए बहुत उपयोगी है पेडों के कटते रहने से आज वायु प्रदूषण की बहुत बडी समस्या उठ खडी हुई है। आदर्श व्यवस्था यह है कि देश की भूमि के एक तिहाई भाग में पेड़ पौधे होने चाहिए, जबकि जनसंख्या अधिक होने के कारण हमारे देश में अब केवल बारह प्रतिशत भूमि पर ही पेड़ पौधे रह गए हैं।

इस विश्वविद्यालय ने दूसरा महत्वपूर्ण काम यह किया है कि इसने कांगडी ग्राम के विकास की योजना को हाथ मे लिया है। मुझे यह जान कर खुशी हुई है कि इस गांव में राष्ट्रीय सेवा योजना का एक कैम्प लगाया गया था। गांव की सडकों को पक्की करने के लिए कई संस्थाओं ने माली इमदाद दी और भारत सरकार ने भी इनमें योगदान दिया था। यहां एक चलता-फिरता अस्पताल और पुस्तकालय भी कायम किया गया है, जिससे इस गाव के लोगों को स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधा मिल सके और लोगो में पठन-पाठन के प्रति दिलचस्पी बनी रहे। मुझे उम्मीद है कि इस विश्वविद्यालय द्वारा उठाये गये इस महत्वपूर्ण कार्य में दूसरी समाज सेवी संस्थायें भी और अधिक योगदान देंगी, जिससे कि गांव के निर्धन, पद-दलित, पिछडे और कमजोर वर्ग के लोगों को और अधिक सहूलियतें मुहैया कराई जा सकें और उनके रहन-सहन के स्तर को ऊंचा उठाया जा सके। आर्य समाज के नौंवे नियम में भी यही कहा गया है कि मनुष्य को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट नहीं होना चाहिए बल्कि सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

इसका एक लाभ यह भी होगा कि छात्रों को गांव में काम करने

श्रौर श्रम के महत्व को समझने में भी सहायता मिलेगी । मेहनती बालक ही हमारे देश श्रौर समाज की श्रमूल्य निधि है ।

मुझे श्राशा है कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय श्रपनी गुरुकुल की प्राचीन शिक्षा पद्धति के साथ-साथ, शिक्षा जगत् में हुई नई उपलब्धियों का भी लाभ उठाते हुए उन्नति के पथ पर श्रागे बढ़ता जाएगा श्रौर देश के नव-निर्माण में श्रपना महत्वपूर्ण योगदान देगा ।

इन शब्दों के साथ, मैं फिर एक बार चांसलर महोदय श्रौर यहां के कुलपति को धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने मुझे इस गौरवपूर्ण समारोह में शामिल होने का निमत्रण दिया । मैं श्राज यहां उपाधियां प्राप्त करने वाले नौजवानों को भी बधाई देता हूँ श्रौर कामना करता हूँ कि वे श्रपने श्रसली जीवन में उन पवित्र श्रादर्शों को श्रपनाते रहेंगे, जिनकी शिक्षा-दीक्षा इस विश्वविद्यालय में उन्होंने ली है ।

जयहिन्द

— 0—

कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा I A S. (Retd.) महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह का स्वागत करते हुए।

महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह तथा विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र
दीक्षान्त समारोह के उदघाटन के लिये जा रहे है।
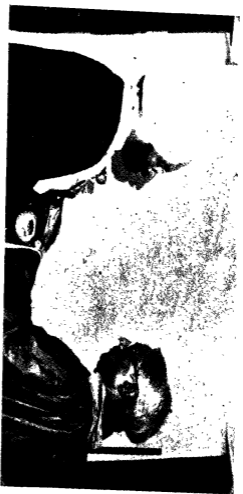
डा जबर सिह सैंगर कुलसचिव भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह जो को गाऊन पहना रहे है।

कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा आचार्य भगवान देव एम.पी महामहिम ज्ञानी जैल सिंह, कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र, आचार्य राम प्रसाद वेदालंकार तथा कुल सचिव जबर सिंह

महामहिम राष्ट्रपति दीक्षान्त भाषण देते हुये ।

डा. सत्यव्रत सिद्धांतालंकार विश्वविद्यालय के विजिटर दीक्षांत समारोह पर भाषण दे रहे हैं।

कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिह जी, श्री बृज मोहन थापर वित्ताधिकारी तथा श्रीमति जयदेव जलपान पर बात करते हुये ।

श्री वीरेन्द्र जी कुलाधिपति, श्री विश्वनाथ वेदालंकार को "गोवर्द्धन शास्त्री" पुरस्कार (सघड विद्या सभा जयपुर द्वारा प्रदत्त) प्रदान करते हुये।

दीक्षान्त-समारोह
१५ अप्रैल, १९८३

पर

कुलपति बलभद्र कुमार हूजा द्वारा
स्वागत भाषण

महामहिम राष्ट्रपति जी, कुलाधिपति जी विशिष्ट अतिथिगण, सहयोगियों देवियों, सज्जनों एवं ब्रह्मचारियों !

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के वार्षिक दीक्षांत समारोह पर आप सबका हार्दिक अभिनन्दन करने का अवसर पाकर मैं गौरव मिश्रित प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ। महामहिम राष्ट्रपति जी का मैं विशेष रूप से आभारी हूं। कार्य की अधिकता के रहते हुए भी उन्होंने हमारे निमन्त्रण को स्वीकार करने की कृपा की तथा अपनी गरिमामयी उपस्थिति से इस समारोह की शोभा बढ़ाई। आजादी के निर्भीक योद्धा तथा राष्ट्र के प्रथम नागरिक को अपने बीच पाकर सारा गुरुकुल परिवार आज आनन्द विभोर हो उठा है।

श्रीमन्,

आपका सारा जीवन देश भक्ति त्याग, बलिदान, समर्पण, अन्याय का मुकाबला तथा कमजोर वर्गों के प्रति क्रियात्मक सहानुभूति का शानदार प्रतीक रहा है। अतीत की उल्लेखनीय परम्पराओं को अपने में समेट कर, धूल भरे आदमी से लेकर महल में बैठे हुए चमकीले वैभव पिण्ड तक सबकी भलाई का संकल्प आपने किया हुआ है। इसी लिए आपकी सामाजिक, राजनीतिक तथा आत्मिक ऊंचाईयां तीनों कालों से

जुड़ी है। राष्ट्र की वर्तमान परिस्थितियों में आपका सन्त जीवन प्रकाश का केन्द्र बिन्दु है। टूटते हुए देश को सगठित और सुदृढ करने मे आपका आत्म विश्वास दृढ़ निर्णय, निश्चय ही प्रेरणादायक सिद्ध हुआ है। भारतीय भाषाओं के प्रति आपकी निष्ठा देखकर पहली बार लगा कि राष्ट्र ने अपनी अस्मिता और मौलिकता को फिर एक बार पहचान लिया है।

महामहिम,

आपके कार्यकाल की उषा बेला में भारत ने नवम् एशियाई खेलों का भव्य और सफल आयोजन किया है। इसके माध्यम से तरुण समुदाय को खेलकूद के मैदान में आगे बढने की प्रेरणा मिली है और अन्तर्राष्ट्रीय मैत्री तथा बन्धुता को बल मिला है।

इसी प्रकार मार्च १९८३ में दिल्ली में आमन्त्रित विश्व निर्गुट सम्मेलन को भी आपका वरदहस्त प्राप्त हुआ है। इस सम्मेलन ने तीसरे जगत के राष्ट्रों में पारस्परिक सहयोग और भारत के विश्वशाति के महान संकल्पों को एक बार फिर उजागर कर दिया है। निःसदेह यह आपके युग की दो स्वर्णिम उपलब्धियां हैं।

मान्यवर,

इस हेतु गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की शिष्ट परिशद् ने इस विश्वविद्यालय की मानद् उपाधि "विद्यामार्तण्ड" से आपको अलंकृत करने का निश्चय किया है। मैं उनकी ओर से यह उपाधि आपको प्रदान कर सम्मानित करता हूं।

देवियों और सज्जनों,

इस अवसर पर मैं वर्ष १९८३ के आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार विजेता श्री पण्डित विश्वनाथ विद्यालंकार का भी अभिनन्दन करता हूं।

यह पुरस्कार सघड विद्या सभा ट्रष्ट जयपुर के अनुदान से प्रतिवर्ष उस विद्वान अथवा सस्थान को दिया जाता है जो जनसाधारण के बीच वैदिक मूल्यो के प्रचार प्रसार मे अमूल्य सहयोग दे। श्री प० विश्वनाथ विद्यालकार गुरुकुल के यशस्वी स्नातक है जो वर्षों से निरन्तर वेद तथा आर्य सिद्धातो के पोषण एव प्रसार मे लगे हुए है। प्रभु उन्हे चिरायु करे।

मित्रो

वार्षिक दीक्षात समारोह गतवर्ष की गतिविधियो को सक्षेप में प्रस्तुत करने का एक उपयुक्त अवसर होता है। अपने स्थापना काल से लेकर ८३ वर्षों के इस विशाल अन्तराल मे इस विश्वविद्यालय ने आत्म-विश्वास परिपक्वता एव स्वालम्बन का एक ऊचा तथा निश्चित स्तर प्राप्त कर लिया है। इस शिक्षा सस्थान ने अध्ययन-अध्यापन, अनु-सधान और विस्तार के कार्यों के साथ साथ विद्यार्थी को सच्चे अर्थों मे मानव बनाने की दिशा मे सराहनीय कार्य किया है। अपने विकास की प्रक्रिया मे यह विश्वविद्यालय उस प्राचीन वैदिक शिक्षा के दर्शन से प्रभावित रहा है जिसमे ब्रह्मचर्य के पालन तथा गुरुशिष्य के माध्यम से सम्पूर्ण व्यक्तित्व से मण्डित एक स्नातक का निर्माण होता है। योग्य चरित्रवान राष्ट्रभक्त स्नातको का निर्माण सदा हमारा लक्ष्य रहा है जो ज्ञान और प्रचण्ड कर्म की गङ्गा मे स्नान कर निर्मल हो चुके हो।

आधुनिक भारत की शैक्षिक क्राति के पुरोधा स्वामी श्रद्धानन्द ने हिमालय पवत की तलहटी गङ्गा नदी के पूर्व तट पर कागडी ग्राम मे १९०२ मे गुरुकुल का स्थानान्तरण किया। भारत और विश्व के पुन-निर्माण के लक्ष्य को सामने रखते हुए महर्षि दयानन्द ने जिस प्रकार की शिक्षा पर बल दिया था, उन्ही आदर्शों से प्रभावित होकर स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल आन्दोलन का सूत्रपात किया। यह सुविदित है कि गत ८३ वर्षों मे गुरुकुल ने देश को ऊची कोटि के विद्वान, स्वतन्त्रता सैनानी, पत्रकार और चिकित्सक दिये हैं। गुरुकुल केवल एक शिक्षण

संस्थान ही नहीं, वरन् शिक्षा के क्षेत्र में एक नवीन प्रयोग और प्रबल आन्दोलन है। ब्रह्मचर्य, तपस्या, त्याग और आत्मचिन्तन इसके आधार हैं।

देवियों और सज्जनों,

कुछ अवांछनीय तत्वों की कुचेष्टा के कारण, गत वर्षों हमारे मार्ग में व्यवधान उपस्थित हो गये थे, किन्तु जुलाई १६८० के जिला जज सहारनपुर के ऐतिहासिक निर्णय के बाद हमने पुन: उसी मार्ग पर बढ़ना आरम्भ कर दिया है जो स्वामी श्रद्धानन्द ने दिखलाया था।

विश्वविद्यालय के संविधान में कतिपय दोषों की ओर शिक्षा मन्त्रालय तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा बार-बार इंगित किया जा रहा था। अत: १६८१ में इसमें समुचित परिवर्तन किया गया। इसके अन्तर्गत अब विश्वविद्यालय के कुलाधिपति का कार्यकाल एक वर्ष से बढ़ाकर तीन वर्ष कर दिया गया है। पहले आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रधान पदेन कुलाधिपति होता था। अब आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, हरियाणा, दिल्ली के प्रधानों की संस्तुति पर भारत का कोई भी सुयोग्य नागरिक सीनेट द्वारा तीन वर्ष के लिए कुलाधिपति के पद पर चुना जा सकता है। इसी प्रकार कुलपति की नियुक्ति के लिए भी जो चयन समिति अब गठित होती है, उसमें विश्वविद्यालय अनुदान आयोग प्रतिनिधि को भी सम्मिलित कर लिया गया है, जिससे इस सम्बन्ध में अनिश्चितता की स्थिति कभी उत्पन्न न होने पाये।

इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय के संविधान को अन्य दृष्टियों से स्वस्थ बनाने का प्रयास निरन्तर जारी है।

गतवर्ष विश्वविद्यालय के गुरुजनों और अधिकारियों ने समय-२ पर अनेक शिक्षा सम्मेलनों और परिचर्चा संगोष्ठियों में भाग लिया। प्रौढ़ शिक्षा, निरन्तर शिक्षा, समाज शिक्षा और जनसंख्या शिक्षा आदि

के क्षेत्रों में नवीन जानकारियां प्राप्त की गई और उन पर विस्तृत चर्चा के परिणामों के परिप्रेक्ष्य में अब यहां कार्यक्रम बनाये जा रहे है।

परीक्षाओ के क्षेत्र में हमारे गुरुजन विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के मार्गदर्शन में यथेष्ठ सुधार करने हेतु सचेष्ट हैं। हमारे पाठ्यक्रम किस प्रकार जीवनोपयोगी सिद्ध हों, इस दिशा में भी वह विचार कर रहे है।

विश्वविद्यालय के विद्यार्थी शैक्षिक क्षेत्र के अतिरिक्त खेलकुद में भी अपनी विशेष योग्यता प्रदर्शित करने में पीछे नही रहे। अब हमारे खिलाडी दल अन्तर-विश्वविद्यालय प्रतियोगिताओं मे भी भाग लेने लगे हैं।

मान्यवर,

विभिन्न स्तर के समुदायो में वेद प्रचार और ज्ञान-विज्ञान के विस्तार हेतु गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा पांच पत्रिकायें और "गोवर्द्धन ज्योति" प्रकाशित की जा रही है। लक्ष्य बोध रहे, इसका प्रतीक "ध्रुव" है। ध्रुव दृढ़ता का भी प्रतीक है। फिर है "प्रहलाद", जो ओज, तेज, दृढ संकल्प और तरुणाई का प्रतीक है। फिर है "आर्यभट्ट" जिस पर आरूढ होकर "प्रहलाद" ध्रुव की ओर बढ रहा है, वैदिक पथ" का अनुसरण करते हुए। "गुरुकुल पत्रिका" इस यात्रा का उद्घोष करती है। गोवर्द्धन ज्योति गुरुकुल का पथ प्रशस्त करती है।

यह ज्योति क्या है? यही न, कि गोवर्द्धन पर्वत की शरण में आये सभी स्त्री पुरुष अपने अपने डण्डे व उंगलियां उठाये, गोवर्द्धन को छत्रवत् धारण करें। तभी अतिवृष्टि से बचाव होगा। प्रजातन्त्र में सभी का कर्तव्य है कि सभी अपने धर्म का पालन करें। हम तो अवतारवाद में विश्वास नही करते। कब तक किसी नेता या देवता की प्रतीक्षा करेंगे? आइये, हम स्वय अपने गुरु बनें। अपनी दिव्याग्नि को जलायें। आत्मदीपो भव का आर्ष सन्देश सुनें। अपने दायित्व को समझें। तभी

देश का और हम सब का कल्याण होगा। हम जोवर्द्धनधारी बनें, यही "गोवर्द्धन ज्योति" का सन्देश है।

गत वर्षों में अनुसन्धान के क्षेत्र में वेद, संस्कृत, हिन्दी और प्राचीन भारतीय इतिहास विभागों द्वारा विशेश कार्य हुआ है। उदाहरण के लिए अनुसन्धान के कुछ विषयों का उल्लेख इस प्रकार है—

१—वैदिक मानवतावाद, २—महर्षि दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य में समाज का स्वरुप, ३- वेदों में वर्णित संस्थायें, ४—प्राचीन भारत में धर्मनिरपेक्षता, ५-प्राचीन भारत में जनमत, ६-हिन्दी व्याकरण का उद्गम और विकास, ७- इन्द्र विद्यावाचस्पति और उनकी साहित्य साधना, ८-मध्यकालीन हिन्दी साहित्य में वैदिक परम्परा, ९-प्रेमचन्द साहित्य पर आर्य समाज का प्रभाव, १०-भारत और कम्बुज के सम्बन्ध, ११:- भवभूति पात्रों में स्वात्म प्रक्षेपण।

सितम्बर १९८२ में, वैदिक शिक्षा प्रणाली पर गुरुकुल कांगड़ी में एक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों से उच्च कोटि के विद्वान् इसमें सम्मिलित हुए। वैदिक शिक्षा प्रणाली से ही देश का उद्धार सम्भव है, ऐसा मत सभी विद्वानों ने प्रकट किया। इस कार्यशाला में परीक्षा प्रणाली में सुधार और पाठ्यक्रम को संशोधित करने पर भी विशेष बल दिया गया। अपने उद्घाटन भाषण में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की अध्यक्षा श्रीमती माधुरी शाह ने भारत के नव जागरण के आन्दोलन में ऋषि दयानन्द की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आज देश को गुरुकुल के मार्गदर्शन की आवश्यकता है, क्योंकि उसके पास एक अमूल्य निधि है। वेद प्रकाश के पुञ्ज है। उन्होने आशा व्यक्त की कि गुरुकुल विश्वविद्यालय से ऐसी ज्योति प्रस्फुटित होगी जो न केवल देश अपितु विश्व का मार्ग प्रशस्त करेगी।

मान्यवर,

पिछले वर्ष सोवियत यूनियन, इटली, जर्मनी, इण्डोनेशिया तथा मेक्सिको के विद्वान् तथा राजनेता गुरुकुल पधारे। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि वे गुरुकुल शिक्षा पद्धति से अत्यन्त ही प्रभावित होकर इस देश से लौटे है। गुरुकुल के ब्रह्मचारियो के मुख से वेदमन्त्र सुनकर वे अत्यन्त ही मुग्ध हुए।

पिछले कुछ समय से विश्वविद्यालय में आरम्भ की गई योग शिक्षा भी आकर्षण का प्रबल केन्द्र बन गयी है। योग कक्षायें वयस्कों के लिये तथा विद्यालयों के ब्रह्मचारियों के लिये पृथक् रूप से चलायी जा रही है।

गुरुकुल का संग्रहालय और पुस्तकालय भी उत्कर्ष के मार्ग पर निरन्तर अग्रसर है। ज्ञान की सुरक्षा और इसके प्रसार में इनका महत्व सुविदित है। स्वामी श्रद्धानन्द की प्रेरणा से गुरुकुल सग्रहालय की स्थापना बीसवीं शती के प्रथम दशक में गंगापार पुण्यभूमि पर की गयी थी। वह छोटा सा पौधा अब विशाल वट-वृक्ष बन गया है।

गुरुकुल के पुस्तकालय में एक लाख से ऊपर पुस्तकें हैं। इनमें दुर्लभ पाण्डुलिपियों का अच्छा संग्रह है।

विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिये इस पुस्तकालय में आवश्यक पुस्तकों का सग्रह किया गया है। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि हमारे बहुत से स्नातक जो भारतीय प्रशासनिक सेवा, प्रान्तीय सिविल सेवा, सेना, इन्जीनियरिंग, स्वास्थ्य शिक्षण संस्थानों तथा बैंकों में नियुक्तियां प्राप्त करने में सफल हुए हैं, उन्हें इस पुस्तकालय से यथेष्ठ सहायता मिली है। विश्वविद्यालय के पुस्तकालय द्वारा ऐसे छात्रों के लिए जो शिक्षा के आर्थिक बोझ को नही उठा सकते, आंशिक रोज-गार योजना भी क्रियान्वित की गई है, जिसके अन्तर्गत छात्रों को

पुस्तकालय में दैनिक कार्य करने के बदले में आर्थिक अनुदान दिया जाता है।

गुरुकुल पुस्तकालय में संग्रहीत हजारों दुर्लभ पुस्तकों पत्रिकाओं आदि को माइक्रोफिल्मिंग द्वारा संरक्षित करने का कार्य नेहरु मैमोरियल म्यूजियम एव लाइब्रेरी देहली के सौजन्य से किया जा रहा है। गुरुकुल के वैभवपूर्ण इतिहास का स्मरण दिलाने वाले सद्धर्म प्रचारक, श्रद्धा, आर्य आदि पत्रो का सरक्षण माइक्रोफिल्मिंग द्वारा सम्पन्न हो चुका है। इस सहयोग हेतु हम नेहरु मैमोरियल म्यूजियम एवं लाइब्रेरी के आभारी हैं।

मित्रो,

आप जानते ही है कि १९८१ में हमने इस संस्था की जन्म स्थली ग्राम कांगडी को पूर्ण रूप से विकसित करने का संकल्प लिया था। बिजनौर के जिलाधिकारियों की सहायता से यह कार्य तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है। वृक्षारोपण के अतिरिक्त सड़को को पक्का करने का काम चल रहा। घरेलू उद्योग-धन्धे वहां प्रारम्भ किये जा रहे हैं। इस वर्ष दो गोबर गैस प्लान्ट और पाँच निर्बल आवास बनकर तैयार हो चुके है। स्टेट बैंक व न्यू बैंक आफ इण्डिया द्वारा कांगड़ी ग्राम निवासियों को आर्थिक सहायता प्राप्त हो रही है। ग्राम का नव–युवक मंगल दल ग्राम विकास में पूरी आस्था के साथ जुटा हुआ है।

कुछ ही माह पूर्व राष्ट्रीय सेवा योजना के महत्व को देखते हुए शिक्षा मन्त्रालय के सहयोग से इस कार्यक्रम को विश्वविद्यालय में भी आरम्भ करा दिया गया है। इस योजना के अन्तर्गत दिसम्बर १९८२ में एक दस दिवसीय शिविर का आयोजन कांगड़ी ग्राम की पुण्य भूमि में किया गया। शिविर वासियो ने समर्पण भावना से कांगड़ी ग्राम में सड़कों के निर्माण वृक्षारोपण, आर्थिक विकास तथा परिवार कल्याण की दिशा में अनेक कार्य किये। विश्वविद्यालय के पुस्तकालय द्वारा एक

लघु शाखा के रूप में वहां पर गोवर्धन पुस्तकालय की स्थापना की गई है।

इसी श्रृंखला मे हमारे अङ्गभूत महाविद्यालय कन्या गुरुकुल देहरादून की कन्याओं ने भी अपने समीपस्थ तपोवन में राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत एक सफल शिविर का आयोजन किया।

बन्धुओ,

विश्वविद्यालय का विद्यालय-विभाग भी गुरुकुल परम्परा के अनुरूप प्रगति के पथ पर अग्रसर है। प्रात ब्रह्म मुहूर्त में विद्यालय के ब्रह्मचारियो द्वारा वैदिक मन्त्रो का पाठ परिसरवासियों मे स्फूर्ति भर देता है। मन्त्र पाठ के पश्चात् ब्रह्मचारी योगाभ्यास के कार्यक्रम मे सम्मिलित होते हैं। तत्पश्चात् दैनिक यज्ञ की सुगन्धि से विश्व-विद्यालय का सम्पूर्ण क्षेत्र भर जाता है। विद्यालय के कार्यक्रम में वरिष्ठ ब्रह्मचारियो को प्रतिदिन एक वेदमन्त्र अर्थ सहित पढाया जाता है। जब सौ से अधिक मन्त्र इस प्रकार पढा दिये जाते है तो उन्हें गोवर्धन ज्योति के रूप में प्रकाशित कर दिया जाता है। इस वर्ष इस पुस्तिका का विमोचन गोवर्धन-ज्यन्ती के अवसर पर १६ मार्च को किया गया। इस अवसर पर स्थानीय विद्यार्थियों की वार्षिक वेदपाठ प्रति-योगिता का भी शुभारंभ किया गया।

किसी भी उत्तम शिक्षण-संस्थान के लिए सुन्दर वातावरण की आवश्यकता होती है। इस दृष्टि से यह विश्वविद्यालय बडा ही भाग्य-शाली है। प्रकृति ने भी जो सौंदर्य प्रदान किया है, उसे और भी मनोहारी बनाने के लिए हमारे सभी गुरुजन, विद्यार्थी और कर्मचारी क्रियाशील है। गतवर्ष यहां लगभग दो हजार फूलदान और अन्य वृक्ष लगाये गये जो प्रायः सभी चल रहे है।

मित्रो,

इस विश्वविद्यालय को चरमोत्कर्ष तक पहुंचाने का संकल्प

विश्वविद्यालय के शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों ने लिया है। पीछे हमें जिन परेशानियों से गुजरना पड़ा है, उनसे शिक्षा ग्रहण करते हुए हम कल के प्रति सजग हैं। आलस्य, द्वेष, विषमता, शोषण और हिंसा से रहित समाज का निर्माण आर्य समाज का मुख्य लक्ष्य है और गुरुकुल वह कार्यशाला है, जहां इस लक्ष्य की पूर्ति हेतु योग्य ब्राह्मणों, क्षत्रियों, वैश्यों और शूद्रों का निर्माण होता है। दयानन्द के ये वीर सैनिक राष्ट्रोत्थान के कार्य में प्रबल योगदान कर रहे हैं। हम ऋषियों के महदस्तु महस्तु च लक्ष्य को अपनी प्रगति का पाथ्य मानते हैं। उन्होने कहा था कि चित्त और हृदय को जितना हो सके, बड़ा करो। अनन्त की भाषा सोचो, हमारे प्रयास विराट की ओर बढ़ें।

हमारा मनोरथ पूर्ण हो, इसके लिये हम आप सबका सहयोग चाहते हैं। गुरुकुल के विकास कार्यक्रम में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग तथा शिक्षा मन्त्रालय से जो प्रेरणा व सहायता प्राप्त होती रहती है, उसके लिए हम उनके आभारी हैं।

अन्त में सभी सहयोगियों को बधाई देना चाहूँगा, जिनके उपक्रम और सामूहिक पुरुषार्थ से गुरुकुल उन्नति की ओर अग्रसर है। मैं एक बार पुनः राष्ट्रपति जी का एवं सभी अतिथियों का हार्दिक धन्यवाद करता हूं।

महामहिम राष्ट्रपति जी,

इस वर्ष पी-एच० डी० की ८, एम० ए० की ५५, एम० एस-सी० की १५, अलंकार की १५ तथा बी० एस-सी० की ६० उपाधियां प्रदान की गई हैं।

— 0 —

कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा श्री राकेश उत्तर प्रदेश के मंत्री श्री वासुदेव सिंह जी वित्ताधिकारी बृजमोहन थापर, कुलसचिव जबर सिंह सैंगर तथा श्री जयदेव यज्ञशाला की ओर जाते हुये।

डा. सत्यव्रत सिद्धांतालकार की पुस्तक के विमोचन "From Old Age to Youth" महामहिम राष्ट्रपति लेखक तथा विश्वविद्यालय के वित्ताधिकारी बी एम थापर के साथ विचार विमर्श करते हुये।

डा. जबर सिह सैंगर कुल सचिव द्वारा भेट दीक्षान्त समारोह की फोटो एलबम का भारत के राष्ट्रपति जी निरीक्षण कर रहे है।

मान्य कुलपति महोदय महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह को विश्वविद्यालय की प्रगति एवं विकास योजनाओं को बतला रहे हैं, साथ ही उन से वैदिक कार्यशाला हेतु शुभाशीर्वाद प्राप्त कर रहे है। इस अवसर पर श्री सरदारी लाल वर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली भी विराजमान हैं।

कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा स्वागत भाषण देते हुये।

डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार विजिटर विश्वविद्यालय अध्यक्षीय भाषण देते हुये ।
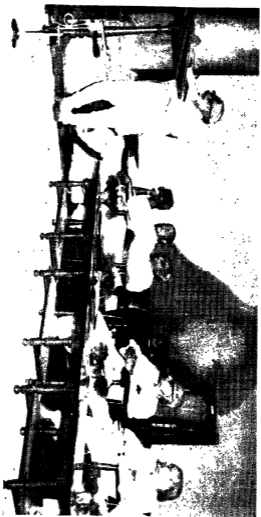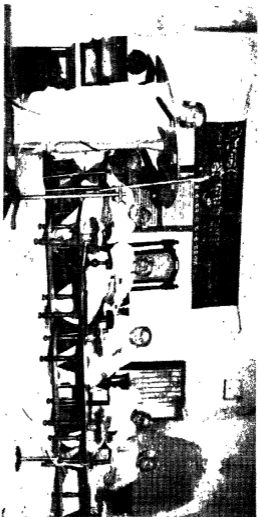
प्रो० रामप्रसाद वेदालकार आचार्य एवं प्रोवाइसचान्सलर विभिन्न संदेश वाचन कर रहे है।

विशाल जनसमूह एवं विश्वविद्यालयों के प्रतिनिधिगण का एक दृश्य।

वित्त एवं लेखा

समीक्षाधीन वर्ष में मुख्य रूप से ग्राडिट, बजट एवं विभिन्न ग्रनुदान ग्रादि का कार्य सम्पन्न हुग्रा।

विश्वविद्यालय का १९७७-७८ से १९७९-८० तक का चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट द्वारा निरीक्षत लेखा महालेखाकार उत्तर प्रदेश को भेजा गया था। महालेखाकार की ग्राडिट पार्टी १९ ग्रप्रैल १९८२ को विश्व-विद्यालय में ग्राई तथा उन्होंने ७ जून ८२ तक परम्परागत महालेखा नियंत्रक एक्ट १९७१ की धारा १४ के ग्रन्तर्गत दो वर्षों का १९७७-७८ तथा १९७८-७९ का लेखा ग्राडिट किया। चूंकि संविधान की धारा ३३ के ग्रन्तर्गत फार्मेसी विश्वविद्यालय का ग्रग है ग्रत: फार्मेसी का भी उपर्युक्त वर्षों का लेखा पहली बार महालेखाकार उत्तर प्रदेश द्वारा निरीक्षत किया गया है। महालेखाकार उ० प्र० से लेखा निरीक्षण रिर्पोट दिनांक २६ ग्रक्टूबर १९८२ को प्राप्त हुई। इस रिर्पोट की विश्व-विद्यालय सम्बन्धी ग्रंश का उत्तर बनाया गया था इसे ग्रनुमोदन हेतू वित्त समिति की बैठक दिनांक ५-२-८३ में प्रस्तुत किया गया। समिति द्वारा संशोधित उत्तर कार्य परिषद ने ग्रपनी बैठक दिनांक १२-२-८३ में ग्रनुमोदित किया। इस ग्राडिट रिर्पोट का उपर्युक्त समितियों द्वारा ग्रनुमोदित उत्तर महालेखाकार उ.प्र. तथा शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार को भेज दिया गया है। ग्राडिट रिर्पोट में फार्मेसी लेखे पर ग्रापत्तियों के उत्तर को ग्रभी ग्रंतिम रूप दिया जा रहा है। इस उत्तर को वित्त समिति तथा कार्यपरिषद द्वारा ग्रनुमोदित किये जाने पर महालेखाकार तथा भारत सरकार को भेजा जायेगा। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय तथा महालेखाकार उ.प्र. का ग्राग्रह था कि विश्वविद्यालय का लेखा महालेखा नियंत्रक एक्ट १९७१ की धारा २० के ग्रन्तर्गत होना चाहिए न कि धारा १४ के ग्रन्तर्गत। इस दिशा में

शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार को लिखा गया और उन्होंने अपनी स्वीकृति महालेखा नियंत्रक एक्ट १६७१ की धारा २० के अन्तर्गत आडिट कराये जाने की प्रदान कर दी थी। इस विषय में महालेखाकार उ० प्र० को सूचित कर दिया गया है। तथा उनके निकट भविष्य में आडिट हेतु आने की सम्भावना है। उक्त धारा २० के अन्तर्गत विश्वविद्यालय का १६७७–७८ तथा आगामी वर्षों का लेखा आडिट किया जायेगा। महा-लेखाकार की उपरोक्त आडिट रिर्पोट में जिन बिन्दुओं/मुद्दों पर आपत्ति प्रकट की गयी है और ध्यान आकर्षित किया गया है उनमें सुधार हेतु समुचित कार्यवाही की जा रही है। अगस्त-सितम्बर १६८२ में विश्वविद्यालय का १६८२-८३ का संशोधित बजट बनाया गया तथा इसे वित्त समिति की बैठक दिनांक १५-१०-८२ में प्रस्तुत किया गया। जिसे समिति ने निम्न प्रकार पारित किया।

बजट सारांश

	संशोधित अनुदान १६८२-८३	बजट अनुमान
१- वेतन भत्ते आदि	१६,३५,००० रू.	१७,४५,००० रू.
२- अंशदायी भविष्य निधि	५६,००० रू.	*१,५२,००० रू.
		६६,००० रू.
३- अन्य व्यय	५,५०,००० रू.	६,००० ०० रू.
योग व्यय	२२,४४,००० रु.	२५,६६,००० रु.
आय	१,५१,००० रु.	१,६०,००० रु.
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से प्राप्त अनुदान	२०,६३,००० रु.	२४,०६,००० रु.

* (अवकाशारिक्त तथा नये पदों हेतु क्रमशः ४२,००० रु. तथा १,१० ०००

रु. अतिरिक्त प्रावधान वित्त समिति के निश्चयानुसार किया गया) वित्त समिति द्वारा स्वीकृति उपर्युक्त बजट विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को भेजा गया। इस बजट के अनुसार आयोग से वित्तीय वर्ष १९८२-८३ के लिए २०,९३,००० रु. अनुदान स्वीकृत किये जाने की मांग की गयी थी परन्तु आयोग से कुल २०,०० ००० रु. अनुदान की स्वीकृति प्राप्त हुई जिसमें गत तीन वर्षों का बचा अनुदान २०,००० रु. समायोजित करने के पश्चात् आयोग से कुल १९,८० ००० रु. का कुल अनुरक्षण अनुदान प्राप्त हुआ। आयोग ने अगले वर्ष १९८३-८४ के लिए २१,५०,००० रु. अनुदान की स्वीकृति प्रदान की है। जिसके संशोधित बजट के समय बढ़ने की संभावना है।

वित्त समिति द्वारा स्वीकृत संशोधित बजट १९८२-८३ में मांगे गये अनुदान में आयोग द्वारा कटौती के फलस्वरूप प्राप्त अनुदान के अनुसार बजट के आंकडे पुन: निम्न प्रकार संशोधित किये गये जिन्हें वित्त समिति ने अपनी बैठक दिनांक ५-२-८३ मे अनुमोदित किया।

	संशोधित अनुमान १९८२-८३ बजट अनुसार	संशोधित अनुमान १९८२-८३ स्वीकृत अनुदान के अनुसार
१- वेतन भत्ते आदि	१६,३५,००० रु.	१५,८५,००० रु.
२- अंशदायी भविष्य निधि	५९,००० रु.	५५,००० रु.
३- अन्य व्यय	५,५०,००० रु	५,००, ००० रु.
योग	२२,४४,००० रु.	२१,४०,००० रु.
आनुमानित आय		१,४०,००० रु.
		२०,००,००० रु.

समीक्षाधीन वर्ष १९८२-८३ में १६,८०,००० रु. का अनुरक्षण अनुदान के अतिरिक्त जो अन्य अनुदान विश्वविद्यालय को प्राप्त हुये उनका विवरण निम्न प्रकार है।

क्रम सं०	अनुदान की राशि	स्रोत	विवरण	वास्तविक व्यय
१-	२,५०,००० रु०	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग	पुस्तकालय की पुस्तके	३८७४६)६६
२-	४,००० रु०	उ प्र सरकार	बर्सरी	३०००)००
३-	२७,००० रु०	,,	राष्ट्रीय सेवा योजना	१६३०४)७०
४-	२५,००० रु.	वि. वि. अनुदान आयोग	विजिटिंग प्रो	३४१५)०५
५-	३०,००० रु०	,,	पुस्तकालय अध्यक्ष का वेतन	२८८२७)३०

इस वर्ष संस्था को नियमित अनुदान मिलता रहा। जिसके कारण कर्मचारियों के वेतन का नियमित भुगतान तथा अन्य मदों में व्यय की प्रगति सन्तोषजनक रही। वित्त समिति ने अपनी १५-१०-८२ तथा ५-२-८३ की बैठकों में वित्त सम्बन्धी जो निश्चय लिये उनके क्रियान्वयन सम्बन्धी कार्यवाही की गयी। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से शिक्ष-केत्तर कर्मचारियो के सन्शोधित वेतन मान, तृतीय तथा चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के कुछ अतिरिक्त पदों तथा डा हरगोपाल सिह को रीडर वेतनमान दिये जाने की स्वीकृती प्राप्त हो गयी है। अभी कर्मचारियों के अवकाश नगदीकरण, चिकित्सा भत्ता अवकाशरिक्ति हेतु अतिरिक्त प्रावधान तथा कुछ नये पदों की स्वीकृति आदि विषय विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के विचाराधीन हैं। जिनकी स्वीकृति निकट भविष्य में प्राप्त होने की आशा है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत छटी पंचवर्षीय

योजना काल में बनने वाले स्टाफ क्वार्टर के नक्शे तथा प्रारंभिक आगणन अनुदान आयोग को भेज दिये गये हैं तथा उनसे इस निर्माण कार्य हेतु अनुदान की प्रार्थना की गई है। आशा है इसके लिए शीघ्र ही अनुदान प्राप्त हो जायेगा। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने विश्वविद्यालय के अधूरे अतिथि गृह को पूरा करने की अनुमति भी दे दी है। जिसके लिये सार्वजनिक निर्माण विभाग को आगणन बनाने को कहा गया है। यह आगणन उनसे प्राप्त होने पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग को भेज दिये जायेंगे और धन की मांग की जायेगी। इसके अतिरिक्त छटी पंचवर्षीय योजना के काल में बाकी योजनाओं की स्वीकृति हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की विजिटिंग टीम निकट भविष्य में आने की संभावना है।

बी. एम. थापर
वित्त अधिकारी
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

— 0 —

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

आय का विवरण
१९८२-८३

(क) दान और अनुदान

क्रं. सं	आय का मद	राशि
१-	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से अनुरक्षण अनुदान	१९,८०, ०००.००
२-	अक्षय निधि का ब्याज	१०, २१८. ००
	योग	१९,९०, २१८. ००

(ख) शुल्क तथा अन्य स्रोतों से आय

क्रं. सं	आय का मद	राशि
१-	पंजीकरण शुल्क	१, ८९५. ००
२-	पी-एच. डी. रजिस्ट्रेशन शुल्क	३४२. ००
३-	पी-एच. डी. मासिक शुल्क	५, ४१६. ००
४-	परीक्षा शुल्क	३०, ५१५. ५०
५	अंक पत्र शुल्क	१, ९३८. ००
६-	पड़ताल शुल्क	१, १०५. ००
७-	विलम्ब दण्ड/टूट-फूट	५, १०४. ७५
८-	माईग्रेशन शुल्क	१, ६०१. ००
९-	प्रमाण-पत्र शुल्क	२, ११६. ००

१०- नियमावली, पाठविधि, तथा फार्मो आदि का मूल्य	१, ६६१. ५०
११- सेवा आवेदन पत्र	१, ७०८. ००
१२- रद्दी व पुराने पर्चे	६.००
१३- शिक्षा शुल्क	१७, ५१०. ५०
१४- प्रवेश व पुनः प्रवेश शुल्क	४, ४२०. ००
१५- भवन शुल्क	८५८. ००
१६- क्रीड़ा शुल्क	२, ७६६. ५०
१७- पुस्तकालय शुल्क	२, १७०. ००
१८- परिचय पत्र शुल्क	१६२. ००
१९- एसोसियेशन शुल्क	६३४. ००
२०- मनोविज्ञान लैब	४६०. ००
२१- मंहगाई शुल्क	३, ८८४. ००
२२- विज्ञान शुल्क	३, ६४२. ००
२३- पुस्तकालय से आय	३, ६३०. ००
२४- पत्रिका शुल्क	२, ६८८. ००
२५- ब्याज तथा अन्य आय	७, ७८८. १७
२६- स्नातक सदस्यता शुल्क	५, ४७५. ००
२७- साइकिल स्टेंड	१, १००. ००
	१. १२. १५६. ६२
योग (क+ख)	२१. ०२, ३७४. ९२
गत वर्षों (१९७९–८० से १९८१–८२) का अवशिष्ट अनुदान	२०, ३७१. २४
महायोग	२१, २२, ७४६. १६

— 0 —

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

व्यय का विवरण (अनुरक्षण अनुदान)
१६८२-८३

(क) वेतन

क्र. सं	व्यय की मद	राशि
१	शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियों का वेतन	१५, ८६, ४८२. ३६
२	भविष्य निधि पर संस्था का अनुदान	५३, ७७१. ००
	योग	१६, ४३, २५३ ३६

(ख) अन्य वेतन

१	विद्युत व जल आपूर्ति	४६, ०२३. १५
२	टेलीफोन	१०, ४०७. ००
३	मार्ग व्यय	४७, २५१. ७६
४	लेखन सामग्री व छपाई	१८, २८६. १०
५	वर्दी चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	५, ८४१. १२
६	डाक व तार व्यय	५, १४३. २३
७	वाहन अनुरक्षण तथा पैट्रोल	३३, ३६०. ८०
८	विज्ञापन	७, ४२४. ००
६	न्यायिक व्यय	१२, ७५७ १५

१० आतिथ्य व्यय	८, २३६ ८६
११ लेखा निरीक्षण	३, १३८. ५५
१२ दीक्षान्तोत्सव	१६, २६६ ६७
१३ लॉन संवरण	६, ०७५. ३०
१४ भवन मरम्मत	३१, २८३. २७
१५ उपकरण	२१, ५६२ १५
१६ फर्नीचर एवं साज सज्जा	१०, ६५८. ६५
१७ राष्ट्रीय छात्र सेना	६०३. ५०
१८ निर्धनता फण्ड	४००. ००
१९ छात्रो को छात्रवृत्ति	२३, ३४३. ६०
२० खेल कूद एव क्रीडा	११, ६७०. ८५
२१ गोष्ठी एव सभाषण	१४, ६३२. ४८
२२ सरस्वती यात्रा	१, ८३६. २०
२३ वाग् वर्द्धिनी सभा	१, ०५६ ७५
२४ उत्सव एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम	१, ०६६. ५०
२५ मनोविज्ञान प्रयोग शाला	१, ८६०. १०
२६ रसायन ,, ,,	८, ५७१. ३१
२७ भौतिकी ,, ,,	८, ७१८. ८४
२८ वनस्पति विज्ञान ,,	२, ६१६. ८५
२९ जन्तु विज्ञान ,,	३ ६८६. ५०
३० गैस प्लाट	१२, ७३६. ००
३१ वनस्पति वाटिका (ग्रीन हाऊस)	४८०. ००
३२ साईकिल स्टेंड	३५०. ००
३३ समाचार पत्र व पत्रिकाएं	५, ३८६. १०
३४ पुस्तकें	२, २७७. ७०
३५ जिल्दबंदी व पुस्तक सुरक्षा	१०, ०४५. ००
३६ कैटेलाग कार्ड व इण्डेक्सिंग	१४७. ८०
३७ वैदिकपथ, प्रह्लाद, आर्यभट्ठ, गुरुकुल पत्रिका की छपाई व अन्य व्यय	३०, ३०४. ८०

क्रं. सं.	व्यय की मद	राशि
३८	मिश्रित व्यय	२, ३९९. ५५
३९	आकस्मिक व्यय	७७१. १५
४०	सदस्यता शुल्क एवं अंशदान	१२, २५०. ००
४१	छात्र कल्याण	९५५. ५०
४२	छात्र एसोसियेशन	१०८. ००
४३	सुरक्षा व्यय	८, २४७. ८०
		४, ५०, ९९८. २४
	(ग) परीक्षा व्यय	
१	परीक्षकों को पारिश्रमिक	१६, ९०८. ९०
२	मार्ग व्यय परीक्षक	७, ५९१. ४०
३	निरीक्षण व्यय	२, ०८९. ००
४	प्रश्न पत्रो की छपाई	११, ८४१. ००
५	उत्तर पुस्तिकाओं का मुल्य	— —
६	डाक तार व्यय	५, ६३८. २५
७	लेखन सामग्री	१, ९८६. ३०
८	नियमावली, पाठविधि व फार्मो की छपाई	६, १७१. ८०
९	अन्य व्यय	१, ३१९. ४५
	योग	५३, ५१६. १०
	महायोग (क+ख+ग)	२१, ४७, ७३७. ७०

— 0 —

वेद तथा कला महाविद्यालय

१ स्टाफ स्थिति— **वेद महाविद्यालय**
रीडर- २
प्रवक्ता- ६ (एक पद अस्थायी)
लिपिक- १
चतुर्थ श्रेणी- ३
कला महाविद्यालय
रीडर- ५
प्रवक्ता- १८ (३ पद अस्थायी)
प्रयोगशाला सहा.- १
लिपिक- १
चतुर्थ श्रेणी ७

२ छात्र संख्या

छात्र संख्या	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	योग
विद्याविनोद (वेद)	३	२	५
वेदालंकार	८	१	९
विद्यालंकार	४	५	९
एम०ए० वेद	४	२	६
„ संस्कृत	५	४	९
„ दर्शन	४	२	६
„ इतिहास	५	१०	१५
„ हिन्दी	९	४	१३
„ मनोविज्ञान	८	११	१९
„ अंग्रेजी	६	६	१२
„ गणित	१९	३०	४९
		योग-	१५२

३ **वर्ष ८२-८३ में अन्तरों की संख्या- १६७ दिन**

४ दिसम्बर ८२ मास में एन.एस.एस. के छात्रों का शिविर कांगड़ी ग्राम में लगाया गया।

अ दिनांक १३-८-८२ को संस्कृत दिवस मनाया। इसके संयोजक प्रो. वेदप्रकाश जी थे। इसको अध्यक्षता पं. विश्वबन्धु जी शास्त्री ने की तथा इसके मुख्य अतिथि डा. धर्मेन्द्रनाथ जी थे। इसमें सभी उपाध्यायों तथा छात्रों ने भाग लिया।

ब एम.ए. द्वितीय वर्ष संस्कृत के श्री सुरेन्द्र कुमार तथा श्री बसन्त कुमार, उज्जैन वादविवाद प्रतियोगिता में भाग लेने गये। उक्त प्रतियोगिता में इसका विषय, "भारतदर्श संकल्प दर्शने सफला ध्रुवम्, दृश्यते कालिदासस्य रस सिद्धा सरस्वती," था।

स दिनांक २४-१२-८२ को दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली में इन्द्र विद्यावाचस्पति प्रतियोगिता में श्री सुरेन्द्र कुमार तथा श्री बसन्त कुमार एम.ए. २य वर्ष के छात्रों ने भाग लिया। यहां पर हमारे छात्रो ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया और परितोषिक के रूप में पुस्तकें प्रदान की गयी। यहां पर इनका विषय था—

"काव्येषु नाटकं रम्यम्"– सुरेन्द्र कुमार
"गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिंग न च वयः"– बसन्त कुमार

द दिनांक १६-२-८३ को एस.एम जे एन. डिग्री कालेज में वाद-विवाद प्रतियोगिता में इस विश्वविद्यालय के वेदालंकार प्रथम वर्ष के छात्र श्री विद्याव्रत ने भाग लेकर प्रथम स्थान प्राप्त कर व्यक्तिगत पुरस्कार प्राप्त किया।

य दिनांक २१-२-८३ को संस्कृत वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन विश्ववि० भवन में किया गया जिसमें कि चण्डीगढ़, जम्मू, गुरुकुल गौतम नगर दिल्ली, कन्या गुरुकुल हाथरस, खन्ना (पंजाब) आदि

विश्ववि० तथा विद्यालय के छात्र छात्राओं ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में श्री रवीन्द्र देव वेदालंकार ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, तृतीय स्थान दूधपुरी-विद्याविनोद द्वितीय वर्ष तथा द्वितीय स्थान श्री सुरेन्द्र कुमार, एम० ए० द्वितीय वर्ष के छात्र ने प्राप्त किया ।

(र) दिनांक ५-३-८३ को ज्वालापुर महाविद्यालय में आचार्य नरदेव शास्त्री वाद-विवाद प्रतियोगिता मे निम्नलिखित छात्रों ने भाग लिया और निम्न स्थान प्राप्त किया।

१. विद्याव्रत-वेदालकार प्रथम वर्ष- प्रथम स्थान प्राप्त किया।

२. रवीन्द्र देव-वेदालंकार प्रथम वर्ष- द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

३. ऋषिपाल आर्य विद्याविनोद प्रथम वर्ष- तृतीय स्थान प्राप्त किया।

(ल) मार्च मास में ही विद्याविनोद तथा अलंकार के छात्र कुरुक्षेत्र में वाद-विवाद प्रतियोगिता तथा अन्य कार्यक्रम में भाग लेने हेतु गये जहां पर यहां के छात्रों ने प्रथम स्थान प्राप्त कर शील्ड प्राप्त की।

खेल आदि कार्यक्रम –

दिसम्बर मास में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में हाकी टूर्नामेन्ट का आयोजन किया गया जिसमें कि विश्वविद्यालय के छात्र द्वितीय स्थानपर रहे।

विश्वविद्यालय की हाकी टीम इस वर्ष जम्मू, मेरठ, मुजफरनगर आदि जगहों पर हाकी खेलने गयी। बैडमिन्टन में श्री अनिल कुमार छाबड़ा, एम० एस० सी० २य वर्ष, ने कानपुर में विश्वविद्यालय की टीम का नेतृत्व किया।

५ दिनांक १७-९-८२ को आई० आई० टी० दिल्ली के डिप्टी रजिस्ट्रार एवं मनोवि० विभाग के डा० रूपनागपाल जी का जनरल स्टूडैन्ट वैलफियर और ग्रेडिग विषय पर कला महाविद्यालय में व्याख्यान हुआ।

दिनांक २६-१०-८२ को मैक्सिको विश्वविद्यालय के संस्कृत एवं वेद के प्रो० रूवेन मिगले दे मोरा तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मोरा का प्राच्य और पाश्चत्य दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन विषय पर एवं ऋग्वेद में रित का स्वरूप में व्याख्यान हुआ।

दिनांक ११-१०-८२ को वेनस (इटली) विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो० डा० लक्ष्मण प्रसाद मिश्र का कला महा-विद्यालय में व्याख्यान हुआ।

६ दिनांक ४ सितम्बर ८२ से ८ सितम्बर ८२ तक वैदिक राष्ट्रिय कार्य-शाला (सैमीनार) का आयोजन किया गया। जिसमें कि रुड़की, जबलपुर, रूहेलखण्ड, चण्डीगढ़, दिल्ली आदि विश्वविद्यालय के विद्वानों ने भाग लिया और अपने लेख पढ़े। इसके संयोजक डा० जयदेव वेदालंकार थे।

पत्रिकायें

क गुरुकुल पत्रिका-मासिक — सम्पादक श्री रामप्रसाद वेदालंकार
ख वैदिक पथ-त्रैमासिक — सम्पादक डा० हरगोपाल सिंह जी
ग प्रह्लाद त्रैमासिक — सम्पादक डा० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी

वैदिक राष्ट्रिय कार्यशाला (सैमीनार) में पढ़ गये लेखो की एक २२८ पृष्ठों की स्मारिका प्रकाशित की गयी, जिसमें विभिन्न विद्वानों के लेख आदि छपे हैं।

दिनांक २५-४-८३ से विश्वविद्यालय की वार्षिक परीक्षा आरम्भ हुई और १०-५-८३ को समाप्त हुई।

दिनांक १८-५-८३ से १६-७-८३ तक विश्वविद्यालय का ग्रीष्मावकाश घोषित किया गया।

(रामप्रसाद वेदालंकार)
आचार्य एवं उप-कुलपति

— 0 —

वेद विभाग

विभाग का सामान्य परिचय—इस विभाग में इस समय एक रीडर तथा तीन प्रवक्ता कार्यरत हैं।

इस विभाग में एम०ए० कोर्सेज निम्न प्रकार से हैं– एम०ए० में आठ प्रश्नपत्र हैं। प्रत्येक पत्र के 100 अंक हैं। छात्र को चार प्रश्न-पत्र एम०ए० प्रथम वर्ष में लेने होते हैं और चार प्रश्न-पत्र द्वितीय वर्ष में। परन्तु निबन्ध का पत्र द्वितीय वर्ष में ही लिया जा सकता है। परीक्षा का माध्यम छात्र की इच्छानुसार हिन्दी अथवा संस्कृत होता है। विशेष परिस्थिति में जब कोई छात्र विदेश का हो तो उसकी इच्छा एवं सुविधा को दृष्टि से उसको अंग्रेजी माध्यम को भी स्वीकृति दे दी जाती है (क) भाग के प्रश्न-पत्र अनिवार्य हैं जिनमें तीन प्रथम बर्ष में तथा तीन द्वितीय वर्ष में लेने होते हैं (ख) भाग में कोई से दो प्रश्न-पत्र लेने होते है। एक प्रथम वर्ष में और एक द्वितीय वर्ष में।

(क)	प्रथम प्रश्न-पत्र		ऋग्वेद
	द्वितीय	,,	यजुर्वेद तथा सामवेद
	तृतीय	,,	अथर्ववेद
	चतुर्थ	,,	निरुक्त प्रातिशाख्य तथा वैदिक छन्द
	पंचम	,,	संहितेत्तर साहित्य, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद तथा कल्प
	षष्ठ	,,	वैदिक संस्कृति तथा भाषा विज्ञान
	(ख)		
	सप्तम	,,	निबन्ध
	अष्टम्	,,	आरण्यक तथा उपनिषद

नवम्	,,	ब्राह्मण ग्रंथ
दशम्	,,	सूत्र ग्रंथ
एकादश	,,	प्रातिशाख्य

ऐसे ही विद्याविनोद तथा वेदालंकार में भी अपने-२ विशेष पाठ्य-क्रम है। वर्तमान में क्रियात्मक कुछ विशेष नहीं हो पाता क्योंकि उसकी अभी तक विभाग में कोई व्यवस्था नहीं है।

एक छात्र को पी-एच० डी० की उपाधि मिली। एक पी-एच० डी० का छात्र विदेशों में भी जाकर अपना विशेष कार्य कर अनुभव प्राप्त कर रहा है विभागीय उपाध्यायों ने विभिन्न सामाजिक कार्य भी किये। वेद के प्रचार एवं प्रसार के कार्य में उन्होंने अपना विशेष योगदान दिया। अनेकों लेख भी लिखे, पुस्तकें भी लिखी। विभाग की ओर से उत्सव के अवसर पर वेद सम्मेलन भी किया गया जिसमें अनेकों गण्यमान विद्वानों के भाषण भी हुए। इस सुन्दर अवसर पर लगभग ६५ वर्षीय सतत् वेद के कार्य में रत पं० विश्वनाथ विद्यालंकार को उनके वेद विषय-विशेष कार्य के लिए श्री आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार से भी पुरस्कृत एव सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त भी समय-समय पर वेद विषयक व्याख्यान हुए।

विभागीय उपाध्याय—रामप्रसाद वेदालंकार-रीडर एव अध्यक्ष वेद विभाग आचार्य एवं उप-कुलपति, संघड़ विद्या सभा ट्रष्ट द्वारा सम्मानित एव पुरस्कृत, सम्पादक गुरुकुल पत्रिका

(२) डा० भारतभूषण विद्यालंकार, वेदाचार्य, एम०ए०, पी-एच० डी० प्रवक्ता

(३) डा० सत्यव्रत राजेश, वेद शिरोमणि, एम०ए०, पी-एच० डी० प्रवक्ता

(४) श्री मनुदेव-एम०ए० (त्रय) एवं व्याकरणाचार्य प्रवक्ता

छात्र संख्या	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	योग
एम०ए०	५	२	७
विद्याविनोद	३	२	५
वेदालंकार	८	१	६

अनुसंधान कर्त्ता-इस विभाग में अब तक ३ अनुसंधान कर्त्ताओं ने पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त की है। जिनके नाम निम्न प्रकार से हैं-

(१) डा० दिलीप वेदालंकार-वैदिक मानव वाद

(२) डा० विश्वपाल देदालंकार-वेदों में आई हुई संख्याएं

(३) डा० योगेन्द्र पुरुषार्थी-वैदिक संहिताओं में योगतत्व-(इन्हें इसी वर्ष उपाधि प्रदान की गयी)

अनुसंधान-इस समय विभागाध्यक्ष के अण्डर में एक विदेशी छात्र अनुसंधान कार्य कर रहा है (सत्यप्रकाश रामबहल गोयाना निवासी)। डा० भारतभूषण जी के निर्देशन में एक छात्र शोध कार्य करने लगे हैं। डा० सत्यव्रत राजेश जी के निर्देशन में भी दो शोधार्थी कार्य करने लगे हैं। संस्कृत विभाग के शोधार्थी भी इस विभाग के मान्य प्रवक्ताओं के निर्देशन में कार्य कर रहे हैं जैसे श्रीमती सुधा त्यागी मुनि "चरितामृत एक अध्ययन" पर डा० सत्यव्रत जी के निर्देशन में कार्य कर रही हैं। श्री रविदत्त शास्त्री एम०ए० गृह्यसूत्रों के परिप्रक्ष्य में संस्कार विधि का अध्ययन विषय पर डा० सत्यव्रत जी निर्देशन में कार्य कर रहे हैं। श्री भगतसिंह भी भारतभूषण के निर्देशन में शोध कर रहे हैं।

विभागीय उपाध्यायों का लेखन कार्य—

(१) रामप्रसाद वेदालंकार आर्य गजट पत्रिका में "विदुर जी की दृष्टि में बुद्धिमान कौन" क्रमशः प्रकाशित होता रहा। गुरुकुल पत्रिका में भी प्रायः वैदिक रश्मियां, वेद मन्त्रों पर लेख आदि प्रकाशित

हुए। यों तो अब तक लेखक की ३० पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं जिनके क्रमशः नाम इस प्रकार से हैं-

(१) कौन चैन की नीन्द नहीं सो सकते और उसके उपाय (२) प्रार्थना सुमन भाग १, २, वेद सुधा भाग १/२, प्रार्थन प्रदीप, प्रसून, विनय सुमन भाग १, २, ३, वरदा वेद माता, यम नियम, ब्रह्म यज्ञ (वैदिक सन्ध्या), वैदिक आदर्श परिवार, सुखी गृहस्थ, वैदिक पुष्पांजली भाग १, २, ३, महान विदुर के महान उपदेश, वेदोपदेश, जीवन गाथा, वैदिक रश्मियां भाग १, २, ३, अनन्त की ओर, प्रभात बन्दन, शयन विनय। इनमें से यमनियम वरदा वेद माता, जीवन गाथा, वैदिक पुष्पांजली भाग-३ ब्रह्म-यज्ञ ८२-८३ में प्रकाशित हुई। एक पुस्तक "ईशोपनिषद्" प्रेस में है।

उपर्युक्त ३० पुस्तकों में से पर्याप्त ऐसी पुस्तकें हैं जिनके दूसरे, तीसरे और चौथे संस्करण भी तीन-चार वर्ष में छप चुके हैं। कई पुस्तकें अभी कुछ अधूरी हैं जो शीघ्र ही पूरी होकर प्रकाशित हो जायेंगी। "छान्दोग्योपनिषद् एक विवेचनात्मक अध्ययन" पर्याप्त लिखा हुआ है। त्रैतवाद पुस्तक भी एक प्रबन्ध है जो अभी अप्रकाशित है। इस कार्य के अतिरिक्त भी वैदिक साहित्य पर अनेक व्याख्यान दिये।

स्त्री जागरण शिविर- जो सनातन धर्म इंटर कालेज मुजफ्फरनगर में मनाया गया उसकी अध्यक्षता की २-१०-८२ को गुरुकुल प्रभात आश्रम जिला मेरठ में "वेद विद्वत सम्मेलन" की अध्यक्षता की और उसमें अध्यक्षीय भाषण दिया। कानपुर की आर्य केन्द्रीय सभा द्वारा सम्मानित एवं वहां भाषण। इस प्रकार अनेक सभाओं में अध्यक्षता की और अध्यक्षीय भाषण दिए। वेद एवं वैदिक साहित्य पर समय-समय पर अनेकों व्याख्यान हुए। (दिल्ली, बम्बई, मेरठ, मुजफ्फरनगर, देहरादून हैदराबाद, बोधन जिला निजाबाद आंध्रप्रदेश, शामली विकास नगर आदि-आदि स्थानों पर।) वेद विभागाध्यक्ष होने के साथ-साथ आचार्य एवं उप-कुलपति होने कारण बहुत से उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य किया। कुलपति जी की

अनुपस्थिति में कार्यवाहक कुलपति का भी काय समय-समय पर करता आ रहा हूं।

(२) डा० भारतभूषण जी ने भी कई स्थानों पर वैदिक साहित्य पर व्याख्यान दिये और सामाजिक कार्यों में भाग लिया। इस विभाग के छात्रों तथा अलंकार के छात्रों के साथ आप बम्बई आदि कई स्थानों पर सरस्वती यात्रा पर गये।

(३) डा० सत्यव्रत राजेश सरहिन्द, देहरादून, डाकपत्थर, पौढ़ी गढ़वाल, नजीबाबाद, मेरठ अहमदाबाद आदि स्थानों में वेद प्रचार एवं वैदिक साहित्य पर व्याख्यान दिए। विश्वविद्यालय में आयोजित संस्कृत दिवस में भाषण हुआ। वेद सम्मेलन में सयोजक का कार्य किया। वैदिक शिक्षा राष्ट्रीय कार्यशाला में "महर्षि दयानन्द का शिक्षा दर्शन" विषय पर निबन्ध वाचन किया। लेखन-गुरुकुल पत्रिका में लेख-ब्रह्म सत्यं जगमिथ्या आदि लेख, प्रह्लाद पत्रिका में निराले सन्त स्वामी श्रदानन्द जी मेरे गुरु स्वामी आत्मानन्द सरस्वती (आर्य मर्यादा) महर्षि दयानन्द का शिक्षा विषयक दृष्टिकोण (विश्वज्योति होशियारपुर) तथा महर्षि दयानन्द के वेद भाष्य की विशिष्टताएं (पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ का जरनल) ये लेख लिखे। आर्य समाज ज्वालापुर में स्नेह मिलन कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

(४) श्री मनुदेव जी गुरुकुल पत्रिका में प्रूफरीडर का कार्य तथा प्रबन्ध सम्पादक का कार्य किया है। भारत वर्ष की विभिन्न पत्रिकाओं में निबन्ध तथा लेख प्रकाशित हुए। (क) वेद भाष्यकार दयानन्द, एक अध्ययन (विश्वज्योति), (ख) यास्क व निरुक्त (विश्वज्योति में), (ग) दयानन्द और वेद (गुरुकुल पत्रिका अगस्त ८२), (घ) वेद भाष्यकार सायणाचार्यः (गुरुकुल पत्रिका, दिसम्बर ८२), (ङ) उप–निषदां ब्रह्मविद्यात्वम् (गुरुकुल पतिका),

(च) धर्म और विज्ञान (आर्य भट्ट, विज्ञान पत्रिका),

(छ) महर्षि दयानन्द की वेद विषयक मान्यताएं (स्मारिका में तथा जनज्ञान में (आर्य समाज सिलीगुडी), (ज) वेद-महात्मयम् (गुरुकुल पत्रिका जनवरी, फरवरी मार्च ८३), (झ) दयानन्दीय शिक्षा दर्शन (वैदिक शिक्षा राष्ट्रीय कार्यशाला को प्रकाशित स्मारिका में)।

दिल्ली, रुड़की, सहारनपुर तथा हरिद्वार की आर्य समाजों के महोत्सवों तथा साप्ताहिक सत्संगों पर सारगर्भित वैदिक व्याख्यान। अनेक वैदिक साहित्य सम्बन्धी व्याख्यान दिये।

वेद विभाग के छात्रों ने सामाजिक कार्यों में बहुत सहयोग किया। कई स्थानों पर उनके वेद पाठ हुए। वेद विषय पर व्याख्यान भी हुए। समाज सुधार के कार्यो में वे प्राय: अपनी शिक्षा को सुचारू रखते हुए इस कार्य में लगे रहे।

(रामप्रसाद वेदालंकार)
रीडर-अध्यक्ष, वेद विभाग,
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

— 0 —

संस्कृत विभाग

विभागीय उपाध्याय

(१) डा० निगम शर्मा (रीडर एवं विभागाध्यक्ष)
(२) प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री (प्राध्यापक)
(३) डा० रामप्रकाश शर्मा (प्राध्यापक)
(४) डा० राकेशचन्द्र शास्त्री (अस्थायी प्राध्यापक)

१- १३ अगस्त १९८२ को डा० निगम शर्मा के नेतृत्व में तथा प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री के संयोजकत्व में संस्कृत दिवस मनाया गया। जिसकी अध्यक्षता डा० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री (भू० पू० अध्यक्ष एवं रीडर संस्कृत विभाग डी०ए०वी० कालेज, देहरादून ने की) तथा मुख्य अतिथि आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री रहे।

२- ११ सितम्बर १९८२ को कु० बीना (निर्देशक- डा० निगम शर्मा) की पी०एच-डी० की मौखिकी परीक्षा सम्पन्न हुई।

३- १२ सितम्बर १९८२ को दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग-अध्यक्ष डा० सत्यव्रत शास्त्री "विजिटिंग प्रोफेसर" ने संस्कृत विभाग में "संस्कृत के पर्यायवाची शब्द" विषय पर सारगर्भित भाषण किया।

४- १८ सितम्बर १९८२ को आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की शोध छात्रा कु० रूचिला ने संस्कृत विभाग के उपाध्यायों से निर्देशन प्राप्त किया।

५- २३ सितम्बर १९८२ तक डा० निगम शर्मा ने महर्षि दयानन्द शोध पीठ चण्डीगढ़ में संस्कृत संगोष्ठी में भाग लेकर "वेद एवं भाष्यकार:" विषय पर शोध निबन्ध का वाचन किया।

६- ३० सितम्बर तथा १ अक्टूबर को मेरठ मण्डलीय संस्कृत सम्मेलन में डा० निगम शर्मा एवं प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री का "वेदों के अपौरूषेयत्व" विषय पर सारगर्भित भाषण हुआ। विद्वत्गोष्ठी का संयोजन प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री ने किया। उक्त सम्मेलन में आयोजित संस्कृत वाद-विवाद प्रतियोगिता में वि०वि० के एम०ए० संस्कृत के छात्र ब्र० सत्यदेव आर्य एवं सुरेन्द्र कुमार ने भाग लेकर क्रमश: प्रथम एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया।

७- सितम्बर १९८२ मास की शोध प्रभा पत्रिका में डा० निगम शर्मा का मल्लिनाथ-सूरि पर शोध-लेख प्रकाशित हुआ।

८- अक्टूबर १९८२ मास की गुरुकुल पत्रिका में डा० राकेश शास्त्री का "राम साहित्य की व्यापकता" विषयक शोधपूर्ण लेख प्रकाशित हुआ। यह लेख राम साहित्य पर अनुसंधान करने वाले शोध छात्र के लिए अत्याधिक उपयोगी है।

९- ८ अक्टूबर ८२ से ११ अक्टूबर ८२ तक डा० निगम शर्मा ने गढवाल वि०वि० श्रीनगर के संस्कृत विभाग में एम०ए० के छात्रों की मौखिक परीक्षा ली तथा वैदिक विषय पर सारगर्भित भाषण दिया।

१०- ११ अक्टूबर ८२ को प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री ने कोटद्वार स्नातकोत्तर महाविद्यालय के संस्कृत विभाग के छात्रों की मौखिकी परीक्षा ली तथा "कालिदास का शब्द प्रयोग" विषय पर वैदुष्यपूर्ण भाषण किया।

११- १३ अक्टूबर ८२ को प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री गुरुकुल कण्वाश्रम को मान्यता प्रदान करने के लिए निरीक्षणार्थ गुरुकुल कण्वाश्रम गये।

१२- १८ अक्टूबर ८२ से २३ अक्टूबर ८२ तक डा० निगम शर्मा ने गढ़वाल वि०वि० श्रीनगर में हिमालय विषय पर हुई संगोष्ठी में

भाग लिया एवं अपना शोध-पत्र पढ़ा तथा एक गोष्ठी की अध्यक्षता की।

१३- नवम्बर मास १९८२ में संस्कृत विभाग के छात्रों ने सरस्वती-यात्रा की।

१४- ३० नवम्बर से ७ दिसम्बर तक डा० रामप्रकाश शर्मा ने विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन में आयोजित कालिदास समारोह में भाग लिया तथा उनके साथ संस्कृत विभाग के दो छात्रों (बसन्त कुमार तथा सुरेन्द्र कुमार) प्रतियोगिता में भाग लेने गये।

१५- २४ दिसम्बर ८२ को प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री ने दिल्ली विश्व-विद्यालय में सस्कृत विभाग में इन्द्र विद्यावाचस्पति प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि रूप में निर्णयक पद पर कार्य किया। इस प्रतियोगिता में वि० वि० के संस्कृत विभाग के छात्रों-(बसन्त कुमार एव सुरेन्द्र कुमार) ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

१६- जनवरी मास (त्रैमासिक-जनवरी से लेकर मार्च तक) गुरुकुल पत्रिका में डा० राकेश शास्त्री का "ऋग्वेद में हि निपात" विषय पर शोधपूर्ण लेख प्रकाशित हुआ।

१७- २५ जनवरी ८३ को डा० निगम शर्मा को फरीदपुर इण्टर कालेज में विशिष्ट अतिथि के रूप में आमन्त्रित किया गया। वहां उन्होंने ध्वजारोहण एवं व्याख्यान किया।

१८ २२ फरवरी ८३ को संस्कृत विभाग के तत्वावधान में संस्कृत वाद-विवाद अन्त्याक्षरी एवं मन्त्रोच्चारण प्रतियोगिताओं का समायोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता डा० रामनाथ वेदालंकार (भू०पू० उप-कुलपति गु०कां०वि०वि०) ने की।

१९- ५ मार्च १९८३ को गुरुकुल महाविद्यालय में आयोजित आचार्य

नरदेव शास्त्री वाद-विवाद प्रतियोगिता में डा० राकेश शास्त्री ने निर्णायक पद पर कार्य किया।

२०- १ अप्रैल १९८३ को संस्कृत विभाग में शोध-समिति की बैठक सम्पन्न हुई।

२१ १८ अप्रैल ८३ को दशनाम साधु सन्यासी परिषद् में प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री ने "जोवेश्वर संबंध" विषय पर विद्वतापूर्ण भाषण दिया।

२२- विभागाध्यक्ष डा० निगम शर्मा एवं प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री ने विभिन्न वैदिक विषयों पर विभिन्न आर्य समाजों तथा सभाओं में सारगर्भित भाषण किये।

२३- डा० निगम शर्मा की "ऋक सूक्त मंजरी" नामक पुस्तक प्रकाशित होकर पाठकगण के हाथों में गयी।

२४- प्रो० वेदप्रकाश शास्त्री को विश्व संस्कृत प्रतिष्ठानम् को उ०प्र० शाखा का कार्यकारी परिषद् चुना गया।

२५- डा० रामप्रकाश शर्मा दो गुरुकुलों को विश्वविद्यालय की ओर से मान्यता प्रदान करने हेतु संगठित कमेटी में चुने जाने पर गुरुकुलों का निरीक्षण करने गये।

२६- डा० रामप्रकाश शर्मा के दो विद्वता एवं शोधपूर्ण लेख महाभाष्योक्त ज्ञापक और उनके मूल स्रोतों का अध्ययन तथा पदमंजरीकार हरदत्त का नवीन व्याकरणों पर प्रभाव (जन० से मार्च ८३ मास की) गुरुकुल-पत्रिका में प्रकाशित हुए।

डा० निगम शर्मा
अध्यक्ष
संस्कृत विभाग

— 0 —

दर्शन-शास्त्र विभाग

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में दर्शन विभाग १९०२ से ही विद्यमान् है। १९६३ से एम०ए० कक्षाएं प्रारंभ हुई हैं। इससे पूर्व दर्शन विद्यावाचस्पति की उपाधि प्रदान की जाती रही है।
विभागीय उपाध्याय :—

१- डा० जयदेव वेदालंकार (कार्यवाहक अध्यक्ष)
२- डा० विजयपाल शास्त्री
३- डा० त्रिलोकचन्द्र

२- इस वर्ष विभाग में दो कार्य विशेष रूप से सम्पन्न कराये हैं।

१- वैदिक शिक्षा राष्ट्रीय कार्यशाला सितम्बर १९८२ में सम्पन्न हुई। इस कार्यशाला की व्यवस्था विशेष रूप से दर्शन विभाग की देखरेख में ही हुई। वर्तमान समय की शैक्षणिक समस्याओं का समाधान वैदिक परिपेक्ष में खोजना इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य था। यद्यपि यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय की ओर से ही था तथापि जयदेव वेदालंकार के निर्देशकत्व में यह सम्पन्न हुआ। विभाग के प्राध्यापक गण और छात्रों ने इसमें सक्रिय रूप से भाग लेकर इसे सफलता पूर्वक आयोजित किया।

२- योगशिक्षा प्रशिक्षण–डा० त्रिलोकचन्द्र ने निदेशक के रूप में तीन माह तक चलने वाले योग प्रशिक्षण का सफलता पूर्वक संचालन किया। इस आयोजन में विभागीय सभी उपाध्यायों एवं छात्रों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

३- विभागीय छात्र संख्या–सात छात्र एम० ए० प्रथम वर्ष चार छात्र एम० ए० द्वितीय वर्ष

४- विभाग में पी–एच० डी० प्रारम्भ-विशेष रूप में उत्तरी भारत के विश्वविद्यालय के छात्रों एवं दर्शन शास्त्र में अनुसन्धान दाताओं को यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि दर्शन विभाग में पी–एच० डी० हेतु शोध कार्य प्रारम्भ हो गया है। विश्वविद्यालय की प्रबन्ध समितियों के अतिरिक्त विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने अप्रैल १९८३ से विभाग में पी–एच० डी० खोलने की अनुमति प्रदान कर इस क्षेत्र के दर्शन शोध कर्त्ताओं पर विशेष कृपा की है। वास्तव में यह कार्य कई वर्ष पूर्व ही हो जाना चाहिये था। भारतीय विद्याओं के प्रतिष्ठान गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के दर्शन विभाग वैदिक दर्शन, भारतीय दर्शन, तथा पाश्चात्य दर्शनों की समस्याओं पर तुलनात्मक गवेष्णा तथा शोध कार्य न होगा तो कहा पर होगा।

विभागीय समस्त प्राध्यापक गए अपने-अपने विषय के महान एवं उद्भट्ट विद्वान है। सभी प्रवक्ता गम्भीर विषयों पर शोध कार्य कराने में सक्षम हैं। अतः छात्र नियमानुसार पी-एच० डी० शोध हेतु अपना पंजीकरण करा सकते है।

5. आई०ए०एस० एवं पी०सी०एस० प्रतियोगी परीक्षा

इस क्षेत्र के आई० ए० एस० एवं पी० सी० एस० की परीक्षाओं में बैठने वाले छात्रो को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि जो छात्र भारतीय दर्शन विषय लेकर इन उक्त परीक्षाओं में बैठना चाहे वे दर्शन विषय पर विभागीय उपाध्यायगए से मार्ग दर्शन ले सकते हैं। गत वर्षों में भी इन उक्त प्रतियोगी परीक्षाओं के छात्र सहायता एवं मार्ग दर्शन लेते रहे हैं।

६- डा० जयदेव वेदालंकार–नियुक्ति १९६८ ई०
२० अप्रैल ८२ से २५ अप्रैल ८२ तक राजपुरा (पंजाब) में भाषण

विषय–यज्ञ का माध्यमिक स्वरूप, योग का वैज्ञानिक स्वरूप, कर्म का दर्शन ज्ञान एवं कर्म का सामन्जस्य, त्रैतवाद।

सितम्बर ८२ के अन्तिम सप्ताह में पटियाला में चार व्याख्यान
विषय-साख्य का सत्कर्य्यवाद, वेदों में सृष्टि उत्पत्ति, भारतीय दर्शन
आत्मा का स्वरूप

न्याय दर्शन में कार्य कारण वाद

निदेशक वैदिक शिक्षा कार्यशाला के रूप में कार्य किया, यह ज्ञातव्य है कि यह कार्यशाला ४ सितम्बर ८२ से ८ सितम्बर ८२ तक सम्पन्न हुई। अक्टूबर १९८२ में नाभा में तीन भाषण दिये। विषय वैदिक समाजवाद तथा भौतिकता एवं अध्यात्मिकता क्या है। एव वेदों में ईश्वर का स्वरूप।

३० नवम्बर ८२ से ३ दिसम्बर ८२ तक तथा आल इंडिया फिलासाफिकल काग्रेस चण्डीगढ में सक्रिय भाग लिया। वैदिक फिलासाफी पर शोध-पत्र वाचन चार दिसम्बर से न्यूप्लेटोनिक सोसायटी होशियारपुर (पजाब) में विभाग का प्रतिनिधित्व किया। १० दिसम्बर से १५ दिसम्बर तक आर्यवानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर में सात व्याख्यान हुये। विषय-कठोपनिषद् में आध्यात्मिकविद्या २- केनोपनिषद् में तप, त्याग और ब्रह्मचर्य ३- भारतीय दर्शनों में मोक्ष का स्वरूप ४- मोक्ष के साधन ५- ईश्वर का वैज्ञानिक स्वरूप ६- अवतार का खण्डन। ७-वेदों में भक्ती का स्वरूप। २७ दिसम्बर ८२ से २ जनवरी ८३ तक मोगा (पंजाब) में भाषण विषय-आर्यसमाज का त्रैतदर्शन २- सृष्टि उत्पत्ति संदर्भ में विकास वाद तथा सांख्य दर्शन का विकास क्रम। ३- आधुनिक भौतिक युग और भक्तिवाद ४- यज्ञ का दर्शन ५- आधुनिक परिपेक्ष में वेदज्ञान की आवश्यकता ६- ज्ञान कर्म एवं उपासना का स्वरूप विवेचन।

२० फरवरी ८३ से १७ फरवरी ८३ तक गोलबाग अमृतसर (पंजाब) में व्याख्यान हुए विषय-भारतीय दर्शनों में समन्वयवाद २- भारतीय दर्शनों में विकासवाद ३- धर्म एव विज्ञान का समन्वय ४- धर्म और राजनीति ५-यजुर्वेद में परिवार का स्वरुप ६- यजुर्वेद में यज्ञों का स्वरूप ७- यजेर्वेद में यज्ञ और कर्म का विवेचन। विश्व-

विद्यालय के वार्षिक उत्सव में सामवेद पारायण यज्ञ के संयोजन के रूप में कार्य किया। स्मारिका विमोचन-डा० जयदेव वेदालंकार ने निदेशक एवं सम्पादक के रूप में २५० पृष्ठ बड़े आकार की वैदिक शिक्षा पर स्मारिका को तैयार किया। इस का विमोचन डा० वासुदेव सिंह मन्त्री उ० प्र० सरकार ने १३ अप्रैल को किया।

प्रकाशित पुस्तकें :—महर्षि दयानन्द की विश्वदर्शन को देन

उपनिषदों का तत्व ज्ञान प्रथम भाग (एक समालोचनात्मक दार्शनिक विवेचन)

इस वर्ष के लेखा :—

१ वैदिक फिलोसोफी-अंग्रेजी में (अजमेर की परोपकारी में छपा है)

२ वैदिक आण्टोलाजी-वैदिक पाथ में छपा है।

३ वैदिक वाग्मय में समन्वित व्यक्तित्व (स्मारिका में छपा)

४ आधुनिक समाजिक परिवेश में अध्यापको का उत्तरदायित्व (केन्द्रिय विद्यालय हरिद्वार में वाचन तथा उसकी पत्रिका में प्रकाशित

५ वैदिक साहित्य में वैज्ञानिक तत्व (आर्यभट्ट पत्रिका में प्रकाशित)

७ डा० विजयपाल शास्त्री- नियुक्ति १९८१ सांख्य पर वाचस्पति मिश्र भाष्याकारों की तुलना इस विषय पर पी-एच० डी० उपाधि प्राप्त की है । वैदिक शिक्षा राष्ट्रीय कार्यशाला में शोध-पत्र वाचन योग मे असम्प्रज्ञात समाधि का स्वरूप स्मारिका में छपा। आप दर्शन शास्त्र, संस्कृत साहित्य तथा हिन्दी साहित्य मे प्रथम श्रेणी से एम० ए० इसी प्रकार तीनों विषयों में आचार्य हैं।

८ डा० त्रिलोकचन्द्र- नियुक्ति १९८२ बनारस विश्वविद्यालय से योग पर पी–एच० डी० की उपाधि प्राप्त हैं।

लेख-योग की प्राचीन पद्धतियां-वैदिक कार्यशाला में शोध-पत्र

वाचन। यह लेख स्मारिका में प्रकाशित ।

निदेशक-योग प्रशिक्षण केन्द्र गुरुकुल कांगड़ी की क्रियात्मक शिक्षा दी एवं योग की कक्षाओं का तथा विद्यालय में योग की शिक्षा दी।

आकाशवाणी नजीबाबाद से वार्ता-भारतीय दर्शन पर वार्ता प्रसारित हुई।

एन०एस०एस० के अधिकारी- प्रोग्राम अधिकारी के रूप में भी कार्य किया। अनेक बार एन०एस०एस० के शिविरों का आयोजन जैसे कांगड़ी ग्राम में सामाजिक विकास में सक्रिय भाग लिया। बी०एच०ई०एल० की आर्य समाज में भाषण दिये।

६ श्री चक्रधर जोशी ने भी विभाग में प्रवक्ता पद पर अल्पकालीन रूप में लगभग तीन माह तक अध्यापन कार्य किया है।

दर्शन विभाग में अध्ययन अध्यापन की समस्त सुविधायें उपलब्ध हैं।

जयदेव वेदालंकार
अध्यक्ष दर्शन विभाग

— 0 —

मनोविज्ञान विभाग

१- स्टाफ :— श्री ओमप्रकाश मिश्र, रीडर एवं अध्यक्ष

डा० हरगोपाल सिंह, प्रवक्ता
श्री चन्द्रशेखर त्रिवेदी, प्रवक्ता
श्री सतीश चन्द्र घमीजा, प्रवक्ता
श्री लालनर सिंह, प्रयोगशाला सहायक
श्री कुवर सिंह, भृत्य

२- सत्र ८२-८३ में मनोविज्ञान विभाग मे एम०ए० प्रथम वर्ष में १८ विद्यार्थियों ने तथा एम०ए० द्वितीय वर्ष में ११ विद्यार्थियों ने पंजीकरण कराया। सत्र का प्रारम्भ विधिवत् हुआ तथा तीन विद्यार्थियों ने लघु शोध प्रबन्ध लिखने का निर्णय लिया। विद्यार्थियों के नाम, शोध-प्रबन्ध का शीर्षक तथा निर्देशकों का विवरण निम्नांकित है :-

विद्यार्थी	शोध प्रबन्ध शीर्षक	निर्देशक
१ श्री अवधेष कुमार	विभिन्न शिक्षा प्रणालियां एवं, व्यक्तित्व चर	श्री ओमप्रकाश मिश्र
२ श्री आनन्द वल्लभ जोशी	गंगा एवं संबन्धित संस्थानों के प्रति अभि-वृत्तियों का अध्ययन	डा० हरगोपाल सिंह
३ श्री अनिल कुमार	दूरदर्शन के सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रभाव	श्री सतीशचन्द्र घमीजा

३- इस वर्ष मनोविज्ञान में ट्यूटोरियल एवं सेमिनार प्रणाली के

अतिरिक्त गुरु-शिष्य अविच्छिन्न संबंध प्रणाली का प्रारम्भ हुआ। इस प्रणाली में प्रत्येक शिक्षक के साथ कुछ विद्यार्थियो को सम्बन्धित कर दिया गया। इस प्रणाली के अन्तर्गत शिक्षकों के साथ अभिभावकों की मीटिंग हुई और प्रत्येक छात्र की व्यक्तिगत समस्याओं को समझ कर उन्हें सुलझाने का प्रयोग किया गया।

४- विभाग मे कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा का "सहजयोग" पर प्रवचन हुआ जिसमें उन्होने अपने अनुभव विद्यार्थियों को बाटे।

५- श्री डा० रूपनागपाल के विभाग के तत्वावधान मे ३ प्रवचन हुए जिसमे उन्होंने परीक्षा-सुधार तथा नवीन शिक्षा प्रणालियो पर प्रकाश डाला।

६- डा० रूपनागपाल की नियुक्ति विभाग मे विजिटिंग फैलो के रूप मे हुई। उनके आगमन से विभाग काफी लाभान्वित हुआ। उनके सहयोग से भारतीय मनोविज्ञान पर एक सेमिनार करने की योजना बनी।

७- डा० हरगोपाल सिह जी की नजीबाबाद रेडियो स्टेशन से विभिन्न विषयों पर ६ वार्तायें प्रसारित हुई। उनके विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेख तथा ३ पुस्तक समीक्षायें प्रकाशित हुई। इसके अतिरिक्त वह "वैदिक पाथ" जरनल का अत्यन्त योग्यता से सम्पादन कर रहे हैं तथा उन्होने विश्वविद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट का सुचारू रूप से सम्पादन किया।

८- श्री चन्द्रशेखर त्रिवेदी का विद्यालय के बच्चों के बौद्धिक एवं नैतिक विकास में विशेष योगदान है। उन्होंने विद्यालय के बच्चों को पिछले वर्ष की भांति १०० श्लोक कंठस्थ कराये। यह श्लोक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किये गये। उनके इस कार्य को प्रशंसा की गई। वह उपकुलसचिव शिक्षा-परीक्षा के रूप में भी अपने कार्य का अत्यन्त योग्यतापूर्वक सम्पादन कर रहे हैं। परीक्षा प्रक्रिया में उनके द्वारा अनेक सुधार लाये गये।

९- प्रो० सतीशचन्द्र घमीजा का गुरु-शिष्य परम्परा प्रणाली को विकसित करने में विशेष योगदान रहा।

१०- श्री लालनरसिह इस वर्ष शिक्षेत्तर कर्मचारियो के महामन्त्री चुने गये। विश्वविद्यालय के अधिकारियों तथा शिक्षेकत्तर कर्मचारियों के मध्य अच्छे सम्बन्धों को विकसित करने में उनका विशेष योगदान है। अपने कार्य के अलावा उन्होने शिक्षण-कार्य में भी सहयोग दिया।

(ओमप्रकाश मिश्रा)
रीडर एव अध्यक्ष
मनोविज्ञान विभाग

— 0 —

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने गुरुकुल को जब १९६३ में डीम टू बी यूनिवर्सिटी का स्तर प्रदान किया तो स्नातकोत्तर कक्षाओं में प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति तथा पुरातत्व विभाग भी खोला गया। तब से यह विभाग योग्य प्राध्यापकों के नेतृत्व में प्रगति कर रहा है। वर्तमान् में विभाग में एक रीडर तथा तीन लेक्चरर कार्य कर रहे हैं।

विभाग में कार्यरत प्राध्यापक

१- डा० विनोदचन्द्र सिन्हा, रीडर अध्यक्ष

२- डा० श्यामनरायण सिंह लेक्चरर

३- डा० कशमीरसिंह भिण्डर, „ „

४- डा० ललितपाण्डे „ „ „

स्नातकोत्तर कक्षाओं में परिक्षार्थियों की संख्या

एम० ए० प्रथम वर्ष-१४ तथा एम० ए० द्वितीय वर्ष २३

शोध छात्र संख्या-२४

शोध कार्य :-लगभग १३ वर्ष के अल्प काल में अब तक १२ महत्व-विषयों पर शोध-कार्य पूर्ण किया जा चुका है। इस वर्ष के दीक्षान्त समारोह पर श्री ललित पाण्डे को "मोर्य काल में नौकरशाही" नामक विषय पर पी० एच० डी० की उपाधि प्रदान की गई। इस समय विभाग के सभी प्राध्यापकों के अन्तर्गत अनेक शोध-छात्र अनेक विषयों पर कार्य कर रहे हैं। डा० विनोदचन्द्र सिन्हा के निर्देशन में इस समय लग-

भग चार महत्वपूर्ण विषयो पर शोध कार्य हो रहा है। श्री एम० के० नारद ने "हिस्टोरिकल एण्ड कल्चरल स्टडी श्राफ दीप्रतिहार इन्सक्रिप्सन्स" पर अपना शोध कार्य पूर्ण कर लिया है। इसके अतिरिक्त श्रीमती साधना सिपाहा "मौर्य काल मे राजनितिक चिन्तन" (स्वामी दयानन्द के राजदर्शन के परिपेक्ष मे कु० उषा भसीन उत्तरभारत की शासन सस्थानो का तुलनात्मक अध्ययन (वैदिक युग से गुप्त युग तक) तथा आई० जी० पी० फलगुनादि "इवालूशन श्राफ इडियन कल्चर इन बाली" विषय पर कार्य कर रहे है डा० जबर सिह सेगर के नेतृत्व मे दो शोध विषयो मध्य एशिया और भारत के सास्कृतिक सम्पर्क तथा प्राचीन भारत मे नारी पर महत्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है। डा श्यामनारायण सिह के नेतृत्व मे श्री सुखबीर सिह सग्रहालय के सहायक क्यूरेटर पुरातत्व सग्रहालय गुरुकुल की मृण्मूर्तियो तथा पाषाण प्रतिमाओं का अध्ययन विषय पर महत्वपूर्ण कार्य कर रहें हैं। इसके अलावा अन्य शोध विषय गिल्डस सिस्टम इन एनशियेन्ट इडिया पर भी डा श्याम नरायण सिंह के नेतृत्व मे एक शोध छात्र कार्य कर रहा है। विभाग मे अन्य प्राध्यापक डा. काशमीर सिह भिण्डर के नेतृत्व मे पूर्व मध्य काल की शासन सस्थाए विषय पर शोध कार्य किया जा रहा है।

विभाग की अन्य गतिविधियां

विभागीय शोध कार्य के अतिरिक्त डा० विनोदचन्द्र सिन्हा विभागाध्यक्ष ने मथुरा सग्रहालय सगोष्ठी २७-२८ जनवरी ८३ मे मथुरा कला की महत्वपूर्ण उपलब्धिया" विषय पर शोध लेख पढा। वर्ष १९८२-८३ में डा० सिन्हा की नजीबाबाद रेडियो से तीन महत्वपूर्ण वार्ताएँ भी प्रसारित हुई। के वार्ताए भारत मे विदेशी पेड-पौधो की उपयोगिता 'मानव और वृक्ष" तथा 'उत्तराखण्ड से प्राप्त पुरातत्व सामग्री" विषयों पर थी। विभाग के दूसरे प्राध्यापक डा० काशमीरसिह भिण्डर की भी नजीबाबाद रेडियो से 'फूलो की घाटी' विषय पर एक वार्ता प्रसारित हुई। आपने एक परिचर्चा मे भी भाग लिया, जो साम्प्रदायिकता पर आयोजित की गई थी।

प्रकाशन

वर्ष १९८२-८३ में डा० सिन्हा की पुस्तक "हिन्दुइजम एण्ड सिवल वर्शिप" पुस्तक का प्रकाशन कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है। इससे पूर्व उनकी आठ पुस्तक प्रकाशित हो चुकी हैं। विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डा० श्यामनरायण सिंह की एक पुस्तक "प्राचीन भारतीय समाजिक एंव वैज्ञानिक संस्थाएं" इस वर्ष प्रकाशित हुई। पुस्तक प्रकाशन के अतिरिक्त विभाग के प्राध्यापकों के अनेक लेख विभिन्न पत्रिकाओं में भी इस वर्ष प्रकाशित हुए हैं।

विभाग द्वारा आयोजित व्याख्यान

इस वष विभाग में चार गोष्ठियों का आयोजन किया गया। अगस्त मास में विभाग में स्वामी सत्यप्रकाशानन्द जी ने वेदों में निहित ज्ञान विषय पर एक सारगर्भित वार्ता दी। सितम्बर मास में डा० डी० एस० द्विवेदी ने "महाभारत युद्ध और उसका विश्वव्यापी प्रभाव" विषय पर व्याख्यान देते हुए कहा कि महाभारत युद्ध आज से लगभग ५१८७ वर्ष पूर्व हुआ था। अक्टूबर माह में कुलपति जी के निर्देश से इतिहास विभाग के तत्वावधान में संयुक्त राष्ट्र संघ स्थापना दिवस का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथी श्रीमती पूनम सागर ने "संयुक्त राष्ट्र संघ का निःशास्त्रीकरण में योगदान" विषय पर एक तर्क पूर्ण शोध लेख पढ़ा। इस गोष्ठी में डा० ललित पाण्डे ने भी "निःशास्त्री-करण में सयुक्त राष्ट्र संघ के योगदान" पर अपना शोध लेख प्रस्तुत किया। इस सफल कार्यक्रम का आयोजन डा० काशमीरसिंह भिण्डर ने किया। जनवरी ८३ में विभाग के तत्वावधान में तथा डा० विनोदचन्द्र सिन्हा के संयोजन में "इतिहास की भौतिक वादी व्याख्या" विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी में मुख्य वक्ता श्री श्याम लाल शर्मा उप सम्पादक दिनमान थे।

विभाग की उपलब्धियां

विभाग की अकादमिक गतिविधयों के अतिरिक्त अन्य वर्षों की भांति विभाग के प्राध्यापकों ने विश्वविद्यालय की अन्य गतिविधियों में

भाग लिया। इस वर्ष डा० विनोदचन्द्र सिन्हा, अध्यक्ष ने जनसम्पर्क अधिकारी के रूप मे विभाग की छवि को उज्जवल करने के लिए अनेक सफल योजनाए कार्यान्वित की। विभाग के अन्य दो प्राध्यापक डा० श्याम्नरायण सिह व डा० काशमीरसिह भिण्डर इस वर्ष भी खेलो के आयोजन मे सक्रिय रहे। गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी क्रिकेट इन्चार्ज डा० श्यामनरायण सिह और बैडमिन्टन तथा हाकी इन्चाज डा० काशमीरसिह भिण्डर रहे। डा० ललित पाडे ने इस वर्ष गुरुकुल पत्रिका मे समाचारो के सकलन का कार्य किया।

विनोदचन्द्र सिन्हा
अध्यक्ष
प्रा० भा० सस्कृति एव पुरातत्व विभाग

— 0 —

अंग्रेजी विभाग

यू० जी० सी० एक्ट द्वारा १९६३ में अन्य स्नातकेतर विभागों के साथ ही अंग्रेजी विभाग का उन्यन।

स्नातकोत्तर विभाग के दो दशक (२० वर्ष) पूर्ण। इस अवधि में विभाग के प्रथम अध्यक्ष, श्री सदाशिव भगत के अध्यक्षत्व में विभाग की निरन्तर सुदृढ़ता एवं प्रगति। गुरुकुल में अंग्रेजी की प्रधानता का प्रमाण यह है कि हाई स्कूल के स्तर से विद्याविनोद (इन्टरमीडिएट) एवं अलंकार (बी०ए०) के स्तर तक अंग्रेजी एक अनिवार्य विषय के रूप में वर्तमान काल में भी प्रतिष्ठित।

एम०ए० में अंग्रेजी एक ऐच्छिक विषय होने पर भी लोकप्रिय। अधिकतर अन्य विश्वविद्यालयों के स्नातकों का ही एम०ए० अंग्रजी में प्रवेश। विद्यार्थीयों की विशेषता यह कि न केवल विभिन्न विश्व-विद्यालयों, अपितु विभिन्न प्रान्तों से भी छात्रों का एम०ए० अंग्रेजीं में प्रवेश के लिए यहां आना। इस दिशा में विभाग का राष्ट्रीय भावनात्मक एकता में योगदान। इस वर्ष एम०ए० प्रथम वर्ष में गुयाना (दक्षिण अमेरिका) के एक विद्यार्थी का प्रवेश।

शिक्षक छात्र अनुपात १ : ११

अकादमिक प्रगति : (क) गतवर्ष से आंग्ल भाषा में योग्यता प्रमाण-पत्र कोर्स का प्रारम्भ।

(ख) शिक्षा पटल द्वारा सन्निविष्ट किया जाना।

(ग) बीस वर्षों के कठिन परीक्षण एवं प्रतीक्षा के पश्चात् इस वर्ष से विभाग में पी-एच०डी० का शुभारम्भ। एक्सपर्ट कमेटी (डा० अमरीक सिंह, भूतपूर्व सचिव Associ-

ation of Indian Universties तथा अंग्रेजी प्रोफेसर अध्यक्ष डा॰ एम०एल० रैना, पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ की सस्तुति पर विशेष रूप से Indo AnglionLit तथा Comparative Lit के क्षेत्र मे पी-एच०डी० के लिए अनुमति। अंग्रेजी साहित्य में शोध प्रोत्साहन के लिए यू० जी० सी० अधिकारियो को गुरुकुल की ओर से धन्यवाद।

(घ) अगले वर्ष १९६४ (मार्च-अप्रेल) मे Indian Association of American Studies के वार्षिक अधिवेशन के लिए गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय (तत्वावधान अ ग्रेजी विभाग) का नाम प्रस्तावित एव पारित।

बाह्य विद्वान्‍ो के भाषण

डा० रूपनागपाल, डिप्टी रजिस्ट्रार एव मनोविज्ञान प्रवक्ता आई० आई० टी० नई दिल्ली का भाषण। विषय-आधुनिक साहित्य और आस्तित्व वाद Modern Lit. and Existentialism तिथि २५ नवम्बर

डा० पी० पी० शर्मा-डीन फैकल्टी आफ आर्टस एव प्रो०-अध्यक्ष, अग्रेजी विभाग, आई० आई० टी० कानपुर। विषय-साहित्य की परख Literary Appreciation तिथि १६ मार्च १९८२

डा० शिशिर कुमार घोष-प्रा अग्रेजी विभाग, विश्वभारती शान्ति निकेतन (प० बगाल) नेशनल लेक्चरर आफ इगलिश, १९८२-८३ डा० घोष का गुरुकुल परिसर मे २५ मई से ३० मई तक निवास।

भाषण का विषय-चेतना की सभ्यता (Civilization of Consciousness) प्रा. घोष द्वारा गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के सुन्दर परिसर उत्तम पुस्तकालय एव विशिष्ट पुरातत्व सग्रहालय की भूरि-भूरि प्रशसा।

अग्रेजी विभागाध्यक्ष श्री भगत ने उस्मानिया यूनिवर्सिटी (हैदराबाद) के तत्वावधान मे हुए सेमीनार आन एजूकेशनल टक्नोलाजी फरवरी

१२-१४ में कुलपति जी श्री हूजा का प्रतिनिधित्व, किया। श्री भगत ने अन्नामलई यूनि० (तामिलनाडु) में हुए इंडियन एसोसिएशन ग्राफ अमेरिकन स्टडीज के वार्षिक अधिवेशन (फरवरी १७-१६) में भी भाषण दिया। वे इस एसोसिएशन की कार्यकारिणी के सदस्य चुने गये। तथा अगले वर्ष मार्च-अप्रैल में होने वाले कान्फरन्स के लोकल सैक्रेटरी भी मनोनीत किये गये।

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय से निकल रहे त्रैमासिक पत्रिका Vedic Path में विभागीय प्रवक्ता डा० राधेलाल वार्ष्णेय एव डा० नारायण शर्मा के शोध लेख छपे और साथ ही इनके कई शोध-लेख प्रगति में हैं।

विभागीय शिक्षक संकाय

१- श्री सदाशिव भगत : एम.ए. १६५६ (इलाहाबाद विश्वविद्यालय, मैरिट होल्डर रीडर एव अध्यक्ष १६६३ से

२- डा. नारायण शर्मा : एम.ए. आगरा विश्वविद्यालय, पी०एच०डी० मेरठ वि० वि० प्रावक्ता अगस्त १६६६ से

३- डा० राधेलाल वार्ष्णेय : एम०ए० इलाहाबाद विश्वविद्यालय पी०एच०डी० राजस्थान विश्वविद्यालय से, प्रवक्ता १६७२ से

४- श्री प्रथमेश भट्टाचार्य . एम०ए० गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से (प्रवक्ता अस्थाई १६८१-८२-८३)

सदाशिव भगत
रीडर-अध्यक्ष
अंग्रेजी विभाग

—0—

हिन्दी-विभाग

१. विभाग एवं विषय का संक्षिप्त विवरण :

यह विभाग प्रारम्भ से ही इस विश्वविद्यालय में है। वैदिक विचारों की संस्था होने के कारण इस संस्था में हिन्दी का विशेष महत्त्व है क्योंकि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज के प्रचार का माध्यम इसी भाषा को बनाया तथा इसका नाम "आर्यभाषा" रखा था। इस विभाग में स्नातक स्तर पर विद्यालंकार तथा वेदालंकार परीक्षाओं की शिक्षा-व्यवस्था है। उन परीक्षाओं में हिन्दी एक वैकल्पिक विषय है जब कि संस्कृत तथा अंग्रेजी अनिवार्य विषय हैं। इस दृष्टि से उक्त परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में अन्य विश्वविद्यालयों की बी०ए० परीक्षा की अपेक्षा थोडी-सी भिन्नता है परन्तु एम०ए० तथा पी-एच०डी० की परीक्षाएं अन्य विश्वविद्यालयों के ही समान होती हैं। इस विषय में पी-एच०डी० उपाधि हेतु किया गया शोध कार्य विश्वविद्यालय के अन्य सभी विभागों से अधिक है। अब तक लगभग २६ छात्र केवल इस विषय में पी-एच० डी० उपाधि प्राप्त कर चुके हैं।

२. विभाग की उपलब्धियां :

इस विभाग में इस समय विभागाध्यक्ष के निर्देशन में पांच तथा विभागीय प्रवक्ता डा० विष्णुदत्त राकेश के निर्देशन में तीन शोध छात्र पी-एच०डी० का शोध कार्य कर रहे हैं। पी-एच०डी० उपाधि हेतु लिखे गए शोध-प्रबन्धों तथा एम०ए० उपाधि हेतु लिखे गए लघु शोध प्रबन्धों की पर्याप्त संख्या है। डा० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी (विभागाध्यक्ष) के निर्देशन में इस प्रकार के बीस शोध ग्रंथ लिखे जा चुके हैं। इसके बाद विभागीय प्रवक्ता डा० विष्णुदत्त 'राकेश' का नाम आता है। इनके निर्देशन में लगभग १५ शोध-ग्रन्थ लिखे जा चुके हैं। शेष दो प्रवक्तागण डा० भगवानदेव पाण्डेय तथा श्री ज्ञानचन्द. रावल अपेक्षाकृत नए हैं।

इस वर्ष अनेक साहित्यकारो की जयन्तिया मनाई गई तथा हिन्दी-दिवस का कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ। विभाग मे हिंदी के विभिन्न विद्वान पधारे जिनमे डा० केसरी नारायण शुक्ल डी०लिट०, डा० उदयभानु सिह डी०लिट० तथा डा० महेन्द्र नाथ दुबे (के०यम० मुशी हिदी इस्टीट्यूट आगरा विश्वविद्यालय) के नाम उल्लेखनीय हैं।

विभाग का वातावरण उल्लासपूर्ण रहा।

शिक्षकों की सूची

१	डा० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी	डी०लिट०	(रीडर एव विभागाध्यक्ष
२	डा० विष्णुदत्त "राकेश	...	(प्रवक्ता)
३.	डा० भगवानदेव पाण्डेय	.	"
४.	श्री ज्ञानचन्द्र	...	"

डा० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी।
रीडर एव अध्यक्ष,
हिन्दी-विभाग

— ० —

गणित विभाग

विभाग का सत्र जुलाई के मध्य से प्रारम्भ हुआ। छात्रों का प्रवेश चयन समिति द्वारा किया गया। इस वर्ष छात्रो की स्ख्यां निम्न रही :-

प्रथम वर्ष—२७
द्वितीय वर्ष—३१

कक्षाओं में विधिवत् अध्यापन कार्य अगस्त मास से प्रारम्भ हुआ।

माननीय कुलपति जी की प्रेरणा के अनुसार सभी छात्रों को विभाग के अध्यापकों द्वारा गर्भस्थ किया गया।

इस वर्ष विभाग में अध्ययन को रूचिपूर्वक बनाने के लिए तथा छात्रो में आत्मविश्वास जाग्रत करने के लिए समय-समय पर उनका बौद्धिक परीक्षण किया गया तथ उनसे सेमिनार में बोलने का अभ्यास कराया गया।

हाकी में श्री हरबंश सिह् ने अन्तर-विश्वविद्यालय टूर्नामैन्ट में सक्रिय भाग लिया।

बैंडमिन्टन में श्री अनिल कुमार छाबड़ा ने कानपुर में विश्व-विद्यालय की टीम का नेतृत्व किया।

श्री मुकेश एवं श्री नरेन्द्र इस बार एन० सी० सी० के 'सी' र्साटिफिकेट की परीक्षा में सम्मिलित हुए। अन्य छात्रों ने एन० सी० सी० में सक्रिय भाग लिया।

छात्रों को कम्प्यूटर के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए

उन्हें बी० एच० ई० एल० ले जाकर वहां के अधिकारियो के सहयोग से जानकारी दी गयी।

द्वितीय वर्ष के छात्रो ने विभाग के निर्देशन में कई प्रशासनिक एवं बैंकिग प्रतियोगिताओं में भाग लिया। जिससे एक छात्र एल० आई० सी० एवं चार छात्र बैंकों में नियुक्त हो चुके है।

दीक्षान्त समारोह में विभाग के छात्रो एवं अध्यापकों ने सक्रिय योगदान दिया।

विभागीय परम्परा के अनुसार इस वर्ष १० मई ८३ को द्वितीय वर्ष को छात्रों का विदाई समारोह आयोजित किया गया, जिसके मुख्य अतिथि डा० रामप्रसाद वेदालंकार, कार्यवाहक कुलपति थे। जलपान के उपरान्त छात्रों का फोटोग्रुप विभागीय अध्यापको व कार्यवाहक कुलपति जी के साथ हुआ।

विभाग में निम्न प्राध्यापक कार्यरत हैं :-

(१) श्री विजयपाल सिंह (रीडर एवं अध्यक्ष)

(२) श्री वीरेन्द्र अरोड़ा

(३) श्री महीपाल सिंह

श्री वीरेन्द्र अरोड़ा (कोर्डिनेटर) एन०एस०एस० के निर्देशन में कांगड़ी ग्राम (बिजनौर) में छात्रों का तथा तपोवन (देहरादून) में छात्राओं का १०-१० दिन के शिविर लगाये गये।

(विजयपाल सिंह)
अध्यक्ष
गणित विभाग

— 0 —

विज्ञान महाविद्यालय गणित विभाग

गणित विभाग (विज्ञान महाविद्यालय) बी०एस०सी० प्रथम वर्ष में नये छात्रों के प्रवेश लेने के बाद कक्षायें प्रारम्भ हुई। छात्रों को अधिक से अधिक अध्ययन के लिये प्रेरित किया गया। समय समय पर लघु परीक्षाएं आयोजित करके यह जांच की गई छात्र विषय को कैसा हृदय-गंम कर रहे हैं। छात्रों की व्यक्तिगत कठिनाईयों का भी विभाग के शिक्षकों के द्वारा निराकरण किया गया।

प्रतियोगी परीक्षा में भाग लेने वाले छात्रों की यथा संभव सहायता की गई।

विभाग के शिक्षकों को वेदों का अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया गया। फलस्वरूप श्री विजयेन्द्रकुमार जी का एक लेख "यजुर्वेद और संख्याए" गुरुकुल पत्रिका में तथा दूसरा लेख "मोडर्न मैथमेटिकल लाज इन यजुर्वेद" वैदिक पाथ में प्रकाशित हुआ।

श्री हरवंशलाल गुलाटी जी का एक लेख "भारतीय गणितज्ञों का योगदान" आर्यभट्ट पत्रिका में प्रकाशित हुआ।

विभाग के शिक्षक शोध कार्य भी कर रहे हैं।

(एस०सी० त्यागी)
प्रिंसीपल एवं अध्यक्ष गणित विभाग
विज्ञान महाविद्यालय हरिद्वार

भौतिक विज्ञान विभाग

भौतिक विज्ञान विभाग के भवन का निर्माण यू०जी०सी० से प्राप्त अनुदान से हुआ। इस वर्ष विभाग में केवल दो शिक्षक रहे (एक विभागाध्यक्ष और एक प्रावक्ता)। विभाग में दो लैबोरेटरो (बी.एस-सी प्रथम एवं द्वितीय वर्ष), एक अध्यक्ष रूम, एक स्टाफ रूम तथा दो श्याम प्रकोष्ट हैं। बी एस-सी. के क्रियात्मक कार्य के लिए कोर्स सम्बन्धी सभी उपकरण विद्यमान हैं। तीन लैबोरेटरी एम.एस-सी के लिए तैयार है। एम.एस-सी के लिए अधिकतर पुस्तकें एवं उपकरण विद्यमान हैं।

भावी योजना

१- भौतिक विज्ञान विभाग में पोस्ट ग्रजुएट कक्षायें चालू करना।
२- भौतिक विज्ञान विभाग में रिसर्च प्रोग्राम।

विभागीय उपाध्याय

१- श्री हरिश्चन्द्र ग्रोवर, अध्यक्ष
२ श्री राजेन्द्र कुमार अग्रवाल, प्रावक्ता

इस वर्ष विभाग में रूड़की विश्वविद्यालय से डा० बी०पी० सिंह, प्रा० भौतिकी विभाग तथा श्री राजेन्द्र भारद्वाज भौतिकी विभाग डी०ए०वी० कालेज, देहरादून, तथा डा० शिवदत्त शर्मा मेरठ विश्वविद्यालय से भौतिकी विभाग में आये तथा उन्होंने विभाग की बहुत प्रशंसा की।

विद्यार्थियों की संख्या

बी०एस०-सी प्रथम खण्ड—६०
बी०एस०-सी द्वितीय खण्ड—२३

पाठ्यक्रम

बी०एस-सी० प्रथम खण्ड - (१) मैथेमैटिकल फिजिक्स
(२) मैकेनिक्स
(३) ओपटिक्स

बी०-एस-सी० द्वितीय खण्ड - (१) थरमल फिजिक्स
(२) इलैक्ट्रिसिटी एण्ड मैग्नेटिज्म
(३) एटोमिक फिजिक्स

विभाग के अध्यापकों द्वारा प्रकाशन

निम्नलिखित आर्टिक्लिस विभाग के अध्यापको द्वारा लिखे गये जो कि आर्यभट्ट विज्ञान पत्रिका मे प्रकाशित हुए।

हरिशचन्द्र ग्रोवर—१-अन्तरिक्ष मे प्रदूषण
२-जिन पर हमे गर्व है-इस युग का अनोखा शोधकर्त्ता अलबर्ट आइस्टाइन

इस वर्ष भौतिकी विभाग से राजेन्द्र कुमार अग्रवाल ने ट्रिस्टे (इटली) मे १८ अप्रैल, १९८३ से १४ मई, १९८३ तक हुए माइक्रो प्रोफेसर टैक्नोलोजी पर आधारित द्वितीय कालेज प्रशिक्षण मे भाग लिया। इससे विद्यार्थी विशेष रूप से लाभान्वित होगे।

हरिशचन्द्र ग्रोवर
अध्यक्ष-भौतिकी विभाग

— 0 —

वनस्पति विज्ञान विभाग

शिक्षक गण :—

१- डा० विजयशंकर, रीडर एवं अध्यक्ष

२- डा० पुरुषोत्तम कौशिक लेक्चरर

शिक्षकेत्तर:—

१- श्री रुद्रमणी-लैब असिस्टेन्ट

२- श्री विजय सिंह-लैब व्याय

३- ,, सूरजदीन माली

वद्यार्थियों की सख्यां—बी-एस० सी० प्रथम खण्ड १४

बी-एस० सी० द्वितीय खण्ड १४

विभाग में पठन-पाठन का कार्य सुचारु रूप से चला। विभाग के अध्यापकों ने वैदिक शिक्षा राष्ट्रिय कार्यशाला में सक्रिय भाग लिया एवं शोध-पत्र वाचन किया। जो स्मारिका में छापे गये।

विभाग में वैदिक पौधों एवं औषधिय पौधों का हरबेरियम बनाने का कार्य हुआ। वाटिका में कुछ नये औषधीय पौधों कास्टस, ब्राह्मी आदि के कल्टीवेशन ट्रायल्स किये। डा० विजयशंकर:- विभागीय कार्यों के अतिरिक्त निम्नलिखित कार्य सम्पन्न किये।

१- निदेशक, कांगड़ी विकास योजना।

२- सम्पादक आर्य भट्ट विज्ञान पत्रिका।

३- अध्यक्ष स्वागत समिति वैदिक शिक्षा राष्ट्रिय कार्यशाला।

४- कोग्रार्डीनेटर गंगा योजना।

निम्नलिखित लेख प्रकाशित हुए :—

१- विश्वविद्यालय, इकोडवलपमेन्ट, पर्यावरण शिक्षा २- वीपल और पर्यावरण ३- गंगा की निर्मल धारा। ४- हरे पतो का खादमूत्र ५- भविष्य संभावनायें एवं संकेत। ६- धृतकुमारी

वार्ता :— रोटरी क्लब ज्वालापुर-विषय-पर्यावरण

२- ग्राम बहादराबाद-विषय-ग्राम विकास
डा० पुरुषोतम कौशिक, प्रवक्ता, वनस्पति विज्ञान विभाग।

वनस्पति विज्ञान विभाग में छात्रों के सुचारु रूप से पठन-पाठन का कार्य करवाने के अतिरिक्त डा० पुरुषोतम कौशिक ने निम्नलिखित सराहनीय कार्य किये। ७ मई १९८२ को दक्ष मंदिर कनखल के पास दो बच्चे गंगा में बहे जा रहे थे। उनको बेहोश अवस्था में बहार निकाल कर पत्थर की कुर्सी के ऊपर से अर्द्धगोलाकार दीवार पर पेट के बल लेटाकर पेट का पानी निकाला और आनन्दमयी चिकित्सालय के डा० की सलाह के अनुसार उनको होश आने पर घर भेजा।

वनमहोत्सव के अवसर पर वृक्षारोपण करवाया और विश्व-विद्यालय के कैम्पस के सौन्दर्यकरण व उद्यानीकरण के अतिरिक्त कुलपति जी व कुलसचिव जी के आदेशानुसार विद्यालय विभाग के ब्रह्मचारियों को उद्यानीकरण में दक्ष करने हेतु विद्यालय विभाग के अधिकारियों को सहयोग प्रदान किया।

४ सितम्बर से ८ सितम्बर १९८२ तक गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय, हरिद्वार में आयोजित वैदिक शिक्षा राष्ट्रिय कार्यशाला में तथा २३ से २५ सितम्बर १९८२ तक नई दिल्ली में आयोजित वर्कशाप उन एनवायरमेन्टल मेनेजमेन्ट एजुकेशन" में भाग लिया १९८२-८३ में डा० कौशिक के निम्न प्रकाशन हैं।

डिप्लैटिंग फारेस्ट रिशोर्सिज एन्ड दी प्रोबलम ग्राफ देयर कन्जर्-वेशन। दी वैदिक पाथ वालूम, ४५ नं० ३, १९८२, पृष्ठ ४४-४८

२– ग्लीम्पसीस ग्राफ मैडिकल बोटेनी इन ग्रथर्ववेद (कान्ड) १-३ वैदिक शिक्षा राष्ट्रिय कार्यशाला-शोध पत्र एवं लेखों का संकलन, १९८३ पृष्ठ संख्या १९६-२०३

३– इकोलोजिकल एन्ड एनोटोमिक मार्वल्स ग्राफ दी हिमालयन ग्रारचिड्स (इन प्रैस), मैसर्स टूडे एन्ड टूमारोज, प्रिटर्स एण्ड पब्लिशर्स, २४-बी। ५, देशबन्धु गुप्ता रोड, करोल बाग, नई दिल्ली ११०००५

वनस्पति विज्ञान के बी०एस०सी० ग्रंतिम वर्ष के छात्रों ने दीक्षान्त समारोह के ग्रवसर पर उद्यानों में से खरपतवार निकाले, लान तैयार किये। पुष्पीय पौधे लगाये तथा कुलपति निवास, सीनेटहाल ग्रन्य उद्यान एवं सड़क से पत्ते इत्यादि उठाकर सफाई कार्य में सहयोग प्रदान किया।

आर्यभट्ट विज्ञान पत्रिका

सम्पादक :- डा० विजयशंकर, ग्रध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान विभाग

पत्रिका के दो ग्रंक प्रकाशित हुये। इनमें विद्वान लेखकों के साथ विद्यार्थियों के लेख भी प्रकाशित हुए। पर्यावरण, वेद में विज्ञान, ग्राम विकास ग्रादि विषय पर लेख प्रकाशित हुये। विज्ञान को जनसाधारण तक पहुंचाने का पत्रिका एक सफल साधन है।

डा० विजयशंकर
ग्रध्यक्ष
वनस्पति विज्ञान विभाग

— 0 —

रसायन विज्ञान विभाग

बी०एस०सी० के सभी छात्रो के लिए रसायन-शास्त्र का पढना एक अनिवार्य विषय है। इस वर्ष छात्रो का कोर्स बिना किसी बाधा के समय पर समाप्त हो गया है। कई वर्षो से विभाग का गैसप्लान्ट कार्य योग्य नही था, वह भी इस वष ठीक करा लिया गया है और जिसके कारण विद्यार्थी अपना प्रयोगात्मक कार्य ठीक प्रकार से कर सके।

रसायन विभाग मे इस वर्ष डा० इन्दू प्रकाश सक्सेना प्राचार्य डी०ए०वी० कालेज देहरादून आये और उन्होने अपना विद्वतापूर्ण भाषण "ऊर्जा" पर दिया। जिसमे बी०एस०सी० के सभी छात्र एव प्राध्यापक उपस्थित थे।

रसायन विभाग मे इस समय तीन प्राध्यापक, एक प्रयोगशाला सहायक, एक गैसमैन तथा एक लैब बुआय है।

१- डा० रामकुमार पालीवाल-अध्यक्ष
२- श्री कौशल कुमार जी-प्रवक्ता
३- श्री अनिलकुमार जी-प्रवक्ता
४- श्री शशीकुमार-प्रयोगशाला सहायक
५- श्री मानसिंह-गैसमैन
६- श्री नरेशकुमार-लैब बुआय।

रामकुमार पालीवाल
अध्यक्ष
रसायन विभाग

जन्तु विज्ञान विभाग

डा० बी०डी० जोशी ने मास जुलाई १९८२ से विभाग में रीडर एवं अध्यक्ष का पद ग्रहण किया। विभाग में विद्यार्थियों की संख्या इस प्रकार थी :-

बी.एस-सी. प्रथम-१४
बी.एस-सी. द्वितीय १४

कुल २८

सितम्बर १९८२ में डा० जोशी के नेतृत्व में बी.एस-सी. प्रथम के विद्यार्थियों ने मसूरी भ्रमण किया एवं वहां की वनस्पतियां एवं जन्तुओं का अध्ययन एवं संग्रह किया। इसी मास विश्वविद्यालय में वैदिक शिक्षा राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन हुआ जिसमें विभाग के दोनों अध्यापकों ने सक्रिय भाग लिया।

१० से १२ अक्तूबर, १९८२ को हरिद्वार में इण्डियन एसोसिऐशन आफ एनवायरमेंटल बायोलाजिस्ट्स के तत्वावधान में "इकोलोजी आफ गंगा वाटर सिस्टम" पर एक गोष्ठी हुई। डा. जोशी ने एक सेशन की अध्यक्षता की एवं "कांस्ट्रक्शन आफ मिनी रिजरवायर्स इनहिल बेलीज टू चेक सिल्टिंग इन गंगा" नामक पत्र प्रस्तुत किया।

वर्तमान सत्र में डा० जोशी विश्वविद्यालय में एन.एस.एस. के प्रोग्राम आफिसर नियुक्त हुए और उन्होंने ५० विद्यार्थियों का एक १० दिवसीय कैम्प पुण्य भूमि कांगड़ी ग्राम में लगाया।

मार्च १९८३ में डा. जोशी ने ए एन डी एम एम कानपुर में "फर्स्ट कान्फ्रेंस आफ एसोसियेशन आफ एडल्ट एण्ड कांटीन्यूइंग एजूकेशन इन यू पी. यूनीवर्सिटीज" में भाग लिया एवं निम्न शोध पत्र प्रस्तुत किया।

"एप्रोच टू दी एडल्ट कान्टीन्यूइंग एजूकेशन-सम थाट्स"

डा. जोशी ने उपर्युक्त गोष्ठी के वेलेडिक्टरी फंक्शन की अध्यक्षता की एवं १६८३-८४ के लिए वह एसोसियेशन के सर्वसम्मति से उपाध्यक्ष चुने गये।

१६ मार्च १६८३ को डा. आर.एस. टण्डन, डी.एस सी. रीडर जन्तु विज्ञान विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय ने यू.जी.सी. के विजिटिंग फैलो के रूप में १५ दिनों के लिए विभाग में कार्य किया। उन्होंने निम्न-लिखित वार्ता प्रस्तुत की।

१- कोमन ह्यूमन पैरासाइट्स, २- टिपिकल सैक्सुअल बिहेवियर इन एनिमल्स, ३- लिविंग फॉसिल।

विद्यार्थियों एवं अध्यापको ने वार्ताओं को अत्यन्त रुचि से सुना। डा. टण्डन ने बी एस-सी भाग दो के विद्यार्थियों को इकोलोजी एवं एन्वायरमेंटल बायोलाजी विषयों पर लैक्चर दिये।

डा. जोशी के चार शोध पत्र विभिन्न साइंटिफिक जरनल्स में प्रकाशित हुए। एक लेख आर्यभट्ट पत्रिका में प्रकाशित हुआ।

डा. जोशी ने विश्वविद्यालय के अधिकारियों से विभाग में पी-एच.डी. प्रारम्भ करने के लिए प्रार्थना की। विभाग शोध कार्य के लिये भली भांति सज्जित है। आशा की जाती है कि कुलपति जी एवं शिक्षा पटल इस कार्य को प्रारम्भ करने के लिए अनुमति प्रदान करेंगे, विभाग में अध्ययन अध्यापन कार्य सुचारु रुप से चला।

डा. वी. डी. जोशी
अध्यक्ष
जन्तु विज्ञान विभाग

— 0 —

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून

१- आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एक रजिस्टर्ड संस्था है। इसकी रजिस्ट्री गवर्मेन्ट आफ इण्डिया "के ऐक्ट २१ १८६० ई० के अनुसार सन् १८८४ में हुई थी। २६ नवम्बर १८९८ को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने गुरुकुल खोलने का निश्चय किया, और उसकी निम्नलिखित परिभाषा की —

२- सभा ने बालकों के लिये गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार को स्थापित किया। और उन्हीं नियमों के अनुसार बालिकाओं की शिक्षा के लिए २३ कार्तिक १९८० तदनुसार ८ नवम्बर १९२३ ई० को दीपावली के दिन दिल्ली में कन्यागुरुकुल महाविद्यालय की स्थापना हुई। सुप्रसिद्ध आर्यसमाजी विद्वान नेता श्री स्व० आचार्य रामदेव जी, जिनका गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान है, इस संस्था के आदि संस्थापक थे। प्रथम आचार्या विद्यावती जी सेठ थीं। कन्यागुरुकुल तीन साल के लगभग दिल्ली में रहकर १-५-१९२७ को देहरादून आ गया, और तब से यहीं पुष्पित पल्वित हो रहा है।

३- प्राचीन ऋषि मुनियों द्वारा प्रतिपादित आदर्शों के अनुरूप अलग-२ जाति वंश संप्रदाय व धर्म की छात्राओं को बिना किसी भेदभाव गुरुकुल आश्रम व्यवस्था में रखकर दीक्षित करके आर्य समाज के मंतव्यों के अनुसार वेद–वेदांग संस्कृत-साहित्य प्राचीन भारतीय संस्कृति के साथ-साथ अर्वाचीन ज्ञान विज्ञान में शिक्षित करने और इस प्रकार देश, व मानव जाती की सेवा के लिए बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न आदर्श नारियां तैयार करने के उद्देश्य से इस संस्था की स्थापना की गई थी। कन्यागुरुकुल महाविद्यालय

उत्तरोत्तर बढ़ता हुआ आज एक विशाल वट वृक्ष की भान्ति पुष्पित एवं पल्वित हो रहा है। और गुरुकुल विश्वविद्यालय के अगभूत महाविद्यालय के रुप में राष्ट्रीय ख्याति अर्जित कर रहा है। इस संस्था की गरिमा का सबसे बड़ा प्रभाव इसी से मिलता है कि यहां न केवल भारत के कोने कोने से बल्कि विदेशों से भी छात्रायें आकर शिक्षा ग्रहण करती हैं। अत्यन्तहर्ष का विषय है कि इस संस्था में कुछ मुसलमान छात्रायें भी शिक्षा ग्रहण कर रही है।

परीक्षा परिणाम्

पिछले वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी परीक्षा परिणाम उत्तम ही रहा। नवम् कक्षा से १४ कक्षा तक लगभग ६१ छात्रायें गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय की परीक्षा में बैठीं। परीक्षा परिणाम् लगभग ६६ प्रतिशत रहा।

श्री० स्व० आचार्य रामदेव पुस्तकालय तथा वाचनालय

पुस्तकालय में इस वर्ष पुस्तकों की संख्या चौदह-हजार रही। छात्राओं तथा शिक्षिकाओं ने लगभग छः हजार पुस्तकों द्वारा लाभ उठाया।

ज्योति-समिति

इस वर्ष ज्योति समिति का कार्यक्रम अत्यन्त उत्साह पूर्वक मनाया गया। कन्याओं ने विभिन्न प्रकार ज्ञानवर्द्धक एवं मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। संस्कृत, अंग्रेजी, एवं हिन्दी में वाद-विवाद प्रतियोगिताय नाटक, एवं टेब्लो संगीत के कार्यक्रम अत्यन्त प्रशंसनीय रहे। प्रति-योगिताओं का परिणाम् निम्नलिखित रहा—

अल्का एवं शैफालिका भवनों ने प्रथम् प्राप्त किया।

शुभ्रा एवं राका भवनों ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

श्री आचार्य रामदेव चिकित्सालय

श्री आचार्य रामदेव चिकित्सालय आश्रम के समीप ४८,००० रु० की लागत से कन्याओं की चिकित्सा के लिये एक चिकित्सालय बना हुआ है। जिसमें २० शैयाओं के योग्यएक बड़ा तथा दो छोटे रोगी गृह बने हुए हैं। साथ में लेडी डाक्टर का कमरा औषधालय, ड्रैसिंग रूम, औषधभण्डार, कम्पाउडर तथा नर्स के रहने के कमरे, रसोई स्नानगृह फलश शौचालय आदि बने हुए हैं। चिकित्सालय के दोनों ओर सुन्दर हरी घास के मैदान हैं। यह चिकित्सालय उप-मेडिकल एडवाइज़र तथा एक लेडी डाक्टर की अध्यक्षता में चल रहा है। इन के साथ दो योजिकाये कम्पाउण्डर परिचारिका (नर्स) तथा सेविका कार्य करती हैं। इस वर्ष चिकित्सालय में २८ हजार रोगियों की चिकित्सा की गई। इस वर्ष चिकित्सालय पर लगभग २५ हज़ार रुपया व्यय हुआ, एवं उत्तर प्रदेश सरकार की ओर से १५००) आवर्तक अनुदान प्राप्त हुआ।

विभिन्न सांस्कृतिक प्रतियोगितायें

१ "पल्लव सगीत" समिति की ओर से आयोजित सांकेतिक गान प्रतियोगिता में कन्यागुरुकुल महाविद्यालय देहरादून की छात्राओं ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

२- जिला चित्रकला प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। जिला बुद्धिज्ञान प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

३- जिला स्तर पर आयोजित कविता प्रतियोगिता में यहां की छात्राओं ने प्रथम् स्थान प्राप्त करके शील्ड प्राप्त की।

४- वाद विवाद प्रतियोगिता में भी यहां की छात्राओं ने प्रथम् स्थान

प्राप्त करके चल वैजयन्ती प्राप्त की।

५- विज्ञान गृहविज्ञान एवं व्यर्थ पदार्थों से निर्मित वस्तुओं की प्रतियोगिता में मण्डलीय रैली में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

६- जिला स्तर पर आयोजित पुष्प सज्जा एवं अल्पना प्रतियोगिता में भाग लिया तथा द्वितीय स्थान प्राप्त किया ।

७- जिला रैली में सांस्कृतिक कार्य क्रम में लोकगीत में द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

८- गढवाल मण्डल की मण्डलीय रैली में वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम् स्थान प्राप्त किया। तथा चल विजयोपहार प्राप्त किया। कु० शशीवाल ने प्रथम् स्थान प्राप्त किया।

९- मण्डलीय रैली की पुष्प सज्जा में कु० रिवेका ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। जिला खेल कूद प्रतियोगिता में खो-खो एवं कब्बडी जिले में प्रथम् स्थान प्राप्त करके यू० पी० स्टेट एवं राष्ट्रीय स्तर पर भी विजय प्राप्त की।

१०- शोलापुर महाराष्ट्र में हमारी छात्राओं ने यू० पी० स्टेट का प्रतिनिधित्व किया।

११- देहरादून में ही आयोजित सम्पूर्ण गढ़वाल मण्डल की मण्डलीय रैली में कन्यागुरुकुल की छात्राओं ने खेल कूद प्रतियोगिताओं में बहुमुखी विजय प्राप्त करके देहरादून जन पद तथा गढवाल मण्डल की चैम्पियनशिप् प्राप्त की । कु० नायबकौर इस वर्ष की सर्व श्रेष्ठ छात्रा घोषित हुई।

१२- कन्यागुरुकुल देहरादून का ६० वा स्थापना दिवस अत्यन्त समारोह पूर्वक मनाया गया। छात्राओं ने कुल भूमि के सम्पूर्ण परिसर को

पुष्प सज्जा एवं अन्य विभिन्न विधाओं से अलंकृत किया। प्रातः काल सम्पूर्ण छात्राओं एवं कुलवासियों ने मिलकर यज्ञ किया। तत् पश्चात् श्री आचार्या जी की अध्यक्षता में एक सभा का आयोजन किया। जिसमें छात्राओं ने अनेक प्रकार के शिक्षा प्रद एवं मनोरजक सांस्कृतिक कार्य क्रम प्रस्तुत किये। कुलमाता को अपनी श्रद्धांजली अत्यन्त आकर्षक ढंग से प्रस्तुत की। सभा के पश्चात् एक प्रीति भोज का आयोजन किया गया। जिसमें समस्त कुलवासियों ने सहभोज किया।

१३- आर्य समाज देहरादून में आयोजित भजन एवं सामुहिक गान प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

मण्डलीय खेल-कूद प्रतियोगिता

इस वर्ष जिला एवं मण्डलीय खेल-कूद प्रतियोगिता में यहां की छात्राओं ने नाना प्रकार के पुरस्कार जीत कर राष्ट्रीय छात्रावृति प्राप्त की। निम्नलिखित छात्राओं को ६००) की छात्रावृति प्राप्त हुई। कु० रेणु ६००), कु० नायबकौर ६००), कु० राजेश्वरी ६००), कु० जसवीर ६००) कु० हरदीप ६००/ तथा कु० जगमीत ६००)।

राष्ट्रीय सेवा योजना शिविर

१४- इस वर्ष में एक विशेष कार्य-क्रम भी हुआ, कन्यागुरुकुल की छात्राओं द्वारा राष्ट्रीय सेवा योजना का एक शिविर तपोवन में २४ जनवरी से २ फरवरी तक लगाया गया। इस दस दिवसीय शिविर का उद्घाटन तपोवन के पुनीत प्रांगण में हुआ। उद्घाटन देहरादून के डी० एस० पी० महोदय कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। छात्राओं ने ग्रामीण क्षेत्रों में श्रमदान द्वारा सड़क बनाने का कार्य किया। ग्रामों में साक्षरता अभियान चलाया। तथा

ग्रामीरण महिलाओं को सफाई, कढ़ाई, बुनाई, एवं पढ़ाई का कार्य सिखाया।

१५- २ फरवरी को तपोवन के ही प्रांगरण में उक्त शिविर का समापन समारोह सम्पन्न हुआ। श्री कुल पति जी किसी कारणवश नही आ सके। अतः श्री रामप्रसाद जी वेदालंकार उप कुलपति द्वारा इस समारोह का समापन घोषित किया गया। छात्राओ ने विधिवत् मुख्य अतिथि का स्वागत एवं अन्य कार्य क्रम प्रस्तुत किये।

दमयन्ती कपूर
आचार्या
कन्यागुरुकुल महाविद्यालय
देहरादून।

— 0 —

वैदिक पाथ जरनल आफ वैदिक इंडोलोजिकल एंड साइन्टिफिक रिसर्च

गुरुकुल कांगड़ी की १९०६ से १९३५ तक चली वैदिक एव भारतीय सांस्कृतिक शोध एवं प्रकाशन की परम्परा "वैदिक मैगजीन" को फिर से जीवत करने के लिये १९७६ में "वैदिक पाथ" के नाम से अंग्रेजी में त्रैमासिक जरनल का प्रकाशन प्रारम्भ किया गया। इसका ध्येय अंग्रेजी का माध्यम अपनाने वाले भारतीयों तथा विदेशियों को वैदिक शोध एव भारतीय संस्कृति के उच्च एवं सत्य सिद्धान्तों से अवगत कराना है।

गेस्ट ऐडीटर डा० सत्यकेतु विद्यालंकार तथा ऐडीटर डा० हरगोपाल सिंह के सम्पादन में यह शोध पत्रिका देश विदेशों में जनप्रिय होने की उत्तरोत्तर ख्याति प्राप्त कर रही है। इतना ही नहीं इसमें छपी सामग्री को अन्य पत्र-पत्रिकायें अपने प्रकाशनों में ऐडीटर की पूर्व स्वीकृत से प्रायः पुनरुत्पादित करती हैं।

इस सत्र में चारों त्रैमासिक अंक ठीक समय पर पूर्ण सजधज से प्रकाशित हुए, जिनमें अन्य सामग्री के साथ ४० शोध पत्र तथा १८ पुस्तक समीक्षायें छपीं। ग्राहक संख्या भी बढ़ी। प्रशंसा पत्र भी अधिक आये।

योग्य शोध पत्रों के लेखकों को उचित परिश्रमिक देने का प्रावधान १९८२-८३ के बजट में किया गया।

छापे खाने की कठिनाइयों को दूर करने के लिए जरनल के छपने का प्रबन्ध चंडीगढ़ की गोपाला प्रेस में किया गया । जहां से प्रकाशन कार्य समय पर और सुचारु रूप से हुआ ।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के वैदिक सन्देश को देश विदेशों के सरकारी कार्यालयों, विश्वविद्यालयों, उच्च वैज्ञानिक एवं साहित्य शोध संस्थानों तथा सामान्य जनता तक पहुंचाने में वैदिक पाथ की भूमिका सराहनीय रही ।

डा० हरगोपाल सिह
ऐडीटर,
(एम० ऐ० -मनो० एवं० दर्शन, पी० एच-डी०)

—0—

विद्यालय विभाग एवं गुरुकुल परिसर

१- स्टाफ की स्थिति– किसी भी संस्था का सुचारू रूप से चलाने के लिए स्टाफ एवं छात्रों की उचित संख्या होना अनिवार्य है। इस वर्ष सत्रारम्भ से मुख्याध्यापक सहित १४ अध्यापक, एक लिपिक, चार अधिष्ठाता, दो भृत्य एवं एक माली कार्यरत थे। अध्यापकों में से ही श्री ईश्वर भारद्वाज ने आश्रमाध्यक्ष एवं श्री मदन पाल ने कम्पाउडर कार्य- भार सम्भाला हुआ है। अंशकालीन चिकित्सक के रूप में श्री डा० आर-एस-सिंह भी कार्यरत रहे।

२- विद्यार्थियो की स्थिति-जुलाई से प्रारम्भ होने वाले इस सत्र में आश्रम पद्धति से शिक्षण ग्रहण करने वाले छात्रों की संख्या २२५ तथा गुरुकुल कैम्पस के ३२ छात्र अध्ययनरत थे। इस प्रकार कुल २५७ छात्रों ने शिक्षा ग्रहण की। संख्या की दृष्टि से अभी भी न्यूनता है।

३- प्रगति एवं उपलब्धि—

(क) शैक्षणिक–संशोधित पाठ्यक्रम के अनुसार छात्रों के लिए सत्रारम्भ में ही पाठ्य पुस्तकों एवं अन्य पाठ्य सामग्री की समुचित व्यवस्था की गई विषयानुक्रम से निरन्तर एवं नियमित रुप से सभी श्रेणियों में सुव्यवस्थित शिक्षा जारी रही तथा छात्रों के आत्मपरीक्षण एवं परीक्षोचित योग्यता के जांच के लिए समय-समय पर परीक्षण चलता रहा। दिनांक १२ जनवरी से २१ जनवरी तक अर्थ वार्षिक परीक्षायें हुई। वार्षिक परीक्षा प्रथम से अष्टम तक १८ अप्रैल से ३० अप्रैल तक तथा विद्याधिकारी परोक्षायें २५ अप्रैल से ६ मई तक सम्पन्न हुई।

(ख) क्रीड़ा :—शैक्षणिक व बौद्धिक विकासों के साथ ही शारीरिक

विकास भी शिक्षा में महत्वपूर्ण स्थान है। इस दृष्टि से श्री रणजीत सिंह पी-टी-आई- एवं श्री नन्दकिशोर जी क्रीडा प्रशिक्षक के प्रयासों से ब्रह्मचारियों ने समय-समय पर होनेवाली विभिन्न क्रीड़ा प्रतियोगिताओं में भाग लिया। २३,२४,२५ अगस्त को आयोजित क्षेत्रीय, जिला व मण्डली तैराकी प्रतियोगिताओं में ब्र० भूपेन्द्र सिंह ने प्रथम तथा ब्र० सहवीरसिंह ने द्वितीय तथा ब्र० भीमसिंह व अनिल कुमार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। २१,२२ अक्टूबर को आयोजित जिला व मण्डलीस्तर की जिमनाष्टिक प्रतियोगिताएं विद्यालल के जिमनाष्टिक भवन में सम्पन्न हुई। जिसमें ब्र० जय प्रकाश पंचम ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। क्षेत्रीय क्रिकेट टीम के चयन हेतु आयोजित प्रतियोगिता में ब्र० भूपेन्द्रसिंह व ब्र० भीमसिंह का प्रदर्शन सराहनीय रहा। और उनको क्षेत्रीय क्रिकेट टीम के लिए चुना गया।

१५ अगस्त गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर व विद्यालय के ब्रह्मचारियों के मध्य एक फुटबाल मैच का आयोजन किया गया जिसमें दोनों टीमें १-१ गोल से बराबर रही।

आश्रमाध्यक्ष श्री ईश्वर भारद्वाज अर्पणा आश्रम मानतलाई (जम्मू काश्मीर) से योगाभ्यास का त्रैमासिक प्रशिक्षण प्राप्त कर के आये। उनकी अनुपस्थिति में श्री रणजीतसिंह ने आश्रमाध्यक्ष का व डा० त्रिलोक चन्द्र योगाभ्यास का कार्य सुचारु रूप से चलाया।

इस वर्ष गत वर्ष की अपेक्षा श्री ईश्वर भारद्वाज ने योगाभ्यास का कार्यक्रम अधिक उत्साह के साथ चलाया जिसके अन्तर्गत ब्रह्मचारियों को सूत्रनेति, जलनेति, दुग्धनेति, घृतनेति कुजल, शंखप्रक्षालन, बाघी नौली, त्राटक, धौति आदि षटकर्मों तथा आसन के प्राणायामों का प्रशिक्षण दिया गया। वार्षिकोत्सव पर ब्रह्मचारियों का योगाभ्यास का प्रदर्शन सराहनीय रहा है।

(ग) प्रकाशन :—प्रकाशन के क्षेत्र में त्रैमासिक पत्रिका ध्रुव के लोक-

मान्यतिलक अंक और सरदार पटेल अंक प्रकाशित किये-गये। सुभाष अंक की सामग्री तैयार होते हुए भी अर्थाभाव के कारण प्रकाशित नहीं हो सका। ध्रुव के सह सम्पादक श्री महावीर 'नीर' जिस तत्परता से पत्रिका का सम्पादन करते हैं। वे विशेष बधाई के पात्र हैं।

गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्री चन्द्रशेखर त्रिवेदी ने ब्र० को १०० वेद मंत्र कण्ठस्थ कराये जिन्हें आचार्य श्री रामप्रसाद वेदालंकार ने संघड विद्या सभा ट्रस्ट के द्वारा एक सहस्र रु० के अनुदान से श्रद्धा साहित्य प्रकाशन की ओर से गोवर्धन ज्योति' द्वितीय रश्मि के रूप में प्रकाशित करवाया। श्री ईश्वर भारद्वाज आश्रमाध्यक्ष ने पुस्तिका का सम्पादन किया।

(घ) सांस्कृतिक कार्यक्रम—विद्यालय ब्रह्मचारियों को सांस्कृतिक प्रोग्रामों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। स्वतन्त्रता दिवस के शुभ बेला पर मान्य कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी के करकमलों द्वारा ध्वजारोहण हुआ। इस वर्ष इस अवसर पर एक्शन सौंग, कविता पाठ, गीत, योगाभ्यास इत्यादि प्रस्तुत किये गये। पाच सितम्बर को शिक्षक दिवस पर सभा की गई, जिसमें ब्रह्मचारियों के द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। दो अक्टूबर को गान्धीजयन्ती के समारोह में ब्रह्मचारियों ने गान्धी जी के जीवन पर प्रकाश डाला।

२६ अक्टूबर को मैक्सिको विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के प्रोफेसर, दि मोरा सपत्नीक यज्ञ व योगाभ्यास कार्यक्रम में उपस्थित हुए और ब्रह्मचारियों के कार्यक्रम देखकर अत्यन्त प्रभावित हुए।

१६ मार्च को 'गोवर्धन शास्त्री स्मृति' मन्त्रोचारण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें विद्यालय के ब्र० हरिशंकर ने प्रथम व कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणी कुलदीप ने द्वितीय चलविजयोपहार प्राप्त किया। इस अवसर पर 'गोवर्धन ज्योति' द्वितीय रश्मि का विमोचन श्री योगेन्द्रपाल शास्त्री द्वारा किया गया।

(ड) धर्मशिक्षा व नैतिक उत्थान —प्रतिदिन प्रातकाल व सायकाल आश्रम यज्ञशाला मे सन्ध्याहवन नियमित रूप से होता रहा है। समय समय पर ब्रह्मचारियो के ज्ञान सम्वर्धन हेतु विशेष परि-चर्चायें भी होती रही है।

गत वर्ष की भान्ति सत्यार्थ भूषण की परीक्षाये आश्रमाध्यक्ष श्री ईश्वर भारद्वाज व पी-टी-आई श्री रणजीतसिंह के सद्प्रयत्नो से सम्पन्न हुई। इनमे पाच ब्र० जैन ने विशेष पुरुस्कार प्राप्त किया।

अमृत वाटिका मे बनी वृहद यज्ञशाला मे भी यज्ञ का कायक्रम आरम्भ किया गया, जो सत्रान्त तक चला। इसमे डा० हरिराम जुनेजा का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा।

ब्रह्मचारियो को प्राथना के उपरान्त किसी एक अध्यापक महानु-भाव द्वारा पाच मिनट तक नैतिक शिक्षा दी जाती रही। इससे ब्र० को विशेष लाभ हुआ।

(च) अनुशासन एव भोजन व्यवस्था —अनुशासन की दृष्टि से आश्रमा-ध्यक्ष श्री ईश्वर भारद्वाज पूर्ण निष्ठा से कर्तव्यरत है। दिनचर्या के अनुरूप प्रत्येक कार्य समय पर करने व पारिवाकि वातावरण बनाने का सफलतापूर्वक प्रयत्न किया गया है। विभिन्न प्रदेशीय व भाषा भाषी होने पर भी ब्रह्मचारियो का परस्पर प्रेम दर्शनीय है। इस कार्य मे स्वामी स्वात्मानन्द, डा० हरेराम जुनेजा अधिष्ठाता समुदाय का योगदान नही भुलाया जा सकता है।

भोजन व्यवस्था इस वर्ष सुचारू रूप से चलता रही है। ब्रह्मचा-रियो को किसी प्रकार की कठिनाईयो का सामना नही करना पडा। सहायक मुख्याधिष्ठाता श्री कैप्टन देशराज शर्मा ने समय समय पर स्वय भोजनालय मे जाकर जाच की और कमी को दूर किया।

(छ) सफाई व्यवस्था —ब्रह्मचारियो ने इस वर्ष सफाई के क्षेत्र मे नवीन

उपलब्धि की है। विद्यालय व विश्वविद्यालय प्रांगण में की गई सफाई इसका प्रमाण है। ब्रह्मचारी अपने चारों सदनों में विभाजित होकर अपने अपने क्षेत्र की सफाई नियमित रूप से करते रहे हैं।

(ज) वृक्षारोपण :—इस वर्ष विद्यालय प्रांगण एवं आश्रम तथा विद्यालय भण्डार के चारों तरफ वृक्ष लगाये गये। इस कार्यक्रम में विद्यालय विभाग के चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों का विशेष योगदान रहा।

(झ) स्वाध्याय :—इस क्षेत्र में डा० जुनेजा जी के सतपरामर्श से आश्रमाध्यक्ष जी द्वारा एक विशेष उपलब्धि की गई। ब्रह्मचारियों को निरीक्षित स्वाध्याय कराया गया। आश्रम में भी विद्यालय की भान्ति अन्तर लगाकर विषयानुक्रम से अधिष्ठाताओं के निरीक्षण में अध्ययन करने की परम्परा डाली गई। जिसके कारण ब्रह्मचारियों का अधिक समय स्वाध्याय में लगता था।

(ञ) अन्य गतिविधियां :—

(१) विद्यालय में विज्ञान की प्रयोगशाला हेतु उपकरण मंगाये गये जिससे ब्रह्मचारियों को व्यवहारिक ज्ञान प्रदान करने में कठिनाई न हो।

(२) भण्डार एवं स्नानागार में पानी की समुचित व्यवस्था की गई तथा समय-समय पर भण्डार व स्नानागार में नई टोटियां आदि लगाई गई।

(३) विद्यालय पुस्तकालय में इस वर्ष पुस्तकों एवं पत्रिकाओं की विशेष व्यवस्था की गई।

डा० दीनानाथ
प्रधानाध्यापक,
विद्यालय, गुरुकुल कांगड़ी

— 0 —

गुरुकुल परिसर

इस वर्ष भी पूर्व वर्ष की भान्ति गुरुकुल परिसर में चारों ओर सफाई करायी गई। श्रमन चौंक से श्रद्धानन्दद्वार तक तथा श्रमन चौंक से विश्वविद्यालय भवन तक सफाई पर विशेष ध्यान दिया गया।

ओउम् परिवार में खुले मैदान में छायादार वृक्ष लगाये गये तथा विश्वविद्यालय भवन से बुद्धपरिवार तक सड़क के दोनों ओर नये छायादार वृक्ष लगाकर उनकी रक्षा के लिए गमले बनवाकर उनको सुरक्षित किया गया। प्रकाश व्यवस्था पर इस वर्ष विशेष ध्यान दिया गया। सम्पूर्ण परिसर में नई ट्यूब लाईटें लगवाकर प्रकाश की व्यवस्था की गई।

विद्यालय

इस वर्ष योग्य अध्यापकों के मिलने से प्रत्येक विषय की पढ़ाई सुचारु रूप से चली। ब्रह्मचारियों की संख्या में वृद्धि हुई। किन्तु संख्या की दृष्टि से अब भी न्यूनता है।

क्रीड़ा

इस वर्ष ब्रह्मचारियों की क्रीड़ा सम्बन्धी सभी सुविधायें उपलब्ध कराई गई। ब्रह्मचारियों के लिए हाकी, फुटबाल, वालीवाल आदि जालन्धर से मंगाई गई। विभिन्न जिलास्तरीय, मण्डलीय आयोजित क्रीड़ाओं की प्रतियोगिताओं में ब्रह्मचारियों ने भाग लिया और अच्छा प्रदर्शन किया।

दिनांक २३, २४, २५ अगस्त को आयोजित क्षेत्रीय व जिला तथा

मण्डलीय तैराकी प्रतियोगिताओ मे ब्रह्मचारी भूपेन्द्र दशम ने प्रथम तथा सहवीर दशम ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

२३ दिसम्बर से ३० दिसम्बर तक

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान सप्ताह पर अनेक कार्यक्रमो का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम २३ दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस पर श्रद्धानन्द द्वार से शोभा यात्रा निकाली गई। विद्यालय बैण्ड के साथ गीत गायन करते हुए जलूस विश्वविद्यालय कार्यालय के प्रागरग मे पहुचा। जहां कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी ने ध्वजा रोहरग किया तत्पश्चात् जलूस वेदमन्दिर जाकर सभा मे परिरगत हुआ। कुलाधिपति जी की अध्यक्षता मे विभिन्न विद्वानो द्वारा स्वामी जी को श्रद्धाजलि अर्पित की गई।

इस सप्ताह का विशेष आकर्षरग तथा रोचक कार्यक्रम श्रद्धानन्द हाकी टूर्नामेन्ट था। त्रिदिवसीय हाकी टूर्नामेन्ट का उद्घाटन श्री राम मूर्ति केला जी द्वारा किया गया। इस टूर्नामेन्ट मे लगभग १४–१५ टीमों ने भाग लिया। और प्रथम स्थान गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की टीम ने प्राप्त किया। तथा द्वितीय स्थान बी-एच-ई-एल रानीपुर की टीम ने पाया। इस सारे आयोजन के लिए श्री दीनानाथ मुख्याध्यापक बधाई के पात्र हैं।

कांगड़ी ग्राम विकास योजना

पुराने गुरुकुल के समीप स्थित कांगडी ग्राम विकास योजना हेतु विभिन्न सस्थाओ और व्यक्तियो ने अपना योगदान दिया। जिससे कागडी ग्राम मे पक्की ईटो की सडक निर्माण हुई। इसमे आर्य वानप्रस्थ आश्रम तथा विश्वविद्यालय एव गुरुकुल के कर्मचारियो का विशेष योगदान रहा।

वार्षिकोत्सव पर विविध गतिविधियां

गत वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी वार्षिकोत्सव बडी धूमधाम से १० १५ अप्रैल तक सम्पन्न हुआ। दस अप्रैल से १४ अप्रैल तक सामवेद

परायण यज्ञ किया गया जिसके ब्रह्मा आचार्य रामप्रसाद जी वेदालकार, रहे।

१३ अप्रैल को गुरुकुल के नवप्रविष्ट ब्रह्मचारियो का वेदारम्भ सस्कार किया गया जिसमे आचार्य रामप्रसाद जी ने आचार्य एव शिष्य की व्याख्या की। सायकाल २-३० बजे वेद सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमे मुख्य अतिथि थे उ० प्र० सरकार के मन्त्री डा० वासुदेव सिह तथा उद्घाटन किया डा० सुधीर गुप्ता ने। अनेक अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे। इसी अवसर पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने आश्रमाध्यक्ष जी के नेतृत्व मे वेदमन्त्रो का मधुर कण्ठ से पाठ किया। जिसकी सभी ने प्रशसा की।

१४ अप्रैल को यज्ञ की पूर्णाहुति हुई तथा अनेक विद्वानो के व्याख्यान हुए।

१५ अप्रैल को विश्वविद्यालय का दीक्षात समारोह प्रात: १०.०० एजे से १२ ३६ बजे तक सम्पन्न हुआ। दीक्षात भाषण हेतु भारत के राष्ट्रपति महामहिम ज्ञानी जैलसिह जी पधारे।

रात्रि ७ ०० बजे से व्यायाम सम्मेलन गुरुकुल के ब्रह्मचारियो द्वारा किया गया जिसका सयोजन डा० दीनानाथ शर्मा मुख्याध्यापक ने किया। ब्रह्मचारियो ने विभिन्न प्रकार के शारीरिक प्रदर्शन किये। सर्व प्रथम ब्रह्मचारियो ने योगाभ्यास का कार्य क्रम प्रस्तुत किया तथा स्तूप निर्माण, लेजिग, पी-टी- आदि कार्यक्रम प्रस्तुत किये। ब्रह्मचारियो ने क्रम तोड़कर जोडने का प्रदर्शन किया तथा अनेक शारीरिक व्यायाम भी दिखाए।

वेदध्वनि एवं समाचार प्रसारण

इस वर्ष के प्रारम्भ से गत वर्ष की भान्ति विद्यालय आश्रम से ब्रह्मचारियों द्वारा अपना एक प्रसार केन्द्र स्थापित किया हुआ है। जहा से प्रात ४-३० बजे व साय ६-३० बजे वेद मन्त्रो/भजनो का प्रसारण

किया जाता है। रात्रि ८-०० बजे दैनिक समाचार प्रसारित किये जाते हैं। इससे ब्रह्मचारियों को देश विदेश की गतिविधियों का पता चलता है। ये समाचार हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी में प्रसारित किये जाते हैं। इससे ब्रह्मचारियों की तीनों भाषाओं की पुष्टि होती है।

गौशाला

गौशाला में इस बार दूध की मात्रा में पर्याप्त सुधार हुआ। पशुओं की देखरेख पर विशेष ध्यान दिया गया। पशुओं को समय पर चारा, दाना आदि की पूरी व्यवस्था की गई।

गोबर गैस प्लान्ट

इस वर्ष की विशेष उपलब्धि गोबर गैस प्लान्ट है। भण्डार की सुव्यवस्था हेतु भण्डार के पीछे दो गोबर गैसे प्लान्टो का निर्माण किया गया है। इससे गुरुकुल को आर्थिक लाभ होगा। लकडी आदि के लिए अब धन कम खर्च करना पडेगा और भोजन आदि शीघ्र तैयार हो जायेगा।

कृषि फार्म

इस वर्ष कृषि फार्म पर विशेष ध्यान दिया गया। भूमि जो गत कई वर्षों से बंजर पडी थी उसको खेती योग्य बनाया गया। और इस बार गेहूँ १७२ क्वन्टल के लगभग हुआ। धनाभाव के कारण खाद की समुचित व्यवस्था न हो सकी। फिर भी गेहूँ धान आदि की पर्याप्त उपज हुई। इसके अतिरिक्त हरा चारा जैसे बरसीम, चरी आदि की उपज से भी अपनी गौशाला की आवश्यकता पूर्ति करने के उपरान्त शेष चारा बेचकर गुरुकुल को आर्थिक लाभ पहुंचाया गया।

डा० दीनानाथ
प्रधानाध्यापक,
विद्यालय गुरुकुल कांगड़ी

— 0 —

पुस्तकालय विभाग

परिचय : गुरुकुल पुस्तकालय का इतिहास भी गुरुकुल की स्थापना के साथ ही प्रारम्भ होता है। निरन्तर ८० वर्षों से घोषित यह पुस्तकालय आज वेद, वेदाग आर्य साहित्य तुलनात्मक धर्म सग्रह एवं मानवीय ज्ञान की विविध शाखाओ पर प्रकाश डालने वाले एक लाख से अधिक ग्रन्थो से अलकृत है। सहस्त्रो दुर्लभ ग्रन्थों एवं अनेकों अप्राप्य पत्रिकाओं से सरोबार यह पुस्तकालय अनेकों भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्य भण्डार को अपने गर्भ में समाहित किये हुए आर्य संस्कृति की धरोहर रूप में विद्या व्यसनियो का उपासना केन्द्र बना हुआ है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल की स्थापना जिन उच्च आदर्शों एवं वैदिक मूल्यों की रक्षा हेतु की थी, उन्ही भावनाओ से अनुप्राणित होकर बहुत से महानुभावों ने पुस्तकों के अपने निजी संग्रह गुरुकुल पुस्तकालय को प्रदान किये। स्वामी श्रद्धानन्द जी के सुपुत्र स्व० प० इन्द्र जी ने अपने जीवन पर्यन्त संग्रहित सम्पूर्ण साहित्य गुरुकुल पुस्तकालय को अर्पित कर दिया।

वांछित पाठ्य सामग्री की खोज : १- पुस्तकालय के सम्पूर्ण संग्रह की जानकारी देने हेतु पाठकों के उपयोग हेतु विषयानुसार रजिस्टर उपलब्ध है, जिसमें सभी पुस्तकों की सूची विषय के अनुसार अंकित है। अधिकांश पाठक इन विषय गत रजिस्टरों के आधार पर पुस्तकालय में उपलब्ध वांछित सामग्री की जानकारी प्राप्त कर लेते हैं।

२- यदि किसी पाठक को वांछित पुस्तक को केवल लेखक या शीर्षक या विषय आदि में किसी की भी जानकारी है तो वह उसके आधार पर पुस्तक सूची कार्डों से (सब्जेक्ट केटेलाग) अकारादि अनुक्रमणिका के आधार पर वांछित पुस्तक की उपलब्धता की जानकारी प्राप्त कर सकता है।

३- इसी क्रम मे पुस्तको की विषयगत सूचिया——————भी पुस्तकालय मे विद्यमान हैं जिसके आधार पर पाठक किसी भी विषय की पुस्तकालय मे उपलब्ध सम्पूर्ण ग्रन्थो की जानकारी पुस्तकालय से कर सकता है।

४- भारतीय विश्वविद्यालयो के द्वारा १८५७-१९८१ तक जिन विषयो मे शोध कार्य हुआ उसकी जानकारी लेने हेतु जिज्ञासु पाठको को पुस्तकालय मे हाल ही मे मंगवाये जाने वाले भारतीय विश्वविद्यालयो के परिसंघ (ए०आई०यू०) के द्वारा प्रकाशित शोध सदर्भ ग्रन्थो के विभिन्न खण्डो को देखना चाहिए। इन सदर्भ ग्रन्थो के द्वारा शोधार्थियो को यह जानकारी हो सकती है। कि किस विषय मे कितना शोध कार्य भारतीय विश्वविद्यालयो द्वारा किया जा रहा है।

५- पुस्तकालय की सभी अलमीराओ मे उपलब्ध पुस्तको के जानकारी देने हेतु उन स्थानो पर रखे गये गाईड बाक्स की सहायता से भी पुस्तको के विषय की जानकारी हो सकती है।

६- पाठको को अपनी वाछित सामग्री खोजने मे किसी भी कठिनाई को दूर करने मे सहयोग देने हेतु पूछताछ कक्ष की स्थापना की गई है। पाठको को चाहिए कि किसी भी प्रकार की कठिनाई को दूर करने हेतु पुस्तकालय से अविलम्ब सम्पर्क करे।

पुस्तकालय की गतिविधियां : इस विपुल पुस्तकालय का लाभ केवल यहा के छात्र प्राध्यापक वर्ग ही नही उठा रहे बल्कि हरिद्वार क्षेत्र मे रहने वाले सभी बुद्धिजीवी विद्या उपासक सरस्वती के इस पुस्तक मदिर का लाभ उठाते हैं। देश के अन्य विश्वविद्यालय मे शोध कर रहे अनेको छात्र भारतीय सस्कृति एव ऋषि दयानन्द के तत्व दर्शन के अध्ययन हेतु इस पुस्तकालय का उपयोग उठाने सतत आते रहते हैं। वर्ष १९८२-८३ मे लगभग २० हजार पाठको ने इस पुस्तकालय की प्रचुर सामग्री का उपयोग किया है।

पुस्तकालय के विभिन्न संग्रह पुस्तकालय का विराट

संग्रह अपनी विविध विशिष्टताओं के लिए निम्न प्रकार से विभाजित किया हुआ हैं।

१- संदर्भ संग्रह २- पत्रिका संग्रह ३- आर्य साहित्य संग्रह ४- आयुर्वेद संग्रह ५- विभिन्न विषयों की हिन्दी पुस्तक संग्रह ६- विज्ञान संग्रह ७- अंग्रेजी साहित्य संग्रह ८- पं० इन्द्र जी संग्रह ९- दुर्लभ पुस्तक संग्रह १०- पांडुलिपी संग्रह ११- गुरुकुल प्रकाशन संग्रह १२- प्रतियोगात्मक पुस्तक संग्रह १३- शोध प्रबन्ध संग्रह १४- रूसी साहित्य संग्रह १५- आरक्षित पुस्तक संग्रह १६- उर्दू संग्रह १७- मराठी सग्रह १८- गुजराती साहित्य संग्रह

पुस्तकालय में उपर्युक्त पुस्तकों के विशिष्ट संग्रह के अतिरिक्त इस समय इस पुस्तकालय मे ज्ञान विज्ञान के विभिन्न विषयों पर २७० पत्रिकाएं एव १२ समाचार पत्र नियमित रूप से आ रहे हैं। पुस्तकालय में आने वाले सभी नवीन प्रकाशनों की जानकारी संबंधित विभागाध्यक्ष को भी पुस्तकालय द्वारा समय समय पर दी जाती है।

शिक्षा के साथ आंशिक रोजगार : विश्वविद्यालय में पढ़ रहे निर्धन छात्रों की सहायतार्थ विश्वविद्यालय पुस्तकालय के द्वारा शिक्षा के साथ आंशिक रोजगार योजना का सर्वथा नवीन कार्य-क्रम वर्ष ८२-८३ से प्रारम्भ किया गया। जिसमें छात्रों को पुस्तकालय में दो घंटे प्रतिदिन कार्य करने के बदले में उन्हें पारिश्रमिक प्रदान किया जाता है जिससे ये अपनी पढ़ाई का व्यय उठाने में स्वावलम्बी बन सकें।

ग्राम्य पुस्तकालय सेवा : विश्वविद्यालय पुस्तकालय के द्वारा ग्रामीण जीवन की बौद्धिक मांग को पूरा करने हेतु मान्यवर कुलपति जी की प्रेरणा से ग्राम्य पुस्तकालय की स्थापना का क्रम प्रारम्भ किया जा रहा है। इस शृंखला में प्रथम ग्राम्य पुस्तकालय की स्थापना कांगड़ी ग्राम में गुरुकुल के पुराने ख्याति प्राप्त अध्यापक श्रद्धेय गोवर्धन

जी शास्त्री की स्मृति में गोवर्धन शास्त्री स्मृति पुस्तकालय की स्थापना की गई। आज इस ग्राम्य पुस्तकालय में १००० से अधिक पुस्तके संग्रहीत हैं। लगभग २५-३० पाठक नित्य इस पुस्तकालय का लाभ उठाते है। पुस्तकालय में दैनिक का समाचार पत्र एव कुछ पत्रिकाए भी नियमित आती है। इस पुस्तकालय का कार्य विश्वविद्यालय पुस्तकालय के कर्मचारी मदनपाल सिह ही अतिरिक्त समय में देखते है। गोवर्धन शास्त्री स्मृति पुस्तकालय को सघड विद्या ट्रस्ट जयपुर के द्वारा ५०० रुपये का वार्षिक अनुदान भी दिया जा रहा है। ट्रस्ट द्वारा दिये जाने वाले इस अनुदान का उपयोग ग्रामवासियों के लिये पत्रिकाएं एवं अन्य ग्राम्य साहित्य क्रय करने हेतु किया जा रहा है।

राष्ट्रीय छात्र सेवा शिविर दिसम्बर ३ में गुरुकुल की प्राचीन पुण्य भूमि गगा पार में विश्वविद्यालय द्वारा लगाया गया। शिविर में भाग लेने वाले सदस्यों के लाभार्थ विश्वविद्यालय पुस्तकालय द्वारा एक लघु पुस्तकालय भी स्थापित किया गया। निकट भविष्य में ग्राम्य रूहालकी में एक ग्राम पुस्तकालय विश्वविद्यालय पुस्तकालय द्वारा स्थापित किया जा रहा है।

प्रतियोगितात्मक परीक्षा सेवा : विश्वविद्यालय के छात्रों को प्रतियोगितात्मक परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करने मे प्रोत्साहन देने हेतु विश्वविद्यालय पुस्तकालय ने हाल ही में प्रतियोगिता पुस्तक सग्रह की स्थापना की है, जिसमें इन परीक्षाओं की तैयारी हेतु छात्रों को पूर्ण साहित्य उपलब्ध हो जाता है। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय प्रतियोगिता परीक्षाओं से सबध १० पत्रिकायें नियमित आ रही है।

प्राचीन पांडुलिपियों एवं दुर्लभ ग्रंथों की सुरक्षा

विश्वविद्यालय पुस्तकालय द्वारा पुस्तकालय में उपलब्ध लगभग २० हजार दुर्लभ पांडुलिपियों एवं ग्रन्थों को विशेष सुरक्षा प्रदान करने हेतु जहां इन ग्रंथों की व्यापक जिल्दबंदी कराई जा रही है, वहां प्राचीन पांडुलिपियों को माइक्रोफिल्म द्वारा सुरक्षित रखने का प्रयास किया जा रहा है। इस विशाल कार्य हेतु हमें नेहरु संग्रहालय एवं पुस्तकालय, नई दिल्ली तथा

भारतीय पुरातत्व संरक्षण देहरादून का सतत सहयोग प्राप्त हो रहा है। इन ग्रंथों के विशेष रख रखाव एवं सूचीकरण करने हेतु दुर्लभ ग्रन्थ संग्रह के नाम से अलग संग्रह हाल ही बनाया गया है। हाल ही में संस्कृति विभाग, शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार ने प्राचीन दुर्लभ ग्रंथों की सुरक्षा हेतु इस पुस्तकालय को ३०,००० का अनुदान स्वीकृत किया है।

भविष्य के कार्यक्रम : १- गुरुकुल पुस्तकालय के वृहत सग्रह को अधिकाधिक बुद्धि जीवियों के सम्मुख लाने हेतु विभिन्न विषयों मे उपलब्ध ग्रन्थो की पुस्तकाकार रूप में सूची बनाने का कार्यक्रम विचाराधीन है। इसी प्रकार पुस्तकालय में उपलब्ध सजिल्द पत्रिकाओं एव दुर्लभ पुस्तकों एव पांडुलिपियों को भी सूचीबद्ध करके प्रकाशित किये जाने का कार्य पुस्तकालय के सामने है।

२- यह बड़े हर्ष का विषय है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधी सभा ने भी १६८३ में मनाये जाने वाले अर्न्तराष्ट्रीय ऋषि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के सम्मुख जो दस सूत्रीय कार्यक्रम प्रस्तुत किया है, उसमें एक कार्यक्रम गुरुकुल पुस्तकालय को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर वैदिक साहित्य शोध पुस्तकालय के रूप में प्रस्तुत किया जाना भी है।

३- गुरुकुल पुस्तकालय के संग्रह को देखते हुए अधिकारिक स्तर पर राष्ट्रीय वैदिक पुस्तकालय के रूप में इसकी छवि का निर्माण किये जाने का प्रयत्न चल रहा है।

४- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने छठी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत इस विश्वविद्यालय पुस्तकालय को ढाई लाख रुपये का अनुदान प्रदान किया है। इस अनुदान से इस पुस्तकालय के विभिन्न संग्रहों को नवीन प्रकाशनों से सज्जित करने में सहायता मिलेगी।

५- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा दिये जा रहे विकास अनुदान के अन्तर्गत इस वर्ष फोटो स्टेट मशीन खरीदने का प्रस्ताव क्रियान्वित किया जा रहा है।

पुस्तकालय कर्मचारी इस विराट् पुस्तकालय की सुव्यवस्था एव उचित प्रबन्ध हेतु इस पुस्तकालय मे १६ कर्मचारी कार्यरत है। दो पद पुस्तकालय सहायक के रिक्त हैं।

पुस्तकालय के कर्मचारी वर्ग का विवरण निम्न प्रकार है।

नाम	पद	योग्यता
१ जगदीश प्रसाद विद्यालकार	पुस्तकालयाध्यक्ष	एम०ए० एम० लाइब्रेरी साइन्स, बी०एड०
२ गुलजारसिह चौहान	सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष	एम ए बी लाइब्रेरी साइन्स
३ उपेन्द्र कुमार झा	पुस्तकालय सहायक	एम ए प्रमाणपत्र (पुस्तकालय विज्ञान)
४ हरभजन	काउन्टर सहायक	——
५. प्रेमचन्द जुयाल	पुस्तकालय लिपिक	बी ए आई जी डी इ जी डी (बाम्बे)
६ जगपालसिंह	,	मैट्रिक
७ रामस्वरूप	,,	इन्टर, प्रमाणपत्र (पुस्तकालय विज्ञान)
८ ललित किशोर	,,	बी ए प्रमाणपत्र (पुस्तकालय विज्ञान)
९ कौस्तुभ चन्द्र पाण्डेय	,,	इन्टर, स्टेनोग्राफी
१० जयप्रकाश	बुक बाइन्डर	मिडिल
११ गोविन्द सिह	बुक लिफ्टर	मिडिल
१२ घनश्याम सिंह	भृत्य	,,
१३ शशीकान्त	भृत्य	इन्टर
१४ बुन्दु	,,	——
१५ मदनपाल सिंह	,,	इन्टर, आई टी आई. (प्रशिक्षित)
१६ बालकिशन शुक्ला	,,	एम ए
१७ शिव कुमार	बुक लिफ्टर	मिडिल

कर्मचारियों को निरन्तर उच्च शिक्षा लेने हेतु प्रोत्साहन दिया जिता है। इस वर्ष जगदीश प्रसाद विद्यालंकार पुस्कालयाध्यक्ष 'अथर्ववेदीय मनोविज्ञान' विषय पर इसी विश्वविद्यालय से शोध कार्य हेतु पंजीकृत किये गये हैं। इस वर्ष पुस्तकालयाध्यक्ष द्वारा आर्य वानप्रस्त आश्रम में वैदिक संस्कृति की विशेषताओं पर तीन व्याख्यान दिये गये। इस के अतिरिक्त आर्य समाज रुडकी एवं आर्यनगर में भी चार व्याख्यान जीवन के प्रति वैदिक दृष्टि कोण पर दिये गये। सितम्बर ८२ में आयोजित वैदिक शिक्षा राष्ट्रीय कार्यशाला के सहायक निर्देशक एवं प्रबन्ध संपादक का कार्य भी पुस्तकालयाध्यक्ष द्वारा किया गया।

पुस्तकालय कर्मचारी कौस्तुभ चन्द्र पाण्डेय एवं मदनपालसिंह द्वारा पुस्तकालय-विज्ञान का प्रमाण पत्र पाठ्यक्रम भी पूरा किया गया। इस प्रकार पुस्तकालय कर्मचारी वर्ग अधिकाधिक पुस्तकालय विज्ञान के पाठ्य क्रमों से प्रशिक्षित होता जा रहा है।

पुस्तकालय के विभिन्न विभाग

१. **पुस्तक क्रय विभाग**-इस वर्ष अप्रैल ८२ से मार्च ८३ तक की अवधि में ७६५ पुस्तके विभिन्न संस्थाओं द्वारा भेंट स्वरूप प्राप्त की गयी इस अवधि में कुल ८७० पुस्तके नयी क्रय की गयी। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा छटी पंच वर्षीय योजना में विकास अनुदान के अन्तर्गत इस पुस्तकालय को ढाइ लाख रुपये का अनुदान प्रदान किया गया। उपर्युक्त राशि का विषय वारविनियोजन निम्न प्रकार किया जाना स्वीकृत हुआ है।

वेद, संस्कृत एवं मानविकी विषयों की पुस्तकों एवं पत्रिकाओं हेतु—
९०,००० रुपये
विज्ञान विषयों हेतु—५०,००० रुपये
कन्या महाविद्यालय देहरादून के लिए पुस्तकों का क्रय—१०,००० रुपये
पुस्तकालय उपकरण एवं मिश्रित व्यय हेतु—५०,००० रुपये

गुरुकुल के दीक्षान्त समारोह पर इस वर्ष पुस्तकालय के द्वारा

गुरुकुल के वेद मंदिर में एक पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया, जिसका उद्घाटन डा० वासुदेवशरण सिंह, मंत्री उत्तर प्रदेश शासन द्वारा किया गया। इस प्रदर्शनी में विभिन्न विषयों की सहस्रों नवीनतम पुस्तकों का प्रदर्शन किया गया। पुस्तकालय के द्वारा विभागाध्यक्षों की संस्तुति के आधार पर विभिन्न विषयों की लगभग २०,००० रुपये की पुस्तकें क्रय की गयी। इस बार दीक्षांत समारोह पर पुस्तकालय के द्वारा गुरुकुल के प्रकाशनों को विक्रय करने हेतु पृथक से स्टाल लगाया गया। इस स्टाल के द्वारा गुरुकुल के बारे में जानकारी देने वाले विपुल साहित्य का निःशुल्क वितरण भी किया गया।

तकनीकी विभाग :—पुस्तक विक्रेताओं से जो पुस्तके पुस्तकालय में आती हैं, वे आगत पंजिका में दर्ज होती है उसके पश्चात उन पुस्तकों का विषय के अनुसार वर्गीकरण होता है। प्रत्येक पुस्तक के औसत पांच केटेलोग कार्ड बनवाये जाते हैं। पुस्तकों की चोरी को रोकने हेतु अब से पुस्तकों के बाहर टेग पर विद्युत लेखनी से लिखे जाने का क्रम प्रारम्भ किया गया है, जिससे कोई छात्र पुस्तक बाहर ले जाने में छल कपट नही कर सकता है। इस वर्ष ८२-८३ में इस विभाग के द्वारा लगभग १५०० पुस्तकें तैयार की गयी।

पत्र-पत्रिका विभाग :-पुस्तकालय को १० स्थानीय पत्र निःशुल्क प्राप्त होते है। इसके अतिरिक्त १० पत्र आर्य समाजी क्षेत्र के मगवाये जाते है। दान द्वारा प्राप्त पत्रिकाओं की संख्या १३६ है। इसके अतिरिक्त १३४ पत्रिकाएं चंदे से मगवाई जाती हैं। हाल ही में ३० नये पत्रिकाओं के मंगवाये जाने के आदेश प्रदान किये गये है। इसी प्रकार इन पत्रिकाओं के अक जो नियमित नहीं प्राप्त होते उनको प्रकाशकों को बार-बार स्मरण पत्र भेजने का कार्य भी नियमित किया जा रहा है। इस वर्ष पत्रिकाओं को नियमित मंगाने हेतु १३० स्मरण पत्र पुस्तकालय द्वारा भेजे गये।

निकट भविष्य में पुस्तकालय में विभिन्न विषयों के अंतर्राष्ट्रीय

स्तर की पत्रिकाओं को मंगवाये जाने का सिलसिला प्रारम्भ किया जा रहा है। ऐसा प्रयत्न किया जा रहा है कि प्रत्येक विषय के कम से कम दो उच्च स्तर के सार संक्षिप्त पत्रिकाएं (एक्सट्रेक्ट एवं इन्डैक्स पत्रिकाएं) मंगवाई जाये। इसी प्रकार सजिल्द पत्रिकाओं संदर्भ विभाग से अलग करके पृथक पत्रिका विभाग बना दिया गया है। इस समय पुस्तकालय में सजिल्द पत्रिकाओं की कुल संख्या २०३० है। समाचार पत्रों की मासिक फाइले भी नियमित रूप से सुरक्षित रखी जाती है। इसी प्रकार सपाचार पत्र कक्ष की अलग व्यवस्था भी इस वर्ष से विशेष रूप से की गई है।

संदर्भ विभाग : पुस्तकालय के संदर्भ विभाग को सजीव बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है। पुस्तकालय में प्रवेश करते हुए प्रधान हाल में पूछताछ कक्ष की स्थापना की गई है। जिसका कार्य पाठकों एवं आगन्तुकों को इस पुस्तकालय की संग्रहीत सामग्री की जानकारी देना है। इसी प्रकार संदर्भ कक्ष में नित्य ही अनेकों शोध छात्र एवं पंचपुरी के प्रबुद्ध पाठक आकर लाभ उठाते हैं। इस समय संदर्भ विभाग में संदर्भ ग्रन्थों की संख्या ४६७० है। पाठकों को उनकी रुचि के अनुरूप पाठ्य सामग्री प्रदान कराये जाने का कार्य इस विभाग द्वारा किया जाता है। संदर्भ विभाग में हिन्दी, अंग्रेजी, सस्कृत भाषा के सदर्भ ग्रन्थ पृथक-पृथक रखे गये है। इसके अतिरिक्त साजिल्द पत्रिका संग्रह एवं शोध प्रबन्ध सग्रह भी सन्दर्भ विभाग में हैं।

पुस्तक वितरण विभाग : इस पुस्तकालय का यहां के छात्र, प्राध्यापक तथा समीपस्थ रहने वाले निवासी भी पूर्ण उपयोग करते हैं। ८२-८३ के वर्ष में छात्रों को घरेलू उपयोग हेतु ६००० पस्तकें वितरित की गई। पुस्तकालय के कुल सदस्यों की संख्या ८२-८३ में ३५० रही। इस वृहत पुस्तकालय का लाभ केवल विश्वविद्यालय के छात्रों, प्राध्यापकों के अलावा पंचपुरी के निवासियों को भी प्राप्त हो इस हेतु इस वर्ष ८१-८२ से बाह्य सदस्यता देने का प्रस्ताव भी पुस्तकालय सलाहकार समिति द्वारा स्वीकृत कर लिया गया।

आरक्षित पाठ्य पुस्तक विभाग छात्रो को उनके विषयो की पाठ्य पुस्तक पुस्तकालय मे किसी भी समय आने पर उपलब्ध हो। इस हेतु आरक्षित पाठ्य पुस्तको का सग्रह प्रत्येक विषय का बनाया जा रहा है। इन पाठ्य पुस्तको को छात्र पुस्तकालय भवन मे ही परिचय पत्र देकर उपयोग मे ले सकता है। छात्रो मे शाति एव मनोयोग से पुस्तकालय मे ही पुस्तके पढने की मनावृति का भी विकास होने मे सहायता मिली है।

जिल्दबन्दी विभाग ८२-८३ वर्ष मे पुस्तकालय की लगभग १५०० पुस्तको की जिल्दबदी एव मरम्मत का कार्य किया गया। पुस्तकालय मे लगभग इस समय ३०,००० पुस्तके एव ३००० पत्रिकाओ की अविलम्ब जिल्दबदी की जानी आवश्यक है। पुस्तको की सुरक्षा के इस कार्य को पूरा करने हेतु सस्कृति विभाग, शिक्षा मत्रालय भारत सरकार की ओर इस पुस्तकालय को ३०,००० रुपये का अनुदान भी इस वर्ष स्वीकृत किया गया है। आशा है इस अनुदान पुस्तकालय के सहस्त्रो जीर्णशीर्ण ग्रथो एव पत्रिकाओ की सुरक्षा हो सकेगी।

पुस्तक चोरी पर अकुश :-पुस्तकालय की पाठ्य सामग्री को अनधिकृत रूप से ले जाने के विरुद्ध पुस्तकालय के द्वारा कठोर कार्यवाही किये जाने का अभियान इस वर्ष पूरे जोर पर रहा। जनवरी ८२ मे पुस्तक चोरी के १० मामले पुस्तकालय कर्मचारीयो द्वारा पकडे गये। सर्वाधिक पुस्तक चोरी के मामले पुस्तकालय कर्मचारी बुन्दु के द्वारा पकडे गये।

कर्मचारियो को प्रत्येक पुस्तक चोरी का मामला पकडने पर २० रुपये प्रोत्साहन पुरस्कार देने की व्यवस्था भी पुस्तकालय सलाहकार समिति द्वारा की गई है। इसके अतिरिक्त समाचार पत्रो की कटिंग करते हुए भी सात मामले प्रकाश मे आये। इस सभी मामलो पर पुस्तकालय सलाहकार समिति के प्रावधानानुसार भारी जुर्माना वसूल किया गया। अब सभी पुस्तकालय के सदस्यो मे इश्यू की गई पुस्तके समय पर जमा कराये जाने की प्रवृति बढ रही है।

पाठकों की संख्या में वृद्धि : पिछले कुछ मास से पुस्तकालय का उपयोग करने वाले पाठकों में असाधारण वृद्धि हुई है जो उत्साह की बात है। पुस्तकालय में पिछले ८१-८२ वर्ष में १२,००० पाठकों ने पुस्तकालय का लाभ उठाया। इस वर्ष लगभग २०, ००० पाठकों ने इस पुस्तकालय की सामग्री का उपयोग किया।

पुस्तकालय कर्मचारियों का कार्य विवरण : जनवरी ८२ से सभी पुस्तकालय कर्मचारियों को यह निर्देश दिया गया है कि ये अपने दिन प्रतिदिन के कार्य का विवरण मासिक कार्य विवरण प्रपत्र में भरा करें। जिसके अनुसार अब सभी कर्मचारियों के द्वारा किये जाने वाले कार्य का आकलन समय सतय पर होता रहता है। जिससे पुस्तकालय की व्यवस्था को सुन्दर बनाने में कर्मचारियों का अधिक प्रभावी ढंग से उपयोग हो रहा है।

विशिष्ट आंगन्तुक : वर्ष ८२-८३ में पुस्तकालय में जिन विशिष्ट महानुभावों का पदार्पण हुआ उनमें भारत गणराज्य के महा–महिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह जी का नाम उल्लेखनीय है। राष्ट्रपति जी का पुस्तकालय में दिनांक १५-४-८३ को ४० मिनट का कार्यक्रम रहा। इस अवसर पर महामहिम राष्ट्रपति को पुस्तकालयाध्यक्ष द्वारा गुरुकुल से प्रकाशित पत्रिकाओं एवं वेदमन्त्रों का संग्रह गोवर्धन शतक भी भेंट किया गया। राष्ट्रपति ने पुस्तकालय की आगन्तुक पत्रिका में भी हस्ताक्षर किये।

जगदीश प्रसाद विद्यालंकार
पुस्तकालयाध्यक्ष
गुरुकुल कागड़ी विश्वविद्यालय

— 0 —

पुरातत्व संग्रहालय

स्वामी श्रद्धानन्द जी की प्रेरणा से इस संग्रहालय की स्थापना १६०७–८ में गंगापार पुण्यभूमि पर हुई। संग्रहालय की स्थापना के पीछे मूल उद्देश्य यह था कि यह विद्यार्थियों के अध्यापन में सहायक हो तथा साधारण जनता को लाभ हो सके। सन् १६२४ ई० तक संग्रहालय के पास अच्छा संग्रह हो गया था, किन्तु इसी वर्ष गंगा की भीषण बाढ में संग्रहालय की अधिकांश वस्तुए नष्ट हो गयी। सन् १६४५ ई० में संग्रहालय का पुनर्गठन किया गया और ऐतिहासिक वस्तुओं के सग्रह पर विशेष बल दिया गया। मार्च १६५० में गुरुकुल की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर वेदमंदिर में सग्रहालय का उद्घाटन किया गया।

सन् १६७२ ई० में संग्रहालय को विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास, सस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के आधीन कर दिया गया। इस विभाग के अध्यक्ष संग्रहालय के पदेन निदेशक नियुक्त किये गये। विश्व-विद्यालय अनुदान आयोग की आर्थिक सहायता से यह पुरातत्व संग्रहालय के लिए एक भव्य भवन निर्मित कराया गया। इस भवन में तीन बड़े हाल दो लम्बो गैलरी तथा सोलह कमरे है।

संग्रहालय में सेवारत कर्मचारी :

१- डा० विनोदचन्द्र सिन्हा	- पदेन निदेशक
२- श्री सुखबीरसिंह	- स० क्यूरेटर
३- श्री कालूराम त्यागो	- लेखक
४- श्री रमेशचन्द पाल	- भृत्य
५- श्री ओमप्रकाश	- भृत्य
६- श्री वासुदेव मिश्र	- पहरेदार

आजकल सग्रहालय के कर्मचारी पूर्ण निष्ठा के साथ सग्रहालय को वीथिकाओ को सजाने और सवारने मे लगे हुए है। सग्रहालय को सुचारु रूप से चलाने के लिए पर्याप्त धन और उचित स्टाफ की आवश्यकता है। आशा है विश्वविद्यालय इस विषय मे उचित कदम उठायेगा।

उपलब्धियां पुरातत्व सग्रहालय गत ३८ वर्षों से अपने उद्देश्यो की पूर्ति मे सतत प्रयत्नशील है। शिक्षा एव प्रसार के साथ साथ जन-साधारण का मनोरजन करना भी सग्रहालय का प्रमुख उद्देश्य है। उत्तराखण्ड मे एकमात्र सग्रहालय होने के कारण यह अत्यन्त ही उपयोगी सिद्ध हो रहा है। प्रत्येक वर्ष जब लाखो यात्री हरिद्वार स्नान करने आते है तो इस सग्रहालय को भी देखने अवश्य आते है। इसके अतिरिक्त यह सग्रहालय गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग की प्रयोग शाला के रूप मे भी कार्य कर रहा है। अत इतिहास विभाग के छात्रों को भी अध्ययन की दृष्टि से लाभान्वित करता है।

इस वर्ष सग्रहालय मे २४ अनुकृतिया, ३२ मृण्यमूर्तिया जो मौर्य, शुग और कुषाण काल की है। इसके अतिरिक्त ७ पाषाण मूर्तिया भी क्रय की गई है। इसी वष १२ सिक्के भी राज्य सग्रहालय लखनऊ की ओर से इस सग्रहालय को प्राप्त हुए है। यह सिक्के मध्यकाल के हैं।

प्रमुख उद्देश्य – इस सग्रहालय के मुख्य दो उद्देश्य है-

१—हमारा प्रबल प्रयास है कि यह सग्रहालय आचलिक सग्रहालय के रूप मे विकसित हो, अत हरिद्वार तथा आसपास के क्षेत्रो से सामग्री सग्रहीत करने पर विशेष बल दिया जाता है। जिससे उतराखण्ड के इतिहास पर प्रकाश पड सके।

२—भारतीय इतिहास और सस्कृति पर प्रकाश डालने वाली सामग्री का सग्रह करना जिसमे विश्वविद्यालय के छात्र तथा हरिद्वार आने वाले यात्री भारत के प्राचीन गौरव से परिचित हो सके।

संग्रहालय का पुस्तकालय —इस सग्रहालय मे एक पुस्तकालय की स्थापना भी की गई है। इसमे उच्चस्तर की पुस्तको को सग्रहीत किया जा रहा है। विभाग के शोत्र-छात्रो को इस पुस्तकालय से काफी लाभ प्राप्त हो रहा है। एम० ए० इतिहास के छात्रो को भी यहा से सहायता प्राप्त होती रहती है। इस पुस्तकालय मे अब तक लगभग ११०० पुस्तके सग्रहीत की जा चुकी है। इस वर्ष उ०प्र० सरकार ने विषय से सबधित पुस्तको के क्रय के लिए २०००)०० की राशि प्रदान की है। इस पुस्तकालय की देख-रेख और सम्पूर्ण व्यवस्था सग्रहालय के स० क्यूरेटर श्री सुखबीर सिह जी कर रहे है। हमारा यह प्रयास है कि सग्रहालय का यह पुस्तकालय आने वाले समय मे और भी समृद्ध बने जिससे विभाग के प्राध्यापको और विद्यार्थियो को अध्ययन और अध्यापन मे इस पुस्तकालय से विशेष सुविधा प्राप्त हो सके।

दर्शक सख्या —इस वर्ष अप्रैल ८२ से मार्च १९८३ तक १६६५० दर्शको ने सग्रहालय देखा। इस वर्ष मे जो विशिष्ट महानुभाव सग्रहालय मे पधारे, और इसे देखकर अत्यन्त ही प्रभावित हुए उनके नाम निम्न प्रकार से है —

१—श्री श्यामलाल शर्मा - सम्पादक जनतन्त्र समाज

२—श्री रामगोपाल जी शाल वाले, प्रधान आर्य सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा, दिल्ली ने सग्रहालय को देखकर इसके बारे मे अपनी सस्तुति दी है कि—

"आज गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के सग्रहालय को देखकर बडी प्रसन्नता हुई। वस्तुत यह प्राचीन दुर्लभ सामग्री जुटा कर बडा ही उत्तम कार्य किया गया है। गुरुकुल के अधिकारीगण धन्यवाद के पात्र है।"

३—माननीय श्री रणजीत सिह राज्य मत्री, सार्वजनिक निर्माण विभाग उ०प्र०

४—डा० पाल यूल मथीय जर्मन गण राज्य, प्रसिद्ध पुरातत्व वेत्ता।

५—श्री राकेश कपूर, सम्पादक नवभारत टाईम्स
६—श्री सावेन सिह विष्ट – सम्पादक हिन्दुस्तान समाचार
७—श्री विशेश्वरदत्त नौटियाल, ग्राकाशवाणी नई दिल्ली
८—डा० जे०एम०डी० मोरा – विजिटिग प्रौफैसर मैक्सिको।
९—श्री नर्मदेश्वर भा, कुलपति, बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फर पुर बिहार ग्रादि महानुभावो ने संग्रहालय देखा।

विनोद चन्द्र सिन्हा
निदेशक
पुरातत्व संग्रहालय

— 0 —

क्रीड़ा रिपोर्ट

क्रीड़ा समिति :-

(१) श्री बलभद्र कुमार हूजा (कुलपति)
(२) श्री रामप्रसाद वेदालंकार (उप-कुलपति)
(३) डा० जबर सिंह सेंगर (कुलसचिव)
(४) श्री बृजमोहन थापर (वित्त अधिकारी)
(५) डा० श्यामनारायण सिंह
(६) डा० काश्मीर सिंह भिण्डर
(७) श्री कौशल कुमार
(८) डा० त्रिलोकचन्द
(९) श्री करतार सिंह
(१०) श्री ओमप्रकाश मिश्र (अध्यक्ष- क्रीडा विभाग तथा संयोजक क्रीड़ा समिति)

सत्र १९८२-८३ में विश्वविद्यालय ने क्रीड़ा के क्षेत्र में विशेष प्रगति की। हमारी मुख्य उपलब्धियां निम्नांकित हैं :-

इस वर्ष सत्र प्रारम्भ होते ही विभिन्न खेलों की प्रैक्टिस क्रीड़ा समिति के सदस्यों के सहयोग तथा श्री करतार सिंह जी की देखरेख में प्रारम्भ हुई। विश्वविद्यालय का विशेष बल हाकी के क्षेत्र में विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना था। विश्वविद्यालय ने गुरुकुल के सहयोग से स्वामी श्रद्धानन्द हाकी टूर्नामेंट का आयोजन किया। इसमें क्षेत्रीय स्तर की अनेक प्रतिष्ठित टीमों ने भाग लिया। इस टूर्नामेंट में कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी, श्री केला जी तथा श्र सरदारीलाल जी ने उपस्थित होकर खिलाड़ियों को प्रोत्साहित किया। कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा, उप-कुलपति श्री रामप्रसाद वेदालंकार, कुलसचिव श्री (डा.) जबर सिंह सेंगर वित्त अधिकारी श्री बी.एम.थापर, उप-कुलसचिव श्री चन्द्रशेखर त्रिवेदी,

सहायक मुख्याधिष्ठाता श्री जितेन्द्र के प्रोत्साहन एव मार्गदर्शन द्वारा ही यह टूर्नामेंट सफल हो सका।

इस टूर्नामेंट मे विश्वविद्यालय की टीम ने सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। विद्यार्थियो तथा क्रीडा समिति की सराहना करते हुए उप-कुलपति महोदय ने एक विशेष आयोजन मे खिलाडियो तथा क्रीडा समिति के सदस्यो का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया।

उत्तर क्षेत्रीय अखिल भारतीय हाकी टूर्नामेंट मे विश्वविद्यालय की टीम डा. काश्मीर सिह भिण्डर तथा श्री करतार सिह के मार्गदर्शन मे खेलने गयी। विश्वविद्यालय की टीम तीसरे चक्कर मे अतिरिक्त समय मे पैनेल्टी स्ट्रोक द्वारा जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू की टीम् से पराजित हुई।

विश्वविद्यालय मे इस वर्ष बैडमिन्टन टूर्नामेंट का आयोजन डा श्याम नारायण सिह तथा डा काश्मीर सिह भिण्डर के मार्गदर्शन मे किया गया। इसके अन्दर निम्नाकित विद्यार्थियो को प्रथम द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। प्रथम-राकेश शर्मा और द्वितीय-सदीप बी एस-सी द्वितीय वर्ष मे रहे। इस वर्ष विश्वविद्यालय की टीम ने उत्तर क्षत्रोय अखिल भारतीय बैडमिन्टन टूर्नामेंट मे कानपुर मे भाग लिया। श्री करतार सिह जी के निर्देशन मे विश्वविद्यालय की टीम कानपुर गयी। इस टूर्नामेंट मे विश्वविद्यालय की टीम के खेल की काफी सराहना की गई।

ज्वालापुर महाविद्यालय मे आयोजित टूर्नामेंट मे हमारी फुटबाल और कबड्डी की टीम ने भाग लिया। फुटबाल मे हमारी टीम प्रथम स्थान पर तथा कबड्डी मे द्वितीय स्थान पर रही। स्थानीय स्टार क्लब ज्वालापुर मे आयोजित बैडमिन्टन टूर्नामेंट मे हमारी टीम का प्रदर्शन अच्छा रहा। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय की क्रिकेट-टीम ने स्थानीय मैचो मे भाग लिया। तथा उनके खेल को सराहना की गई।

इस वर्ष विश्वविद्यालय ने जिमनास्टिक मे विद्यालय के बच्चो को

पूर्ण सुविधायें उपलब्ध करायी, जिसके कारण विद्यालय की टीम का सहारनपुर में आयोजित टूर्नामेंट में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन रहा।

कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा के प्रोत्साहन से इस वर्ष क्रीड़ा विभाग के तत्वावधान में एक योग केन्द्र की स्थापना की गई, जिसमें डा. त्रिलोकचन्द्र जी के सक्रिय सहयोग से योग सम्बन्धी कक्षा चलाई गई। इन कक्षाओं से विश्वविद्यालय के छात्रों तथा बाहर के अन्य विद्यार्थियों को पर्याप्त लाभ हुआ। अगले सत्र में इन कक्षाओं को बड़े पैमाने पर चलाने का विचार है।

ओमप्रकाश मिश्रा
क्रीड़ाध्यक्ष

— 0 —

एन. सी. सी.

सत्र ग्रीष्मावकाश के बाद अगस्त में प्रारंभ हुआ। १५-८-८२ को स्वतन्त्रता दिवस बहुत धूम-धाम से मनाया गया। इस अवसर पर गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी मुख्य अतिथि थे। उन्होंने राष्ट्रीय छात्र सेना द्वारा आयोजित परेड की सलामी ली तथा निरीक्षण किया।

नियमित प्रशिक्षण प्रारंभ हुआ। छात्रों को सेना के बारे में जानकारी कराते हुए उनमें सामाजिक सेवा तथा योग प्रशिक्षण का ज्ञान कराया गया। छात्रो द्वारा निकटतम गांव में सामाजिक कार्य किया गया। छात्रों का वार्षिक प्रशिक्षण शिविर जमनीपुर (देहरादून) में नवम्बर-दिसम्बर माह में लगाया इस शिविर में छात्रों ने बहुत उत्साह से कार्य किया। तथा पूर्ण अनुशासन का परिचय दिया।

गणतन्त्र दिवस के अवसर पर एक परेड का आयोजन किया गया इस परेड की सलामी एवं निरीक्षण विज्ञान महाविद्यालय के प्राचार्य श्री सुरेशचन्द्र त्यागी ने किया। प्रशिक्षण समाप्त होने पर छात्रों ने बी तथा सी सर्टिफिकेट की परीक्षाओं में भाग लिया। समस्त कार्यों का आयोजन एन०सी०सी० अध्यक्ष मेजर वीरेन्द्र अरोड़ा द्वारा किया गया।

वीरेन्द्र अरोड़ा

राष्ट्रीय सेवा योजना

इस विश्वविद्यालय के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना की स्वीकृति सितम्बर ८२ के अन्त में प्राप्त हुई। इसके अनुसार २५० छात्र - छात्राओं की इस योजना के अन्तर्गत पंजीकृत किया जा सकता है। नियमानुसार माननीय कुलपति जी के आदेशानुसार विश्वविद्यालय सलाहकार समिति का गठन हुआ। इसकी पहली मीटिंग ३०-१०-८२ को कुलपति कार्यालय में कुलपति जी की अध्यक्षता में हुई। उसमें निम्न निर्णय लिये गये।

१- २५० छात्र-छात्राओं का विभाजन निम्न प्रकार से किया गया—

अ- विश्वविद्यालय परिसर (विज्ञान महाविद्यालय)	२०० छात्रों
ब- कन्या गुरुकुल	५० छात्राओं

२- माननीय कुलपति जी द्वारा निम्न नियुक्तियों की सर्वसम्पति से सम्पुष्टि की गई।

श्री वीरेन्द्र अरोडा	प्रोग्राम कोर्डिनेटर
श्री बी०डी० जोशी	प्रोग्राम आफिसर
श्री त्रिलोकचन्द	,, ,,
श्रीमती बलबीर कौर	,, ,,

३- विशेष शिविर (छात्रों का) पुण्यभूमि में २२ दिसम्बर ८२ से लगाने का निर्णय लिया गया।

४- निर्णय हुआ कि विश्वविद्यालय जगजीतपुर गांव एवं कन्या गुरुकुल, चडिया मण्डी गांवगोदले। इस मीटिंग में राष्ट्रीय सेवा योजना, लखनऊ से यूथ आफिसर श्री बलजोर सिंह उपस्थित थे। इन निर्णयों के अनुसार

कार्यवाही प्रारंभ की गई। छात्रों का विशेष शिविर पुण्यभूमि कांगडी गांव में २१-१२-८२ से ३१-१२-८२ तक लगाया गया। इस शिविर का उद्घाटन जिलाधिकारी बिजनौर श्री ग्रो०पी० ग्रार्य द्वारा २१-१२-८२ को किया गया। इस ग्रवसर पर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी मुख्य ग्रतिथि थे। इस समारोह में विश्वविद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी तथा वानप्रस्थ से ग्रनेक महिलायें उपस्थित थी। जिलाधिकारी ने पुण्यभूमि तक रास्ता बनाने का ग्राश्वासन दिया सभी ने इस शिविर के ग्रायोजन की प्रशंसा की। शिविर में ४७ छात्रों तथा ५ स्थानीय युवकों ने भाग लिया। उनके लिए दोनों प्रोग्राम ग्राफिसरों डा० जोशी तथा डा० त्रिलोकचन्द ने सराहनीय कार्य किया। शिविर में भाग लेने वालों की कुल सख्या ५४ थी। इस शिविर के दौरान छात्रों ने निम्न कार्य किये।

१- कांगड़ी गांव के विद्यालय के निकट बने एक पुराने कुएं की सफाई की तथा पानी के निकास के लिये नाली बनाई।

२- कांगड़ी गांव में विद्यालय के निकट बनाये जाने वाले चबूतरे के लिए लगभग २०बुगी पत्थर ढो-ढो कर पहुंचाये गये। तथा मिट्टी भी डाली।

३- खडंजा बिछाने के लिए २५ बुगी मिट्टी ढोई तथा इंटें लगाई।

४- गांव में पानी के निकास के लिए लगी जाली का निर्माण किया।

५- वृक्षारोपण के लिए छात्रों ने गढ्डे खोदे।

६- छात्रों ने कांगड़ी ग्राम के परिवारों का सामाजिक, ग्राथिक एवं स्वास्थ्य सर्वेक्षण किया तथा जनसम्पर्क स्थापित किया।

७- पुण्यभूमि में सफाई का कार्य किया।

८- छात्रों को विद्वानों द्वारा सम्बोधन कराया गया।

छात्र प्रात: व्यायाम, योगाभ्यास आदि करते थे, तथा सायं वाली-वाल फुटबाल, कबड्डी आदि खेल खेलते थे। रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम होता था, जिसमें कांगड़ी ग्राम के निवासी भी सम्मिलित होते थे। शिविर में माननीय कुलाधिपति जी दिनांक २४-१२-८२ को गये तथा छात्रो से बात-चीत की उन्होंने छात्रों एवं प्राध्यापकों को ऐसे शिविर लगाने के लिए प्रसन्नता प्रकट की तथा बधाई दी।

शिविर में २७-१२-८२ को श्री यशबीर सिह, शिक्षा मन्त्रालय राष्ट्रीय सेवा योजना लखनऊ के अधिकारी निरीक्षण के लिये आये। उन्होंने निरीक्षण करके सतोष प्रकट किया तथा शिविर के कार्यो से बहुत प्रभावित हुए। समापन समारोह मे २६-११-८२ सायं दो बजे सम्पन्न हुआ। इसके मुख्य अतिथि श्री घनश्याम पन्त स्थानीय न्यायाधीश, हरिद्वार थे। उन्होंने शिविर में हुए कार्यों की सराहना की। शिविर में उद्‌घाटन तथा समापन समारोह यज्ञ से हुआ। २३-१२-८२ को छात्रो ने स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस, वहो यज्ञ करके तथा उनके सबंध में चर्चा करके सम्पन्न किया। कागड़ी गाव के निदेशक डा० विजयशकर ने ग्रामवासियों को सरकार द्वारा ऋण आदि की सुविधा उपलब्ध किन-किन बातो पर हो सकती है विस्तृत जानकारी दी, जिससे छात्रो एव ग्रामवासियों को बहुत लाभ पहुचा।

प्रोग्राम कोर्डीनेटर वीरेन्द्र अरोड़ा प्रतिदिन शिविर में जाकर छात्रों एव प्रोग्राम अधिकारियों से भेट करते तथा उनकी समस्याओ का समाधान करते थे तथा उनका मार्गदर्शन करते थे। विद्वानों द्वारा भाषण का आयोजन भी प्रोग्राम कोर्डीनेटर के द्वारा किया गया इस शिविर के आयोजन में कुलसचिव डा० जबरसिंह सेंगर वित्तअधिकारी श्री बी०एम० थापर स० मुख्याधिष्ठाता श्री जितेन्द्र एव डा० काशमीरसिह सचिव कुलपति ने पूर्ण सहयोग दिया प्रो० ओ०पी० मिश्र, निदेशक क्रीड़ा ने खेल आदि का सामान देकर सहयोग किया। डा० विनोद चन्द्र सिंहा

जनसम्पर्क अधिकारी ने भी सहयोग करके वास्तव में इस योजना को सफल बनाया इस शिविर के पूर्ण रूप से सफल होने का श्रेय श्री कुलपति हूजा जी को है। डा० बी०डी० जोशी तथा डा० त्रिलोकचन्द ने इस शिविर में बहुत परिश्रम से कार्य किया। छात्रों ने बहुत ही परिश्रम किया तथा सफल बनाने में पूर्ण सहयोग दिया। २९-१२-८२ को आकाशवाणी नजीबाबाद से अधिकारी अपनी टीम के साथ आये। उन्होंने छात्रों एवं शिविर के आयोजकों के शिविर के बारे में विचार रिकार्ड किये। ये ७-१-८३ की सायकाल ५ बजे साढ़े पांच बजे तक आकाशवाणी नजीबाबाद से प्रसारित किया गया।

कन्यागुरुकुल देहरादून ने छात्रों का एक विशेष शिविर २४-१-८३ से २-२-८३ तक तपोवन (देहरादून) मे आयोजित किया। इसमें २५ छात्रों २ गैर छात्राओ तथा एक आफिसर कुल २८ ने भाग लिया।

शिविर का उद्घाटन श्री यू०एन०सिह (आई.पी.एल.) कार्यकारी जिलाधीश, देहरादून ने किया। समारोह का आरभ यज्ञ से किया गया। महाविद्यालय की प्रधानाचार्य श्रीमती दमयन्ती कपूर ने मुख्यप्रतिथि का स्वागत् किया। प्रोग्राम कोर्डीनेटर श्री वीरेन्द्र अरोडा ने राष्ट्रीय सेवा योजना के इतिहास एवं कार्य क्षेत्र पर प्रकाश डाला तथा शिविर की सफलता की के लिए शुभ कामनाएं प्रकट की। शिविर में निम्न कार्य किये गये।

१- ग्राम आमवाला मभला, डांडा लखौटा और हर्रावाला के घरों के लिए गदे पानी के निकास के लिए गढे खोदे गये।

२- ग्राम हर्रावाला से तपोवन आश्रम तक आने वाली पगडडी को सड़क का रूप दिया गया। जिसको पत्थरों तथा मिट्टी से भरा गया।

३- सिलाई तथा कढ़ाई की शिक्षा आमवाला मभला तथा ग्राम हर्रा-वाला में दी गई।

४- वातावरण और व्यक्तिगत सफाई के बारे में जानकारी दी गई तथा बीमारियों से बचने के लिये उपाय बताये गये।

५- दहेज प्रथा, बालविवाह के बारे में जागरूकता उत्पन्न करने के लिये गोष्ठियां आयोजित की गई।

६- ग्राम हर्चावाला एवं ग्राम मफला में प्रौढ़ शिक्षा दी गई।

७- वृक्षारोपण के लिए गढ्ढे खोदे गये।

शिविर का समापन समारोह २-२-८३ को आयोजित किया गया। इस अवसर पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के उपकुलपति एवं आचार्य श्री रामप्रसाद वेदालंकार थे। प्रोग्राम कोर्डीनेटर श्री वीरेन्द्र अरोडा ने शिविर की सफलता पर छात्राओ आफिसर तथा प्रधानाचार्य को बधाई दी। इसी अवसर पर छात्राओं ने अपने अपने अनुभव भी प्रकट किये जिससे ज्ञात होता था कि उनको शिविर द्वारा बहुत लाभ हुआ है।

इन शिविरो के अतिरिक्त छात्र/छात्राओं द्वारा विभिन्न कार्यक्रम किये गये। छात्रों को राष्ट्रीय सेवा योजना के सम्बन्ध में व्याख्या दिये गये। छात्रों ने परिसर में सफाई का कार्य किया। छात्रों ने इस वर्ष का सम्पन्न समारोह ७-५-८३ को आयोजित किया, जिसमें छात्राओं ने ग्राम चिड़िया मडी में कार्य किया। सड़कों की सफाई की गन्दी नालियों को साफ किया। तथा ग्राम वासियों को इस कार्य को करने के लिए प्रोत्साहन किया। छात्राओं की सिलाई की कक्षाएं आयोजित की। इस वर्ष इस योजना के अन्तर्गत १०८ छात्र तथा ५० छात्राएं कुल १५३ पजीकृत किये गये।

प्रोग्राम क्वार्डिनेटर श्री वीरेन्द्र अरोड़ा ने १४-१-८३ को देहरादून में आयोजित एन०एस०एस० की बैठक में भाग लिया जिसमें १९८३-८४ में आयोजित होने वाले शिविरों के सम्बन्ध में निर्णय लिये गये।

वीरेन्द्र अरोड़ा
प्रोग्राम क्वार्डिनेटर

—0—

दीक्षान्त १९८३ पर (पी-एच०डी०) उपाधि प्रदान किये जाने वाले छात्र/छात्राओं की सूची ।

क्रम सं	पंजीकरण स०	नाम छात्र/छात्रा	पिता का नाम	विषय	शीर्षक
१–	७३००६६	श्री योगेन्द्र पुरुषार्थी	श्री नाथू राम आर्य	वैदिक साहित्य	वैदिक संहिताओं मे योगतत्व एक तुलनात्मक परिशीलन ।
२–	७६००२५	श्रीमती वीना रानी	श्री मोहन लाल	सस्कृत साहित्य	भास एवं कालिदास के कथात्मक कल्पना-बिम्बों का तुलनात्मक अध्ययन ।
३–	७४००११	श्री रणबीर	श्री प्रीत सिंह आर्य	,,	याज्ञवल्क्य स्मृति के दायभाग का आलोचनात्मक अध्ययन ।
४–	६४००४४	श्री शिवचरण	श्री परस राम	हिन्दी साहित्य	जैनेन्द्र का जीवन दर्शन ।
५–	७६०००५	श्री श्यामलाल विनीत	श्री देवराज शर्मा	,,	कापालिक नाथ्पंथ . साधन और साहित्य ।
६–	७६०००६	श्री सोहन लाल शर्मा	श्री लूनकरन शर्मा	,,	नई कविता की प्रबन्धात्मक रचनाओ की संवेदना और शिल्प विधान ।
७–	७६००११	श्रीमती उपमा रानी	श्री किशन स्वरूप	,,	दिनकर का गद्य साहित्य ।
८–	७५०१३३	श्री ललित पाण्डेय	श्री बसन्त कुमार पाण्डेय	प्रा० भा० इतिहास, सस्कृति तथा पुरातत्व ।	मौर्यकाल में नौकर शाही ।

दीक्षान्तोत्सव १६८३ में उपाधि प्राप्त करने वाले छात्रों का विवरण

एम०ए०

क्र० सं०	अनुक्रमाक	पंजीकरण स०	नाम छात्र	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
१	३८३	८०,००६६	देवनारायण रघुवर	श्री शिवमगल सिह	वैदिक साहित्य	द्वितीय
२	३८५	८०,०१४६	धनीराम सैनी	श्री दुलीचन्द्र सैनी	,,	प्रथम
३	३८६	८०,०१६६	हरिश्चन्द्र	श्री कर्मसिह	,,	प्रथम
४	३८७	८०,०१०१	नारायण स्वरूप (स्वामी नारदानन्द)	श्री स्वामी लक्ष्यानन्द	दर्शन, शास्त्र	प्रथम
५	३८८	७२,०१२६	रविन्द्र कुमार प्रसाद	श्री राजगृही प्रसाद	,,	प्रथम
६	३८६	८०,००६३	स्वामी अनुभूतानन्द	,, स्वामी परमानन्द	संस्कृत साहित्य	प्रथम
७	३६०	८०,००२१	आत्मानन्द	,, स्वामी रंगीराम	,,	द्वितीय
८	३६१	८०,००६८	अखिलेश्वर	,, पदुमराम	,,	प्रथम
६	३६२	८०,०१५०	विश्वबन्धु	,, ढोलाराम साहु	,,	प्रथम
१०	३६३	८०,०१६८	गिरीशचन्द्र शास्त्री	,, हरिदत्त	,,	प्रथम
११	३६४	७८,०१४४	सत्येन्द्र सिंह	,, सतीश सिह	,,	प्रथम
१२	३६५	७८,००१३	सत्यानन्द शास्त्री	,, रिखीराम	,,	द्वितीय
१३	३६६	८०,०१८०	श्यामलाल शर्मा	,, कुलीराम शर्मा	,,	तृतीय

क्र०सं	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
१४	३६७	७६,००६१	कु० संगीता मित्तल	,, मोतीराम मित्तल	,,	द्वितीय
१५	३६८	८०,००२८	कु० सवीता	,, रामप्रसाद	,,	द्वितीय
१६	३६६	८०,००१८	कु० सरोजिनी	,, राजेन्द्र सिंह	,,	द्वितीय
१७	४००	८०,००१६	कु० शारदा	,, दयालचन्द्र	,,	द्वितीय
१८	४०६	८०,००१–	कु० कृष्णा	,, सूरजभान	,,	तृतीय
१९	४०७	८०.०००६	कु० सुशीला	,, देवदत्त	,,	तृतीय
२०	४०८	८०,००१७	कु० सुमेधा	,, हरगोविन्द सिह	,,	प्रथम
२१	४०६	८६ ००२०	कु० राजकुमारी	,, प्रीत सिंह	,,	तृतीय
२२	४१०	८०,००११	कु० कामजित्	,, राजेन्द्र देव सिह	,,	प्रथम
२३	४११	७६,०००५	श्रीमती वेदवती	,, देवी सिह	,,	द्वितीय
२४	४०५	८०,००१२	कमला	,, भीम सिह	,,	प्रथम
२५	४१३	७१,०११४	रामनरेश मिश्रा	,, केदार नाथ मिश्रा	,,	प्रथम
२६	४१५	७८,००६०	अनिलकुमार	,, सुखबीर सिंह कुमुद	प्र.भा. इतिहास संस्कृति एवं पुरातत्व	द्वितीय
२७	४१६	८०,०१७६	जसबीर सिह मलिक	,, जिहान सिह मलिक	,,	द्वितीय
२८	४१७	७६,००४२	जयकिशोर	,, भैरवदत्त शास्त्री	,,	प्रथम
२९	४१६	८०,०१४८	उमानाथ मिश्र	,, श्रीनाथ मिश्रा	,,	द्वितीय

क्र०स	अनुक्रमाक	पजीकरण सं०	नाम छात्र	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
३०	४२०	८०,०१७८	यशपाल सिह	श्री प्रकाश चन्द	,,	द्वितीय
३१	४२१	८०,०१७५	अम्बरीश कुमार	,, बेनीप्रसाद	,,	द्वितीय
३२	४२३	८०,००६५	कु० स्नेहलता	,, हरिसिह	,,	तृतीय
३३	४२४	७७,००७०	श्रीमती वीनाशर्मा	,, माधो प्रसाद शर्मा	,,	प्रथम
३४	४२५	८०,०१३३	श्रीमती मीरा	,, दयाकृष्ण कपूर	,,	प्रथम
३५	४२६	७८,००४१	श्रीमती रामधनी देवी	,, जगदीश प्रसाद	,,	तृतीय
३६	४२७	८०,००६२	कु० मधुबाला	,, चेतनगिरी	,,	द्वितीय
३७	४२८	७८,००४४	श्रीमती मुन्नी देवी	,, उग्रसैन	,,	तृतीय
३८	४३०	६७,००७९	कालूराम	,, गुगनचन्द्र	,,	द्वितीय
३९	४३३	८०,०१७३	वीरेन्द्र कुमार	,, गोपाल दास	अंग्रेजी साहित्य	द्वितीय
४०	४३५	७८,०११३	अनिलकुमार शर्मा	,, लीलाधर शर्मा	गणित (एम0एस0सी	प्रथम
४१	४३६	७८,०१२८	देशराज	,, कल्याण सिह	,,	प्रथम
४२	४३७	७८,००९३	दिनेश कुमार जोशी	,, गोकुलानन्द जोशी	,,	प्रथम
४३	४३८	७८,०१२९	धर्मेन्द्र कुमार	,, वाचस्पति धिल्डियाल	एम० ए०	प्रथम
४४	४३९	८०,०१७०	ललितप्रसाद पन्त	,, बुद्धिबल्लभ पन्त	(एम०एम-सी)	प्रथम
४५	४४०	८०,००६७	महकार सिह	,, ईश्वर सिह	,,	प्रथम
४६	४४१	७८,०११६	प्रमोद कुमार चौहान	,, बलबीर सिंह चौहान	,,	प्रथम

क्र०सं	अनुक्रमांक	पजीकरण सं०	नाम छात्र	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
४७	४४२	७८,००६२	राजेश कुमार पाण्डेये	श्री गोविन्दराम पाण्डये	,,	प्रथम
४८	४४४	८०,००२६	विश्वेश्वर दयाल	,, गोवर्धनदत्त	(एम०ए)	प्रथम
४९	४४५	८०,००७०	कमलापति शर्मा	,, मोतीराम शर्मा	हिन्दी साहित्य	तृतीय
५०	४४७	८०,०१७२	प्रभात किशोर	,, भैरवदत्त	,,	द्वितीय
५१	४४८	८०,००२५	रावेशदत्त	,, नकली सिह	,,	प्रथम
५२	४४९	८०,०१७७	सुखचन्द सिह	,, फूल सिह	,,	तृतीय
५३	४५१	८०,०००५	श्रीमती प्रमिला	,, रघुवीर सिह सेंगर	,,	द्वितीय
५४	४५२	८०,०००४	कु० अंजली साराभाई	,, जगतारन प्रसाद साराभाई	,,	द्वितीय
५५	४५३	८०,०००८	श्रीमती सन्देश सिह	,, सुचेत सिह	,,	द्वितीय
५६	४५४	८०,००६३	श्रीमती मुंजुलता शर्मा	,, रामजीलाल शर्मा	,,	द्वितीय
५७	४५५	७८,०००३	अभयदेव शास्त्री	,, चुन्नीलाल	,,	तृतीय
५८	४५८	८०,०१४७	अवनीश सिह	,, एच०जी० सिह	मनोविज्ञान,(एम०एससी०)	प्रथम
५९	४५९	८०,०१६२	दिनेशचन्द्र अग्निहोत्री	,, रमेशचन्द्र अग्निहोत्री	,,	प्रथम
६०	४६०	८०,०१६६	गिरीश कुमार जगता	,, केदारनाथ जगता	,,	द्वितीय
६१	४६१	८०,०१७६	गौरीशंकर मिश्र	,, सूर्यदेव मिश्र	,,	प्रथम
६२	४६४	८०,०१७१	मथुरा प्रसाद पाठक	,, शकर प्रसाद पाठक	,,	द्वितीय
६३	४६५	८०,०१५६	मुनीश चन्द्र	,, रामकृष्ण	,,	प्रथम
६४	४६७	७८,०११५	राजपाल	,, ताराचन्द	(एम. ए.)	द्वितीय

क्र०स	अनुक्रमांक	पजीकरण स०	नाम छात्र	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
६५	४६६	८०,०१७४	विजयशंकर द्विवेदी	,, रामअशीश द्विवेदी	(एम०ए०)	द्वितीय
६६	३७०	७८,०१४८	शशि भूषण	,, हरिप्रसाद	,,	प्रथम
६७	४७१	७८,०१०४	कु० अजिन्दरजीतमान	,, आर० एस० मान	(एम०एस०सी)	प्रथम
६८	४७२	७८,०११२	कु० सगीता राजवशी	,, सत्यवीर सिह	,,	प्रथम
६९	४७३	८०,०००२	कु० कमला पाण्डेय	,, नागेश्वर प्रसाद पाण्डेय	(एम०ए०)	द्वितीय
७०	४७४	८०,००६१	कु० निरूपमा	,, एन० के० भाटिया	,,	द्वितीय

0 0 0

दीक्षान्तोत्सव १९८३ में उपाधि प्राप्त करने वाले छात्रों का विवरण

बी०एस-सी०

क्र० स०	अनुक्रमाक	पजीकरण स०	नाम छात्र	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
१	३२१	८०,००३४	अनिल कुमार	श्री किशन सिह सैनी	गणित, भौतिक, रसायन	द्वितीय
२	३२२	७९,००२२	अनिल कुमार शर्मा	,, के० एस० शर्मा	,,	द्वितीय
३	३२३	८०,००२९	अतुल त्यागी	,, ओंकार सिह त्यागी	,,	प्रथम
४	३२४	८०,००३६	अशोक कुमार शर्मा	,, जे० पी० शर्मा	,,	द्वितीय
५	३२५	८०,००३२	अरुण कुमार प्रभाकर	,, आई० पी० प्रभाकर	,,	द्वितीय
६	३२६	७९,००२५	भूषण लाल	,, धर्मपाल सिह	,,	द्वितीय
७	३२७	८०,००३७	बसन्त कुमार माटा	,, हरिचन्द्र माटा	,,	द्वितीय
८	३३८	८०,०१०५	दान सिंह	,, भगवान सिंह	,,	द्वितीय
९	३२९	८०,०१०८	दिनेश कुमार सिह	,, एम० पी० सिह	,,	प्रथम
१०	३३०	८०,००९९	दिनेश वर्मा	,, साईंदास वर्मा	,,	द्वितीय
११	३३१	८०,०१०६	धीरेन्द्र कुमार	,, सुरेन्द्र कुमार जैन	,,	द्वितीय
१२	३३२	८०,०१०७	देवाशीश भट्टाचार्य	,, एस० सी० भट्टाचार्य	,,	प्रथम
१३	३३३	८०,०११०	जितेन्द्र कुमार अग्रवाल	,, पी०के० अग्रवाल	,,	द्वितीय

क्र०सं	अनुक्रमांक	पजीकरण स०	नाम छात्र	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
१४	३३४	८०,०११४	लोकेश कुमार	श्री सोमप्रकाश	,,	प्रथम
१५	३३५	८०,०११६	नीरज कुमार	,, मोहन लाल	बी० एस-सी० (गणित)	दितीय
१६	३३६	८०,०१२०	पवन कुमार	,, नरेन्द्र सिह	,,	दितीय
१७	३३७	८०,०१३४	प्रवीण कुमार	,, विष्णु प्रसाद	,,	द्वितीय
१८	३३८	८०,००४०	पुष्पेन्द्र सिह	,, महेन्द्र सिह	,,	द्वितीय
१९	३३९	८०,००३९	प्रेम कुमार पावा	,, मनोहर लाल पावा	,,	प्रथम
२०	३४०	८०,००४१	प्रद्युम्न कुमार	,, रामकृष्ण	,,	द्वितीय
२१	३४१	८०,००४२	राजीव कुमार	,, हरबंसलालसचदेव	,,	द्वितीय
२२	३४२	८०,००४४	रामजी कुमार	,, लाला प्रसाद	,,	तृतीय
२३	३४३	८०,०१०३	राजेश कुमार गुप्ता	,, आर० एल० गुप्ता	,,	द्वितीय
२४	३४४	८०,००४३	रामेश्वरदयाल सिंह	,, बाबुलाल	,,	द्वितीय
२५	३४६	८०,००४८	संजय कुमार जैन	,, एन० सी० जैन	,,	द्वितीय
२६	३४७	७९,००४६	सुभाष चन्द्र	,, राम स्वरूप शार्मा	,,	द्वितीय
२७	३३८	८०,००४७	सुधीर कुमार चौबे	,, हीरालाल चौबे	,,	द्वितीय
२८	३४९	८०,००४६	सतीश कुमार मदान	,, गुरुचरणदास मदान	,,	द्वितीय
२९	३५०	८०,००४५	सुनील कुमार चौहान	,, नरेन्द्र सिह चौहान	,,	द्वितीय
३०	३५१	८०,००५९	विपन कुमार	,, मदन लाल शर्मा	,,	द्वितीय
३१	३५२	८०,००५७	विनोद कुमार	,, चिरन्जी लाल	,,	द्वितीय

क्र० सं०	अनुक्रमांक	पजीकरण स०	नाम छात्र	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
३२	३५३	८०,००६०	विनोद कुमार	श्री विद्यारत्न	,,	प्रथम
३३	३५४	८०,००५६	विकास मैहता	,, डी० पी० मैहता	,,	द्वितीय
३४	३५५	८०,००५५	विनय कुमार मेहता	,, जनेश्वर प्रसाद मेहता	,,	द्वितीय
३५	३५६	८०,००५८	विरेन्द्र कुमार	,, मान चन्द वर्मा	,,	द्वितीय
३६	३५७	८०,००५२	उमेश कुमार	,, टेक चन्द	,,	द्वितीय
३७	३५८	८०,००५१	उमेश कुमार शर्मा	,, गीता राम शर्मा	,,	द्वितीय
३८	३५९	८०,००५३	उमेश चावला	,, सी० एल० चावला	,,	प्रथम
३९	३६०	८०,०११९	योगेन्द्रपाल	,, ओम प्रकाश	,,	द्वितीय
४०	३६२	७९,००४३	सुखबीर सिह	,, भोलू सिह	,,	तृतीय
४१	३६३	८०,०१२४	अरुण चुग	,, दुर्गादास चुग	बायोलौजी	द्वितीय
४२	३६४	८०,०१२५	अवधेश कुमार	,, आनन्द स्वरूप शर्मा	(रसायन, जन्तु, वनस्पति)	द्वितीय
४३	३६५	८०,०१२७	अजय कुमार भारद्वाज	,, सीताराम भारद्वाज	,,	द्वितीय
४४	३६६	८०,०१०४	अनिरुद्ध कुमार त्यागी	,, जगदीश प्रसाद	,,	द्वितीय
४५	३६७	८०,०१२९	चन्द्रमोहन शर्मा	,, धर्मपाल शर्मा	,,	द्वितीय
४६	३६८	८०,०१३०	चन्द्र प्रकाश	,, राम प्रसाद	,,	द्वितीय
४७	३६९	८०,०१५९	देवेन्द्र सिह	,, श्याम सिह	,,	तृतीय
४८	३७०	८०,०१३१	दिनेश कुमार शर्मा	,, राम राज शर्मा	,,	द्वितीय
४९	३७१	८०,०१३२	गोपाल कृष्ण शर्मा	,, हुकम चन्द्र शर्मा	,,	द्वितीय

क्र०सं	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
५०	३७२	८०,०१५२	गजेन्द्र प्रसाद कुकरेती	श्री लालमणि कुकरेती	,,	द्वितीय
५१	३७३	८०,०१३५	ललित जोशी	,, प्रयागदत्त जोशी	,,	द्वितीय
५२	३७४	८०,०१३६	महेशचन्द्र जोशी	,, क्षेमानन्द जोशी	,,	द्वितीय
५३	३७५	८०,०१३७	प्रेमलालउनियाल	,, राजा राम उनियाल	,,	द्वितीय
५४	३७६	८०,०१३८	पंकज कुमार	,, राज कुमार स्वन्नी	,,	द्वितीय
५५	३७७	८०,००३०	राम कुमार	,, बाबुराम	,,	द्वितीय
५६	३७८	८०,०१३९	संजय कुमार	,, विजय कुमार	,,	प्रथम
५७	३७९	८०,०१४३	सुनील असावा	,, जी० एल० असावा	,,	द्वितीय
५८	३८०	८०,०१४५	सुशील कुमार	,, रमेश चन्द्र	,,	द्वितीय
५९	३८१	८०,०१४०	विद्यासागर पुज्यपति	,, राम रतन	,,	द्वितीय
६०	३८२	८०,०१५५	यजनीश कुमार	,, भगत सिंह	,,	द्वितीय

0 0 0

दीक्षान्तोत्सव १९८३ में उपाधि प्राप्त करने वाले छात्रों का विवरण

अलंकार

क्र० सं	अनुक्रमांक	पंजीकरण सं०	नाम छात्र	पिता का नाम	विषय	श्रेणी
१	२२२	८०,००७८	कु० हेमलता	श्री भंवर सिंह	विद्यालंकार	द्वितीय
२	२२३	८०,००८५	कु० हृष्टरोमा	,, प्रयागदत्त	,,	प्रथम
३	२२४	८०,००७९	कु० जसवीर	,, दर्शन सिह	,,	तृतीय
४	२२५	८०,००७६	कु० मंजुला	,, पूरन सिह	,,	प्रथम
५	२२६	८०,००७७	कु० प्रतिमा	,, उदयवीर सिह	,,	द्वितीय
६	२२७	८०,००८४	कु0 पूनम	,, उर्वीदत्त उपाध्याय	,,	प्रथम
७	२२८	८०,००८२	कु0 पुष्पा	,, प्रताप सिंह	,,	प्रथम
८	२२९	८०,००८३	कु0 सुधा	,, गंगा विष्णु	,,	प्रथम
९	२३०	८०,००८१	कु0 विभा	,, विशिष्ट पाण्डेय	,,	प्रथम
१०	२३१	८०,००८०	कु0 विनय	,, श्रोमप्रकाश शर्मा	,,	प्रथम
११	२३२	८०,००७४	कु0 बलवान	,, मांगेराम	,,	द्वितीय
१२	२३३	८०,००८८	अशोक कुमार	,, स्नेहमय	,,	प्रथम
१३	२३४	८०,०१५७	धर्मवीर सिंह	,, कटार सिंह	,,	प्रथम
१४	२३५	८०,००९०	धीर सिह	,, ऋषिपाल सिंप	,,	प्रथम
१५	२३८	८०,००९४	पवन कुमार	,, सिताब सिंह	,,	प्रथम

मूल से प्रमाणित

नन्दगोपाल

०००

Dr. Madhuri R. Shah
CHAIRMAN

F. 6-1/4/83-CM

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
बहादुर शाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

GRAMS : UNIGRANTS
UNIVERSITY GRANTS COMMISSIC
BAHADURSHAH ZAFAR MARG
NEW DELHI-110002

11th April, 1983

Dear Shri Hooja,

Thank you very much for your kind invitation of 8th April, 1983 to participate in the convocation of the Gurukula Kangri Vishwavidyalaya. I am very happy to learn that the President will deliver the convocation address. I send you my greetings and best wishes on this happy occasion for the progress and increasing contribution of the Vishwavidyalaya to the education and culture of our country.

I regret my inability to be with you on this occasion due to commitments in Delhi.

With kind regards,

Yours sincerely,
sd/-
(Madhuri R. Shah)

Shri G. B K Hooja,
Vice-Chancellor,
Gurukula Kangri Vishwavidyalaya,
Gurukula Kangri-249404
Haridwar.